श्रेष्ठ समाज-यशस्वी भारत

(स्वर्णिम भारत के निर्माण में अग्र-वैश्य समाज की भूमिका एवं योगदान)

सम्राट चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य

डॉ. विक्रम साराभाई

दानवीर भामाशाह

डॉ. रामनारायण अग्रवाल

लाला लाजपत राय

प्रो. अनन्त अग्रवाल

जमनालाल बजाज

मेजर विवेक गुप्ता

वालचन्द हीराचन्द

हनुमान प्रसाद पोद्दार

मैथिलीशरण गुप्त

डॉ. चम्पालाल गुप्त

एम.ए., पीएच.डी.

श्रेष्ठ समाज-यशस्वी भारत

(स्वर्णिम भारत के निर्माण में अग्र-वैश्य समाज की भूमिका एवं योगदान)

-डा. चम्पालाल गुप्त
एम.ए., पीएच.डी.

प्रकाशक :

अग्रोहा विकास ट्रस्ट

अग्रोहा धाम,
अग्रोहा (हिसार) हरियाणा-125047
दूरभाष - 01669-281127

● डॉ. चम्पालाल गुप्त

© सर्वाधिकार लेखकाधीन सुरक्षित

प्रथम संस्करण 2017

भेंट : रु. 290/-

मुद्रक : हरिहर प्रिण्टर्स, जयपुर

प्राक्कथन

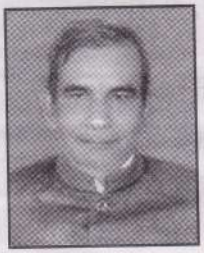

कोई भी राष्ट्र विभिन्न जातीय समूहों का समवाय होता है। उनकी विशिष्टता ही उसे विशेष स्वरूप प्रदान करती है, जिनके कारण वह जाना और पहचाना जाता है।

अग्रवाल-वैश्य समुदाय भारतीय समाज का महत्वपूर्ण घटक है, जिसने राष्ट्र-निर्माण के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी विशिष्ट प्रतिभा का प्रदर्शन किया है। उसका दृष्टिकोण विशाल है तथा एक प्रकार से वह भारत के उन मूल्यों का प्रतिनिधित्व करता है, जो राष्ट्र की आत्मा व प्राण हैं।

इतिहास का वैदिक काल रहा हो या गुप्त काल, इसकी प्रतिभा समान रूप से देदीप्यमान रही। गुप्तकाल में इस समाज ने कला-साहित्य-संस्कृति- सभी क्षेत्रों में जो अभूतपूर्व प्रगति की, उसी के कारण वह भारत का स्वर्ण युग कहलाया। ब्रिटिश शासन काल में जब भारत पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा था, इसी समाज के महात्मा गांधी थे, जिनके कुशल नेतृत्व में आजादी का आंदोलन लड़ा गया और भारत ने स्वतंत्रता की सांस ली। इस आंदोलन में लाला लाजपतराय, सेठ जमनालाल बजाज, जैसी असंख्य विभूतियां थी, जिन्होंने अपना सर्वस्व बलिदान कर उस आंदोलन को सफल बनाया। इस देश में नेता तो अनेक पैदा हुए, किंतु राष्ट्रपिता, विश्ववंद्य जैसे विशेषणों से विभूषित होने का गौरव केवल महात्मा गांधी को मिला और वे सच्चे अर्थो में भारत के ही नहीं सम्पूर्ण विश्व के नायक बन गए।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी इस देश ने राममनोहर लोहिया, बिड़ला, मोदी, सिंघानिया, बजाज, मित्तल जैसे असंख्य नेता, उद्योगपति, वैज्ञानिक और युवा प्रतिभाएं देश को प्रदान की, जिन्होंने विषम से विषम परिस्थितियों में भारत की आन-बान-शान को बनाये रखा, परिणामस्वरूप भारत विश्व में अपने लोकतंत्र की पताका फहराता रहा।

21वीं शताब्दी के द्वितीय दशक में जब भ्रष्टाचार , भाई-भतीजावाद, परिवारवाद, जातिवाद, आरक्षण, तुष्टिकरण जैसी नीतियों के कारण भारतीय जनतंत्र की जड़ें डगमगाने लगीं, उस समय इस समाज के अनेक व्यक्तित्व सामने आए, जिनके कारण देश में सत्ता परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त हुआ और केन्द्र में एक ऐसी स्थायी सरकार की स्थापना हुई, जिसने भारत की यशोपताका को पूरे विश्व में फहराया तथा भारत राष्ट्र की गणना विश्व के सर्वाधिक शक्तिशाली राष्ट्रों में होने लगी।

वर्तमान में हम जिस अभिनव श्रेष्ठ भारत के निर्माण का स्वप्न संजो रहे हैं, उसके निर्माण में भी इस समाज के कुशल दूरदर्शी नेताओं, अर्थशास्त्रियों, उद्योगपतियों, युवा वैज्ञानिकों एवं प्रतिभाओं की विशिष्ट भूमिका है, जिनके कारण भारत सोने की चिड़िया और विश्वगुरू बनकर जन-जन की आकांक्षाओं को पूरा करने में संलग्न है।

कहने का अभिप्राय यह है कि इतिहास के प्रत्येक काल में इस समाज का विशिष्ट योगदान रहा है। आज हमारा देश जिस 'सबका साथ सबका विकास', गरीबी हटाओ, समानता, स्वतंत्रता, लोकतंत्र,सर्वधर्म समभाव जैसे आदर्शों को लेकर चल रहा है, उन सब का विकास इस समाज के महाराजा अग्रसेन ने 5100 वर्ष पूर्व एक ईट एक रुपया तथा 18 वर्गों के प्रतिनिधियों के आधार पर शासन चला कर दिया था। उनके राज्य में एक लाख परिवार बसते थे और प्रत्येक परिवार वहां बसने वाले किसी भी नागरिक को एक रुपया-एक ईट देकर उसे अपने समान बना लेता था। पारस्परिक समानता एवं सहयोग के आधार पर गरीबी को हटाने , सबको समान तथा सम्पन्न बनाने एवं आवास, भोजन तथा जीवन की आवश्यकताओं को पूरी करने जैसी समस्याओं के हल के लिए यह सर्वश्रेष्ठ

मंत्र था। इसके साथ ही उन्होंने उद्यमिता प्रधान अग्रवाल वैश्य समाज की नींव रखकर समाज के आर्थिक विकास को गति दी और उसका परिणाम है कि भारत आज विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में अपनी पताका सम्पूर्ण विश्व में फहरा रहा है तथा इस समाज की युवा प्रतिभाएं ज्ञान विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अनुसंधान, निर्माण जैसे सभी क्षेत्रों में असीम प्रतिभा का परिचय देते हुए भारत को गौरवान्वित कर रही हैं।

इन सब उपलब्धियों को सामने लाना तथा समाज को प्रेरित करना ही इस ग्रंथ का उद्देश्य है। इससे पता चलता है कि इस समाज का योगदान कितना व्यापक और वर्तमान में भी उसकी भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है।

आशा है, इससे आने वाली पीढ़ियों को समाज की अमूल्य धरोहर को जानने तथा उसे आगे बढ़ाने की प्रेरणा प्राप्त होगी।

विशेषकर, इसलिये क्योंकि भारत का यही एक मात्र ऐसा वर्ग है, जो आज जाति-पांति, धर्म, आरक्षण , विशेषाधिकारों की बात छोड़ कर सम्पूर्ण राष्ट्र के विकास की बात करता है, जिसके लिए राष्ट्र हित ही सर्वोपरि है।

निश्चित रूप से आने वाले युग में राष्ट्र के नव निर्माण में इस समाज की भूमिका महत्वपूर्ण होगी तथा यह समाज भारत को पुन: उसके विश्वगुरू पद पर प्रतिष्ठित कर सकेगा।

इस ग्रंथ की एक विशेषता यह है कि इसमें अग्रवाल समाज के साथ सभी प्रमुख वैश्य घटकों की जानकारी तथा उनके योगदान को विराट परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है। वर्तमान समय में जबकि अग्रोहा को 362 घटकों का सर्व वैश्य धाम घोषित कर दिया गया है, इस ग्रंथ से विश्व के किसी भी भू भाग में बसने वाले समाज के बंधुओं को अग्रसेन-अग्रोहा-अग्रवाल के साथ सम्पूर्ण वैश्य समुदाय की भी जानकारी मिल सकेगी तथा वे अपनी गौरवमयी जन्मभूमि तथा पैतृक धाम से जुड़ कर महाराजा अग्रसेन के आदर्शो के अनुरूप एक नये आदर्श भारत का निर्माण कर सकेगें तथा उनमें एक नई चेतना, नये स्वाभिमान का उदय होगा।

वैश्य समाज का इतिहास शताब्दियों पुराना तथा उसका प्रसार सर्वव्यापी है। इतने विशाल समाज के इतिहास को किसी एक ग्रंथ में समेटना सर्वथा असंभव है। इसके साथ ही इतिहास सदैव परिवर्तनशील है और नये नये तथ्यों से खण्डित, मण्डित, परिवर्तित, परिवर्धित होता रहता है, अत: इसमें समयानुसार संशोधन परिवर्तन की सम्भावना सदैव बनी रहेगी।

इस ग्रंथ के लेखन में विविध पत्र पत्रिकाओं, ग्रंथों तथा अन्य साधनों का उपयोग किया गया है, लेखक उनके प्रति आभार व्यक्त करता है तथा पुस्तक सम्बंधी जो भी सुझाव हों, सादर आमंत्रित करता है।

सादर!

श्रीगंगानगर
25 अगस्त, 2017

शुभाकांक्षी

डा. चम्पालाल गुप्त

प्रस्तावना

प्रसन्नता का विषय है कि डा. चम्पालाल गुप्त द्वारा रचित **श्रेष्ठ समाज- यशस्वी भारत**- पुस्तक का प्रकाशन अग्रोहा विकास ट्रस्ट से हो रहा है।

इससे पूर्व डा. गुप्त की 'अग्रोहा -एक ऐतिहासिक धरोहर' तथा 'अग्रवाल समाज का गौरवपूर्ण इतिहास' नामक पुस्तकें प्रकाशित हुई थी, जो पर्याप्त लोकप्रिय सिद्ध हुई। व्यक्तियों से समाज और समाज से राष्ट्र का निर्माण होता है। एक श्रेष्ठ और सशक्त समाज ही राष्ट्र को नई दिशा दे सकता है। अग्र-वैश्य समाज भारत राष्ट्र का मेरूदण्ड है और उसके विकास में उसकी भूमिका महत्वपूर्ण है। प्रसन्नता का विषय है कि सम्पूर्ण विश्व के वैश्यों को एकता एवं संगठन के सूत्र में आबद्ध करने के प्रयास हो रहे हैं। इससे राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता को बल मिलेगा।

इस हेतु आवश्यक है कि पूरे विश्व में फैले वैश्य एक दूसरे के सम्पर्क में आएं और उन्हें अपने महान इतिहास तथा गौरवपूर्ण परम्पराओं की जानकारी हो।

यह ग्रंथ इसी दिशा में एक प्रयास है। इस ग्रंथ में लेखक ने बड़ी ही कुशलता से अग्रवाल समाज के साथ -साथ वैश्य समाज के सभी महत्वपूर्ण घटकों के बारे में जानकारी संजोने का प्रयास किया है, जिससे यह ग्रंथ एक प्रकार से वैश्यों का भी संदर्भग्रंथ बन गया है। इससे पता चलता हे कि इस समाज का योगदान और उसका क्षेत्र कितना व्यापक है।

डा. गुप्त को साधुवाद देता हूं कि उन्होंने वर्षो के अथक प्रयासों एवं समर्पण भाव से वैश्य समाज को उनके गौरव और महता से परिचित कराया। इसके लिए समाज उनका आभारी रहेगा।

इस समाज की परम्पराएं उद्दात है। इस समाज के महाराजा अग्रसेन और विश्ववंद्य महात्मा गांधी के आदर्श केवल अग्रवाल -वैश्य समाज तक सीमित नहीं, सर्वकालिक सार्वजनीन हैं। उनसे प्रेरणा लेकर कोई भी समाज या राष्ट्र आगे बढ़ सकता है। अत: प्रस्तुत ग्रंथ अग्र-वैश्य समाज के साथ-साथ अन्य समाजों के लिए भी समान रूप से उपयोगी सिद्ध होगा और राष्ट्र को नई दिशा देने में समर्थ होगा।

मैं चाहता हूं कि इस पुस्तक का अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं में भी अनुवाद हो, ताकि उसका लाभ देश-विदेश में बसने वाले सभी बंधुओं को मिल सके।

शुभकामनाओं सहित।

नंदकिशोर गोयन्का
अध्यक्ष
अग्रोहा विकास ट्रस्ट बोर्ड, अग्रोहा

अनुक्रमणिका

विषय — पृष्ठ संख्या

वैश्य समाज - उद्भव एवं विकास

- वैश्य समाज- उद्भव एवं विकास 1
- महाजन पदों का उदय और विकास 3
- महान साम्राज्यों की स्थापना 5
- विभिन्न युगों में वैश्य 7
- वैश्य समाज का वर्ग-उपवर्गों में विभाजन तथा विभिन्न घटकों का निर्माण 12
- प्रमुख वैश्य घटक 14

विभिन्न वैश्य घटक-ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि तथा परिचय

अग्रवाल

- अग्रवाल शब्द की व्युत्पति तथा नामकरण 17
- अग्रवाल-वैश्य समाज का इतिहास तथा स्रोत 18
- अग्रवाल-वैश्य समाज के इतिहास लेखन सम्बंधी प्रयत्न एवं साहित्य 22
- अग्रवाल-वैश्य समाज की प्राचीनता 24
- अग्रवाल जाति और नागवंश 25
- अग्रवालों के विभिन्न उपवर्ग और भेद-मारवाड़ी, राजवंशी, जैन, 26
- अग्रवाल-वैश्य समाज का देश के विभिन्न भागों में प्रवसन 30
- अग्रवाल-वैश्य समाज की परम्पराएं 32
- अग्रवाल-वैश्य समाज की विशेषताएं 33
- अग्रवाल समाज के गोत्र एवं उनकी वैज्ञानिकता 34
- साढ़े सत्रह गोत्र एवं महाराजा अग्रसेन के 18 पुत्रों के मध्य वैवाहिक सम्बंधों की धारणा। 36
- अग्रवाल-वैश्यों को सम्बोधित किये जाने वाले विभिन्न नाम एवं उनका आशय। 37
- अग्रवालों के अल्ल, बंक और उपनाम 40
- अग्रवालों के कतिपय अल्ल और बंक (गोत्र सहित) 42
- अग्रवालों के विभिन्न गोत्र एवं उनसे सम्बन्धित परिवार 48
- अग्रवाल वैश्यों के प्रमुख संगठन 57
- अग्रवाल वैश्य पत्र-पत्रिकाएं 62

अग्रवाल समाज के प्रवर्तक

महाराजा अग्रसेन

- जीवनवृत्त एवं उसके स्रोत 64
- महाराजा अग्रसेन का जन्म 65
- भगवान् राम तथा कुश की कुल परम्परा 65
- महाराजा अग्रसेन के जन्मकाल सम्बन्धी धारणाएं 66
- सूर्यकुल परम्परा और वैश्य समाज 67
- महाभारत युद्ध में भाग तथा श्रीकृष्ण-युधिष्ठिर से भेंट 67
- आग्रेय राज्य की स्थापना 68

- एक ईट-एक रुपये की परम्परा 69
- आदर्श राज्य व्यवस्था 70
- यज्ञों का आयोजन एवं अहिंसा धर्म का ग्रहण 70
- राज्य-त्याग और महालक्ष्मी आराधना 72
- महाराजा अग्रसेन के आदर्श और उनकी देन 73
- महाराजा अग्रसेन और अग्रवाल जाति 75
- महाराजा अग्रसेन जयन्ती 75
- महाराजा अग्रसेन ज्योति रथ यात्रा 75
- महाराजा अग्रसेन और उनके स्मारक 75

अग्रवालों की आदि-भूमि
अग्रोहा

- स्थापना 77
- अग्रोहा राज्य की सीमा और प्रमुख नगर 78
- अग्रोहा की ऐतिहासिकता 79
- अग्रोहा के सम्बंध में विद्यमान विभिन्न अनुश्रुतियां एवं कथायें 83
- अग्रोहा के पतन सम्बंधी गाथायें 87
- अग्रोहा के थेह एवं उनके पुरातात्विक अवशेष 90
- अग्रोहा के पुनरूद्धार सम्बंधी प्रयत्न 92
- अग्रोहा के दर्शनीय स्थल 94
- अग्रोहा बना पंचम धाम। 97

अग्रवाल तथा अन्य वैश्य घटकों की विभिन्न क्षेत्रों में भूमिका तथा योगदान

- अग्रवाल-वैश्यों की अग्रगामिता 98
- अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र में अग्रवाल वैश्य 100
- विश्व कीर्तिमान और अग्रवाल वैश्य 104
  गिन्नीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड एवं लिम्का बुक में प्रतिमान स्थापित अग्रवाल वैश्य।
- अग्रवाल वैश्य समाज और महिलायें 107
  विभिन्न क्षेत्रों में अग्रवाल महिलायें एवं उनका योगदान।
- साहित्यिक क्षेत्र में अग्रवाल वैश्य 113
- अग्रवाल वैश्य समाज द्वारा संस्थापित ट्रस्ट एवं फाउण्डेशन 122
- शिक्षा - शिक्षण संस्थान 133
- अग्रवाल वैश्य समाज द्वारा प्रवर्तित विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कार 144
- भारतीय राजनीति के क्षेत्र में अग्रवाल वैश्य समाज की भूमिका और योगदान। 150
  (1) 1857 की क्रांति (2) गांधीजी का स्वतंत्रता आंदोलन (3) विभिन्न प्रांतों में आंदोलन (4) स्वतंत्र भारत और अग्रवाल समाज
- भारतीय राजनीति के कतिपय विशिष्ट अग्र व्यक्तित्व-क्रांतिकारी, राष्ट्रीय स्वाधीनता सेनानी, राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री, केन्द्रीय व राज्य मंत्री, सांसद, विधायक लोकसभा के सांसद तथा विधानसभाओं के सदस्य। 178
- आर्थिक क्षेत्र और अग्रवाल वैश्य समाज। 197

(1) अग्रवाल समाज की आर्थिक क्षेत्र में विशेषताएं
(2) अग्रोहा से निष्क्रमण और व्यवसाय उद्योग में आधिपत्य
(3) आर्थिक एवं औद्योगिक प्रगति में अग्रवाल वैश्यों का योगदान।
(4) उद्योग जगत की विशिष्ट अग्रविभूतियां
(5) वर्तमान औद्योगिक प्रगति के सूत्रधार
भारतीय सभ्यता संस्कृति- धर्म
सामाजिक क्षेत्र और अग्रवाल वैश्य समाज 226
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा प्रमुख विभूतियां 239
स्वास्थ्य एवं चिकित्सा के क्षेत्र में योगदान एवं प्रमुख विभूतियां - 243
मीडिया एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में अग्रवाल वैश्य समाज का योगदान एवं प्रमुख विभूतियां। 250
फिल्म, दूरदर्शन, धारावाहिक 255
क्रीड़ा एवं खेलकूद क्षेत्र में योगदान तथा प्रमुख गौरव। 262
न्याय एवं विधि के क्षेत्र में योगदान तथा प्रमुख अग्रवैश्य विभूतियां। 267
कला-पुरातत्व-संगीत-धरोहर संरक्षण के क्षेत्र में योगदान एवं प्रमुख विभूतियां 272
सैन्य वीरता एवं बलिदान के क्षेत्र में। 276
281

वैश्य समुदाय के प्रमुख वर्ग-उपवर्ग
ऐतिहासिक परिचय तथा योगदान

माहेश्वरी, ओसवाल, जैनधर्म एवं ओसवाल, जैन अग्रवाल, राजवंशी, अग्रहरि, खण्डेलवाल, विजयवर्गीय, केशरवानी, सरौलिया वैश्य, माहौर वैश्य, कसौंधन वैश्य, गहोई वैश्य, ओमर वैश्य, मध्यदेशीय वैश्य, बारहसैनी वैश्य, महाजन, रस्तोगी, रोहतगी, रूस्तगी, अयोध्यावासी वैश्य, कसेरा, बाथम वैश्य (कदीमी वैश्य) शूरसैनी वैश्य, तैलिक साहू वैश्य, चतुश्रेणी वैश्य, कमलापुरी वैश्य, महावर (माहौर) वैश्य, माथुर वैश्य, रौनियार, तंतुवाय वैश्य, जायसवाल, दोसर वैश्य, सोनिया, कथ बनिया, शिवहरे, गूजर बनिया, गोभुज, गुड़िया, श्रीमाल वैश्य, पोरवाड़, मोढ़ वैश्य, जैन धर्मानुयायी वैश्य, दक्षिण भारत के वैश्य, चेट्टी, शेट्टी, चेट्टियार, लिंगायत, तेलगूवर्गीय, कोमती वैश्य, बंगाल के वैश्य, उडीसा के वैश्य, नेपाली वैश्य, ।
अग्रवाल वैश्य समाज - एक सर्वांगीण अध्ययन 284
304

विविध

प्रकाशित अग्र वैश्य साहित्य
डाक टिकट प्रकाशित विभूतियां 305
अग्रवाल वैश्य पत्र-पत्रिकाएं 309
अग्रवाल वैश्य समाज के प्रमुख संगठन 311
भारत रत्न , पद्मविभूषण, पद्मभूषण,पद्मश्री, राष्ट्रीय अलंकरणों से सम्मानित 312
अग्रवैश्य विभूतियां। 313
धनकुबेरों की सूची में अग्रवाल वैश्य।
विभिन्न विश्वविद्यालयों में कुलाधिपति, कुलपति 321
महाराजा अग्रसेन की आरती। 322
324

●●●●●●●

वैश्य-समाज उद्‌भव एवं विकास

वैश्य समुदाय भारतीय समाज का महत्वपूर्ण अंग है। भारत में समाज को व्यवस्थित रूप से चलाने के लिए गुणकर्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था की कल्पना की गई। इस वर्ण व्यवस्था में वैश्यों का तीसरा स्थान था। इस व्यवस्था का उल्लेख वैदिक काल से ही मिलता है।

कहते हैं ब्रह्माजी से इस सृष्टि की उत्पत्ति हुई। ब्रह्माजी ने एक से बहुल होने की कामना से सृष्टि का विस्तार किया। ब्रह्मा के मुख से ब्राह्मणों, भुजाओं से क्षत्रियों, उरू से वैश्यों और पांवो से शुद्रों की उत्पत्ति हुई।

ब्राह्मणोस्य मुखमासीद बाहू राजन्यः कृतः
उरूतद्वेस्ययद्वैश्यः पद्भ्यो शुद्रौ अजायत्/110/ 90/12

इस परिकल्पना के मूल में समाज को सुचारू रूपसे चलाने की ही भावना थी और उसमें समाज के कार्यो का विभाजन इस तरह से किया गया था, ताकि सृष्टिक्रम सही ढ़ंग से चलता रहे।

इसमें वैश्य वर्ण का निर्धारण एक ऐसे समवाय के लिए किया गया था, जिसका मुख्य कार्य कृषि, गौरक्षा और वाणिज्य था। गीता के अनुसार -

कृषि गौरक्ष्य वाणिज्यम् वैश्य कर्म स्वभावजम्।

श्रीमद्‌भागवत् गीता 44/18,

शनैः, शनैः वैश्य वर्ण के अन्तर्गत अन्य कर्मो का भी समावेश होता गया। कृषि का स्थान कृषि जन्य पदार्थो के विपणन ने ले लिया। श्रीमद्‌भागवत पुराण में इस कर्मो का उल्लेख इस प्रकार से किया है

देवगुर्चुच्युते भक्तिस्त्रि वर्ग परिपोषणम्।
आस्तिक्यमुद्यमो नित्यं नैपुणांण वैश्य लक्षणम्। 23/7

इस वर्णन के अनुसार वैश्यों के प्रमुख कार्य कृषि, गौरक्षा, अर्थ, धर्म और काम इन तीनों पुरूषार्थ की रक्षा, धनोपार्जन, उद्योगशीलता, व्यावहारिक निपुणता, धनसंचय से संतुष्ट न होना, दानशीलता, देवता, गुरू और भगवान के प्रति भक्ति बताये गये है, जिनका पालन आदि काल से ही यह समाज करता आया है।

इतिहास में इस समुदाय का उल्लेख पणि के रूप में भी किया गया है। यास्काचार्य ने पणियों को ही व्यापारी कहा है ।

प्राचीन काल में जबकि मुद्रा का प्रचलन न था, वस्तुओं का आदान प्रदान ही वस्तुओं के विनिमय का साधन था। वस्तुओं का आदान प्रदान करने वालों को पणि की संज्ञा दी गई। पण करने वाले ही पणि कहलाए। संभवतः इसी शब्द का प्रयोग बाद में वणज, वाणिज्य आदि रूप में होने लगा और वाणिज्य करने वाले लोगों की संज्ञा वणिक पड़ी। यही शब्द बाद में वैश्य के रूप में प्रचलित हुआ।

वैश्य शब्द विश धातु के क्विप प्रत्यय लगाने से बना है, जिसका अर्थ है विशति -प्रविशति- देश-विदेश में व्यवसाय या व्यापार के लिए घूमने वाले लोग। अतः पाणिनी ने पणि को ही वाणिक या वैश्य की संज्ञा दी। प्रारम्भ में यह वर्ण व्यवस्था गुणकर्म के आधार पर थी किंतु बाद में इसका स्थान जन्म ने ले लिया और उद्योग

व्यवसायों की विभिन्नता एवं अन्य कारणों के कारण यह समाज विभिन्न वर्गो-उपवर्गो, जाति-उपजातियों में बंटता गया।

इतिहास साक्षी है कि जब तक वैश्यों के हाथ में कृषि, गौ-रक्षा, वाणिज्य का कार्य रहा, भारत सोने की चिड़िया कहलाया। यहां की समृद्धि और वैभव का बोलबाला देश-देशान्तर में रहा। यहां अन्नधन के भण्डार भरे रहे और दूध-दही की नदियां बहती थी। आने वाले यात्रियों को जल के स्थान पर दूध पिलाना यहां की संस्कृति रही। यहां वैश्यों द्वारा स्थापित विश्वविद्यालय इतने उच्च कोटि के थे कि भारत को विश्वगुरू की उपाधि प्राप्त थी। विश्व के लोग उनमें ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा प्राप्त करना गौरव का विषय समझते थे।

वैश्य बंधुओं का जीवन आदर्शो से परिपूर्ण था। ईमानदारी उदारता, दान, सेवा,कर्तव्यपरायण उनके विशिष्ट गुण थे। अपनी नीति निपुणता और वैभव के कारण उनकी तूती सम्पूर्ण विश्व में बोलती थी। वे अपने युग के धन कुबेर समझे जाते थे और लक्ष्मी पुत्रों में उनकी गणनी होती थी। समस्त विश्व के चर-अचर प्राणियों के प्रति उनके मन में करूणा-स्नेह की भावना थी। निर्धनों -असहायों के लिए सदाव्रत, रोग पीड़ितों के लिए चिकित्सालय, निराश्रितों-पथिकों के लिए धर्मशाला , विद्यार्थियों के लिए शिक्षणालय, गौओं के लिए गौशालायें, अनाथों के लिए अनाथालय, तृषितों -प्यासों के लिए जलाशय, प्याऊएं, अध्यात्म मार्ग के पथिकों के लिए मन्दिर स्थापित करना वे अपना धर्म समझते थे। वे समाज के धनी व्यक्ति होते हुए भी ट्रस्टी की भूमिका निभाते थे और अपने धन का पर्याप्त भाग लोकोपकारी कार्यो में व्यय कर जन कल्याण की साधना करते थे। न जाने समाज में कितने वर्गो का कल्याण करते थे। अपने वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना का सच्चे अर्थों में समावेश था। वे दीनों के बंधु , असहायों के सच्चे सहायक थे।

वैदिक साहित्य से पता चलता है ये पणि ही कुशल व्यापारी थे। उनका व्यापार देश विदेश में फैला था। उन्होंने ही बड़ी बड़ी नौकाओं तथा जलयानों का निर्माण किया और एशिया, बेवीलोन,मिश्र,चीन, यूरोप तथा दक्षिणी अमेरिका तक उनका व्यापार फला था। उन्होंने इन देशों में जाकर न केवल विदेशी व्यापार फैलाया अपितु भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति का आलोक फैलाने में भी उनका महत्वपूर्ण हाथ रहा। नाना प्रकार के वस्त्र, कांच के सामान, सोने-चांदी आदि के व्यापार में दक्षता प्राप्त की।

कोलम्बस को जब अमेरिका का ज्ञान भी नहीं था, तब इन्हीं हिन्दू वणिकों ने विदेशों में जाकर अपनी सभ्यता, संस्कृति एवं सर्वप्रथम कांच निर्माण, वर्णलिपि प्रचलन, समुद्र पोत संचालन आदि द्वारा समस्त जगत को विस्मय मुग्ध कर दिया था। उस समय भारत के सभी प्रमुख व्यापारिक केन्द्रों एवं दूरस्थ देशों में इन वणिको की व्यापारिक कोठियां और उपनिवेश थे। ईसा से लगभग 700 वर्ष पूर्व भारतीय वणिकों ने चीन में अपने स्थायी उपनिवेश बसा लिये थे। कम्बोज (वर्तमान कम्बोड़िया), वियतनाम, इण्डोनेशिया, थाईलैण्ड आदि तक में उनका प्रसार था। उनके द्वारा वहां बनवाए गए सैंकड़ों मंदिरों का अस्तित्व आज भी देखने को मिलता है।

हिरोडोटस नामक इतिहासकार ने वणिकों को संसार का आदि व्यापारी लिखा है। यूनान देश के इतिहासकार एरियन ने लिखा है कि भारतीय वणिक अरब देश में उतरा करते थे।

लगभग 400 ई.पू. एक चीनी यात्री फाह्यान भारत आया था। उल्लेख मिलता है कि वह वणिकों के जहाज

द्वार सिंहल द्वीप (लंका) और बाद में जावा वाली आदि द्वीप गया और उसने वहां भारतीय वणिकों के उपनिवेशों को देखा था।

ये वणिक ही भारत के विभिन्न भागों में फैल गये थे। राज्य को सर्वाधिक कर चुकाने के कारण उनकी समाज में विशिष्ट स्थिति थी। बड़े बड़े बादशाह और राज्य की आवश्यकता पड़ने पर उनसे ऋण लेते थे तथा उन्हें उच्च पदों पर आसीन करते थे। इसलिये आगे शाह, पीछे बादशाह जैसी लोकोक्तियां प्रचलित हुई।

उच्च दृष्टिकोण, शालीनता एवं सबके प्रति सदभावपूर्ण व्यवहार के कारण उनको समाज में विशेष आदर की दृष्टि से देखा जाता था और उन्हें श्रेष्ठि (सबसे श्रेष्ठ), महाजन (बड़ा व्यक्ति, जनों में महान), शाह, साहूकार, वणिया (जो सबका बन सके, जो सब कार्यो को बना सके) जैसी संज्ञायें प्राप्त थीं।

वैश्यों द्वारा महाजनपदों एवं राज्यों का विकास

पृष्ठभूमि

इतिहास से पता चलता है कि वैश्य व्यापारी के साथ कुशल राजनीतिज्ञ और शासक भी थे। इतिहास में इस प्रकार के अनेक राज्यों का उल्लेख मिलता है।

वायु पुराण में उल्लेख आता है कि राजराजेश्वर श्री पद्माकर गुप्त उत्तर गंगोत्री से लेकर प्रयाग तक का राजा था किन्तु उसके राज्यकाल का उल्लेख नहीं मिलता है।

महाभारत में भी उल्लेख आता है कि धृतराष्ट्र की एक पत्नी वैश्य समुदाय की थी। उसका पुत्र युयुत्सु अत्यंत साहसी एवं वीर था। महाभारत युद्ध के बाद उसे इन्द्रप्रस्थ का राज्य उसे ही मिला था।

द्वापर युग में ही उल्लेख मिलता है कि जब वासुदेव ने श्रीकृष्ण को नंदबाबा और यशोदा मैया के घर छोड़ आए थे, तब श्रीकृष्ण का लालन-पालन नंद बाबा और यशोदा ने किया था। नंद बाबा और यशोदा वैश्य थे। इसी प्रकार वृषभानु जी भी वैश्य राजा थे और राधा उन्हीं की पुत्री थी।

अग्रोहा में गणराज्य

महाभारत युद्ध से पूर्व अग्रोहा या अग्र जनपद की स्थापना भी हो चुकी थी और महाराजा अग्रसेन वहां के राजा थे, जिनसे आगे चल कर वैश्य समाज की अग्रकुल परम्परा चली और अग्रवाल समाज के रूप में एक नये गौरवपूर्ण समाज का आविर्भाव हुआ।

महाजनपदों का उदय और विकास

कालान्तर में भारत के राजनीतिक मानचित्र पर सोलह महाजनपदों का उत्कर्ष हुआ। यह काल बुद्ध से भी 150-200 वर्ष पूर्व था। इस काल में अहिच्छत्र (पांचाल), अयोध्या (कौशल), कौशाम्बी और मथुरा जनपदों में अनेक वैश्य राजाओं ने शासन किया। इस सम्बन्ध में मूलदेव, वरूणमित्र, अश्वघोष, शिवदत्त आदि अनेक राजाओं का उल्लेख है।

मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा सभ्यता- भारत के प्राचीनसभ्यता के अवशेष मोहन जोदड़ो तथा हडप्पा सभ्यता में मिले हैं। इस सभ्यता से प्राप्त अवशेषों में उस समय के वैश्य समुदाय (वणिकों) की आश्चर्यजनक प्रतिभा का परिचय मिलता है। उस समय वैश्यों ने जिन नगरों का निर्माण कराया वैसे वैज्ञानिक ढ़ंग से बने नगर

विश्व में अन्यत्र नहीं मिलते। उस समय के नगर आज के श्रेष्ठ नगरों न्यूयार्क, पेरिस, लंदन आदि से कहीं अधिक व्यवस्थित थे। उनमे जल निकास, संफाई आदि की व्यवस्था कहीं अधिक स्वच्छ और वैज्ञानिक थी। उनकी नापतौल तथा दशमलव प्रणाली अत्यंत विकसित थी

कृत्रिम बंदरगाहों का सृजन, पानी का कृत्रिम ढंग से नियन्त्रण तथा रसायनों का निर्माण, अद्‌भुत भवन निर्माण कला तथा नये नये औजारों का आविष्कार उनके प्रतिभा कौशल को प्रकट करता है।

जैन तथा बौद्ध धर्म काल- 700 ई.पू. तक भारत के वणिक वैदिक धर्म का ही पालन करते आये थे किन्तु 600 ई.पू. भारत में जैन तथा बौद्ध धर्मो का उदय हुआ। इन धर्मो के काल में भी वैश्य समाज की परम्पराएं अक्षुक्ष्ण बनी रहीं।

उस समय के इतिहास से पता चलता है कि तत्कालीन समय में अनेक वैभवशाली वैश्य विद्यमान थे। उनके पास अपार सम्पति तथा वैभव था। उपासुक दशासूत्र नामक एक जैन ग्रंथ में आनंद नामक एक वैश्य का उल्लेख मिलता है, जिससे उस समय के वैश्यों की प्रतिष्ठा का अनुमान लगता है। इस आनन्द नामक वैश्य का 4 करोड़ रुपये का सोना ऋण रूप में बांटा हुआ और 4 करोड़ का सोना भूमि आदि में लगा हुआ था। उसके पास 40 हजार गायें और भैंसे थीं।

इस काल में श्रेष्ठिवर्ग और नगरसेठ जैसी संस्थाओं का विकास होने लगा था और समाज में उन्हें उच्च प्रतिष्ठा प्राप्त थी। इस युग के साहित्य से पता चलता है कि उस समय श्रेष्ठि चत्वरों के बड़े-बड़े समूह थे। बौद्ध मठ एवं तक्षशिला, नालंदा जैसे बड़े-बड़े विश्वविद्यालय उनके अनुदान से चलते थे। उन्हें समाज मे श्रेष्ठि, महाजन तथा गृहपति की संज्ञा प्राप्त थी। मृच्छकटिक नाटक में राजधानी के बीच श्रेष्ठि चत्वर का उल्लेख मिलता है। इस श्रेष्टि चत्वर में धन-कुबेर लोग रहा करते थे। भारत के सभी प्रधान केन्द्रों में उनकी कोठियां थी। आवश्यकता होने पर राजाधिराजों को भी उनसे ऋण लेना पड़ता था।

जातक में अनेक ऐसे श्रेष्ठियों का उल्लेख मिलता है, जिन्होंने भिक्षु संघ, राज्य तथा समाज को करोड़ों रुपयों का दान प्रदान किया था। मगधनिवासी एक सेठ द्वारा भिक्षु संघ को 80 करोड़ कार्यापण दान का उल्लेख मिलता है।

बौद्ध तथा जैन काल में इन्हीं 'वणिकों' ने विदेशों में भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति के प्रचार प्रसार में बहुमूल्य योगदान दिया था। उन्होंने भारतीय धर्म, दर्शन और विज्ञान से सम्बन्धित हजारों ग्रंथों का अनुवाद कराया, जो आज भी वहां उपलब्ध है।

इस काल में जैन तथा बौद्ध धर्म के उत्थान में वैश्यों का महान योगदान रहा । वैश्यों और शिल्पियों के विशाल संघ बने और वैश्यों ने भिक्षु बन कर देश-विदेश में धर्म का प्रचार किया। बुद्ध के प्रथम 500 सदस्यों में 400 से अधिक वैश्य थे और वैश्यों ने भारी संख्या में तीर्थो, स्तूपों तथा मंदिरों का निर्माण करा अपनी दानवीरता तथा उदारता का परिचय दिया था।

महान साम्राज्यों की स्थापना

इनके अलावा वैश्यों की एक उपाधि गुप्त भी थी। विष्णु पुराण में एक श्लोक आता है जिसके आधार पर वैश्यों को गुप्त कहा गया है-

शर्मा देवस्य विप्रस्य वर्मागाता च भू भर्वः
भूर्वि गुप्तस्य वैश्यस्य दास शुद्रस्य कारयेत।

इस सूत्र के अनेक वैश्य राजाओं ने गुप्त की उपाधि धारण की तथा अनेक बड़े -बड़े साम्राज्यों का संचालन किया, जिनमें से कतिपय हैं:-

मौर्य साम्राज्य :-

मौर्य साम्राज्य का संस्थापक चन्द्रगुप्त था। यह चन्द्रगुप्त कौन था? इसको लेकर इतिहासकारों ने विभिन्न मतों की कल्पना की जहां कुछ आधुनिक इतिहासकारों ने उन्हें क्षुद्र वंशीय घोषित किया है, वहां जैन और बौद्ध ग्रंथों में उन्हें क्षत्रिय लिखा गया है किन्तु इतिहासकार नगेंद्रनाथ वसु ने अकाट्य प्रमाण प्रस्तुत करते हुए कहा है कि मौर्य साम्राज्य के संस्थापक सम्राट चंद्रगुप्त न क्षुद्र थे, न क्षत्रिय, अपितु वे वैश्यकुलोत्पन्न थे। उनका मत है कि पारस्कर गृह्यसूत्रों के अनुसार नाम के अंत में गुप्त उपाधि का होना उसके वैश्य होने का परिचायक है।गिरनार पर्वत से मिले एक प्राचीन शिलालेख से पता चलता है कि चंद्रगुप्त मौर्य का विवाह एक वैश्य कन्या से हुआ था और उनके साले का नाम पुष्यगुप्त था, जो वैश्यवंशी था। इसी प्रकार के अनेक तर्क देकर डा. नगेन्द्रनाथ वसु ने प्रमाणित किया है कि भारत वर्ष में सबसे प्रथम एकच्छत्री साम्राज्य स्थापित करने वाला, भारतीय इतिहास का प्रथम प्रतापी सम्राट वैश्यकुलोत्पन्न ही था। उसने न केवल यूनानियों को पराजित किया अपितु उनके शासक सेल्यूकस को पराजित कर उसकी पुत्री हेलन से विवाह किया।

इसी मौर्य वंश में विम्बसार, सम्राट अशोक जैसे महान राजा उत्पन्न हुए, जिन्होंने अपने श्रेष्ट शासन एवं प्रजावत्सलता द्वारा भारतीय शासन में विशेष स्थान प्राप्त किया। अशोक ने बौद्धधर्म एवं सत्य तथा अहिंसा के प्रचार-प्रसार के लिए जो कुछ किया, सर्वविदित ही है। उसने स्वयं अपना विवाह विदिशा की एक वैश्य श्रेष्टि कन्या से किया था।

गुप्त काल - भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग

गुप्तकाल भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग माना जाता है। वैसे तो इस काल के राजाओं की जाति को लेकर अनेक मतभेद हैं किन्तु ऐतिहासिक प्रमाणों से पता चलता है कि गुप्तवंशी शासक वैश्य सम्राट ही थे। जैसा की उनकी उपाधि से ही स्पष्ट हैं, वे वैश्य वंशी थे, क्योंकि मनुस्मृति बोधायन गृहसूत्र तथा पारस्कर संहिता में उललेख मिलता है- वैश्यान्त! गुप्तेति! इस वंश के सभी राजाओं ने गुप्त उपाधि का प्रयोग कर अपना वैश्य होना प्रकट किया हैं। मंजुश्री कल्प नामक ग्रंथ में उनके वैश्य होने तथा एक शिलालेख में प्रभावती गुप्ता का धारण गोत्र का उल्लेख इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि वे धारण गोत्री ही थे, क्योंकि यह गोत्र वैश्यों में ही मिलता है।

इसके अलावा गुप्त वंशजों का उदय उत्तरी भारत में माना जाता है। अग्रसेन जी का राज्य भी हिमालय से गंगा-यमुना तक, पश्चिम में मारवाड़, पूर्व में आगरा तथा दक्षिण में अग्रोहा तक था। इसमें उनके अग्रवंशी होने का परिचय मिलता है।

श्री गुप्त ने महाराजा की पदवी धारण की। उनका शासन 275 से 300 ई माना जाता है। इसका पुत्र घटोत्कच लगभग 300 से 319 ई तक था।

सम्राट चन्द्रगुप्त प्रथम- इसी वंश में महान प्रतापी सम्राट चंद्रगुप्त प्रथम (320 से 335 ई.) हुआ, जिसने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की और पाटलीपुत्र, वैशाली सहित बिहार, उत्तर प्रदेश तथा बंगाल के अनेक भागों को मिला कर राज्य का विस्तार किया। उसने अपने नाम से गुप्त सम्वत् का प्रवर्तन किया। स्वर्ण मुद्राओं का प्रचलन किया।

समुद्र गुप्त- चंद्रगुप्त प्रथम का यशस्वी पुत्र समुद्रगुप्त हुआ, जिसने आसमुद्र दिग्विजय पताका फहराकर अथाह पराक्रम का परिचय दिया। उसे भारतीय इतिहास का नेपोलियन कहा जाता है। उसने सैंकड़ों राज्यों पर विजय प्राप्त करते हुए लगभग 3000 मील से अधिक की दिग्विजय यात्रा की और एक बार भी पराजित नहीं हुआ और न ही कभी रणक्षेत्र से कदम पीछे हटाया।

चन्द्रगुप्त द्वितीय- समुद्रगुप्त के बाद चन्द्रगुप्त द्वितीय हुआ, जिसने 36 वर्ष तक शासन किया। यह वही चन्द्रगुप्त था, जो इतिहास में विक्रमादित्य के नाम से प्रसिद्ध है और जिसकी न्यायप्रियता की गाथायें आज भी प्रचलित है। इसी चंद्रगुप्त विक्रमादित्य ने विक्रम सम्वत् का प्रचलन कर इतिहास में एक नये युग के प्रवर्तन का श्रेय प्राप्त किया। इसका काल सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक-सभी दृष्टियों से भारतीय राजनीति का स्वर्णयुग था और इस काल में विज्ञान, कला, शिक्षा, सभ्यता, संस्कृति सभी क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति हुई।

उसी के काल में चीनी यात्री फाह्यान आया। उसने लिखा है कि विक्रमादित्य के शासन काल में वह चौदह वर्षो तक नगरों, जनपदों, वनों, मार्गो में दुर्गम पथों पर चलता रहा किन्तु उसे कहीं भी एक बार चोर या डाकूओं का सामना नहीं करना पड़ा।

अन्य गुप्त सम्राट- महाराजा चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के बाद गुप्त वंश में कुमारगुप्त, स्कंदगुप्त, नृसिंह गुप्त, बुद्धगुप्त, कुमार गुप्त द्वितीय आदि अनेक शासकों ने राज्य किया। स्कंदगुप्त ने यत्रन, वाल्हिक, कुशान आदि विदेशी शक्तियों से लोहा लिया और उन्हें भूमि चाटने को विवश कर दिया। स्कंदगुप्त ने हूणों पर विजय प्राप्त की। कुमार गुप्त द्वितीय ने भी हूणों का सामना किया किन्तु धीरे-धीरे उसके राज्य की शक्ति कमजोर पड़ती गई और गुप्त वंश के शासन का अंत हो गया।

गुप्त वंश वास्तव में भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग था। इतिहासकार बर्नेट के अनुसार भारतीय इतिहास में गुप्त का का वही स्थान है जो यूनानी इतिहास में प्रेरीक्लीज और रोमन इतिहास में अगस्टस सीजर का है, मिसेंह स्मिथ के अनुसार गुप्त सम्राटों का युग निस्संदेह सर्वाधिक मानवीय एवं संतोषजनक था।

इस युग में विज्ञान, साहित्य, कला, संस्कृति, अर्थ, धर्म, सभी क्षेत्रों में पर्याप्त प्रगति हुई।

ज्योतिष के क्षेत्र में वैज्ञानिक आर्यभट्ट ने इसी काल में सूर्य तथा चन्द्रग्रहण के सम्बंध में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रतिपादन किया। भारतीय ज्योतिष के तीन स्तंभ-आर्यभट्ट,वराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त ने इसी काल में अपने ज्योतिष ग्रंथों की रचना की। आर्यभट्ट इस युग का पहला वैज्ञानिक था, जिसने पृथ्वी को गोल माना और अपनी धूरी पर घूमना सिद्ध किसा। अंक गणित, बीजगणित, ज्यामिति, त्रिकोणमिति आदि के क्षेत्र में भी आर्यभट्ट ने मौलिक खोज की। इसी काल में दशमलव सिद्धान्त का आविष्कार हुआ, जिसका संख्या शास्त्र में अत्यधिक

महत्व है। मूर्तिकला की दृष्टि से इस युग में अपूर्व उन्नति हुई। एलोरा और अजन्ता की गुफाओं की विश्वप्रसिद्ध चित्रकारी भी इस युग की देन है। बौद्ध गया के महाबोधि मंदिर का निर्माण हुआ। फाह्यायन के उल्लेखों से पता चलता है कि गुप्त शासकों ने सम्पूर्ण देश एवं अफगानिस्तान में सैंकड़ों बौद्ध स्तूपों, विष्णु एवं शिवमन्दिरों का निर्माण कराया था।

मनुष्यों के लिए ही नहीं पशु पक्षियों के लिए भी चिकित्सालयों का निर्माण इस युग के उदार दानदाता राजाओं द्वारा कराया गया।

कला एवं धातु विज्ञान की दृष्टि से मेहरौली का लौह स्तंभ इस युग का उत्कष्ट नमूना है। नालंदा में स्थापित 80 फुट ऊंची लंबी ताम्बे से बनी बुद्ध की मूर्ति धातु विज्ञान की उन्नति का एक और प्रमाण है।

संक्षेप में गुप्त काल के इस युग में भारतीय सीमाओं का जो विस्तार हुआ, धार्मिक दृष्टि से पारस्परिक सद्भाव देखने को मिला, वैसा अन्य युग में दुर्लभ है।

वर्द्धन वंश - दान धर्म की पराकाष्ठा -

गुप्त काल के बाद भी अग्र /वैश्य कुल द्वारा राज्य की यह परम्परा अविरत रूप से किसी न किसी रूप से चलती रही। गुप्त काल के पतन के बाद 569 ई. में वर्द्धनवंश का उल्लेख मिलता है मञ्जुश्री कल्प एवं अन्य ऐतिहासिक प्रमाणों से सिद्ध होता है कि वर्द्धन वंशी सम्राट गुप्त वंश के दौहित्र थे और उनका सम्बन्ध वैश्य समुदाय से था। राय गोविन्दचन्द्र ने उन्हें धारणगोत्री बताया है, जो अग्रवालों का एक गोत्र है। हर्ष चरित्र में भी वाणभट्ट ने हर्ष को वैश्यकुलोत्पन्न बताया है।

इस काल में आदित्यवर्द्धन, प्रभाकरवर्द्धन, राज्यवर्द्धन, हर्षवर्द्धन जैसे अनेक यशस्वी सम्राट हुए। इनका राज्य थानेश्वर (कुरुक्षेत्र) थी, जो अग्रोहा के बिल्कुल समीप है। हर्षवर्द्धन का शासन काल 606 ई से 649 ई. तक का माना जाता है। कहा जाता है , वह उत्यंत ही उदार और प्रतापी सम्राट था। उसने अपने बल और पराक्रम से कलिंग और दक्षिण कौशल जैसे राज्यों पर आधिपत्य स्थापित किया और चक्रवर्ती सम्राट बनने की इच्छा से उसने उत्तर तथा दक्षिण के अनेक राज्यों पर अधिकार कर लिया था किन्तु अंत में दक्षिण के राजा पुलिकेशी से उसे पराजय का सामना करना पड़ा था। उसके राजय में बड़े बड़े विद्वान सुशोभित होते थे। वर्द्धनवंश का राज्य 700 ई. तक रहा। उस समय के उल्लेखों से पता चलता है कि हर्षवर्द्धन परम विद्यानुरागी और दानी,सम्राट था। वह हर चौथे वर्ष क्रम पर जाया करता था तथा अपना सर्वस्व, यहां तक कि वस्तत्र भी दान कर देता था।

अन्य वंश

इतिहास में अन्य अनेक वैश्य राजवंशों का भी उल्लेख मिलता है। मालवगण के संस्थापक मैत्रक, वैश्य ही थे। इनकी ख्याति वल्लभी नाम से हुई और इस वंश में ध्रुवसेन, महासेन, शिलादित्य आदि अनेक राजाओं ने 525 ई. से लेकर 767 तक राज्य किया।

वैश्य वंश की एक शाखा काकाटक वंश भी थी, जिसने 7वीं सदी तक राज्य किया। दक्षिण पश्चिम का नागंवश भी वैश्य राज्य था। डा. काशीप्रसाद जायसवाल एवं अन्य इतिहासकारों ने प्रमाणित किया है कि सुप्रसिद्ध नागंवशी सम्राट वैश्य ही थे और इस वंश ने 200 वर्ष तक शासन किया। ये नागवंशी सम्राट अत्यन्त ही यशस्वी थे। महाराजा अग्रसेन तथा उनके पुत्रों का विवाह नागवंश में ही हुआ था।

मध्यकाल और वैश्य अग्रवाल

(मुगल शासन-काल)

मुगल एवं अंग्रेजी शासनकाल में भी भारत में अनेक वैश्य तथा अग्रवाल, जिन्होंने अपने कार्यों से समाज का गौरव बढ़ाया, हुए। इस संदर्भ में झूंझनू के सेठ तुलसीराम जालान, पोद्दार वंश के प्रवर्तक सेठ रामचन्द्र, गोयन वंश के पूर्वज सेठ गोविन्दराय, खेतान वंश के सेठ खेतसीदास, नोपानी वंश के सेठ नोपचन्द्र, बागला वंश के सेठ बागमल, खेमका वंश के सेठ खेमचन्द, मानसिंहका वंश के सेठ मानसिंह आदि का नाम उल्लेखनीय है।

मुगलकाल में अग्रवाल वैश्य महत्वपूर्ण पदों पर थे। राज्य के अधिकांश मोदीखानों का उत्तरदायित्व उन्होंने संभाला हुआ था। युद्ध के समय वे ही सेना को अस्त्र-शस्त्र और रसद सामग्री पंहुचाने का कार्य करते थे। उन्हें समाज और प्रशासन दोनों में उच्च पद प्राप्त थे। यहां कतिपय ऐसे ही प्रतिष्ठित अग्रवालों का विवरण दिया जाता है-

मधुशाह -

ये अकबर के दरबार में थे। दरबार में इनका प्रभाव बढ़ा-चढ़ा था।

राजा रतनचन्द अग्रवाल-

मुगल सम्राट फरूखसियर के शासन काल में जानसठ के निवासी राजा रतनचन्द अग्रवाल अत्यन्त प्रभावी मनसबदार थे। उन्होंने प्रशासनिक और सैनिक दोनों क्षेत्रों में पर्याप्त प्रतिष्ठा अर्जित की। वे सैयद बंधुओं के घनिष्ठ मित्र थे। उन्होंने सैयद बंधुओं के साथ मुगल साम्राज्य के संचालन में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। मुगलसम्राट ने उनकी इस कार्यकुशलता से प्रसन्न हो उन्हें प्रथम दो हजारी, फिर पांच हजारी और बाद में राजा की पदवी प्रदान की। उन जैसा प्रभावी मनसबदार मुगलसाम्राज्य में अन्य कोई अग्रवाल नहीं हुआ। उन्होंने अग्रवालों के एक नये संगठन का प्रवर्तन भी किया, जो राजवंशी कहलाए।

देशभक्त भामाशाह -

भामाशाह की गणना भारत के उत्कृष्ट दानवीरों में होती है, जिन्होंने मातृभूमि की रक्षार्थ अपना सर्वस्व बलिदान कर देशभक्ति का श्रेष्टतम उदाहरण प्रस्तुत किया था। वे मेवाड़ के राजा महाराणा प्रताप के महामंत्री थे। उस समय मुगल सम्राट अकबर का शासन था। वह चाहता था कि महाराणा प्रताप उसकी अधीनता स्वीकार करे किंतु महाराणा प्रताप ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया।

इस पर 1576 ई. में अकबर ने राजा मानसिंह के नेतृत्व में अपनी सम्पूर्ण सेना राणा प्रताप से युद्ध के लिए भेज दी। हल्दीघाटी के मैदान में उनका भयंकर युद्ध हुआ। इस युद्ध में उनके समस्त साधन समाप्त हो गये यहां तक उनके पास सेना को देने के लिए वेतन भी न रहा किन्तु महाराणा प्रताप ने उसकी अधीनता स्वीकार नहीं की तथा अरावली की पहाड़ियों एवं दुर्गम जगहों में भटक कर आजादी की अलख जगाते रहे। यहां तक कि उन्हें घास की रोटियां तक खानी पड़ीं।

जब भामाशाह को इस तथ्य की जानकारी मिली तो उन्होंने अपनी सारी धन-दौलत महाराणा प्रताप के चरणों में लाकर रख दी और कहा -यह सब धन मातृभूमि की रक्षार्थ है। इससे महाराणा प्रताप ने अपनी सेना को

पुनः संगठित किया तथा मुगल सेना का सामना करते हुए पुनः मेवाड़ पर अधिकार कर लिया।

प्रधानमत्री भामाशाह स्वयं भी तलवार लेकर उने साथ लड़े। इस प्रकार भामाशाह ने मातृभूमि के प्रति प्रेम और त्याग का सर्वोच्च आदर्श प्रस्तुत किया। इसलिये शताब्दियों बाद आज भी उनका नाम उच्चकोटि के देशभक्तों तथा दानवीरों में अमर है तथा अब जब भी देश की रक्षा के लिए त्याग और बलिदान की बात आती है, उनका नाम आदर और सम्मान के साथ लिया जाता है।

राजा हेमचन्द्र विक्रमादित्य-

हेमचन्द्र विक्रमादित्य, जिसे हेमू भी कहते हैं, रेवाड़ीका निवासी था। शेरशाह सूरी की मृत्यु के बाद उसके पुत्र इस्लामशाह ने उसे 1545 में अपनी सेना के रसद विभाग में नियुक्त किया तथा बाद में वह अपने कौशल से सेना में प्रधान सेनापति जैसे उच्च पद पर पहुँच गया।

इस्लामशाह की मृत्यु के बाद उसका पुत्र आदिलशाह सूरी उसकी स्वामिभक्ति और ईमानदारी से इतना प्रसन्न हुआ कि उसने हेमू सेनापति के साथ प्रधानमंत्री का पद भी सौंप दिया। उसने अपनी कुशलता से अफगान सेना का दिल जीत लिया । 1556 में दिल्ली में जब हुँमायूँ की मृत्यु हुई, उस समय उसका पुत्र अकबर पंजाब में था।

वीर हेमू ने हुमांयू की अनुपस्थिति में अपने आपको दिल्ली का सम्राट घोषित कर दिया तथा विक्रमादित्य की उपाधि धारण की। इस पर हेमू का हुमांयू की सेना के साथ युद्ध हुआ किंतु जब मुगल सेना हारने लगी तो स्वयं अकबर और उसके सेनापति बैरामखां ने युद्ध का मोर्चा संभाला और पानीपत के मैदान में उसका उनके साथ भीषण युद्ध हुआ। यह युद्ध 5 नवम्बर 1556 को हुआ। इसे पानीपत का द्वितीय युद्ध भी कहा जाता है।

इस युद्ध में हेमू बड़ी वीरता से लड़ा किंतु दुर्भाग्यवश उसकी आंख में एक तीर लगा और रक्त की धार बहने लगी। हेमू मूर्च्छित होकर युद्धभूमि में गिर पड़ा। उसकी सेना में भगदड़ मच गई। यद्यपि अकबर ने विरोध किया फिर भी बैरामखां ने घायल हेमू का सिर काट डाला, हेमू की मृत्यु हो गई। दिल्ली और आगरा पर पुनः अकबर का अधिकार हो गया।

इस प्रकार दिल्ली में सम्राट हेमचन्द्र विक्रमादित्य सूर्य के राज्य का अंत हो गया। हेमू लगभग 10 माह तक दिल्ली का सम्राट रहा । उसने चुनार से लेकर दिल्ली तक 22 युद्ध लड़े तथा विजय प्राप्त की तथा महान वीरता और पराक्रम का परिचय दिया, किंतु भाग्य ने उसका साथ नहीं दिया और 23वें युद्ध में आंख में तीर लगने से परास्त हो गया, अन्यथा आज भारत का इतिहास कुछ दूसरा ही होता और हम आज जिन आतंक आदि समस्याओं का सामना कर रहे है। संभवतः, उनका अस्तित्व न होता। वह एक सैनिक से सेनानायक, प्रधानमंत्री तथा महान सम्राट बना और उसने अपने पराक्रम से वीर विक्रमादित्य की उपाधि धारण कर भारत के वैश्य समाज को गौरवान्वित किया। उसका नाम भारतीय इतिहास में सदैव देदीप्यमान रहेगा।

रायबहादुर कानीराम-

मुगल सम्राट शाह आलम के शासनकाल (सं. 1816 से 1863) में राजा कानीराम बिहार सूबे के नायब दीवान थे। ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने उन्हें राजा बहादुर की उपाधि प्रदान की थी। इसी समय दिल्ली के

जयसिंह अग्रवाल दीवान के प्रशासनिक पद पर नियुक्त थे। सम्राट शाह आलम ने उन्हें शाही तोपखाने का हाकिम बनाया था। उनके वंशज आज भी इसी कारण तोपखानेवाले कहलाते हैं।

दीवान नन्नूमल-

इतिहास से ज्ञात होता है कि सिक्ख राज्य पटियाला की गद्दी पर जब सन् 1765 में अमरसिंह आसीन हुए तो उन्होंने लाला नन्नूमल को अपना दीवान नियुक्त किया था। लाला नन्नूमल में जहाँ अद्‌भुत प्रशासनिक योग्यता थी, वहाँ वीरता और सैन्य संचालन में भी वे अनुपम थे। उन्होंने अनेक युद्धों में सफलता प्राप्त कर पटियाला राज्य का विस्तार किया था। यहाँ तक कि उन्होने दिल्ली के मुगल सम्राट के अधीनस्थ फतेहाबाद, सिरसा, हांसी और हिसार जैसे महत्वपूर्ण नगरों को भी पटियाला राज्य में सम्मिलित कर लिया था। ऐसा कहा जाता हैं कि उन्होंने अग्रोहा की रक्षार्थ एक किला बनवाया था, जो बाद में नष्ट हो गया और जिसके ध्वंसावशेष आज भी अग्रोहा के खण्डहरों में मिलते हैं।

इस युग में लाला नाढ़ोमल-गुड़वाला, सेठ पतरामदास-भिवानी, बाबू मनोहरदास शाह-बनारस, लाला पीरूमल-ईलाहाबाद, दीवान परतीराय तथा दीवान जादोराय, राजा शिव प्रसाद बहादुर-बिजनौर, लाला फतेहचन्द-सिरसा, राय ख्यालीराम बहादुर, राजा पटनीमल बहादुर, लाला अमी चंद शाह, गोविन्दचंद दीवान, हट्टीराम जी, दलपतराय कानूनगो आदि अन्य अनेक विभूतियां हुई।

लाला नाढ़ोमल गुड़वाले-

लाला नाढ़ोमल गुड़वाले के विषय में प्रसिद्ध है कि वे अत्यंत ही सम्पन्न रईस थे और करोड़ों रूपये समय-समय पर शाही परिवारों को बिना ब्याज देते रहते थे। उनकी हुण्डी सम्पूर्ण भारत में चलती थी और दान धर्म के क्षेत्र में भी उनका नाम अग्रणी था। उन्होंने स्थान-स्थान पर पशुओं के लिए गुड़ बंटवाने की व्यवस्था कर रखी थी। इसलिए उनका खानदान गुड़वालों के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

लाला राधाकृष्ण गुड़वाले-

लाला राधाकृष्ण तथा छीतरमल गुड़वाला ने सन् 1732 में जब, मुहम्मदशाह अब्दाली ने मथुरा में भारी लूट-पाट मचाई, उस समय दीन-असहायों की खूब सहायता की और जगह-जगह कुंओं, बगीचों, धर्मशालाओं आदि का निर्माण करा अतिशय दानवीरता का परिचय दिया था।

सेठ पतरामदास, भिवानी-

सेठ पतरामदास भिवानी अपने समय के सुप्रसिद्ध व्यापारी थे। उस समय जबकि यातायात के साधनों का अभाव था, देश के कोने-कोने में आपकी 52 कोठियां फैली हुई थीं। आपने ही संवत् 1874 में भिवानी मण्डी की नींव डाली थी। आज भी भिवानी में इनके नाम से पतरामदास बाजार और पतरामदास बारद विद्यमान हैं।

लाला फतेहचन्द-

लाला फतेहचन्द का परिवार सिरसा का प्रसिद्ध खानदानी परिवार था। आपने सिरसा को आबाद करने में विशेष योगदान दिया था। इन्हें इनकी प्रतिष्ठा के अनुरूप खजांची पद पर नियुक्त किया गया और आपका परिवार खजांची वालों के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इनके पुत्र श्री रामसुखदास ने भी पर्याप्त प्रतिष्ठा अर्जित की।

लाला हट्टीराम जी, तोपखानावाले-

इसी प्रकार लाला हट्टीराम जी जींद स्टेट में दीवान रहे। इनका वहाँ बहुत प्रभाव था। बाद में इनका खानदान तोपखानावाला के नाम से विख्यात हुआ।

रायबहादुर शंभुप्रसाद आसफजाही-

आप हैदराबाद निजाम में प्रतिष्ठित पद पर थे। बादशाह ने आपकी कार्यकुशलता से प्रसन्न हो आपको आसफ शाही की उपाधि प्रदान की थी।

राय इन्द्रमन-

आपको दिल्ली के मुगल दरबार में दीवान का महत्वपूर्ण पद प्राप्त था। आपको शाहजहां ने राजा की उपाधि से विभूषित किया था।

सेठ मिर्जामल पोद्दार-

सेठ मिर्जामल पोद्दार महाराजा रणजीतसिंह के अत्यंत विश्वासपात्र व्यक्तियों में से थे। महाराजा ने प्रसन्न हो आप को नगारे का निशान तथा मोतियों का हार भेंट में दिया था।

अंग्रेजी शासन-काल और अग्रवाल

अंग्रेजी शासन काल में भी अनेक अग्रवालों ने विभिन्न क्षेत्रों में पर्याप्त प्रतिष्ठा अर्जित करने के साथ अपार वैभव का भी अर्जन किया था। ऐसे व्यक्तियों में पटना और बनारस के गोविंद राय एवं उनके यशस्वी पुत्र पटनीमल, बंगाल के सेठ अमीचंद, दिल्ली के लाला सालिगराम खजांची, लाला हरसुखराय जैन, मेरठ के लाला दलपतराय, लखनऊ के शाह गोविन्दचन्द्र तथा शाह कुंदन लाल आदि नामों का उल्लेख ही पर्याप्त है।

राजा ख्यालीराम बहादुर-

राय ख्यालीराम बहादुर को ब्रिटिश शासन में डिप्टी गवर्नर का सम्मानपूर्ण पद प्राप्त हुआ और लार्ड क्लाईव ने उनके कार्यो से प्रसन्न हो उन्हें राजाबहादुर का सम्मान प्रदान किया था। ये पटना के दीवान भी रहे।

राजा पटनीमल-

राय ख्यालीराम के ही पुत्र राजा पटनीमल बहादुर थे। सन् 1803 में मेजर जरनल बेलेजली के साथ अवध गोहद और ग्वालियर के महाराजाओं के साथ जो संधियां हुई, उनमें आपका विशेष योगदान रहा। आप अत्यन्त ही धार्मिक प्रवृति के थे। आपने कई मंदिरों, तालाबों का निर्माण कराया। मथुरा में 3,00,000 रूपये की लागत से सुप्रसिद्ध शिवताल तालाब तथा बनारस जिले की कर्मनाशा नदी पर पत्थर का मजबूत बांध बनवाया, जिसकी सरकार ने भी प्रशंसा की और प्रसन्न होकर आपको राजा की उपाधि प्रदान की। दिल्ली में अब भी इनके नाम से पटनीमल की हवेली तथा गली मिलती है।

लाला अमीचन्द-

लाला अमीचंद मुगल साम्राज्य के पतन के साथ बंगाल के प्रतिष्ठित सेठों में थे। इनका दिल्ली दरबार से गहरा सम्बन्ध था। 1636 में जब शाहजहां का पुत्र शाहशुजा बंगाल का सूबेदार बना तो आपके पूर्वज भी बंगाल चले आये थे। इन्होंने व्यापार द्वारा इतनी सम्पत्ति अर्जित कर ली थी कि अंग्रेज व्यापारी भी इनसे ऋण लेकर बंगाल में अपना व्यापार करते थे। सुप्रसिद्ध कवि भारतेंदु हरिश्चन्द्र आपके कुल में ही पैदा हुए थे।

वैश्य समाज का वर्ग-उपवर्ग में विभाजन तथा विभिन्न घटकों का निर्माण

प्रारम्भ में चार वर्णो में वैश्य वर्ण एक था। उसमें अग्रवाल, खण्डेलवाल, माहेश्वरी, राजवंशी, ओसवाल आदि किसी प्रकार का विभाजन, उपविभाजन नहीं था। किंतु शनैः शनैः विभिन्न कारणों से यह समाज वर्गों-उपवर्गों, जातियों आदि में विभक्त होता गया। प्रारम्भ में जैन ग्रंथों में इस प्रकार की 84 वैश्य जातियों का उल्लेख मिलता है किंतु बाद में इनकी संख्या सैंकड़ों में हो गई और वर्तमान में इनकी संख्या 380 के लगभग मानी जाती है।

वैश्य समाज में इन जातियों के विभाजन के अनेक कारण हैं, जिनमें प्रमुख हैं -

(1) **व्यवसाय के भेद के आधार पर :-** जैसे केशर का व्यापार करने के कारण केशरवानी, लोहे का व्यापार करने के कारण लोहिया, रसद (खाद्य सामग्री) का व्यापार करने के कारण मोदी, मोदक का व्यवसाय करने के कारण मोदनवाल, कांसे का व्यापार करने के कारण कंसौधन , तेल का व्यवसाय करने के कारण -तैलिक वैश्य, कत्थे का व्यापार करने के कारण कथ, स्वर्ण का व्यवसाय करने के कारण स्वर्णवणिक।

(2) **श्रेणी विभाजनः-** प्रारम्भ में कृषि गोपालन व्यवसाय - वैश्यों के प्रमुख कार्य थे, किंतु समय के साथ नये नये उद्योग धंधों का विकास हुआ तथा बाद में इन व्यवसायियों और शिल्पियों ने पृथक पृथक इकाई बना कर अपने आपको श्रेणी के रूप में संगठित कर लिया, जिससे समाज में नये नये वर्गों-उपवर्गों का गठन होने लगा। यहां तक कि इन श्रेणियों के नियम, कानून, कायदे भी अलग अलग होते थे। इस प्रकार वैश्यसमाज में विभिन्न वर्गो उपवर्गो का गठन हुआ और अनेक नई जातियां बनीं। बारहसेनी,चौसेनी, यज्ञसेनी, शूरसेनी आदि इसी प्रकार की जातियां हैं।

(3) **जनपद + स्थान आदि के आधार पर :-** भारत में अनेक वैश्य जातियों का गठन उनके जनपद, स्थान, क्षेत्र विशेष आदि के नाम पर हुआ है। वैश्य समुदाय के लोग शनैः शनैः, व्यापार उद्योग के लिए दूर-दूर विभिन्न स्थानों, क्षेत्रों, जनपदों में जाने लगे तथा वहां स्थायी रूप से बसने तथा वहां की वेषभूषा-खानपान-रीति-रिवाज अपनाने के कारण उनका नाम उस जनपद अथवा पूर्व जनपद के आधार पर प्रचलित होने लगा।

इस प्रकार वैश्य समाज के अनेक नई जातियों-उपजातियों का सृजन हुआ।

इनमें से कतिपय निम्न हैं। इन जातियों में प्रायः प्रथम नाम उस जनपद या स्थान विशेष को प्रकट करता है, जैसे-

अग्रोहा से	-	अग्रवाल
खण्डेला से	-	खण्डेलवाल
ओसिया से	-	ओसवाल
माहोरगढ़ से	-	माहोर
रोहतक से	-	रोहतगी, रस्तोगी
जायस से	-	जायसवाल
मथुरा से	-	माथुर
कन्नोज से	-	कान्यकुब्ज

मोढ़ेरा से	-	मोढ़
बरण (बुंदेलखण्ड से)	-	बरणवाल
अयोध्या से	-	अयोध्यावासी
मारवाड़ से	-	मारवाड़ी

धर्म, मत आदिपुरुष आदि के आधार पर :-

धर्म मान्यताओं आदि के आधार पर अनेक जातियों-उपजातियों आदि का निर्माण हुआ। इसके अलावा अनेक जातियां ऐसी है, जो अपनी अथवा अपनी उत्पति का सम्बंध किसी महापुरुष, देवता आदि के नाम से जोड़ती हैं और उससे अपनी वंशपरम्परा का उद्‌भव बताती है। जैसे

जैन धर्म से	-	जैन
भगवान महेश से सम्बन्ध के कारण	-	माहेश्वरी
वृष्णि (अकूर जी) से सम्बन्ध होने के कारण	-	वार्ष्णेय
आर्य समाज को मानने वाले	-	आर्य

इसी प्रकार एक पूर्व पुरुष से उत्पन्न होने के कारण भी कई जातियों का गठन किया गया है।

सामाजिक विचारधारा एवं मान्यताओं में अंतर -

प्राचीन समय में जाति-पाति आदि के आधार पर सामाजिक मान्यताएं भिन्न-भिन्न थी। लोम-अनुलोम, विवाह, विधवा विवाह, आचार-विचार, व्यवहार भिन्नता आदि के कारण जातियों की श्रेणीयों का निर्धारण होता था। जिस जाति के लोग सामाजिक आचार-विचार, परम्पराओं का उल्लंघन करते थे, उन्हें जाति से बहिष्कृत कर दिया जाता था और वे नई जाति का गठन कर लेते थे। इस प्रकार नई-नई जातियों का सृजन होता रहता था। विशेष कर मुस्लिम काल में इस प्रकार से जातीय बंधनों की कट्टरता से अनेक नये -वर्गों-उपवर्गों का गठन हुआ। इसी प्रकार रूढ़िवादी और सुधारवादी लोगों में संघर्ष से भी नई-नई जातियों का गठन होता रहता था। अन्तरजातीय विवाह, विधवा विवाह, औसर-मौसर आदि से भी अनेक नये संगठन बनते रहे थे।

उदाहरण के रूप में राजा रजनचंद का बादशाह फरूखशियर के साथ विशेष सम्बंध था। इसलिए उनके खान-पान, वेशभूषा आदि पर मुस्लिम संस्कृति का प्रभाव था। इसके अलावा वे सुधारवादी विचारधारा के थे और समाज में कुरीतियों का विरोध करते थे। इस कारण से समाज के सुधारवादी लोगों को उनका यह व्यवहार पसंन्द नहीं आया और उन्होंनें राजवंश से सम्बन्धित होने के कारण राजवंशी के नाम से एक नये वर्ग का गठन कर लिया।

इसके अलावा अल्ल, बंक आदि विभिन्न आधारों पर भी वैश्य समुदाय का विभिन्न जातियों में विभाजन हुआ।

वर्तमान समय में जबकि जाति-पांति आदि का भेद समाप्त होने लगे हैं, वैश्य समाज में व्याप्त ये भेद-विभेद समाप्त होने लगे हैं और विभिन्न वर्गो के समूह एक दूसरे के नजदीक आने लगे हैं। रोटी-बेटी के सम्बंध भी परस्पर होने लगे है। समाज में शिक्षा के प्रसार एवं विश्व के एक हो जाने से संकीर्ण विचारधारा में परिवर्तन होकर सभी मानव एक समान है और जाति-जाति में कोई अंतर नहीं है, इस प्रकार की विचार धारा पनपने लगी है। संगठन के महत्व ने सभी संकीर्ण मतभेदों को भूलाकर विभिन्न जातियों को एक झंडे के नीचे खड़े होने के लिए बाध्य कर दिया है। विभिन्न वर्गो-उपवर्गो का एकीकरण की भावना पनपने लगी है।

इसी का परिणाम है कि अग्रोहा को अब सभी 362 वैश्य समुदायों का धाम घोषित कर दिया गया है और सम्पूर्ण वैश्य समाज एक है, इस प्रकार की भावना पनपने लगी है।

प्रमुख वैश्य घटक

(362 वर्गों की सूची)

1. अग्रवाल
2. राजवंशी
3. बरणवाल
4. माहेश्वरी
5. ओसवाल
6. खण्डेलवाल
7. विजयवर्गीय
8. माहुर,माहौर
9. माथुर
10. श्रीमाल
11. रस्तोगी, रोहतकी
12. गहोई
13. कदीमी अग्रवाल
14. गिंदोडिया अग्रवाल
15. बारहसेनी
16. गृड़िया
17. चुरूवाल
18. श्रावक
19. गुजराती
20. धाकड़ (माहेश्वरी)
21. मेड़तवाल
22. कोलवार
23. जांगड़े
24. पुरूवाल
25. भगेरवाल
26. मोढ़
27. पल्लीवाल
28. नरसिंहपुर जैनी
29. कुमारतनय
30. पद्मावती
31. दसोरे
32. चौसेनी
33. डीडू
34. केसरवानी
35. शिवहरे
36. गुलहरे
37. गोलवारा
38. महाजन
39. यज्ञसेनी
40. कान्यकुब्ज
41. दौसर
42. लोहिया
43. मेहता
44. बाथम
45. कंसौधन
46. ओमर
47. नेभे
48. पोकरे
49. सिंहपूरे
50. अटोडे (जैनी)
51. खटोडे
52. नागर
53. चुरूवाल (17 भी)
54. लोहानियां
55. ग्वारे माहौर
56 महावर
57. माहुरी
58. रौनियार
59. जायसवाल
60. चौरसिया
61. तैलिक
62. अयोध्यावासी
63. अवधिया
64. अवधपुरिया
65. सुनमानीय
66. चतुश्रेणी माहौर
67. अग्रहरि
68. मध्यदेशीय
69. शौण्डिक
70. भगत
71. आर्यवैश्य
72. कोमटी
73. महाराजन
74. मिहिर
75. मिहिरया
76 मडर
77. मौर्य
78. महावणिक
79. उसमार
80. कुंवरे
81. खोबी
82. पिसरवानी
83. शूरसेन
84. बरसानी
85. काठ
86. जमेय
87. कमलपुरिया
88. कथ
89. गुड़िया
90. कपोला
91. पुरातन
92. खण्डायत
93. हरसोरा
94 गोभुज
95 ठाकुरी
96 सेठी
97. लिगायत
98. अडाजल
99. आनेपवाल
100. अजमेरा
101. अडोरा
102. अटाचर
103 अडालिया
104. अचतवाल
105 अरचितवाल
106 उनवाल
107 अढ़य
108. उर्वला
109 इन्दौरिया
110 कठेरवाल
111. कुरमी बनिया
112 काकरिया
113 कजोहीवाल
114. कम्बोवाल
115. करनेरा
116. कन्दोईया
117 कथोला
118. कठोरा

119 करटीवाल
120. ककोला
121 कोलापुरी
122. कुन्थतर
123. कपाड़िया
124. कुरवार
125. कसमीरी
126 काणु, कानु
127. काखना
128. कादू
129 खडेता
130 खातरवाल
131 खोची
132 खाखा
133 खेमवाल
134. खडायचा
135. खेरवाल
136. गोलपुरी
137. गसोरा
138. गुजाखा
139. गंगेरवाल
140. गोगवार
141. गबचक
142. गजेरा
143 गौरी
144. गौरत
145. गढ़वाली
146. गंगराड़ा
147. गूजरवाला
148. गांधरिया
149. गोलाई
150. गोरखे
151. गंगापारी
152. गोहले
153. ग्रामी
154. चित्रवाल
155. चौलोड़िया
156. चक्कचाप
157. चकोडे
158. चतुरथ
159. तलनड़ा
160. नचत्ररा
161. चीतोड़ा
162. पोरवाड़
163. छोंटी
164 जारोला
165. जीवणवाल
166. जैतवाल
167. जम्बू
168. जेमा
169. जनोरा
170. जमनिया
171. जैतीसवार
172. जलहरी
173. जागोपारी
174. झालियार
175. जलोरा
176. झरोल
177. टटार
178. टकचाल
179. टाटोरिया
180. टीटोडा
181. ठठवाल
182 ठाकरवाल
183. ठाकर
184. डीडोरिया
185. डीसावल
186. डेढ़ोउमर
187. डाबसीवेस
188. द्वारिकावासी
189. कमलापुरी
190. दसारा
191. दोइलबाय
192 देशवाल
193. दासादी
194. देवारी
195. दिल्लीवाल
196. धवल
197. धारवाल
198. धाड़ी
199. धोई
200. धवलकोष्ठी
201. नागेन्द्रा
202. नाधोरा
203. नारोढ़ा
204. नरसिया
205. नराया
206. नाथचल्ला
207. नहामे
208. नागदवहि
209. नवामरा
210. नोटिया
211. नाछिला
212. नागनहेसा
213. नाणी
214. ताड़रा
215. पाटोलिया
216. पदमीरा
217. पतेवाल
218. पंयचवाल
219. पुष्करवल
220. परवाल
221. पवाचिया
222. पिवदी
223. पड़चिया
224. तंचम
225. पासरा
226. परवता
227. पधारा
228. पांतीवाल
229. पौकर
230. प्रवरा
231. प्रहराव
232. पटानिया
233. पटनापुरी
234. पंचमपोखरा
235. गडदास
236. बैसबनिया
237. बडेसा
238. बुढ़ल
239. बौगार
240. बहनकाया
241. बगबस
242. बावरिया

243. बारहमासी
244. वोहरा
245. बरगास
246. बदनोरा
247. झूगड़वल
248. भाकरिया
249. भवनगेह
250. भारीजा
251. भगोरवाल
252. भुंगडा
253. भृत्यनुरी
254. भाटिया
255. बटेवरा
256. भागऊ
257. भूगत
258. भ्रगाडी
259. मौध
260. मेहवाड़ा
261. मंगोरा
262. मांडांलिया
263. मेडारा
264. मटिया
265. माया
266. मथपर
267. मांडारा
268. मंडोहड
269. मैथल
270. मोरनवाल
271. भेडावाल
272. मिहिरवाल
273 भीरनवाल
274 मुईहार
275. मोरको
276. राजपुरी
277. रोथाई
278. रोगोरा
279. रूई
280. रामा
281. रहटी
282. रजिया
283. लाडीसाक
284. लाड
285. लुहारिनया
286. लाहू
287. लाकम
288. लवेच
289. वरुरी
290. विदियादा
291. वैश
292. बटीवारा
293 वयाद
294. बिसलवार
295. वोगरा
296. वर्णवरा
297. वघ्र
298. वसमी
299. वायेदा
300. वायेच
301. वाइस
302. बस्ता
303. वादरवाल
304. वाग्रीवा
305. वरीरी
306. वागरोरा
307. वदवइया
308. वपछवाल
309. वाचड़
310. वेडनारा
311. बाहोरा
312. वाल्मीबाल
313. वडेहा
314. बन्दरवाल
315. बारमाका
316 सोनी
317. सोजतवाल
318. सोहरवाल
319. सौराठिया
320. सूतल
321. सरहिया
322. सतवाल
323. सलाऊ
324. सरखरल
325. सुराणी
326. सौधत
327. सिलहखार
328. सान
329. सतीगुरू
330. सहेल
331. सडाइया
332. स्वरिव
333. सारेडवाल
334 सिगार
335. सेतवाल
336 सौनेया
337. साध
338. सारविया
339. सिरकटा
340. साचोरा
341. सुरसवाल
342. भीखण्ड
343. हलोरा
344. होहल
345. हरद
346. हाकरिया
347. हूम
348. हरसोरा
349. हरदुई
350. शेट्टी
351. सूद
352. पुतली
353. उड़िया वैश्य
354. बंगाली वैश्य
355. आसामी वैश्य
356. वाणी
357. वड
358. श्रवणेकर
359 तंतुवाय
360. गेरगॉवकर
361. कपिलेश्वर
362. बेरड़

विशेषः- इसके अलावा भी अनेक वैश्य घटक हैं जिनकी जानकारी मिलने पर पुस्तक के अगले संस्करण में समावेश किया जावेगा। यह सूची अधूरी है।

अग्रोहा के दर्शनीय स्थल

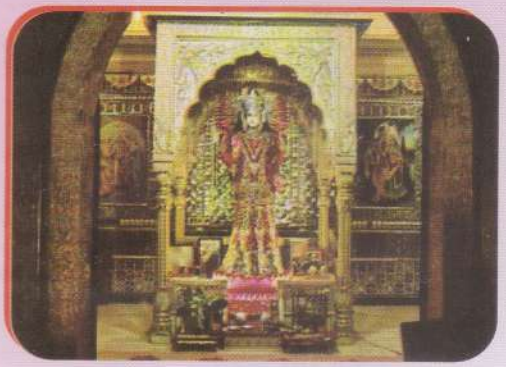

कुल देवी महालक्ष्मी

पंचमधाम अग्रोहा धाम

गंगाअवतरण

भगवान् मारूति प्रतिमा

शक्ति शीला माता मन्दिर

महाराजा अग्रसेन मेडिकल कॉलेज

पवित्र मन्दिर-देवालय

लक्ष्मी-नारायण (बिड़ला) मन्दिर, नई दिल्ली

श्रीरंगनाथ मंदिर, वृंदावन

श्री रंगनाथ वेणुगोपाल मन्दिर, पुष्कर

देलवाड़ा जैन मन्दिर, आबू

भारत माता मंदिर, काशी

महाराजा अग्रसेन बावड़ी

राष्ट्रीय स्वाधीनता सेनानी
एवं राजनीतिक विभूतियां

विश्ववंद्य महात्मा गाँधी

जमनालाल बजाज

शेरे पंजाब लाला लाजपतराय

राममनोहर लोहिया

राष्ट्ररत्न शिवप्रसाद गुप्त

ब्रिजलाल बियाणी
विदर्भ केसरी

कृष्णदास जाजू
गांधीवादी नेता

बी.डी. जत्ती
उपराष्ट्रपति, भारत

सुमित्रा महाजन
सांसद एवं अध्यक्ष लोकसभा

डा.धर्मवीर
राज्यपाल-पंजाब, हरियाणा, प. बंगाल, कर्नाटक

श्री श्रीप्रकाश
राज्यपाल-तमिलनाडु,महाराष्ट्र

मोहनलाल सुखाड़िया
मुख्यमंत्री-राजस्थान

श्रीमन्नारायण अग्रवाल
राज्यपाल- गुजरात

सुदर्शन अग्रवाल
राज्यपाल-उत्तराखण्ड एवं हिमाचल प्रदेश

रामप्रकाश गुप्ता
राज्यपाल-मध्यप्रदेश

रघुकुल तिलक
राज्यपाल-राजस्थान

सुन्दरसिंह भण्डारी
राज्यपाल-बिहार एवं गुजरात

गोपालकृष्ण गाँधी
राज्यपाल-पं. बंगाल

वीरेन जे. शाह
राज्यपाल-पं. बंगाल

पी. वैंकट सुबैया
राज्यपाल-बिहार, कर्नाटक

चंदभानु गुप्त
मुख्यमंत्री-उत्तर प्रदेश

बाबू बनारसी दास गुप्त
मुख्यमंत्री-उत्तर प्रदेश

प्रकाशचंद सेठी
मुख्यमंत्री-मध्य प्रदेश

सुन्दरलाल पटवा
मुख्यमंत्री-मध्य प्रदेश

तखमल जैन
मुख्यमंत्री-मध्य भारत

प्रमुख राजनीतिक विभूतियां

बनारसीदास गुप्त
मुख्यमंत्री- हरियाणा

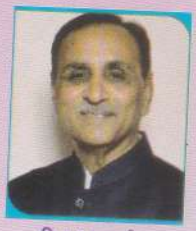

विजय रूपाणी
मुख्यमंत्री- गुजरात

अरविन्द केजरीवाल
मुख्यमंत्री- दिल्ली

रघुबरदास
मुख्यमंत्री-झारखण्ड

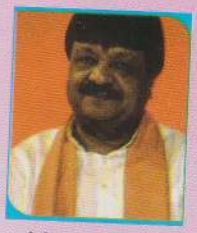

गोपीकृष्ण विजयवर्गीय
मुख्यमंत्री-मध्य भारत

शिवचरण माथुर
मुख्यमंत्री- राजस्थान

वीरेन्द्रकुमार सकलेचा
मुख्यमंत्री- मध्यप्रदेश

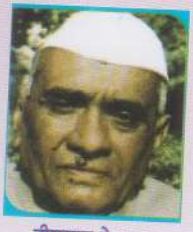

हीरालाल देवपुरा
मुख्यमंत्री- राजस्थान

सुशील कुमार मोदी
उपमुख्यमंत्री- बिहार

सतीशचंद्र अग्रवाल
केन्द्र राज्य वित्त मंत्री

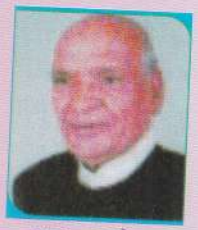

कृष्णकुमार गोयल
केन्द्रीय मंत्री

प्रेमचन्द गुप्ता
कम्पनी राज्य मंत्री

मुरली देवड़ा
पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री

संतोष बागड़ोदिया
केन्द्रीय कोयला मंत्री

सीताराम केसरी
केन्द्रीय समाज कल्याण मंत्री

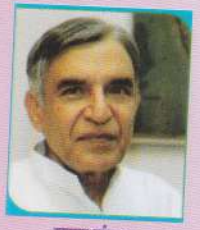

पवन बंसल
केन्द्रीय रेल मंत्री

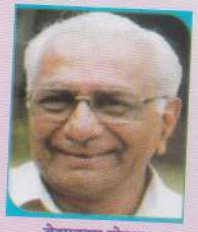

वेदप्रकाश गोयल
केन्द्रीय जहाजरानी मंत्री

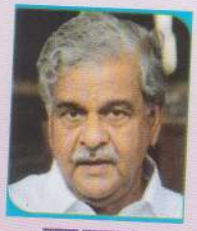

प्रकाश जायसवाल
केन्द्रीय कोयला मंत्री

चमनलाल गुप्ता
केन्द्रीय रक्षा राज्य मंत्री

अखिलेश दास
महासचिव, बसपा, उ.प्र.

मीलिन्द देवड़ा
केन्द्रीय राज्य मंत्री

प्रमोद महाजन
मंत्री, केन्द्र सरकार

चरतीलाल गोयल
अध्यक्ष, दिल्ली विधानसभा

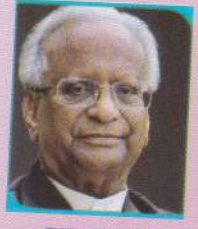

रामदास अग्रवाल
भाजपा नेता एवं कोषाध्यक्ष

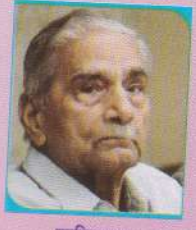

शान्तिभूषण
विधि मंत्री

प्रमुख राजनीतिक विभूतियां

पीयूष गोयल
केन्द्रीय रेल एवं कोयला मंत्री

डा. हर्षवर्धन
विज्ञान, पर्यावरण एवं भूविज्ञान मंत्री, केन्द्र

विजय गोयल
संसदीय कार्य मंत्री

नरेश अग्रवाल
महासचिव, समाजवादी दल

रामनिवास गोयल
अध्यक्ष, दिल्ली विधानसभा

ओमप्रभा जैन
वित्त मंत्री-हरियाणा

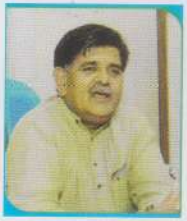

गुलाबचन्द कटारिया
गृहमंत्री-राजस्थान

कालीचरण सर्राफ
चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री, राजस्थान

राजेश अग्रवाल
वित्तमंत्री- उ.प्र.

किरण माहेश्वरी
उच्च शिक्षा एवं तकनीक मंत्री, राजस्थान

विपुल गोयल
उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री, हरियाणा

राजीव बिन्दल
स्वास्थ्य मंत्री, हिमाचल प्रदेश

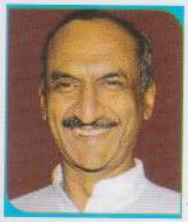

जयप्रकाश अग्रवाल
महासचिव कांग्रेस, दिल्ली

शान्तिलाल चपलोत
अध्यक्ष, राजस्थान विधानसभा

बृजमोहन अग्रवाल
कृषि मंत्री, छत्तीसगढ़

उमाशंकर गुप्ता
जनसंपर्क मंत्री, म.प्र.

कविता जैन
महिला, बाल विकास एवं सूचना मंत्री, हरियाणा

शरद जैन
स्वास्थ्य मंत्री, म.प्र.

अमर लाल अग्रवाल
नगरीय विकास मंत्री, छत्तीसगढ़

जवाहरलाल दरड़ा
मंत्री महाराष्ट्र

कवीन्द्र गुप्ता
अध्यक्ष, जम्मू एवं कश्मीर विधानसभा

ओम बिड़ला
संसदीय सचिव, राजस्थान

सुरेन्द्र पटवा
संस्कृति, पर्यटन मंत्री, म.प्र.

नन्दकिशोर गर्ग
सचेतक, भाजपा, दिल्ली

दिलीप गांधी
केन्द्रीय मंत्री

भारतीय उद्योग जगत के गौरव

जगतसेठ माणकशाह फतेहचंद
मुर्शिदाबाद

पद्मविभूषण वालचन्द हीराचन्द
हिन्दुस्तान एयरक्राफ्ट

पद्मविभूषण घनश्यामदास बिड़ला
बिड़ला उद्योग समूह

कमलापत सिंघानिया
जे.के.समूह

सर पद्मापत सिंघानिया
जे.के.समूह

रामकिशन डालमिया
डालमिया उद्योग समूह

गूजरमल मोदी
मोदी उद्योग समूह

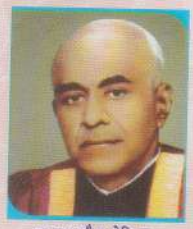

डा. सर मुतैया चेट्टियार
सुप्रसिद्ध उद्योगपति

गजाधर सोमानी
सोमानी समूह

आनन्दीलाल पोद्दार
पोद्दार समूह

पद्मभूषण मंगतूराम जैपुरिया
जैपुरिया उद्योग

सर सेठ हुक्मचन्द जैन
हुक्मचन्द मिल, इन्दौर

गोविन्दराम सेक्सरिया
सेक्सरिया उद्योग

पद्मभूषण साहू श्रेयांसप्रसाद जैन
साहू जैन

नरोत्तम सेक्सरिया
गुजरात अम्बुजा

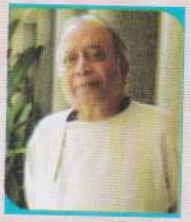

रामप्रसाद गोयन्का
आरपीजी ग्रुप

सीताराम जिन्दल
जिन्दल एल्यूमीनियम

शरद जैन
स्वास्थ्य मंत्री, म.प्र.

देशबन्धु गुप्ता
ल्यूपिन ग्रुप

राकेश झुंझुनूवाला
शेयर किंग

पद्मभूषण हरिशंकर सिंघानिया
जे.के. समूह

ओमप्रकाश जिन्दल
जिन्दल उद्योग समूह

श्याम एस. भरतिया
जुबिलेंट भरतिया समूह

राधेश्याम अग्रवाल
ईमामी समूह

राधेश्याम गोयन्का
ईमामी समूह

उद्योग जगत के सुप्रसिद्ध व्यक्तित्व

पद्मभूषण सुनील भारती मित्तल
भारती एअरटेल

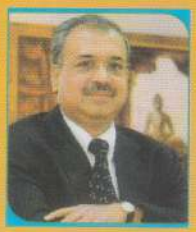

दिलीप संघवी
सन फार्मा

पद्मभूषण राहुल बजाज
बजाज ऑटो

कुमार मंगलम बिड़ला
आदित्य बिड़ला समूह

पद्मविभूषण लक्ष्मी मित्तल
आर्सेलर मित्तल

डॉ. सुभाषचन्द्र
एस्सेल एवं जी.टी.वी समूह

अनिल अग्रवाल
वेदान्ता रिसोर्सेज

शशि रूईया
वोडाफोन

रवि रूईया
वोडाफोन -एस्सार

वेणुगोपाल धूत
वीडियोकोन

बेणुगोपाल बांगड़
श्री सीमेंट

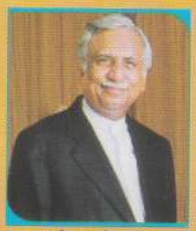

नरेश गोयल
जेट ऐयरवेज

किशोर बियाणी
फ्यूचर ग्रुप

सचिन बंसल
फ्लिपकार्ट

बिन्नी बंसल
फ्लिपकार्ट

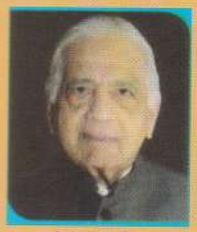

देवेन्द्र जैन
इनोक्स ग्रुप

अतुल रूईया
फिनोक्स

के.के. मोदी
स्पाईस मोबीलिटी

शिशिर बजाज
बजाज समूह

नीरव मोदी
फायरस्टोन इन्टरनेशनल

संजीव अग्रवाल
गीतांजली एक्सपोर्ट

रवि जैपुरिया
वरूण ब्रेवरीज

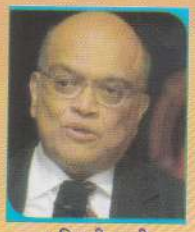

अश्विनी डानी
एशियन पेंटस

दिलीप पीरामल
डीजीपी एन्टरप्राइजेज

बिमल जालान
गवर्नर, रिजर्व बैंक

अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त एवं विज्ञान, प्रौद्योगिकी , चिकित्सा जगत के गौरव

लार्ड स्वराज पाल
उपसभापति, हाउस ऑफ लार्डस, इंग्लैंड

पीयूष बॉबी जिन्दल
गवर्नर, लूसियाना, अमेरिका

प्रीता बंसल
एटार्नी जनरल, अमेरिका

डा. संजय गुप्ता
सर्जन जनरल

पद्मविभूषण विक्रम साराभाई
भाभा परमाणु केन्द्र एवं अन्तरिक्ष अनुसंधान

डॉ. मेघनाथ साहा
खगोल वैज्ञानिक

डा. रामनारायण अग्रवाल
अग्नि प्रक्षेपणास्त्र

पद्मश्री डा. आत्माराम अग्रवाल
ऑप्टिकल वैज्ञानिक

डा. प्रेमशंकर गोयल
उपग्रह प्रक्षेपण

डॉ. पंचानन माहेश्वरी
वनस्पतिविद् एवं संकर प्रजनन वैज्ञानिक

डॉ. दौलतसिंह कोठारी
अध्यक्ष, राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी

अनन्त अग्रवाल
ऑन लाइन शिक्षा

अक्षत सिंघल
अंतरिक्ष वैज्ञानिक

डॉ. पी.के. सेठी
अस्थिरोग विशेषज्ञ, जयपुर फुट निर्माता

पद्मभूषण अनिल अग्रवाल
पर्यावरण विज्ञानी

पद्मश्री प्रो. मनीन्द्र अग्रवाल
कम्प्यूटर गणितज्ञ

पद्मश्री कैलाश मानव
विकलांग सेवा

पद्मश्री डा. के.के.अग्रवाल
हार्ट केयर फाउण्डेशन

विनोद गुप्ता
सूचना तकनीक

पद्मश्री डा. अशोक झुंझनुवाला
टेलीकम्यूनिकेशन

प्रो. जयपाल मित्तल
परमाणु अनुसंधान

पद्मश्री विट्ठलदास मोदी
प्राकृतिक चिकित्सक

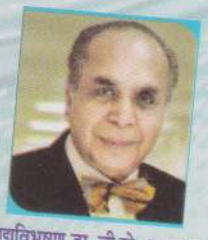

पद्मविभूषण डा. बी.के. अग्रवाल
हृदय रोग विशेषज्ञ

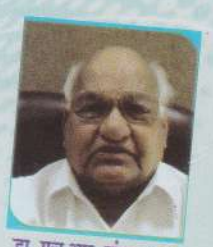

डा. एच.आर. झुंझनुवाला
अस्थि रोग विशेषज्ञ

पद्मभूषण डा. जय कृष्ण अग्रवाल
भूकम्प यांत्रिकी

साहित्य एवं पत्रकारिता

भारतेंदु हरिश्चन्द्र
आधुनिक हिन्दी साहित्य के जनक

राजा शिवप्रसाद- सितारेहिन्द
हिन्दी के प्रथम उपन्यासकार

मैथिलीशरण गुप्त
राष्ट्रकवि

जयशंकर प्रसाद
महाकवि-नाटककार

पद्मभूषण विष्णु प्रभाकर
महान उपन्यासकार

डा. वासुदेवशरण अग्रवाल
पुरातत्ववेत्ता

सेठ गोविन्द दास
कवि-नाटककार

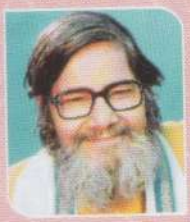

पद्मश्री काका हाथरसी
हास्य कवि

काशी प्रसाद जायसवाल
इतिहासवेता

यशपाल जैन
उपन्यासकार

जैनेन्द्र जैन
नाटककार

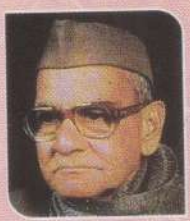

द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी
बाल साहित्यकार

श्यामलाल गुप्त 'पार्षद'
विश्व विजयी तिरंगा के रचयिता

कन्हैयालाल सेठिया
राजस्थानी कवि

रामनाथ गोयन्का
इण्डियन एक्सप्रेस

रमेशचन्द्र अग्रवाल
दैनिक भास्कर

नरेन्द्र मोहन
दैनिक जागरण

गुलाब कोठारी
राजस्थान पत्रिका

शेखर गुप्ता
इण्डियन एक्सप्रेस

समीर जैन
टाइम्स आफ इण्डिया समूह

विवेक गोयन्का
इण्डियन एक्सप्रेस

रामगोपाल माहेश्वरी
नवभारत समूह

विनीत जैन
टाइम्स आफ इण्डिया समूह

डॉ. वेद प्रताप वैदिक
अन्तराष्ट्रीय पत्रकार

कैप्टन दुर्गाप्रसाद चौधरी
दैनिक नवज्योति

डाक टिकट प्रकाशित विभूतियां

विभिन्न वैश्य घटक

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा परिचय

अग्रवाल

अग्रवाल भारत की प्रमुख जातियों में एक है और वैश्य समुदाय का सबसे बड़ा घटक है। यह समाज अपनी उद्योग एवं व्यवसाय में विशिष्ट निपुणता, बुद्धि की कुशाग्रता, आदर्श जीवन शैली, धर्मपरायणता, दानशीलता, उदारता, वैभव एवं उद्दात व्यवहार आदि के कारण भारत ही नहीं विश्व में भी जाना जाता है। यद्यपि इस समाज के लोग वर्तमान समय में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी पैठ बनाए हुए हैं, किंतु इसकी गणना आज भी उद्योग-व्यवसाय प्रधान समाज के रूप में होती है। लक्ष्मी की विशेष कृपा होने से इन्हें लक्ष्मी पुत्र भी कहा जाता है।

सामान्यत: यह वर्ग महाराजा अग्रसेन से सम्बन्धित है। अग्रभागवत के अनुसार महाराजा अग्रसेन सूर्यवंशी थे और उस महान कुल में पैदा हुए थे, जिसमें राजा रघु, दलीप, दशरथ एवं राम जैसे यशस्वी व्यक्तित्व पैदा हुए। उन्होंने ही महाभारत युद्ध के बाद द्वापर की अन्तिम वेला में आग्रेय (अग्रोहा) गणराज्य की स्थापना की थी। उन्हीं महाराजा अग्रसेन द्वारा प्रवर्तित 18 गोत्रों एवं आग्रेय राज्य से सम्बन्ध रखने वाले लोग बाद में अग्रवाल नाम से प्रसिद्ध हुए।

यह समुदाय मुख्य रूप से सनातन हिन्दू धर्मावलम्बी है किन्तु इसमें जैन, आर्य समाज, सिक्ख, राधास्वामी आदि अन्य मतों के भी लोग हैं। सनातन धर्म का तो यह प्राण ही है।

इस जाति के लोग न केवल भारत अपितु अमेरिका, ब्रिटेन, श्रीलंका, नेपाल, अफ्रीका आदि विश्व के अनेक देशों में फैले हुए हैं और उनका प्रसार सर्वव्यापी है।

अग्रवाल शब्द की व्युत्पति तथा नामकरण

अग्रवाल शब्द अग्र + वाल दो शब्दों से मिलकर बना है। अग्र का अर्थ है ऊपरी भाग, शिखर, चोटी। विशेषण रूप में वह बड़े, प्रधान, उत्तम, प्रथम आदि के रूप में प्रयुक्त होता हैं। अत: सामान्य अर्थ में अग्रवाल का अर्थ है-जो सब क्षेत्रों में अग्र रहे, वह होता है- अग्रवाल, अर्थात् जो उद्योग, व्यवसाय, समाजसेवा, देशभक्ति, प्रतिभा, बुद्धि आदि सभी में अग्रणी हो वह अग्रवाल होता है। अग्रोहा, अग्रसेन, अग्रवाल सभी सम्बन्धित शब्दों में अग्र शब्द की विद्यमानता भी उसकी अग्रगामिता को ही प्रकट करती है और इसी कारण अग्रवाल समाज की गणना देश के सबसे प्रमुख अग्रणी समाजों में की जाती है।

अग्रवाल समाज की एक व्युत्पति अग्रसेन के बालक के रूप में भी की गई है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के अनुसार यह शब्द अग्र+वाल दो शब्दों से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है-महाराजा अग्रसेन का बालक।

किन्तु यह व्याख्या समीचीन प्रतीत नहीं होती। सर्वप्रथम तो यह कि महाराजा अग्रसेन अग्रवाल जाति के जनक न होकर केवल एक नये वंश के कर्ता थे। अग्रवालों का अस्तित्व वैश्य समाज के रूप में उनसे पहले भी

था। इसके साथ ही अग्रवाल में बाल प्रत्यय न होकर वाल प्रत्यय है, दूसरा यह कि अन्य जातिसूचक शब्दों में भी यह वाल प्रत्यय प्रयुक्त हुआ है किन्तु बालक के अर्थ में नहीं, जैसे खण्डेलवाल, ओसवाल, पालीवाल आदि में प्रयुक्त वाल प्रत्यय एक स्थान विशेष से सम्बन्ध रखने वाले लोगों को प्रकट करता है। जैसे ओसिया में रहने वाले ओसवाल, खण्डेला के रहने वाले खण्डेलवाल, पाली के रहने वाले पालीवाल। अत: अग्रवाल का अर्थ अग्रसेन के बालक करना उचित नहीं है।

गंभीर विश्लेषण करने पर पता चलता है कि यह शब्द मूलत: स्थानसूचक है और उस समाज विशेष के लोगों को प्रकट करता है, जो कभी अग्र, आग्रेय या अग्रोदक (अग्रोहा) के मूल निवासी थे, जो अपना सम्बंध वहाँ के शासक महाराजा अग्रसेन से मानते थे और बाद में किन्ही विशेष कारणों से देश के अन्य भू-भागों में जा बसे।

यह आग्रेय (अग्रोहा) महाराजा अग्रसेन द्वारा स्थापित एक जनपद की राजधानी था। ये अग्रोहावासी जब विदेशी आक्रमणों या अन्य कारणों से अग्रोहा को छोड़कर जब देश के अन्य भूभागों में जा बसे तो अपना परिचय अग्रोहा वाले, अग्रवा वाले के रूप में देने लगे और भाषा रूपान्तरण से यही शब्द बाद में अग्रवा वाले से अग्रवाल बन गया। यह निर्विवाद तथ्य है कि आज भी अग्रोहा को लोग अग्रवा के नाम से जानते और उसे उसी नाम से पुकारते हैं। इसलिये इस प्रकार का नाम परिवर्तन स्वाभाविक और भाषा-विज्ञान के नियमों के अनुकूल भी है।

अग्रवालों को छोड़ कर अन्य समुदायों के जो लोग अग्रोहा निवासी थे, वे अपने अपने समुदायों मे मिल गये और इस प्रकार अग्रवाल शब्द एक जाति विशेष के लोगों के लिए आरूढ़ हो गया।

अग्रवाल / वैश्य जाति का इतिहास तथा स्रोत

अग्रवाल समाज क अस्तित्व जितना पुराना है, उतना ही उसका इतिहास भी पुराना है। यद्यपि प्राचीन भारत में इतिहास लेखन की क्रमबद्ध परम्परा न होने के कारण अग्रवाल जाति के इतिहास के सम्बन्ध में भी विभिन्न मत मिलते हैं, किन्तु जो भी तथ्य मिलते हैं, उससे इस जाति की प्राचीनता का पता चलता है।

इस जाति का इतिहास जिन तानों-बानों से बुना गया है, उसके प्रमुख स्रोत हैं-

(1) ऐतिहासिक एवं पौराणिक ग्रन्थ आदि।

(2) विभिन्न लोक कथायें, लोकगीत, जनश्रुतियां, किंवदतियां, भाटों के गीत।

(3) अग्रोहा के थेहों की खुदाई से प्राप्त पुरातत्व सामग्री।

(4) प्राचीन शिलालेख, जैन एवं बौद्ध ग्रंथों की प्रशस्तियां।

(5) विभिन्न विद्वानों के लेख।

(6) विभिन्न इतिहासकारों एवं यात्रियों के उल्लेख, विवरण।

अग्रवाल जाति के इतिहास पर नाना प्रकार के ऐतिहासिक एवं पौराणिक ग्रंथों के आधार पर प्रकाश पड़ता है, जिनमें अग्रवाल, अग्रोहा, अग्रसेन आदि का उल्लेख किसी न किसी रूप में हुआ है। इन ग्रंथों में रामायण, महाभारत, महालक्ष्मी व्रत कथा (भविष्य पुराण), अग्र उपाख्यान, पाणिनी व्याकरण आदि प्रमुख हैं।

रामायण-वाल्मीकि रामायण के अयोध्याकाण्ड में भरत के कैकेय प्रदेश से अवध आते समय जिस मार्ग

का वर्णन किया गया है, उसमें आग्रेय शब्द का वर्णन आया है।

ऐत्तधाने नदी तीत्वा प्राप्य चापरपर्वतान
शिला माकुर्वन्तीं तीर्त्वा अग्नेयं शल्यकर्षणम।

कुछ विद्वानों ने इस शब्द को दिशासूचक माना है तो कतिपय विद्वानों का विचार है कि यह शब्द यहाँ आग्रेय को प्रकट करता है और उन्होंने उसके आधार पर महाराजा अग्रसेन को त्रेता युग से जोड़ने का प्रयत्न किया है किंतु यह मत सुसंगत नहीं है।

महाभारत-महाभारत के कर्ण विजय प्रसंग में निम्न श्लोक आया है-

भद्रान रोहितकांश्चैव आग्रेयान् मालवानपि।
गणान् सर्वान् विनिर्जित्य नीति कृत् प्रहसन्निव। महाभारत,वनपर्व 225:20

इस श्लोक के अनुसार कर्ण ने अपनी दिग्विजय यात्रा में जिन गणों को पराजित किया था, उनमें आग्रेयान भी एक था। इसी आधार पर आग्रेय गणराज्य का अस्तित्व महाभारत काल में स्वीकार किया गया है, जिसकी स्थापना अग्र या अग्रसेन ने की थी।

महालक्ष्मी व्रत कथा-महाराजा अग्रसेन, अग्रोहा का इतिहास जिस ग्रंथ पर मुख्य रूप से आधारित रहा, उनमें यह ग्रंथ प्रमुख है। यह ग्रंथ भविष्य पुराण के महालक्ष्मी व्रतकथा से सम्बन्धित है। यह ग्रंथ भारतेदुं हरिश्चन्द्र को अपने निजी पुस्तकालय में मिला था और इसमें सोलहवें प्रकरण के 65 से 166 श्लोक हैं। प्रारम्भ के 84 श्लोक अनुपलब्ध हैं। इस कथा को कहने वाले शौनक ऋषि और श्रोता सूतजी हैं। इसमें सम्वत् 1911 चैत्र मास की द्वादशी तिथि दी हुई है।

इस कथा में महालक्ष्मी का माहात्म्य, महाराजा अग्र द्वारा महालक्ष्मी की उपासना, अग्रसेन को वरदान, नागराज महीधर की कन्या माधवी से अग्रसेन का विवाह, देवराज इन्द्र से युद्ध, संधि, महालक्ष्मी द्वारा राजा अग्रसेन को वरदान, अग्रोदक नगर की स्थापना, अग्रोहा के वैभव का वर्णन, महाराजा अग्रसेन द्वारा 18 यज्ञों का आयोजन और गोत्रों की स्थापना, महाराजा अग्रसेन द्वारा राज्य को अपने बड़े पुत्र विभू को सौंप कर वन में जाने आदि की कथा का वर्णन है।

इसी ग्रंथ के आधार पर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अग्रवालों की उत्पति नामक पुस्तिका लिखी।

इस ग्रंथ को आधार बनाकर ही बाद में डा. सत्यकेतु विद्यालंकार एवं अन्य अनेक विद्वानों ने महाराजा अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवालों का इतिहास लिखा। किंतु कुछ इतिहासकार इस ग्रंथ को प्रामाणिक मानते हैं तो कुछ अप्रामाणिक। फिर भी जो कुछ हो, 2005 में अग्रभागवत के प्रकाश में आने से पूर्व यह ग्रंथ ही प्रमुख रूप से अग्रवाल जाति के इतिहास का आधार रहा।

उरू चरितम् - उरू चरितम् ग्रंथ में महाराजा अग्रसेन के जीवन का उल्लेख मिलता है। यह एक पौराणिक ग्रंथ बताया जाता है, जिसे मंगलदेवशास्त्री ने डा. सत्यकेतु विद्यालंकार को प्रदान किया था। इसका रचनाकाल अज्ञात है। इसमें राजा उरू के साथ महाराजा अग्रसेन की कुल परम्परा का उल्लेख है।

इस ग्रंथ की कथा प्राय: महालक्ष्मी व्रत कथा के कथानक से मिलती जुलती है।

अग्रसेन उपाख्यान - यह ग्रंथ महाराष्ट्र के आमलगाँव के निवासी गोपालप्रसाद अग्रवाल बेदिल को 1991 में अगरतल्ला में प्राप्त हुआ था और भोजपत्रों पर लिखित है। इसकी विशेष बात यह है कि इसमें लिखे अक्षर भोजपत्रों को पानी में भिगोने पर दिखाई देते हैं। यह श्री मद्भागवत का अंतिम कथानक बताया जाता है। जब जनमेजय ने प्रतिशोध की भावना से ग्रस्त हो तक्षक को इन्द्र को सिंहासन सहित यज्ञ में आहूति के रूप में देना चाहा तो जैमिनी ऋषि ने राजा जनमेजय की हिंसक प्रवृति को शांत करने के लिए यह कथा अग्रसेन उपाख्यान के रूप में सुनाई। इसमें महाराजा अग्रसेन के जन्म से लेकर अंत तक की सभी कथाएं थीं। यह भाग श्रीमद्भागवत से कैसे अलग हुआ, इसका उल्लेख नहीं मिलता। इसमें 1400 संस्कृत श्लोकों का संग्रह है, जिसका हिन्दी में रूपान्तरण कर बेदिल ने 4 अक्टूबर 2005 को अग्रसेन जयंती पर प्रकाशित किया। इसको श्रीमद्भागवत का अन्तिम भाग होने के कारण अग्रभागवत की संज्ञा दी गई है।

इस अग्रभागवत के अनुसार महाराज अग्रसेन भगवान् राम के पुत्र कुश के वंश से हैं और उन्होंने अपने पिता वल्लभसेन के साथ महाभारत युद्ध में भाग लिया था और युद्ध के अंत में उनकी भगवान् कृष्ण से भेंट भी हुई थी। पिता के राज्य से बाहर निकाले जाने पर उन्होंने गर्ग ऋषि के परामर्श से अग्रोहा राज्य की स्थापना की थी। इसके बाद महालक्ष्मी की उपासना, 18 यज्ञों के आयोजन, हिंसा के त्याग, माधवी से विवाह, विभू को राज्य भार सोंपे जाने की कथाएं हैं।

इस ग्रंथ को भी अन्य ग्रंथों के समान कुछ विद्वानों ने प्रामाणिक माना है तो कुछ ने अप्रामाणिक तथा उसकी प्रामाणिकता को लेकर अनेक प्रश्न उठाये हैं।

इनके अलावा अग्र, आग्रेयगण आदि का उल्लेख पाणिनी की अष्टाध्यायी, आपस्तम्बसूत्र, काठक संहिता आदि में भी मिलता है।

महाराजा अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल जाति के आधार वे लोक गाथायें, लोकगीत, अनुश्रुतियां और भाटों के गीत भी हैं, जो समय-समय पर प्रचलित रहे और आज भी उनका अस्तित्व पाया जाता है। इनमें कुछ अनुश्रुतियां इस प्रकार हैं-

(1) परशुराम जी की महाराज अग्रसेन से भेंट तथा उनका क्षत्रिय से वैश्य वर्ण में परिवर्तन।

(2) महाराजा अग्रसेन द्वारा लोहागढ़ की यात्रा और पिण्डदान तथा वहाँ से लोटते समय सिंहनी का प्रसव।

(3) लक्खी तालाब और लक्खी बनजारे की कथा।

(4) सेठ श्रीचंद द्वारा 1,100 बोरे केसर बेचने हेतु भेजना तथा हरभजशाह द्वारा उन्हें अग्रोहा के सम्मान की रक्षार्थ हवेली के तगार में डलवाना, श्रीचन्द का हरभजशाह को पत्र तथा उनके द्वारा लोक-परलोक की शर्त पर ऋण देकर अग्रोहा को पुन: बसाने की कथा।

(5) हरभजशाह की पुत्री शीला, महताशाह तथा राजा रिसालू की प्रेम कथा तथा शीला का सती होना।

(6) बाबा श्रृंगनाथ द्वारा अग्रोहा में धूनी तथा अग्रोहा पर अंगारे बरसाने की भविष्यवाणी।

(7) जसराज तथा नाग कन्याओं के चोले बदलने की कथा

(8) अग्रवालों द्वारा अपने को नागों का भानजा मानना तथा नागपंचमी पर उनकी पूजा तथा विवाह के समय कन्या को मामा पक्ष द्वारा चुनरी एवं वर द्वारा छत्र का धारण। इसी सम्बन्ध के कारण नागों द्वारा अग्रवालों को न काटे जाने की अनुश्रुति।

(9) गोकुलचन्द्र और रतनसेन के सिकन्दर से मिलकर अग्रोहा पर आक्रमण तथा अग्रोहा की वीर साहसी महिलाओं के जौहर की गाथा।

(10) अग्रोहा की एक-मुद्रा तथा एक-ईंट की प्रथा।

(11) राजा समरजीत द्वारा अग्रोहा पर आक्रमण।

भाटों के गीत- इसके अलावा भाटों के गीत भी अग्रवाल जाति के इतिहास के आधार हैं। भाटों द्वारा गाये जाने वाले गीतों में अग्रसेन तथा अग्रवालों के बारे में बहुत कुछ विद्यमान है। ये भाट महाराज अग्रसेन तथा अग्रवंश के अन्य वीर पुरूषों की वंशावली तथा वंश परम्परा को बड़े ही लयबद्ध तरीके से सुनाते हैं। इन्हीं भाटों के गीतों में महाराजा अग्रसेन के त्रेता युग में होने और नागराज की कन्याओं से उनके विवाह, परशुराम से भेंट की कथा कही गई है। अग्रोहा का वर्णन भी उनके गीतों में मिलता है। इन भाटों मे शिवकरण का नाम विशेष है।

प्राचीन शिलालेख, जैन एवं बौद्ध ग्रंथों की प्रशस्तियाँ एवं गजेटियर आदि- अग्रवाल जाति के आधार में प्राचीन शिलालेखों बौद्ध एवं जैन ग्रंथों की प्रशस्तियां, जैन कवियों-श्रीधर अग्रवाल, कवि रयधू, कवि सुधारू अग्रवाल आदि द्वारा रचित पासनाउ चरिउ, श्रीपाल चरिउ, प्रद्युम्न चरित, महेसर चरिउ ग्रंथ, जम्बूस्वामी चरितम्, जसहर चरितम्, सम्मईजिण चरित्र, प्रशस्तियां, हिसार के गजेटियर, दिल्ली की अग्रसेन बावड़ी, महरौली के साखन ग्राम, प्रयाग के निकट के शिलालेखों आदि को भी सम्मिलित किया जा सकता है। जायसी के पद्मावत में भी अग्रवाल का उल्लेख है।

विभिन्न इतिहासकारों, यात्रियों के उल्लेख:- अग्रवाल जाति के इतिहास पर समय-समय पर विभिन्न इतिहासकारों एवं विदेशी यात्रियों द्वारा लिखे गये विवरणों से भी प्रकाश पड़ता है। इस प्रकार के विवरणों से डियोडरस आदि यूनानी इतिहासकारों तथा अलबरूनी, जियाउद्दीन बरनी, इब्बनबतूता आदि यात्रियों के विवरण प्रमुख हैं। सुप्रसिद्ध लेखक रैनेल द्वारा 18वीं सदी के अंत में अपनी पुस्तक में दिया भारत का नक्शा भी अग्रोहा की स्थिति पर प्रकाश डालता है।

शोधपरक सामग्री:- अग्रवालों के इतिहास पर अनेक विद्वानों ने शोध परक लेख लिखे हैं, जो अग्रवाल इतिहास को उद्घाटित करने में स्रोत का कार्य करते है। इस प्रकार के लेखों में डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल, गोविन्दचन्दराय, परमानंद जैन शास्त्री, डॉ. गंगाराम गर्ग, राधाकमल मुखर्जी, ओमानंद सरस्वती, डॉ. योगानन्द शास्त्री, डॉ.विलास आदिनाथ सागेय, काशीप्रसाद जायसवाल आदि के लेख प्रमुख हैं।

अग्रवाल जाति के इतिहास लेखन सम्बन्धी प्रयत्न एवं साहित्य

इन सब आधारों पर अग्रवाल जाति के विभिन्न इतिहास लिखे गए।

इस दिशा में सबसे पहला प्रयास भारतेंदु ने 'अग्रवालों की उत्पति' नामक पुस्तिका लिख कर किया। यह पुस्तिका महालक्ष्मी व्रतकथा -अग्रवैश्यवंशानुकीर्तनम् के आधार पर लिखी गई। इस पुस्तक की रचना 1871 में की गई और इसे श्री खेमराज कृष्णदास बेंकटेश्वर प्रेस ने 1920 में प्रकाशित किया।

लगभग उसी समय अग्रवालों के गुरू ब्रह्मानंद ब्रह्मचारी ने भाटों के गीतों के आधार पर महाराजा अग्रसेन वंश पुराण को तथा हीरालाल शास्त्री ने अग्रवाल वैश्योत्कर्ष पुस्तक लिखी।

1918 में सेठ जमनालाल बजाज द्वारा अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा की स्थापना हुई। उसकी प्रेरणा से डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार ने अग्रवाल जाति का प्राचीन इतिहास नामक पुस्तक लिखी। इस ग्रंथ पर पेरिस विश्वविद्यालय ने उन्हें डीलिट् की उपधि प्रदान की। 1938 में मारवाड़ी अग्रवाल जातीय कोष ने इसे प्रकाशित किया। यह पुस्तक भी मुख्य रूप से महालक्ष्मी व्रत कथा एवं उरूचरितम् पर आधारित है।

1938 के लगभग ही चन्द्रराज भण्डारी ने अग्रवाल जाति का इतिहास नामक दो भाग प्रकाशित किए।

1942 में डॉ. परमेश्वरीलाल गुप्त ने अग्रवाल जाति का विकास नामक पुस्तिका लिखी, जिसमें उन्होंने अग्रसेन नाम किसी व्यक्ति का अस्तित्व न मानते हुए अग्रगण राज्य से अग्रवाल जाति का विकास माना।

बालचंद मोदी ने अग्रवाल इतिहास परिचय एवं गुलाबचन्द ऐरण ने अग्रवाल जाति का प्रामाणिक इतिहास लिखे।

इसके बाद अग्रवाल इतिहास पर अनेक छोटे बड़े ग्रंथ सामने आये, जिनमें सुखानंद मालवी का अग्रवाल वंश कौमुदी, रामचन्द्र गुप्त का अग्रवंश, मुंशी अनूपसिंह का संक्षेप अग्रसेन वृतांत, वैद्य कृपाराम अग्रवाल का अग्रसेन और अग्रवाल, चम्पतराय एडवोकेट का अग्रवाल जाति का इतिहास, लाला रामचन्द्र की अग्रउत्पति, लाला मुंशीराम की अग्रवाल मीमांसा, तुलसीराम कंसल का अग्रवाल जाति का इतिहास, सत्यदेव विद्यालंकार का इतिहास प्रमुख है। बाबू सुमेरचन्द अग्रवाल, मनुदत्त शर्मा आदि ने भी अग्र इतिहास पर पुस्तकें लिखी।

1975 में अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन एवं अग्रोहा विकास ट्रस्ट की स्थापना होने पर अग्रवाल समाज में विशेष जाग्रति आई और सम्मेलन के अनुरोध पर डॉ. स्वराजमणि ने अग्रसेन,अग्रोहा,अग्रवाल तथा ट्रस्ट के अनुरोध पर डॉ. चम्पालाल गुप्त ने अग्रोहा-एक ऐतिहासिक धरोहर-पुस्तकें लिखीं, जिन्हें अग्रवाल इतिहास में

विशेष स्थान मिला।

इस प्रकार की पुस्तकों में अग्रोहा को कहानी (हरपतराय टांटिया एवं चम्पालाल गुप्त) अग्रवालों की उत्पत्ति (परमानंद जैन शास्त्री), इतिहास अग्रोहा,अग्रवाल वंश(वृंदावनदास कानूनगो), अग्रवाल जाति का संक्षिप्त इतिहास (डॉ. शिवशंकर गर्ग), वैश्य अग्रवाल राजवंशी समाज का इतिहास (निहालचन्द राजवंशी), महाराज अग्रसेन (सुरेन्द्र कुमार अग्रवाल), अग्रवाल इतिहास चिंतनिका (रामप्रसाद सर्राफ), अग्रवंश इतिहास (मक्खनलाल बरणवाल), शीला माता की जीवन परिचय (शिवशंकर गर्ग)अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल, खण्डहर बता रहे हैं, कथा महाराज अग्रसेन की, पौराणिक कथाओं में अग्रसेन (सभी के लेखक-त्रिलोक गोयल), अग्रकाव्य, महाराजा अग्रसेन का जीवन चरित्र, (गिर्राजप्रसाद मितल), वैश्य समाज का इतिहास (डा. रामेश्वरलाल गुप्त), अग्रकथा (डा. चिरंजीलाल अग्रवाल), महाराज अग्रसेन (डा. श्यामसुन्दर अग्रवाल, डा. अरूणप्रकाश अग्रवाल), अग्रवाल इतिहास, मारवाड़ी समाज व्यवसाय से उद्योग तक(टॉमस् टिम्बर्ग), मैं अपने मारवाड़ी समाज से प्यार करता हूँ (जैमिनी ऋषि कौशिक बरूआ), अग्रवाल जाति का संक्षिप्त इतिहास (रामपाल अग्रवाल नूतन), दिल्ली के अग्रवाल परिवार(रामेश्वरदास गुप्त), मुम्बई की अग्रवाल विभूतियां (रामसरन अग्रवाल), छतीसगढ़ अग्रवाल जाति का इतिहास (डा. चन्द्रकुमार अग्रवाल), महाराजा अग्रसेन और अग्रवाल समाज(विश्वम्भरदयाल गुप्ता), वृहद् अग्र ग्रंथ(ज्वाला प्रसाद अनिल), वीरता की विरासत(कमलकिशोर बंसल), अग्रोहा की कहानी, चित्रों की जुबानी(रामेश्वरदास गुप्त), अग्रदर्शन(विष्णुचन्द्र गुप्त), अग्र कथा(देवकुमार गुप्ता), अग्रकुल कलश (रामकिशन अग्रवाल), अग्रसेन दर्पण(अर्जुनकुमार), अग्रोहा दर्शन(हरपतराय टांटिया) अग्रोहा-आंखिन देखिन, गौरवशाली अग्रवाल समाज- ऐतिहासिक परिदृश्य (अशोक कुमार गुप्ता) का उल्लेख किया जा सकता है।

इसी प्रकार विभिन्न वैश्यों के समाज के इतिहास पर भी वैश्य समुदाय का इतिहास भाग-2 (रामेश्वरदयाल गुप्त), प्रमुख वैश्य समाजों का विभिन्न क्षेत्रों में योगदान (डा. विष्णु पंकज), वैश्यों का उद्भव और विकास (रमेशनील), वैश्य जाति का गौरवमयी इतिहास (शान्तिस्वरूप गुप्ता), वैश्य जाति की गौरव गाथा (शान्ति स्वरूप गुप्त), सोमानी संदर्भ , हरिश्चंद्र वंशीय समाज का इतिहास (जितेन्द्रनाथ रस्तोगी), माहेश्वरी जाति का इतिहास, ओसवाल जाति का इतिहास (पुष्पेन्द्र वरणवाल), बरणबाल जाति का इतिहास (कृष्ण चन्द्र प्रसाद), वैश्य रोहितक गणराज्य के हरिश्चंद्र वंशीय समाज का इतिहास (बुद्धप्रकाश रस्तोगी), वैश्य अग्रवाल राजवंशी समाज का इतिहास मिलते हैं।

इस प्रकार अग्रवाल/वैश्य इतिहास की लेखन परम्परा समृद्ध है और उससे अग्रवाल/वैश्य इतिहास के नये-नये आयामों तथा पंचमधाम अग्रोहा तथा महाराजा अग्रसेन के सम्बंध में जानकारी मिलती है।

अग्रवाल शब्द की प्राचीनता

यद्यपि अग्रवाल जाति का इतिहास 5100 से भी अधिक वर्ष पुराना है और इसका सम्बन्ध द्वापर के अंत तथा कलियुग के प्रारम्भ की संक्रमण वेला में उत्पन्न महाराजा अग्रसेन तथा उनके द्वारा स्थापित आग्रेय, अग्रोदक, अग्रोहा राज्य से जोड़ा जाता है किंतु एक स्वतंत्र जाति के रूप में इसका उल्लेख वर्तमान में प्राप्त प्रमाणों, शिलालेखों, प्राचीन ग्रंथों आदि के आधार पर 1100 ई. के आस-पास ही मिलता है।

1100 ई. के लगभग विशेष कर 12वीं सदी के अंत में मोहम्मदगौरी एवं गजनबी आदि के आक्रमणों के बाद में अग्रोहा लगभग ध्वस्त ही हो गया तथा अग्रोहा वासी अग्रोहा को छोड़कर आसपास के क्षेत्र एवं देश के अन्य भागों में बसने तथा अपना परिचय अग्रोहा वाले, अग्रवा वाले, अग्रवाल के रूप में देने लगे थे। अत: संभवत: अग्रवाल शब्द इसी समय प्रचलन में आया और उनके कार्यों के कारण उनका उल्लेख तत्कालीन शिलालेखों, ग्रंथों, प्रशस्तियों, पट्टिकाओं आदि में होने लगा।

उपलब्ध साक्ष्यों से पता चलता है कि इस शब्द का प्रचलन पूर्व में अगरवाला या अयरवाल के रूप में प्राकृत ग्रंथों में था। सन् 1132 ई. में तोमर वंशीय राजा अनंगपाल तृतीय के शासनकाल में कविवर श्रीधर द्वारा रचित "पासणाह चरिउ" में अयरवाल जाति का उल्लेख है। इसी प्रकार संवत् 1393 में रचित दातृ प्रशस्ति और यशकीर्ति द्वारा रचित हरवंश पुराण में अयरवाल शब्द का उल्लेख किया गया है। जैसे-

1. सिरि अयरवाल वंशहि पुराणु, तो संद्य हे अच्छलु विनय पाणु। (पाण्डव पुराण)

2. तहि अयरवाल वसहि पहाणु, सिरि गडगनो गगेय भाण। (हरिवंश पुराण)

श्री अगरचन्द नाहटा ने सधारू जैन कवि का उल्लेख किया है जिसने सम्वत् 1411 में प्रद्युम्नचरित की रचना की थी। इस कृति में कवि ने अपना परिचय स्पष्ट रूप से अगरवाल के रूप में दिया है-

मइया मीकड़ की यहु बखाण, तुम पसुन पायउ निखाण।
अगरवाल की मेरी जाति, पुर अगरोए मोहि उत्पत्ति।

डा. परमेश्वरीलाल गुप्त ने पता लगाया है कि फिरोजशाह तुगलक के शासनकाल (सन् 1370 ई. , सम्वत् 1427) में मौलाना दाउद ने अपने ग्रन्थ में अग्रवाल जाति की चर्चा की थी। इसी प्रकार जायसीकृत "पद्मावत" में भी अग्रवाल जाति का उल्लेख मिलता है। (सन् 1540 ई.)

इन सब प्रमाणों से प्रकट होता है कि अयरवाल, अग्रोतकान्वय, अग्रवाल जैसे शब्दों का प्रचलन 11वीं शताब्दी में हो गया था। तीनों शब्द एक दूसरे के प्रचलित रूप ही कहे जा सकते हैं।

अग्रवाल जाति और नागवंश

अग्रवाल जाति का नागों से विशेष सम्बंध पाया जाता है। अनुश्रुति के अनुसार महाराजा अग्रसेन ने कोल्हापुर आहेनगर के नागराज अहोधर की पुत्री माधवी के साथ विवाह किया था। उनके पुत्रों का विवाह भी नागवंश की कुमारियों के साथ हुआ था। कहा जाता है कि नाग वंश के साथ सम्बंध जोड़ने से महाराजा अग्रसेन का इन्द्र के साथ युद्ध हुआ और इस युद्ध में इन्द्र को महाराजा अग्रसेन से सन्धि करनी पड़ी।

इसी कारण से अग्रवालों में नागों के प्रति आदर की भावना पायी जाती है। नाग पंचमी पर सर्पो की पूजा की जाती है और उन्हें दूध पिलाया जाता है। अग्रवाल लोग चाहे वे वैष्णव, शैव या जैन कोई हों, सर्प को नहीं मारते। कहा जाता है कि मामा पक्ष के होने के कारण सर्प अग्रवालों को नही काटते।

अनेक स्थानों पर अग्रवाल परिवार अपने मकान के दरवाजों पर सर्प के चित्र बनाते और पत्र-पुष्प द्वारा उनकी पूजा करते है।

नागों को अपना मामा मानने के कारण अग्रवालों में विवाह के अवसर पर कन्या को चुनरी चढ़ाई जाती है तथा सिर पर छत्र लेकर चला जाता है। हाथों के थापे पूजा स्थलों तथा नागों के चित्र घर के द्वारों पर बनाये जाते हैं, जो नाग पूजा के प्रतीक हैं।

अग्रवाल गोगामेड़ी पर गोगा पीर की पूजा करते हैं। गोगा का नागों के साथ घनिष्ट सम्बन्ध माना जाता है। कुछ लोग इन्हें नागों के अवतार भी मानते हैं। गोगापीर की पूजा से सर्प काटने का भय नहीं रहता, ऐसी मान्यता है।

जो भी हो, अग्रवालों का नागवंश से घनिष्ट सम्बन्ध पाया जाता है। नाम साम्य के कारण अनेक बार नाग और सर्प एक ही समझ लिये जाते हैं किन्तु वास्तव में ये एक महान आर्येतर जाति थी, जिसका अपना संगठन, सभ्यता, संस्कृति और मान्यताएं थीं। अरण्यप्रदेश उनका वास स्थान था। श्री सत्यकेतु विद्यालंकार के अनुसार यह उल्लेख अत्यन्त महत्वपूर्ण है, क्योंकि राजा अग्रसेन भी अग्रवंशी थे। इससे उनका वैश्य होना सिद्ध होता है।

श्री परमेश्वरीलाल गुप्त के अनुसार ये दक्षिण के नागलोक में रहने वाली शक्ति सम्पन्न मानवी जाति थी और इनका आर्यो के साथ घनिष्ट सम्बन्ध था। प्रारम्भ में वनों तथा तालाबों के पास रहने से सर्पपूजक रहे होगें तथा अपने आभूषणों आदि पर सर्प चिन्ह अंकित करते होंगे। इसी टोटेम के कारण यह धारणा फेल गई होगी की वे मनुष्य नहीं, सर्प होंगे। पर वास्तव में ये मानव जाति के ही थे। दक्षिण से निकल कर यह जाति देश के कोने-कोने में बस गई तथा स्थान-स्थान पर उन्होंने अपने केन्द्र तथा राज्य स्थापित किये। नागपुर, नागरकोईला, नागपट्टन, नागपर्वत, नागौरा, नागद्वीप (निकोबार), नागसमुन्द्र, नागनसुर, नागशंकर, नागदा आदि नाम उन्हीं की कीर्ति के जीवंत स्मरण थे।

आर्यो के साथ उनके घनिष्ट सम्बन्धों का पता इससे लगता है कि भगवान् कृष्ण एवं श्रीराम के पुत्रों का विवाह भी नाग कन्याओं से हुआ। राम के पुत्र कुश का विवाह नागकन्या से होना बताया जाता है। मेघनाथ की पत्नी सुलोचना नागकन्या थी। अर्जुन ने भी अलूपी से विवाह किया था, जो नाग कन्या थी। भगवान के भाई लक्ष्मण तथा भगवान् कृष्ण के भाई बलराम जी शेष नाग के अवतार माने जाते हैं। विष्णु की शैया भी अनन्तनागों से बनी है।

महाराजा अग्रसेन ने नागों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर तथा अपने पुत्रों का विशानन और दशानन की नाग कन्याओं से विवाह सम्पन्न करा राज्य का गौरव बढ़ाया। विवाह में थापे तथा बान की जो रस्म होती है तथा विवाह के समय कन्याएं जो सर्प के फण के आकार की चूड़ी, चांबरी, चुंदरी धारण करती हैं, वह शुद्ध नागंवश की ही प्रतीक है। थापा तथा विवाह के समय सिर गूंथी की रस्म नागों के प्रतीक के रूप में मानी जाती है। त्यौंहारो पर प्रत्येक पूजा में तथा नागपंचमी पर नागों के चिन्ह पूजनीय माने जाते हैं। इस प्रकार अग्रवाल तथा नागजाति में घनिष्ठ सम्बन्ध माना जाता है।

अग्रवालों के प्रमुख भेद तथा उपवर्ग

अग्रवाल वैश्य समाज का प्रमुख घटक है। प्रारम्भ में अग्रोहा से निकास के कारण सब अग्रवाल एक थे किन्तु बाद में स्थान, आचार, धर्म, सामाजिक रीति रिवाजों आदि के कारण उनमें कई वर्ग-उपवर्ग बनते गए। यद्यपि ये सब अपना सम्बन्ध महाराजा अग्रसेन और 18 गोत्रों से जोड़ते हैं। इनमें से कुछ प्रमुख हैं -

बीसा, दस्सा, पंजा- अग्रवालों में भी अन्य जातियों के समान बीसा, दस्सा, पंजा आदि के भेद देखने को मिलते हैं। कुछ अपने को बीसा, कुछ दस्सा तथा कुछ अपने को पंजा, ढ़ैया अग्रवाल कहते हैं।

इन विभेदों के कारणों के सम्बन्ध में मतैक्य नहीं है। विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से इनकी व्याख्या की है। कुछ लोग मानते हैं कि ये शब्द संख्या या परिमाण सूचक और इनमें उत्तरोत्तर दूसरी संख्या पहली का आधापन प्रकट करती है। अत: लगता है, यह शब्द संख्या या परिमाण से सम्बन्धित है। जिस प्रकार आजकल हम किसी वस्तु की पूर्णता का आधार 100 मानते हैं और जो वस्तु बिल्कुल सही होती है, उसे शत-प्रतिशत सही कहते हैं, उसी प्रकार प्राचीन समय में 20 की संख्या शतप्रतिशत सही या प्रामाणिकता की द्योतक थी। सामान्यतया लोग वस्तुओं के भाव भी बीस की संख्या में ही बताते। जैसे सत्तर कहना होता तो कहा जाता - तीन बीसी, ऊपर दस। पुराने बुजुर्ग लोग इसे भली-भांति जानते हैं।

इसी प्रकार वैश्य अग्रवाल समाज में व्यक्ति से बीस गुणों के पालन की अपेक्षा की जाती थी। समाज के जो लोग इन बीसों नियमों का मोटे रूप में पालन करते, उन्हें बीसा कहा जाता। जो लोग किन्ही कारणों से उन पूरे नियमों का पालन नहीं कर पाते, उन्हें दस्सा तथा दस्साओं द्वारा निर्धारित नियमों का पूरी तरह से पालन न करने वालों को पंजा कहा जाता। मोटे रूप में ये बीस नियम इस प्रकार थे-

1. कृषि
2. गौरक्षा एवं पशुओं के प्रति करुणा भाव
3. वाणिज्य -व्यवसाय द्वारा सबकी समृद्धि का प्रयत्न
4. दानशीलता एवं लक्ष्मी की उपासना
5. अहिंसा का पालन
6. निर्धन एवं असहायों की सेवा
7. धर्म में आस्था एवं वेदशास्त्रानुमोदित परंपराओं का पालन
8. खानपान में शुद्धता
9. भारतीय वेशभूषा, आचार-विचार
10. दुर्गुणों एवं दुर्व्यसनों का त्याग
11. आर्थिक दृष्टि से कमजोर बंधुओं की सहायता
12. ज्ञान के प्रति श्रद्धा
13. अतिथि सत्कार
14. सनातन हिन्दू धर्म व भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के आदर्शों का पालन

15. रक्त शुद्धता- स्वगोत्र छोड़कर अपनी ही जाति में वैवाहिक सम्बन्ध
16. आय की अपेक्षा कम व्यय, अपनी सम्पति को चार भागों में बांट पहला भाग गौपालन, दानादि में, दूसरा भाग व्यापार में, तीसरा भाग गृहस्थी के संचालन और चौथा भाग भावी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु संचित करके रखना।
17. सरल व सादगी पूर्ण जीवन तथा सत्यप्रियता
18. मित्त भाषण एवं विनम्रता
19. साहस, आत्मबल एवं दृढ़ संकल्प शक्ति तथा
20. सामाजिक संगठन के नियमों का पालन एवं उनमें आस्था।

जो लोग इन बीस गुणों अथवा समाज द्वारा निर्धारित ऐसे ही अन्य नियमों का पूर्णत: पालन करते, वे समाज में श्रेष्ठ स्थान के अधिकारी समझे जाते और उन्हें बीसा कहा जाता।

किंतु जो लोग जातीय व्यवस्थाओं का पूर्ण रूप से पालन नहीं कर पाते या सुधारवादी होने के नाते समाज की रूढ़ियों या परंपराओं से विद्रोह करते, न्यून गुणों का पालन करने के कारण वे दस्सा कहलाने लगे। उनका अपना स्वतंत्र संगठन हो गया। इसी प्रकार दस्सों में प्रचलित जातीय नियमों एवं परम्पराओं का उल्लंघन करने वाले पंजे कहलाए। जैन ग्रंथों में इन विभेदों का पर्याप्त वर्णन मिलता है।

निष्कर्ष रूप में इस व्यवस्था के पीछे सामाजिक आचार-विचार की दृढ़ता ही मुख्य रूप से विद्यमान थी।

बीसा अग्रवाल सम्पूर्ण भारत में फैले हुए हैं और सामाजिक दृष्टि से उनका ऊँचा स्थान है। आर्थिक दृष्टि से भी वे अपेक्षाकृत अधिक सम्पन्न हैं। वैवाहिक सम्बन्ध भी प्राय: वे अपने ही वर्ग में करते है। मारवाड़ी एवं नागवंशी अग्रवाल इनमें मुख्य हैं।

दस्सा अग्रवाल मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, दिल्ली आदि में है। सामान्यतया रहन-सहन, खान-पान, आचार-विचारादि में वे अन्य अग्रवालों के समान ही हैं। किंतु किन्हीं कारणवश उनका पृथक अस्तित्व बन जाने से वैवाहिक संबध दस्सों के मध्य ही होते है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् ये बंधन ढ़ीले पड़ने से उनके बीसों के साथ भी वैवाहिक सम्बन्ध होने लगे हैं।

पंजे मुख्य रूप से मध्य प्रदेश, मुम्बई तथा महाराष्ट्र में पाये जाते हैं। कहीं कहीं ढैया भी पाए जाते हैं।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का वर्गीकरण

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के अनुसार अग्रवालों में प्रमुख रूप से चार शाखायें हैं-(1) मारवाड़ी, (2) देशवाली, (3) पूरबिये और (4) पंछहिये अग्रवाल।

मारवाड़ी अग्रवाल - अग्रोहा विध्वंस के बाद जब अग्रवाल जाति के लोग अन्य स्थानों पर जाकर बसने लगे तो उनका एक बड़ा भाग राजस्थान की ओर चला गया और वे शेखावटी, मारवाड़ आदि में बसने के कारण मारवाड़ी अग्रवाल कहलाने लगे। एक अध्ययन के अनुसार 326 ई.पू. से लेकर मुसलमानों के आक्रमण (1194-95) तक अग्रोहा छोड़ मारवाड़ में बसे ये लोग जब आजीविका की खोज में देश के विभिन्न भागों में जा बसे तो उन्होंने अपना परिचय मारवाड़ी के रूप में देना प्रारंभ किया और उनकी संज्ञा मारवाड़ी अग्रवाल पड़ गई। मारवाड़ी बीसे अग्रवाल कहलाते हैं और इनका भारतीय जातियों एवं वैश्यों में प्रमुख स्थान है। देश के आर्थिक एवं

औद्योगिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के कारण इनकी गणना विश्व की श्रेष्ठ व्यापारी जातियों में होती है। अग्रोहा से पृथक बस जाने और एक अलग भू-भाग में रहने से उनके बोल-चाल, रहन-सहन, रीति-रिवाज आदि में भी कुछ विशिष्टताएं आ गई, जिनके कारण अग्रवालों में इनकी स्वतंत्र पहचान है।

देशवाली अग्रवाल - जो अग्रवाल अग्रोहा को छोड़ युक्त प्रांत हिसार, हांसी, रोहतक, करनाल व भारत के अन्य बिहार आदि प्रांतों में जा बसे, उन्हें देशवाली कहा जाने लगा। इनका मुख्य अंतर बोली या भाषा का है। दूर बस जाने के कारण स्थान तथा कालभेद से इनके बोल-चाल, रहन-सहन, पहनावे आदि में मारवाड़ी अग्रवालों से भिन्नता आ गई है। इन अग्रवालों में महमिये, जांगले, हरियानिये, लोहिये आदि विभिन्न नाम प्रचलित है, जो महम, भटिण्डा, हरियाणा, लोहागढ़ आदि स्थानों में बस जाने के कारण हैं, परन्तु इस विभिन्नता के बावजूद मारवाड़ी अग्रवालों के साथ इनके रोटी-बेटी के सम्बन्ध होते हैं।

पूरबिये ओर पंछइये - देशवाली अग्रवालों मे पूरबिये और पंछईये का भेद मिलता है पूर्वी संयुक्त प्रांत, पंजाब और बिहार में जो अग्रवाल सदियों से निवास करते हैं, वे पूरबिये अग्रवाल कहलाते हैं, किन्तु जो अग्रवाल विगत 150-200 वर्षो में बसे हैं, उन्हें पंछइये कहा जाता हैं। मोटे रूप में पूर्व में रहने वाले पूरबी तथा पश्चिम में रहने वाले पंछईये अग्रवाल कहलाते हैं।

धर्म-पंथ आदि के आधार पर

धर्म, पंथ, विचारधारा आदि के भेद से भी अग्रवालों में विभिन्न भेद देखने को मिलते हैं। जैसे-

(1) **वैष्णव** - सनातन धर्म को मानने वाले

(2) **शैव** - शैव मतावलम्बी

(3) **जैन** -जैन मत को मानने वाले

(4) **आर्यसमाजी** - आर्य समाज की विचारधारा में आस्था रखने वाले

(5) **सिक्ख**, **राधास्वामी** आदि।

इन सबमें खान-पान, रहन-सहन आदि में किसी प्रकार का विशेष भेद नहीं है। सभी धर्मानुयायी मांस-मदीरा के सेवन से दूर रहते हैं, जीवन में सात्विकता का पालन करते हैं, धर्म में श्रद्धा रखते हैं।

अन्य अग्रवाल

गिंदोडिया अग्रवाल- परिवार में शादी विवाह या मृत्युभोज के समय गिंदोड़ा बांटने की प्रथा के कारण इनका नाम गिंदोडिया अग्रवाल पड़ा। गिंदोड़ा चीनी का बना गोलाकार, रोटी से कई गुणा बड़ा बलिश्त से छोटा खाद्य पदार्थ होता है। शुभकार्य के अवसर पर उन्हें बांटा जाता है। आज भी इनके परिवारों में इस प्रथा का प्रचलन है।

गिंदोड़िया अपने को दिलवारिये नाम से भी पुकारते हैं। यह शब्द दिल्लीवाल का रूपांतर है।

कदीमी अग्रवाल- कदीमी का अर्थ है- पुराने स्थान पर रहने वाले। इनकी मान्यता है कि ये ही शुद्ध अग्रवाल हैं। इनका कहना है कि इनके पूर्वज युद्ध में लड़ने गए और राज्य की व्यवस्था का भार दूसरों पर छोड़ गए। जब युद्ध से लौटे तो अन्य अग्रवाल वहां से जा चुके थे किंतु उनके पूर्वज वहीं बसे रहे। इसलिए ये कदीमी अग्रवाल कहलाए। यह वर्ग नौकरी तथा व्यवसाय में प्रवीण है। इनमें शिक्षा का प्रसार अधिक है। ये अलीगढ़, खुर्जा, बुलंदशहर एवं उत्तरप्रदेश में मुख्य रूप से फैले हैं।

महमिये अग्रवाल- अग्रोहा उजड़ने के बाद जो लोग महम से उत्तर प्रदेश या अन्य स्थानों में जा बसे, वे महमिये अग्रवाल कहलाते हैं।

लोहिये अग्रवाल- लोहागढ़ (जिला रोहतक) के अग्रवाल लोहिये कहलाये।

जांगले अग्रवाल- भटिण्ड़ा या समीपस्थ क्षेत्रों के अग्रवाल जांगलिये या जांगले कहे जाते हैं।

मथुरिया अग्रवाल- जो अग्रवाल मथुरा से अन्यत्र जा बसे, उन्हें मथुरिया अग्रवाल कहा जाता है।

मागधी अग्रवाल- मगध प्रदेश (बिहार) के डाल्टनगंज, पलामू, गया आदि जिलों में बसे अग्रवाल अपने को मागधी अग्रवाल कहते हैं। इनका अपना अखिल भारतीय संगठन भी है।

पंजाबी अग्रवाल- अमृतसर, नाभा, पटियाला, जालंधर, भटिण्डा आदि पंजाब में बसे अग्रवाल पंजाबी अग्रवाल कहलाते हैं।

बागड़ी अग्रवाल- बागड़ प्रदेश में रहने वाले बागड़ी अग्रवाल कहलाये।

गुजराती अग्रवाल- जो अग्रोहा को छोड़ गुजरात की ओर गए, वे मालवा में आगर नामक स्थान को बसा कर रहने लगे। बाद में आगर को ही अपनी जन्मभूमि मानने लगे और गुजराती अग्रवाल के नाम से प्रसिद्ध हुए। मुम्बई और गुजरात में इनका बाहुल्य है। ये अपने को आगरवाला कहते हैं तथा वहीं के मूल निवासी मानते हैं।

मालवीय अग्रवाल- मध्य प्रदेश के विदिशा और आसपास रहने वाले अग्रवाल अपने आप को मालवीय अग्रवाल कहते है। इनका अपना अखिल भारतीय संगठन है।

पर्वतीय अग्रवाल- हिमाचल प्रदेश और अन्य पर्वतीय स्थानों पर बसे अग्रवाल अपने को पर्वतीय अग्रवाल कहते हैं।

मोदी अग्रवाल- ये मुख्य रूप से बिहार के हजारीबाग ज़िले में पाये जाते है। इनके पूर्वज लगभग 100 वर्ष पूर्व नारनौल के नियौंध ग्राम से चलकर छोटा नागपुर में आए और राज्य में मोदी खाने (रसद-सामग्री) का भार सम्भालने के कारण इनकी संज्ञा मोदी पड़ी। इनका रहन-सहन, गोत्रादि सामान्य अग्रवालों से मिलते हैं। इनका मोदी अग्रवाल समाज के नाम से संगठन भी है।

वरणवाल- वरण(वर्तमान बुलंदशहर) के रहने वाले अग्रवाल वरणवाल कहलाते है।श्री कृष्णचन्द प्रसाद वरणवाल के अनुसार ये महाराज आदि की संतान है, जिन्होंने अपने नाम से वर्तमान बुलंदशहर के पास ही वरन देश बसाया था। ये बुलंदशहर के अलावा मुंगेर, गया, गोरखपुर, दिल्ली, सीतापुर, आजमगढ़, मुरादाबाद, बरेली और बिहार के विभिन्न नगरों में भी पाये जाते है। इनमें 36 गोत्र हैं, जिनमें कुछ अग्रवालों से भी मिलते-जुलते हैं।

इनका 1905 से अखिल भारतीय वरनवाल वैश्य महासभा के नाम से पुराना संगठन है। समाज की ओर से 'वरणवाल संदेश' के नाम से पत्रिका प्रकाशित होती है। कृष्णचन्द प्रसाद वरणवाल ने इस समुदाय का इतिहास लिखा है।

कुछ लोग इसे वैश्य समाज का एक अलग वर्ग मानते हैं, जबकि कुछ वरणवालों का सम्बन्ध अग्रवालों सें जोड़ते हैं।

छत्तीसगढ़ी अग्रवाल- छत्तीसगढ़ में रहने वाले अग्रवाल छत्तीसगढ़ी अग्रवाल कहलाते हैं। इनमें केवल 6 गोत्र पाये जाते हैं और वैष्णव धर्म के अनुयायी हैं। ये शिव की आराधना व देवीपूजा भी करते हैं। डॉ. चन्द्रकुमार अग्रवाल द्वारा लिखित 'छत्तीसगढ़ अग्रवाल जाति का इतिहास' नाम से इनका इतिहास भी है। इस वर्ग के लोगों की संख्या लगभग दस हजार है।

अग्रवालों/वैश्यों का देश के अन्य भागों में प्रवसन

जैसा कि हम पहले बता आये है कि महाराजा अग्रसेन के कुशल राज्य और प्रबंधन के कारण अग्रोहा राज्य ने प्रगति के नये-नये आयाम छुए और इस राज्य ने प्रमुख गण का रूप धारण कर लिया किंतु इस राज्य की यह प्रगति और समृद्धि ही एक दिन उसके लिए अभिशाप बन गई। यह स्थान भौगोलिक दृष्टि से इतना महत्वपूर्ण, सामरिक दृष्टि से इतना उपयोगी और आर्थिक दृष्टि से इतना समृद्ध था कि आने वाले अधिकांश आक्रांताओं की नजरें इस पर टिकी रहीं और उस पर आक्रमणों का सिलसिला प्रारम्भ हो गया। यद्यपि इन हमलों का सिलसिलेवार विवरण उपलब्ध नहीं है किंतु उपलब्ध विवरणों से अनुमान लगाया जाता है कि इस पर कुशाण, नाग, तोमर, चौहान अनेक वंशों के हमले हुए, यह नगरी विश्वविजेता सिकन्दर के आक्रमण का भी शिकार हुआ, किंतु 12 वीं सदी के अंत में मोहम्मद गौरी और गजनबी के आक्रमणों ने तो इसकी कमर ही तोड़ दी।

ऐसा लगता है अग्रोहा पर होने वाले इन आक्रमणों ने वहाँ की शान्ति-व्यवस्था और व्यापार व्यवसाय को बुरी तरह से प्रभावित किया और 11वीं शताब्दी के अंत और 12वीं शताब्दी के प्रारम्भ में अग्रोहा निवासियों ने अग्रोहा को छोड़ कर राजपूताना और देश के अन्य भू-भागों मे बसना प्रारम्भ कर दिया था। हिसार, हांसी तथा राजस्थान के शेखावाटी, झूंझनू, फतेहपुर आदि इलाके अग्रोहा के सर्वाधिक निकट थे, इसलिए अग्रवालों/वैश्यों की इन भागों की ओर रवानगी हुई। उपलब्ध प्रमाणों से पता चलता है कि 14वीं, 15वीं शताब्दी में वैश्य अग्रवालों ने राजस्थान के शेखावाटी, झूंझनू, फतेहपुर, मंडावा, सीकर, नवलगढ़, बागड़ आदि इलाको में प्रमुख स्थान बना लिया था। उस समय के राजपूत राजाओं को नये-नये गढ़ और नगर बसाने के लिए वैश्यों के सहयोग की आवश्यकता थी, इसलिये वे अपने राज्य में उन्हे पूर्ण सुविधा प्रदान करते थे। वैश्य भी आवश्यकता पड़ने पर राजाओं को ऋण तथा अन्य सहयोग प्रदान करते थे, इसलिये इन स्थानों में वैश्य अग्रवालों ने व्यवसाय में बहुत प्रगति की तथा राजस्थान के इन इलाकों में उनका लगभग वर्चस्व सा हो गया। रामगढ़ आदि ठिकानों का तो नाम ही रामगढ़ सेठों का पड़ गया।

उधर मुगलों का शासन स्थापित होने पर वैश्य अग्रवालों ने राजकाज में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया। उनके अनेक महत्वपूर्ण पदों पर अग्रवालों/वैश्यों / मारवाड़ियों की नियुक्ति होती थी। उनके मोदीखाने तथा खजाने की देखभाल का कार्य भी वे ही देखते थे। जहां-जहां मुगलों का शासन था अथवा जहां-जहां मुगल सेनाएं जातीं, उनके मोदीखानों अथवा रसद आदि की आपूर्ति के लिए वैश्य/अग्रवाल भी जाते। इस प्रकार अग्रवाल वैश्यों का प्रसार दिल्ली, पंजाब, पूर्वी भारत, बंगाल, संयुक्त प्रांत आदि दूरस्थ क्षेत्रों में हो गया। मुगल शासन में तो यहां तक प्रचलित हो गया था कि आगे शाह पीछे बादशाह । जब 1564 में अकबर ने राजा मानसिंह के नेतृत्व में अपनी सेना बंगाल के नवाब की सहायता हेतु भेजी तो उसके मोदीखाने में वैश्य अग्रवाल भी थे। इन वैश्य अग्रवालों ने अपनी व्यावसायिक निपुणता एवं दक्षता से सेना के साथ-साथ बंगाल एवं अन्य स्थानों के उद्योग-व्यवसाय ने अपना स्थान बनाना शुरू कर दिया था और धीरे-धीरे वे कोलकात्ता, वाराणसी, हैदराबाद, महाराष्ट्र आदि विविध स्थानों पर फैल गए थे।

1860 में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के भारत में आने तथा अग्रेंजी साम्राज्य की नींव जमा लेने एवं रेल, तार, यातायात, बंदरगाह आदि सुविधाओं के विस्तार के कारण अग्रवालों/वैश्यों को देश के विभिन्न भू-भागों में जाने , बसने एवं व्यवसाय को फैलाने में अत्यंत मदद मिली और वे देश में विभिन्न भू-भागों में पहुंच गये।

इस दिशा में राजपूताना, शेखावाटी, मारवाड़ आदि से अग्रवालों/वैश्यों के प्रवसन ने बहुत अधिक योगदान दिया। 1835 के लगभग राजपूताना में सामंतशाही शासन के पनपने के कारण वैश्यों पर अत्याचार बढ़ने लगे। उनका व्यापार असुरक्षित हो गया। बार-बार पड़ने वाले अकाल, सूखे तथा वर्षा के अभाव के कारण यहाँ के निवासियों का जीवन दूभर हो गया। ऐसी विषम परिस्थिति में शेखावाटी, मारवाड़, दिल्ली, पंजाब, हिसार, भिवानी आमेर, तथा आस-पास के इलाकों के लोग जीविका की खोज में हाथ में लोटा-डोरी लेकर निकल पड़े। उन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य एवं साहस नहीं खोया और बंगाल, बिहार, असम, उड़ीसा, महाराष्ट्र, हैदराबाद, मध्यभारत, दक्षिण भारत जिसको जहां भी स्थान मिला चले गये और बसने में सफल हुए। उन्होंने अपने व्यावसायिक कौशल एवं बुद्धि से प्रायः भारत के अधिकांश भू-भागों में अपना स्थान बनाने में सफलता प्राप्त की और पूरे देश के हर भाग, कस्बे, नगरों, में अग्रवाल वैश्यों, मारवाड़ियों की गद्दियां, कोठियां नजर आने लगीं। उन्होंने अंग्रेजों से बड़े-बड़े उद्योगों का अधिग्रहण भी कर लिया और 20वीं शताब्दी के प्रारम्भिक दशकों तक इण्डोनेशिया, लंका आदि देशों में भी वे अपने अस्तित्व का डंका बजाने लगे थे। प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्ध ने भी इनके व्यवसाय उद्योग को फलने-फूलने और विदेशों मे अपनी भूमिका बनाने में मदद की।

इसके साथ ही अग्रवालों के हिसार, भिवानी तथा अन्य व्यापारिक स्थलों को छोड़ कर अन्यत्र बसने में पंजाब के उन काले कानूनों ने भी आग में घी डालने का कार्य किया, जिन्होंने किसानों के हित के नाम पर व्यापारियों से लिये उनके समस्त ऋण माफ कर दिए तथा तरह-तरह के वैश्य विरोधी कानून बना कर उनका पंजाब में जीना दूभर कर दिया। परिणामस्वरूप अग्रवाल पंजाब से दिल्ली और समीपवर्ती क्षेत्रों में जाने के लिए बाध्य हो गए और दिल्ली में चावड़ी बाजार, नया बाजार, कनाट पैलेस, खारी बावली आदि में जहां भी स्थान मिला बस गए और अपना छोटा-मोटा व्यवसाय कर जीविकोपार्जन करने लगे। परिणाम स्वरूप आज भी इन क्षेत्रों में अग्रवालों का आधिपत्य दिखाई देता है। विशेष कर अग्रोहा के कुछ सौ किलोमीटर की परिधि पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान आदि में उनका बाहुल्य दृष्टिगत होता है।

1947 में भारत के स्वतंत्र होने के बाद ज्यों-ज्यों विभिन्न उद्योग व्यवसायों, आयात-निर्यात तथा जीवन के अन्य क्षेत्रों मे उनकी भूमिका बढ़ती गई, उन्होंने भारत के अन्य भू-भागों के साथ गुजरात, छतीसगढ़, हरियाणा, उत्तरांचल, गोआ आदि नवविकसित प्रांतो में भी अपने पैर जमाने में सफलता प्राप्त की और 1980 के बाद भारत में उदारीकरण, भूमण्डलीकरण तथा वैश्वीकरण का दौर प्रारम्भ होने तथा नये-नये क्षेत्रों में उद्योग-व्यवसायों के विकसित होने पर अग्रवालों ने भारत के साथ सुदूर स्थित अमेरिका, दक्षिणी पूर्वी एशिया, दक्षिणी अफ्रीका, केन्या, नेपाल आदि देशों में अपने पैर फैलाने में सफलता प्राप्त की और अपनी विलक्षण बुद्धि, प्रतिभा, लग्न एवं उद्यमिता से विश्व में अपना स्थान बनाने में सफलता प्राप्त की। 2014 के बाद मेक इन इण्डिया, स्मार्ट इण्डिया, डिजिटल इण्डिया, एक भारत-श्रेष्ठ भारत आदि अभियानों को भी इससे विशेष गति मिली है।

अग्रवाल /वैश्य समाज की परम्पराएं

अग्रवाल/वैश्य हिन्दू समाज का अभिन्न अंग है। यह मूल रूप से सनातनधर्मी हैं किंतु विभिन्न धर्म-पंथों में भी इसकी आस्था है। वैसे तो स्थान - काल और बदलते जीवन मूल्यों के कारण इसकी परम्पराओं में नये-नये परिवर्तन आते जा रहे हैं, फिर भी यह एक ऐसा समाज है, जो आज भी भारतीय हिन्दू समाज की परम्पराओं को जीवित रखे हुए है और उसने उन्हें सहेज कर रखा है।

अग्रवालों/वैश्यों की गणना सामान्यत: समाज के अभिजात और उच्च वर्गो के सम्पन्न शालीन लोगों में की जाती है। इस समाज के लोग प्राय: सरल, सात्विक, शान्तिप्रिय और धार्मिक प्रवृति के होते है। समाज में उनके प्रति सम्मान की भावना पाई जाती है और वे समाजिक एवं धार्मिक गतिविधियों में खुलकर भाग लेते हैं।

प्राय: ये शाकाहारी होते हैं और मद्यपान, माँसाहार से दूर रहते हैं किंतु पाश्चात्य संस्कृति के बढ़ते प्रभाव एवं आधुनिक वातावरण के कारण शनै:-शनै: उनमें महानगरीय विकृतियां पनपने लगी हैं।

प्राय: अधिकांश विवाह वैदिक सनातनी पद्धति से होते हैं, फिर भी आर्य समाजी आदि विभिन्न धर्मावलम्बी अपने-अपने मतानुसार विवाह करते हैं। प्राय: विवाह के अवसर पर सप्तपदी ली जाती है। लड़कियां नागों को अपने मामा समझने के कारण चोली या चुनरी धारण करती हैं।

वैवाहिक सम्बंध प्राय: अग्रवालों के 18 गोत्रों में निज गोत्र छोड़कर स्वजाति में ही होते हैं किंतु वर्तमान समय में वातावरण के प्रभाव एवं उच्च शिक्षा संस्थानों में लड़के-लड़कियों के एक साथ पढ़ने एवं अपने ही व्यवसाय के जीवन साथी को प्राथमिकता देने के कारण प्रेमविवाह और अन्तरजातीय विवाह भी होने लगे हैं। सभी वैश्य वर्गो में भी वैवाहिक सम्बंध होने की परम्परा बढ़ती जा रही है। अग्रवाल, माहेश्वरी, जैन, ओसवाल आदि विभिन्न वर्गो उपवर्गो के बीच वैवाहिक भेद समाप्त होते जा रहे हैं।

घरों में रहने वाली लड़कियों का कार्य क्षेत्र अब घर तक सीमित न रह कर पूरा विश्व है। वे भी अब विभिन्न उच्च पदों , शिक्षा, राजनीति, समाज सेवा, व्यवसाय, उद्योगों में और अपने दायित्व का सफलतापूर्वक निर्वहन करने लगी है, परिणामस्वरूप उनकी स्थिति में भी पहले से अधिक सुधार हुआ है। पुरूषों के साथ सहभागिता के आधार पर आगे बढ़ रही हैं।

यद्यपि समाज में दहेज के प्रति विरोध की भावना बढ़ी है किंतु अब भी शादी खूब धूमधाम से खचीर्ली होती हैं। वर-वधू दोनों पक्षों के लोग विवाह के अवसर पर पैसा पानी की तरह बहाते हैं। विवाहों में आडम्बर, शानशौकत की प्रवृति बढ़ती जा रही है। विवाहों को धूमधाम से करना सामाजिक प्रतिष्ठा से जुड़ गया है और जो शादियां पहले थोड़े में होती थी, वे सम्पन्न अभिजात वर्ग में लाखों-करोड़ों में होने लगी है। यद्यपि अब बिना दहेज भी विवाह होने लगे है किंतु उनकी संख्या नगण्य है। ऐसे सम्बंध प्राय: प्रेम विवाह होते हैं और चुन्नी चढ़ा कर अथवा आर्य समाजी विधि से सम्पन्न होते हैं।वैवाहिक अवसरों पर प्राय: सप्तपदी, कन्यादान, सुमठनी, टीका आदि संस्कार होते हैं।

अग्रवाल/वैश्य प्राय: जन्मजात धर्मपरायण होते हैं। वे मुख्य रूप से सनातनधर्म का पालन करने वाले होते हैं, फिर भी अन्य धर्मो के प्रति भी उनमें श्रद्धाभावना पाई जाती है। यहाँ तक कि पीर-पैगम्बरों की पूजा में भी उन्हे संकोच नहीं होता।

यद्यपि वर्तमान समय में पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति के प्रभाव से अग्रवालों के रीति-रिवाज एवं परम्पराओं में परिवर्तन आता जा रहा है और विशेष कर युवा पीढ़ी का झुकाव नई संस्कृति की ओर है, फिर भी कहा जा सकता है कि अग्रवाल/वैश्य समाज ही वह समाज है, जिसमें आज भी भारतीय परम्पराओं एवं आदर्शो के सर्वाधिक दर्शन होते हैं।

अग्रवाल/वैश्य समाज की विशेषताएं

अग्रवाल/वैश्य समाज भारत का अग्रणी समाज है। जीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं, जो इससे गौरवान्वित न हुआ।

एक लोटा, एक डोरी लेकर राजस्थान जैसे मरूस्थली प्रदेशों से निकले मारवाड़ी अग्रवालों की इस क्षमता को देखकर अमेरिका, ब्रिटेन जैसे देशों के शोध-वैज्ञानिक इस खोज में लगे हैं कि इस समाज में ऐसी कौन सी जीवट शक्ति है, जिसके कारण विपरीत परिस्थितियों और साधनों के अभाव में भी यह जाति विश्व के सर्वश्रेष्ठ उद्योगपतियों, व्यवसायियों, दानवीरों, लोकोपकारियों में अपना विशेष स्थान बनाने में सक्षम रही है।

यहाँ अग्रवाल/वैश्य समाज की ऐसी ही कतिपय विशेषताओं का उल्लेख किया जा रहा है, जिसके कारण काल के हजारों वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी यह समाज अपनी अग्रगामिता बनाए है-

(1) व्यवसाय एवं उद्योग में दक्षता, वित्तीय कुशाग्रता एवं व्यवसाय के रूख को पहचानने की क्षमता।

(2) कठोर परिश्रमी, साहसी एवं जोखिम उठाने की प्रवृति ।

(3) नवीन सोच, नई शैली और गतिशील दृष्टिकोण।

(4) महत्त्वाकांक्षी, दूरदृष्टा एवं आत्मविश्वास से परिपूर्ण।

(5) व्यवहार कुशल

(6) भारतीय सभ्यता, संस्कृति के सच्चे संरक्षक एवं उदार मानवीय दृष्टिकोण(वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना)

(7) दान, धर्म एवं लोकोपकारिता की भावना।

(8) देश की सुख-समृद्धि एवं वैभव के प्रतीक

(9) प्रखर राष्ट्रीयता की भावना।

(10) सर्वतोमुखी प्रतिभा।

इन सब विशेषताओं का हम यथास्थान वर्णन करेंगें।

अग्रवाल जाति के गोत्र एवं उनकी वैज्ञानिकता

गोत्र का सामान्य अर्थ है- एक कुल, एक वंश, एक परिवार, एक खानदान अथवा कुनबा, जो किसी एक मूल पुरूष से अपना सम्बन्ध मानते हैं। गोत्र निर्माण एक वंश-समूह से होता है। दूसरे शब्दों में एक ही पूर्वज की सभी संतानें सम्मिलित की जाएं तो वे "गोत्र" का रूप धारण कर लेती हैं।

सामान्यतया लड़के या लड़कियों के विवाह स्वयं के गोत्र को छोड़ कर अन्य गोत्र में किए जाते हैं। किन्तु यह दृष्टव्य है कि वैवाहिक सम्बन्ध स्वगोत्र छोड़ने पर भी अपनी ही जाति या समाज में किया जाता है। उदाहरण के लिए सिंघल गोत्री अग्रवाल सिंघल गोत्र को छोड़कर अपने लड़के या लड़की का विवाह करेगा किन्तु वैवाहिक सम्बन्ध अग्रवाल समाज में ही होगा, ऐसी व्यवस्था पुरातन काल से चली आ रही है। वर्तमान युग में जबकि जाति, समाज, कुल परम्परा के बंधन ढ़ीले पड़ने लगे हैं, सभी वैश्य वर्गों में एक दूसरे के साथ सम्बन्ध होने लगे हैं और उनको मान्यता भी मिलने लगी है।

अनादि काल से भारत में चली आ रही यह परम्परा रक्तशुद्धि पर आधारित और पूर्णतया विज्ञान सम्मत है। ला ऑफ म्यूटिनी इसका समर्थन करता है। इस नियम के अनुसार परस्पर रक्त सम्बन्ध में शादी-विवाह करने से वंश-वृद्धि को आघात पहुंचता है और समाज में नई प्रतिभा का विकास अवरुद्ध हो जाता है। गुण-वृद्धि के लिए अपेक्षित है कि भिन्न रक्ताशों (जींस) के साथ मेल हो ताकि नये-नये गुणों का विस्तार हो। एक ही परिवार में शादी-विवाह होने से वे ही रक्तांश (जींस) पीढ़ी दर पीढ़ी घूमते रहते हैं और प्रतिभा विकास की संभावनाएं क्षीण हो जाती हैं। इसलिये भारतीय शास्त्रों में स्वगोत्र-विवाह का निषेध करते हुए कहा गया है - दुहिता-दूर हिता अर्थात् कन्या का विवाह दूर होना ही हितकर है।

अग्रवालों में गोत्र प्रचलन का श्रेय महाराज अग्रसेन को है। महाराजा अग्रसेन के समय वैश्यजाति संगठित नहीं थी। बार-बार के आक्रमणों से भी समाज की स्थिति दुर्बल होती जा रही थी। ऐसे समय में अपने राज्य के वैश्यों को संगठित कर उनमें रक्त शुद्धि को बनाये रखने की दृष्टि से उन्होंने गोत्रों का प्रचलन किया।

महाराज अग्रसेन के समय छोटे-छोटे जनपद या गणराज्य थे। शासन प्रबंध की कुशलता की दृष्टि से राज्य को 18 श्रेणियों में विभक्त कर दिया जाता था और प्रत्येक श्रेणी का एक राज प्रमुख या प्रतिनिधि होता था, जो राज-काज के संचालन में सहयोग देता था। सामान्यत: राज्य की ईकाई परिवार या कुल होती थी, जिसे श्रेणी नाम दे दिया जाता था।

आग्रेय गणराज्य भी इसी प्रकार 18 श्रेणियों या कुलों में विभक्त था। इन श्रेणियों या कुलों के एक-एक प्रतिनिधि मिलकर राज्य संचालन में सहयोग देते थे। महाराजा अग्रसेन ने 18 श्रेणियों या कुलों को संगठित करने की दृष्टि से 18 यज्ञ किये। प्रत्येक यज्ञ में गण का एक-एक प्रतिनिधि यजमान और एक-एक ऋषि पुरोहित बना। उन्हीं ऋषियों के नाम पर 18 कुलों को 18 गोत्रों की संज्ञा दे दी गई। जैसे गर्ग मुनि के नाम पर गर्ग, भंदल ऋषि के नाम पर भंदल गोत्र और यह व्यवस्था बना दी कि भविष्य में वैवाहिक सम्बन्ध इन्हीं गोत्रों के माध्यम से होंगे। इस प्रकार महाराजा अग्रसेन ने 18 कुलों को संगठित कर उन्हें एक झंड़े के नीचे एकत्र कर दिया। इससे वैश्य समाज में एक स्वतंत्र जाति का संगठन हुआ, जो बाद में अग्रवाल नाम से प्रसिद्ध हुई।

महाराजा अग्रसेन का यह कार्य उसी प्रकार का था जैसे गुरू गोविन्दसिंह ने हिन्दू समाज के कुछ लोगों को संगठित कर एक नई उपजाति का प्रवर्तन किया, जो सिक्ख कहलाई। इसी प्रकार महाराजा अग्रसेन वैश्य समुदाय

में एक नई अग्रवाल जाति के संगठनकर्ता बने। इसलिये महाराजा अग्रसेन की अग्रवाल समाज के आदि पुरूष के रूप में प्रतिष्ठा है।

प्रमुख गोत्र और प्रचलित शुद्ध रूप

अग्रवालों के इन गोत्रों के काल भेद से अनेक रूप देखने को मिलते हैं और उनके उच्चारण तथा लेखन में भी विभिन्नता पायी जाती है। विभिन्न लेखकों ने उनके अलग-अलग रूप दिये हैं, जिससे कभी-कभी सही गोत्र के सम्बंध में भ्रान्ति पाई जाती थी। इस कठिनाई को देखते हुए अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन ने सर्वसम्मति से इन 18 गोत्रों के शुद्ध नाम और उनकी वर्तनी इस प्रकार से निर्धारित कर दी और अब इन्हीं रूपों का प्रचलन तेजी से बढ़ता जा रहा है-

(1) गर्ग (4) ऐरण (7) बंसल (10) बिन्दल (13) मंगल (16) भंदल
(2) गोयल (5) धारण (8) कंसल (11) मित्तल (14) जिंदल (17) नांगल
(3) गोयन (6) मधुकुल (9) सिंघल (12) तायल (15) तिंगल (18) कुच्छल

अग्रवालों में गंगल बंधु भी पाये हैं, जिसे गोयल का परिवर्तित रूप ही माना गया है। अग्रवालों में तिंगल, नांगल, भंदल आदि गोत्री कम मिलते हैं। सम्मेलन ने अग्रवाल शब्द के अंग्रेजी में विभिन्न रूपों के प्रचलन को देखते हुए एकरूपता की दृष्टि से उसकी वर्तनी निर्धारित कर दी और उसके Agrawal (अग्रवाल) रूप को मान्यता प्रदान की।

इन गोत्रों में गर्ग गोत्री अग्रवालों की संख्या सर्वाधिक पाई जाती है। कहते हैं, महाराजा अग्रसेन का यही गोत्र था।

प्रमुख गोत्राधिपति एवं प्रवर आदि

अग्रवाल समाज के गोत्रों, प्रवरों और उनके प्रमुख गोत्राधिपतियों के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न मत मिलते हैं। यहां स्वामी ब्रह्मानंद द्वारा प्रस्तुत तालिका के आधार पर अग्रवाल गोत्रों के प्रमुख ऋषियों, गोत्राधिपति, वेद-शाखा आदि का उल्लेख किया जा रहा है:-

नाम	गोत्राधिपति	ऋषि	गोत्र	वेद	शाखा	प्रवर	सूत्र
1.	पुष्पदेव	गर्ग	गर्ग	यजुर्वेदी	माधुनी	पञ्च	कात्यायनी
2.	गेंदूमल	गोभिल	गोयल	यजुर्वेदी	माधुनी	त्रिप्रवर	कात्यायनी
3.	करणचंद	कश्यप	कुच्छल	सामवेदी	कौत्थमी	त्रिप्रवर	गोभिल
4.	मणिपाल	कौशिक	कंसल	यजुर्वेदी	माधुनी	त्रिप्रवर	कात्यायनी
5.	वृंददेव	वशिष्ठ	बिंदल	यजुर्वेदी	माधुनी	त्रिप्रवर	कात्यायनी
6.	ढावणदेव	धौम्य	धारण	यजुर्वेदी	माधुनी	त्रिप्रवर	कात्यायनी
7.	सिंधुपति	शाण्डिल्य	सिंघल	सामवेदी	कौम्थमी	त्रिप्रवर	गौतम
8.	जैत्रसंघ	जैमिनी	जिंदल	यजुर्वेदी	माधुनी	त्रिप्रवर	कात्यायनी
9.	मंत्रपति	मैत्रेय	मित्तल	यजुर्वेदी	माधुनी	त्रिप्रवर	कात्यायनी
10.	तम्बोलकर्ण	तांडव	तिंगल	यजुर्वेदी	माधुनी	त्रिप्रवर	कात्यायनी
11.	ताराचंद	तैतिरेय	तायल	कृष्णयजुर	आयुस्तभ	त्रिप्रवर	कात्यायनी
12.	वीरभान	वत्स	बंसल	सामयजुर	कौत्थमी	त्रिप्रवर	गोभिल

13.	वासुदेव	धन्यास	भंदल	यजुर्वेदी	माधुनी	त्रिप्रवर	कात्यायनी
14.	नारसेन	नागेंद्र	नांगल	सामवेद	कौत्थमी	त्रिप्रवर	गोभिल
15.	अमृतसेन	मांडव्य	मंगल	यजुर्वेदी	शाकल्य	त्रिप्रवर	अश्वालायन
16.	इन्द्रमल	और्व	ऐरण	यजुर्वेदी	माधुनी	त्रिप्रवर	कात्यायनी
17.	माधवसेन	मुद्गल	मधुकुल	यजुर्वेदी	शाकल्य	त्रिप्रवर	अश्वालायन
18.	गोधर	गौतम	गोयन	यजुर्वेदी	माधुनी	त्रिप्रवर	कात्यायनी

साढ़े सत्रह गोत्र एवं महाराजा अग्रसेन के अठारह पुत्रों के मध्य वैवाहिक सम्बन्धों सम्बन्धी धारणा-

अग्रवालों में सामान्यत: यह धारणा प्रचलित है कि उनके साढ़े सत्रह गोत्र हैं और अंतिम गोत्र आधा है। उसके मूल में यह कथा प्रचलित है कि महाराजा अग्रसेन ने अठारह यज्ञों का आयोजन किया। उनमें सत्रह यज्ञ तो पूर्ण हो गये किन्तु यज्ञ में हिंसा से विरक्ति के कारण अठारहवां यज्ञ अधूरा ही रह गया, इसलिए उसका गोत्र भी आधा ही माना गया। कुछ का मानना है कि सत्रह यज्ञों के पूर्ण होने से उन्हें पूर्ण गोत्र माना गया किन्तु 18वें यज्ञ के पूर्ण न होने से उसे गौण संज्ञा दी गई जो बाद में गवन रूप में प्रचलित हो गया और वही आधा गोत्र है। किन्तु वास्तव में गोत्र 18 ही हैं। आधे गोत्र का कोई मतलब नहीं। गोत्र पूरा ही होता है। अत: गोत्रों की पूर्ण संख्या 18 मानना ही हर दृष्टि से उचित है और उसी के अनुसार सम्मेलन ने 18 गोत्रों को मान्यता देकर इस विवाद का अंत करने की चेष्टा की है, जो सम्यक् है।

गोत्रों के सम्बन्ध में यह भी भ्रान्ति पाई जाती है कि महाराजा अग्रसेन के अठारह पुत्र थे। उन्होंने इन्ही अठारह पुत्रों को यजमान बनाकर उनके ऋषियों के नाम पर 18 गोत्रों की व्यवस्था की। इस प्रकार एक ही पिता की संतान होने से सभी भाई बहिन हुए, किन्तु यह मान्यता सही नहीं है।

महाराज अग्रसेन अत्यंत ही धर्मपरायण, वेदशास्त्रों में आस्था रखने वाले और धार्मिक मर्यादाओं के पालक थे। भारतीय संस्कृति में कभी भी भाई-बहिन के मध्य विवाह की स्वीकृति नहीं रही और मातृ-पितृ कुल के गोत्रों को बचाकर विवाह सम्बन्ध करने की परम्परा रही है। एक गोत्र में जन्मी सभी संतानों को भाई-बहिन समझा और उनका परस्पर विवाह निषिद्ध माना जाता है। अत: यह कल्पना भी नही की जा सकती कि उन्होंने भूलकर भी इसे मान्यता दी हो। भारत में चाचा-ताऊ आदि की संतानों के मध्य विवाह सम्बन्धों का प्रचलन केवल मुस्लिम वर्ग में देखने को मिलता है। महाराजा अग्रसेन के समय में इस प्रकार की कोई परम्परा भी नहीं थी, वास्तव में ये उनके पुत्र न होकर विभिन्न गणों के प्रतिनिधि थे। हां यह हो सकता है कि महाराजा अग्रसेन प्रजापालक शासक थे। वे अपनी प्रजा को संतान समान समझते थे और समस्त प्रजा उनके स्नेह एवं वात्सल्य भाव से प्रेरित हो उन्हें पितृवत् आदर प्रदान करती थी। इसलिए महाराजा अग्रसेन को अग्रवाल जाति के पिता तथा अग्रवालों को उनके पुत्र मानने की धारणा चल पड़ी हो।

अत: अग्रवालों को एक ही पिता की संतान मानने अथवा भाई-बहिन के मध्य परस्पर विवाह की धारणा सही नहीं है। महाराजा अग्रसेन ने अपने राज्य के 18 कुलों के आधार पर ही गोत्रों का प्रवर्तन किया था, न कि पुत्रों के आधार पर । अत: 18 गोत्रों के प्रवर्तक यजमानों को महाराजा अग्रसेन के पुत्र न मानकर उनके राज्य के 18 कुलाधिपति ही समझना चाहिए। यही मत समीचीन है।

अग्रवालों/वैश्यों को सम्बोधित किए जाने वाले विभिन्न नाम तथा उनका आशय

अग्रवालों/वैश्यों के लिए विभिन्न नामों का प्रयोग होता है, जैसे बणिक, बनिया, वैश्य, मारवाड़ी, शाह, सेठ, महाजन, गुप्ता आदि। इसके अलावा इन्हें विभिन्न अल्ल, बंकों, गोत्रों जैसे मित्तल, बजाज, लोहिया, गोयन्का आदि नामों से भी सम्बोधित किया जाता है। यहाँ इसी प्रकार अग्रवालों के लिए प्रयुक्त होने वाले विभिन्न नामों और उनके अभिप्राय की जानकारी दी जा रही है-

वैश्य

वर्ण व्यवस्था भारतीय समाज का अभिन्न अंग है। इसका सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है। उसी में वैश्य को तीसरे वर्ण के रूप में माना गया है।

विश का अर्थ है- प्रवेश करना। क्योंकि वैश्य व्यवसाय, उद्योग, कृषि में प्रवेश करने कि योग्यता रखते थे,इसलिए इन व्यवसायों को कारने वालों की संज्ञा शनैः शनैः वैश्य पड़ गई।

इस शब्द का प्रयोग प्रायः वैश्य समुदाय के सभी वर्गों-उपवर्गों, चाहे वे अग्रवाल माहेश्वरी, ओसवाल, राजवंशी, वरणवाल, वार्ष्णेय, पल्लीवाल, रोनियार आदि कोई भी क्यों न हो, समान रूप से किया जाता है, जबकि अग्रवाल, माहेश्वरी, ओसवाल आदि शब्दों को प्रयोग वर्ग विशेष के लिए किया जाता है। जैसे अग्रवाल महाराजा अग्रसेन, अग्रोहा से सम्बन्धित होने के साथ-साथ वैश्य भी हैं।

वणिक-बनिया

वैश्य / अग्रवालों के लिए वणिक, बनिया आदि शब्दों का प्रयोग भी किया जाता है। प्राचीन समय में आवश्यक वस्तु की प्राप्ति का साधन वस्तु-विनिमय था। इस क्रिया को पण कहा जाता था और यह क्रिया वैश्यों के प्रसंग में प्रायः मिलती है। 'पण' करने वाले पणि कहलाए।" इस शब्द का प्रयोग ऋग्वेद में भी मिलता है। संभवतः इसी शब्द का प्रयोग बाद में वणज, वाणिज्य आदि रूप में हो गया और वाणिज्य करने वाले लोग ही वणिक कहलाए। बनिया शब्द वणिक का विकृत रूप प्रतीत होता है।

इस सम्बन्ध में एक अन्य रोचक प्रसंग है। जब लोकसभा में तत्कालीन सांसद स्व. कमलनयन बजाज को "बनिया" शब्द से सम्बोधित किया गया तो उन्होंने अपने आप पर बनिया होने का गर्व प्रकट करते हुए कहा था-"श्रीनाथ ने बनिया शब्द का प्रयोग किया है। मुझे बनिया होने पर गर्व है। मैं बनिये का अर्थ बताता हूं। बनिया वह है जिसकी सबके साथ बन सकती है, बनिया वह है, जो सबको अपना बना सकता है, बनिया वह है जो सबका बन सकता है, बनिया वह है, जो सब कुछ बना सकता है। हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भी बनिया थे। हमारे शास्त्रों में बनिया को महाजन कहा गया है अर्थात् जनों में जो महान है, वह महाजन है। आपका इंटेशन अच्छा नहीं है, आप इस शब्द को अपमान के साथ नही कह सकते।" (लोकसभा वाद-विवाद 15-2-1966)

गुप्त या गुप्ता

पारस्कर सहिता के अनुसार 'गुप्त' उपाधि का प्रयोग वैश्य समुदाय के लोगों के लिए होता है। 'गुप्तेति वैश्यस्यं संभवत: अपने व्यापारिक रहस्यों को गूढ़ (गोपनीय) बनाये रखने के कारण ही उनके लिए इस सम्बोधन का प्रचलन हुआ। अंग्रेजी के प्रभाव के कारण यही गुप्त शब्द अपभ्रंश होकर गुप्ता हो गया। इसके साथ ही विष्णुपुराण में भी एक श्लोक आया है, जिसके अनुसार भी वैश्यों को गुप्त कहा जाता है।

शर्मा देवस्य विप्रस्य वर्मा गाता च भू भर्व:।
भूर्वि गुप्तस्य वैश्यस्य दास शुद्रस्य कारयेत:।।

इस शब्द का प्रयोग सभी वैश्य वर्गो जैसे माहेश्वरी, खण्डेलवाल, रोन्यिार, माथुर, माहोर, केसरवानी, महाजन, जैन आदि के लिए समान रूप से होता है। पश्चिमी बंगाल में इस शबद का प्रयोग सेनगुप्त, दास गुप्त, वैद आदि द्वारा किया जाता है। इसे गुप्ते के नाम से भी लिखा जाता है। दक्षिण के कोमती एवं शेट्टी समुदाय के लोग भी अपने को गुप्ता शब्द से सम्बोधित करते हैं। इस प्रकार उत्तर से लेकर दक्षिण-आसेतु हिमालय तक इस शब्द का प्रयोग वैश्य समाज के लोगों द्वारा हो रहा है।

मारवाड़ी

अग्रवाल वैश्यों के लिए एक संबोधन मारवाड़ी भी है। देश-विदेश के औद्योगिक एवं व्यावसायिक क्षेत्र में मारवाड़ी अग्रवालों का नाम बड़े ही गौरव से लिया जाता है। आज राष्ट्र के अधिकांश औद्योगिक घराने इन्हीं मारवाड़ी अग्रवालों के हाथ में हैं और उनका कार्यक्षेत्र केवल भारत तक ही सीमित न रहकर अन्तरराष्ट्रीय हो गया है।

मारवाड़ी शब्द संस्कृत के मरूवाट का अपभ्रंश है। प्राचीन काल में यह मरूप्रदेश कहलाता था। प्रारम्भ में जैसलमेर और मेवाड़ का इलाका इसके अन्तर्गत आता था किंतु शनै-शनै: इस शब्द का अर्थ व्यापक होता गया। बाद में राजस्थान, हरियाणा, मालवा तथा रहन-सहन, बोलचाल, के लोग भी जिनके वेशभूषा, भाषा तथा संस्कृति में समानता थी, उन्हें मारवाड़ी से सम्बोधित किया जाने लगा और यह शब्द केवल वैश्य समुदाय तक सीमित न रहकर अन्य समुदायों के लिए भी प्रयुक्त होने लगा, जैसे मारवाड़ी ब्राह्मण, फिर भी मुख्य रूप से इसका प्रयोग वैश्य समुदाय के लोगों के लिए ही होता है।

मारवाड़ी में अग्रवालों के साथ-साथ ओसवाल, माहेश्वरी, खंडेलवाल आदि अन्य वैश्य उपवर्ग भी आते हैं।

इस शब्द का प्रचलन मुख्य रूप से सोलहवीं शताब्दी में हुआ। बादशााह अकबर ने बंगाल में राजा मानसिंह के नेतृत्व में जो फौज बंगाल में भेजी, इसमें मोदीखाने (रसद, लड़ाई का साजो सामान) को देखने वाले जोधपुर के ही वैश्य थे। अपने व्यापारिक कौशल के कारण उन्होंने सेना के अलावा व्यवसाय के क्षेत्र में भी आधिपत्य जमा लिया और अपने व्यवसाय को बढ़ाने के लिए वहीं जम गए। मारवाड़ से संबंधित होने के कारण उनकी पहचान

मारवाड़ी रूप में होने लगी और बाद में उनके लिए इस शब्द का प्रचलन चाहे देश के किसी भी भू-भाग के निवासी होने लगा, जो आज मारवाड़ी शब्द का प्रयोग वैश्य समुदाय के ऐसे लोगों के रूप में किया जाता है, जो दूरदराज के अपरिचित क्षेत्रों में बस गए और जिन्होंने अपने साहस एवं विशेष व्यावसायिक कुशलता के फलस्वरूप उद्योग और व्यवसाय में आधिपत्य जमा लिया। यह शब्द व्यापक रूप से उन लाखों राजस्थान वासी वैश्यों का भी प्रतिनिधित्व करता है, जो अपनी विशिष्ट क्षमता एवं प्रतिभा के बल पर उद्योग व्यवसाय में अग्रणी हैं। मेहनत, हिम्मत, आत्मविश्वास, उद्यम, जोखिम उठाने की क्षमता, मितव्ययता तथा साधनों का अधिकतम प्रयोग, इस समुदाय की सामान्य विशेषताएं मानी जाती हैं। राजस्थान के तोदी, मोदी, पोद्दार, सेक्सरिया, हिम्मतसिंहका, कनोई, सिंघानिया, कानोडिया, झूंझनूवाला, जालान, जैपुरिया, डालमिया, गोयन्का, परसरामपुरिया आदि घराने मारवाड़ी अग्रवालों से ही संबन्धित हैं।

महाजन

वैश्य के लिए महाजन शब्द का प्रयोग भी गांवों में विशेष रूप से प्रचलित है। सामान्यतया इस शब्द का प्रयोग दुकानदारी करने वाले लोगों के लिए होता है। महाजन का अर्थ है- महान जन। समाज में वैश्य वर्ग का बड़ा सम्मान था। उन्हें आदर और श्रद्धा की दृष्टि से देखा जाता था। सभी समुदायों के लोग उनका आदर करते थे। वे वैभव सम्पन्न होते थे। अत: उनके लिए महाजन-जनों में महान उपाधि का प्रचलन था। यह शब्द भी वैश्य वर्ग के सभी समुदायों में प्रचलित है। हिमाचल प्रदेश के वैश्य वर्ग में महाजन नामक एक जाति विशेष भी पाई जाती है। श्री मेहरचन्द महाजन इसी वैश्य वर्ग से सम्बन्धित थे।

शाह

शाह का शब्द का अर्थ है-बड़ा, महान, साहूकार, बादशाह। देश के कई भागों में वैश्य के लिए यह सम्बोधन भी प्रयुक्त होता है और अनेक सेठ-साहूकार अपने नाम के आगे "शाह" शब्द लगाते हैं। महाजन शब्द के अनुरूप यह शब्द भी महानतासूचक है। प्राय: राजा लोग साहूकारों से पैसा ऋण रूप में लिया करते थे और उन्हें अपने से भी अधिक प्रतिष्ठापूर्ण स्थान दरबार में देते थे, इसलिये शाह को बादशाह से महत्वपूर्ण स्थान देने के सम्बन्ध में यह लोकोक्ति प्रसिद्ध हुई - आगे शाह, पीछे बादशाह !

सेठ-श्रेष्ठि

वैश्य/अग्रवालों की एक संज्ञा सेठ-श्रेष्ठि भी है। राधाकुमुद मुकर्जी का मत है कि श्रेष्ठि समाज का बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्ति होता है। श्रेष्ठ आचरण के कारण उसे श्रेष्ठि कहा जाता था। एक परिभाषा के अनुसार जो उद्योग, व्यापार, समाजसेवा, देशसेवा, विद्या, बुद्धि आदि में सबसे श्रेष्ठ हो, उसे श्रेष्ठि कहा जाता है। कालांतर में वही श्रेष्ठि , सेठ बन गया, जो वर्तमान में व्यापारी वर्ग का द्योतक होकर सर्वत्र प्रचलित हो गया है। बौद्धकाल के ग्रन्थों में इस प्रकार के श्रेष्ठि चत्वरों का उल्लेख व्यापक रूप से मिलता है।

अग्रवालों के अल्ल-बंक एवं उपनाम

अग्रवालों को उपर्युक्त विभिन्न नामों के साथ अन्य सैंकड़ों अल्ल, बंकों, उपनामों से भी सम्बोधित किया जाता है। प्रारम्भ में उनके लिए गुप्त उपाधि का प्रयोग होता था किंतु शनैः-शनैः स्थान, व्यवसाय, वंश, गोत्र आदि के भेद से अनेकानेक अल्ल, बंकों, उपनामों का प्रयोग होने लगा, जैसे गोयल, लोहिया, पोद्दार, केजड़ीवाल आदि। इन अल्ल, बंकों के प्रचलन का अपना इतिहास है, अतः इनके सम्बन्ध में संक्षिप्त जानकारी यहाँ प्रस्तुत की जा रही है-

(1) स्थान सूचक -

अनेक अग्रवाल अपने मूल स्थान को छोड़ अन्यत्र बस गए किंतु मूल स्थान से सम्बंध बनाए रखने के लिए उसका प्रयोग अपने नाम के साथ करने लगे। जैसे जयपुर के जैपुरिया, झूंझनू के झूंझनूवाले, नवलगढ़ के नवलगढ़िया, गोरीसर के गौरीसरिया, माखर के माखरिया, हिसार के हिसारिया, केड के केड़िया आदि।

(2) वंश के प्रमुख व्यक्ति के नाम से -

अग्रवाल परिवारों में कुछ व्यक्तियों ने अपने वंश में विशेष नाम और ख्याति प्राप्त की, जिससे उन्ही के नाम से उनका वंश प्रसिद्ध हो गया तथा परिवार के लोग उसका बंक के रूप में प्रयोग करने लगे। जैसे हिम्मतसिंह से हिम्मतसिंहका, मानसिंह से मानसिंहका , हरलाल से हरलालका, टीकमचंद से टिकमाणी, भावसी से भावसिंहका।

(3) व्यवसाय के आधार पर -

अनेक अग्रवाल अपने व्यवसाय के महत्व को देखते हुए अपने नाम के साथ उसे जोड़ने लगे, जैसे लोहे के व्यापार करने वाले लोहिया, काँसे का व्यापार करने वाले कसेरा, सोने-चाँदी का काम करने वाले सर्राफ, कपड़े का व्यवसाय करने वाले बजाज, रूपयों का लेन-देन करने वाले पोद्दार। इनके अलावा बांसवाले, गुड़वाले, गोटावाले, कंदोई, पंसारी, पतंग वाले, दलाल, जौहरी, कोड़ीवाले आदि बंक भी इसी प्रकार के हैं।

(4) स्वभावगत विशेषता के आधार पर -

कई अल्ल-बंकों का प्रचलन परिवार विशेष की स्वभावगत विशेषता के कारण भी हो गया, जैसे मजाकिया स्वभाव के कारण मसखरा, कांईयां स्वभाव के कारण काईयां, भक्तिभाव स्वभाव के कारण भगत। बकरा, बुधिया आदि बंक भी इसी प्रकार के हैं।

(5) धर्म विशेष का पालन -

अनेक अल्ल और बंकों का प्रचलन व्यक्ति, परिवार विशेष के धर्म से भी सम्बन्धित है। जैसे जैन धर्म का पालन करने वाले अपने नाम के साथ जैन, आर्य समाजी आर्य का प्रयोग करते हैं।

(6) पद नाम के आधार पर -

राज्य में विशेष पद पर कार्य करने वाले व्यक्यिों के नाम के साथ अनेक बार उनका पद भी अल्ल या बंक के रूप में जुड़ जाता है। जैसे पटवारी का काम करने वालों के साथ पटवारी, खजाने की देखभाल करने वालों के साथ

खजांची, कानून सम्बन्धित लिखत-पढ़त करने वालों के साथ कानूनगो आदि।

(7) पदवी के आधार पर :-

प्राचीन समय में राजा लोग अग्रवालों के कामों से प्रसन्न हो उन्हें विभिन्न पदों अथवा उपाधियों से अलंकृत करते रहते थे, इसके अलावा व्यक्ति विशेष के गुणों के कारण भी अनेक उपनामों का प्रचलन हो जाता था, जैसे गाँव में श्रेष्ठता के कारण सेठ, चौधराहट करने के कारण चौधरी, नम्बरदार आदि। भारतेंदु, रत्नाकर आदि बंक भी इसी प्रकार के हैं।

(8) घटना विशेष अथवा परिस्थितियों के आधार पर :-

कभी-कभी परिवार में कुछ ऐसी घटना हो जाती थी, जिससे उस घटना के नाम से ही परिवार का अल्ल, बंक प्रचलित हो जाता था। जैसे एक परिवार विशेष के व्यक्ति को किसी विवाह में जलेबी चुराते हुए देख लिया गया तो उसका बंक ही जलेबीचोर पड़ गया। इसी प्रकार मकान में टांटियों का छत्ता होने से टांटिया, परिवार में सफाई न रखने के कारण सूगला, चिड़ी पालने के कारण चिड़ीपाल, हवेली पर मोर बैठने के कारण मोर आदि बंक इसी प्रकार के हैं। यद्यपि इनमें से कुछ अल्ल और बंक परिवार विशेष की कमी को प्रकट करते हैं, फिर भी उनका धड़ल्ले के साथ प्रयोग किया जाता है।

(9) गुणों आदि के आधार पर :-

जैसे बीस में बीस अर्थात् पूर्ण गुणों से युक्त होने के कारण बीस्सा, दस या पाँच गुणों का पालन करने के कारण दस्सा, पंजा आदि।

इस प्रकार विभिन्न कारणों से अग्रवाल समाज में अनेकानेक अल्ल और बंकों का प्रचलन है। इनमें से अधिकांश अल्ल और बंकों का प्रयोग अग्रवालों के साथ ही होता है किंतु कुछ अल्ल और बंक ऐसे भी हैं, जैसे बजाज, जैन, मोदी, हलवाई, जौहरी, चौधरी, भिवानी वाला आदि, जिनका का प्रयोग अग्रवालों के साथ अन्य जातियों में भी होता है। जैसे मोदी अल्ल पारसियों और खत्रियों में भी हैं।

इन अल्ल, बंकों और उपनामों की सूची लेखक ने 1980 में सर्वप्रथम संकलित की थी, जिसका प्रकाशन तत्कालीन समय में अनेक पत्र-पत्रिकाओं में हुआ था। इन्हीं में से कतिपय अल्ल, बंकों का परिचय यहां गोत्रों के साथ प्रस्तुत किया जा रहा है।

अग्रवालों के कतिपय अल्ल और बंक

अडूकिया (बंसल, गोयल)
अचार वाले
अजादिरिया
अटेची वाले
अतार
अमरसरिया
आगीवाला
आबू वाले (मंगल)
आमेरिया
आरसी वाले (सिंघल)
आवास्या
ईकरी वाले
इकाड़िया(गोयल)
इजारदार (गर्ग)
इलायची वाले
इसरला
उदयपुरिया
ऊँटवालिया
उमरेहा (गर्ग)
उलाजपुरिया
ओड़छावाले (मित्तल)
औलख
कंकरानिया
ककरेजा
ककरीवाले
कचहरी वाले
कटनी वाला
कटतरूका
कटारीवाला
कंठी वाले
कण्ठीवाल
कण्ठीमाला वाले
कजरिया
कन्दोई (गोयल, सिंघल, मित्तल)
कमलिया (गर्ग)
कम्बल वाले
कमरया
कबाड़ी
कमरीवाले
कयान
कयाल
करनावट
करूटिया
कसरूका
कलगी
कलानेरिया
कसूमावाले
कसेडिया
कसेरा (गोयल)
एरण, मित्तल
कहा (बंसल, मंगल)
कहनानी
काईया (एरण)
काकड़ावाला (मंगल, गोयल)
कांकरिया
काकोलिया
कागली वाला (मित्तल)
कागजी (गर्ग)
कागदाना वाले
काजड़िया (सिंघल)
कमाणी (मंगल)
काण्डा (गोयल)
कादमा वाले(गर्ग)
कानसरिया
कानूनगो (गर्ग)
कानोड़िया(मंगल)
काबरिया
कामडा (गर्ग)
कामदा
कामठिया-बंसल
कामठी वाले
कारीवाला
काला-मंगल
कालूण्डिया
कावटिया(जिंदल)
कासना वाला
कासूबा
कासूलिया
किरवाडा वाले
किरवासीवाले
किरवाड़ावाले
कोसलीवाले(बंसल)
किराना वाले
किरानिया
किला
किश्त वाले
किशनपुरिया
किसनाका (सिंघल)
कुचामणिया-बंसल
कुसुम्बी वाले
केकड़ी वाले (मंगल)
केजड़ीवाल(बंसल)
केथरी वाले(गर्ग)
केडिया (गर्ग)
केमोरी वाले
केलका
केशान (सिंघल)
कोकड़ा(मित्तल)
कोड़ी वाले(गर्ग)
कोंच वाले (गोयल)
कोटा वाले (गोयल)
कोठी वाले
कोठरी वाले
कोतवाल(सिंघल)
कोदिया
कोयला वाले- (गर्ग, मित्तल)
खगरिया
खजांची-बंसल
खंडेलिया
खदरिया
खनानिया
खराई वाले
खराकिया-गर्ग
खाटू वाले
खामंगांव वाले
खारीवाल
खायरा
खैलिडा (बंसल)
खिरनीवाले
खिरोडिया
खीवंसरिया
खीवंसीका
खुरडीकर(मंगल)
खुर्जावाले (गर्ग)
खुडानिया
खुनखुनजीका
खुरकिया
खुरडीकर
खेड़िया
खेतान-गर्ग
खेतावत
खोदिया
खेमका (जिंदल, बंसल, जिंदल, मंगल)
खेमाणी
खेरातीका
खेरिया (गर्ग)
खोयावाले-मंगल
खोरिया
खोवाला-बंसल
गगवीवाले
गगवी
गजवी-मंगल
गढ़वाल
गणेशगढ़िया
गढ़िया -मित्तल
गंधकवाला
गनेड़ी वाला-सिंघल
गरोठावाल-मित्तल
गांगेसरिया
गाडिया-बंसल
गाडरमाला वाला
गाड़ोदिया (गर्ग बंसल, गोयल)
गाजीपुरिया
गाँधी वाले
गाय वाला
गिदड़ा-बंसल
गिदोड़ी
गिंदोड़ियावाले
गुटगुटिया-गोयल

गुड़वाले-
(गोयल, गर्ग)
गुढ़ा वाले
गुडे वाले
गुडीवाला, गुढ़ीवाल
गुडयानी वाला
गुढ़ेका
गुप्त
गुमट-सिंघल
गुलाब वाले
गुलगुलिया
गुलावाटी
गोकुल
गोटेगांववाले-गर्ग
गोठका
गोंदवाले
गोपालका
गोयन्दका
गोयन्का-गोयल
गोयनर
गोयलका
गोरखपुरी-सिंघल
गोरीसरिया
गोविन्दका
गोविंदगढ़वाले
गोवाडिया
गोविल
गोहल्याण-गर्ग
घड़ी वाले
घमेएसरिया
घिरया, घिडिया
घीराले-
(मंगल, गोयल)
घूड़का
घूमणसरिया

घोड़ावत
घोड़ीवाले
चकेरे-गोयल
चचेरी वाल
चन्दनका
चमड़िया-गर्ग
चरोई वाला-गर्ग
चश्मे वाले
चसहाला
चाकसू वाले
चाचाण
चाँदगोठिया-गोयल
चाँदसेन
चाँदीवाला
चानौतिया
चापान वाले
चालीसा
चालीसिया(मित्तल)
चावलवाला(गोयल)
चिड़ावेका
चिड़ावा वाले
(बंसल)
चिड़ीपाल(गर्ग)
चिड़ियावाले
चिड़िया
चिड़ीमार
चिंतावत-बंसल
चिनानिया
चिरमिया
चिरानिया-ऐरण
चिरमोले-गोयल
चिरमिया-एरण
चीपवाले
चीनी की बुर्ज वाले
चूड़ी वाले (बंसल)

चूनेवाले
चुरू वाले(गोयल)
चुरूका
चोकड़ीका(गोयल)
चेतावत
चेनानिया
चेलानी
चेनवाले
चोकड़ीत
चोकड़ी वाला
चोकसी(मित्तल)
चोखानी (बंसल,
गोयल, गर्ग)
चोमूवाला
(गर्ग, बंसल)
चोड़ेले (गर्ग)
चौधरी (बंसल,
गोयल, गर्ग)
चोरूका
छपरिया
छाजुसरिया
छांदीवाले
छानीवाला
छापड़िया
छोपोली
छावसरिया(गर्ग)
छारिया (सिंघल)
छींटावाला(मंगल)
छीतरजीका(गोयल)
छोलिया(सिंघल)
जकोडिया
जगतरामका
जगनानी (मंगल)
जगरायका

जयरिका(सिंघल)
जगानी
जडतारया(मित्तल)
जड़ांवता वाले
जटिया
जनकपुरिया
जवानपुरिया
जमनका
जमालिया
जमुका
जयनगरिया
जयपुरिया(जैपुरिया)
(बिंदल,मित्तल)
जलेबीचोर
जसरापुरिया(गोयल)
जसरामपुरिया
जहाजगढ़िया
जाखलिया
जांगलिये
जाजोदिया (गर्ग,
सिंघल, बंसल)
जांटीवाला
जादूका
जायल्या
जारोठीवाला
जालान
जालकी
जालका
जालौनवाले
जावरावाले
जिंतरवाल(गर्ग)
जिंदल
जिलानी
जिलोका
जीतगोटिया

जीतपुरिया
जीतमलका
जींदगर (सिंघल)
जीवराजका
जुगरका
जुझारका
जुवानपुरिया
जेजानी
जै
जैन
जोगानी-गर्ग
जोदराजका
जोपानी
जोहरी
(मित्तल सिंघल)
जोहरी (मित्तल,
सिंघल)
झंकोड़िया
झंड़े वाला(गोयल)
झझरीवाला
झरीबुरीवाला(गोयल)
झरोखेवाला
झाझड़िया
(सिंघल, एरण)
झाझरी
झामवाले
झारूका(गर्ग)
झिरका
झूंझनूवाला(बंसल)
झूंथरा
झूमियावाले(गोयल)
झूरिया(जिंदल)
झोरवाड़ा वाले
टकसाली(गोयल)
टडक्या

टपूकड़ा
टमकोरिया
टांटिया(बंसल)
टारिया
टालवाल
टालीवाला(बंसल)
टिकमाणी(तायल)
टिबड़ेवाल (गोयल, सिंघल)
टेकवाले
टेकड़ीवाल(गोयल)
टेमाणी
टेलटिया
टोडीवाला
टोपीवाला
टोरका(मित्तल)
टोरिया(गोयल)
ठठेरी(सिंघल)
ठहरड़
ठंडीरामका
ठाकुरद्वारा वाले
डगायची
डगेड़िया
डरोलिया
डाकिडा
डागवाले
डाणी(बंसल)
डाबड़ीवाला(मित्तल)
डालमिया(गर्ग)
डिबाई वाले
डीड़वानिया (गर्ग-गोयल)
डूंगरीवाला
डूंगेबुंगेवाला
डेगराजका
डेगला(बंसल)
डेनिया
डेरावाले(गर्ग)
डोकानिया
डोवटीवाले(गर्ग)
डोरे वाले
डोरिया
डोलिया
ढंढ़ाणिया
ढ़ांढ़रिया
ढ़ाणीवाले
ढूंढाड़िया(गर्ग)
ढेरीवाले(गर्ग)
ढेलासरिया
ढोलकिया
ढैया
तमकुडिया
तम्बाकू वाले
तलवाड़िया(सिंघल)
तलवंडी वाले
तवरेवाला(गोयल)
ताड़पट्टी वाले
ताजपुरिया
तापड़िया(जिंदल)
तारानगर वाले
तिगूरानिया
तिजोरिया(गोयल)
तीर्थपुरीवाले
तुरकासवाले(जिंदल)
तुहीरामका
तूदेवाले
तेजावत
तोतारामका
तोदावाले
तोदी
तोपखानावाले(बंसल)
तोशखानेवाला(गर्ग)
तोपणी(गर्ग)
थरड़(मित्तल)
थावेरिया
थोई वाले(बंसल)
दंगल वाले(मित्तल)
दतिया वाले
ददरेवाला(सिंघल)
दम्बीवाले(गोयल)
दरीबावाले
दलाल
दलपतिया
दयालपुरिया
दसरापुरिया(गर्ग)
दस्सा
दही वाले
दादुर
दाँतलीवाला
दाहिया वाले
दादरी वाले
दारूका(बंसल)
दिनोदिया(बंसल)
दीवान(गर्ग)
दीवानजीवाले
दीवाल वाले
दुजोद वाले
दुदावत
दुरालिया
दूदवेवाला(सिंघल)
देलोनिया
देवड़ा-बंसल
देवणलिया
देवरालिया
देवलीवाला(गोयल)
देवगाँवका
देवीदानका
देबूका
देशवाले
दोचानिया
दोदराजका
दोलतपुरिया(गर्ग)
धनजीपंजी वाले
धनपतसिंहका
धनानिया
धन्नावत
धनानीवाले
धमोड़(बंसल)
धरनीधरका(मित्तल)
धंवालिया
धाड़ीवाल
धानुका(बंसल)
धानोटी
धामवाल(गोयल)
धामनोद वाले
धामोरिया
धीमपुरिया
धीरवासिया
धीणा
ध्रुव(मित्तल)
धूथरीवाल
धेलिया
धोलीवाल
धोलेटा
धोहतीवाले (बिंदल)
नकारवाले(गर्ग)
नझोई(सिंघल)
नरसिंहपुरिया(गर्ग)
नरेड़ी(बंसल)
नरेगावाले
नलवेवाला
नवलगढ़िया
नवल
नाईडिया(एरण)
नाउका(मंगल, बंसल)
नागरका(गर्ग)
नागलिया(गर्ग)
नागेड़ी
नागेवाले
नागलिया(जिंदल)
नाजवाले(गर्ग)
नाथका(गर्ग)
नाथानी(सिंघल)
नाथूरामका
नानूहाला(गोयल)
नारसरिया
नासिकवाला(एरण)
निगानिया
निनाण वाले
निम्बोदिया(सिंघल)
निमोरिया
नामोरिया
नूहा वाल
नून वाले
नेमानी(बंसल)
नेवटिया(सिंघल)
नेवटा वाले
नोताका
नोनवाल
नोपरावाले
नोपानी(बंसल)
नोसरिया
नोहरिया

पकाया
पड़ावा वाले
पंच(मंगल)
पचोड़ीवाले
पंजी वाले
पंजेवाले
पटवारी
पट्टीवाले(गोयल)
पतंगवाले(गोयल)
पतंगिया
पत्थरका
पत्थरवाले
पतीसा वाले
पतासिया
पदाम्या
पनजी वाले
पनेसी वाले
पपराणिया(मंगल)
परगनावाले(गोयल)
परतापुर वाले
परवाल
परमणीवाला
परवणवाले
परीतावाले(गर्ग)
परसरामका
परसरामपुरिया
परसादिया
परसाड़ीवाले
परामुका
पल्ली वाले
पलसाणी
पलसावाले
पवामिका
पंसारी
पहाड़ीवाले

प्रह्लादका(बंसल)
पांचोतास वाले (सिंघल)
पाटन वाले
पाडिया
पाटोदिया(बसंल)
पाढ़निया
पातलिया(गोयल)
पातलिया(गोयल)
पानीपतिया
पापड़ावाले
पारूंवाल
पालड़ीवाल मित्तल
पालविया
पावटा वाले(बंसल)
पासरोटिया
प्राणसुखका(गर्ग)
पित्ती(जिंदल)
पिलखुआ(गोयल)
पीपलंवा
पूर्णमलका
प्रेमराजका
पोद्दार-पोत्तदार (बंसल)
फतेहचंदका- (बंसल, जिंदल)
फतेहपुर वाले (बिंदल)
फतेहपुरिया(बंसल)
फतेहसरिया
फर्शी वाले(गर्ग)
फागी वाले(गर्ग)
फिटकरी वाला
फिरोज वाले
फोगला

फौजदार
बकरा(सिंघल)
बका(सिंघल)
बगड़का- (मित्तल, सिंघल)
बगड़िया-(मित्तल, गर्ग, सिंघल)
बगड़ोदिया(सिंघल)
बगिया वाले(बंसल)
बंगला वाले
बुथेरिया
बघेलावाले
बड़वे वाले
बड़बोलिया
बड़कुलिया
बड़ेगाँव वाले(एरण)
बड़ोपलिया
बजीतपुरिया
बजाज-(एरण, बंसल, गोयल)
बणीवाले
बतासे-सिंघल
बथवाल-गोयल
बद्रूका-सिंघल
ब्रजवाले
बरखेड़ा वाले
बरहरवां
बरासिका-गर्ग
बहू वाले
बागड़ वाले
बागड़ी
बागघर-गर्ग
बागीला
बाड़ोसिया-बंसल

बाजला-गर्ग
बाजोरिया-सिंघल
बाढ़ावाले
बाढ़कोठरी वाले
बापू वाले
वामणी वाला-गर्ग
बायती
बांयेवाल
बारड
बारजे वाला
बारदाना वाले
बारबड़ा वाले
बारवाले-जिंदल
बारबोलिया
बालुड़ा-गर्ग
बालोजी
बालोतरिया
बावरी
बावली वाला
बांस वाले-बंसल
बासोतिया
बिझलिया
बिसाऊका
बींजराजका
बीदासरिया-गर्ग
बोपीसरिया-गर्ग
बीसूका
बिसूसरिया
बुकनसरिया
बुकानिया
बुकरेड़ी वाला
बुकालिया
बुड़ाकिया
बुधासिया
बुदोलिया

बुधवारी-गोयल
बुधिया-बंसल
बुधरामका
बुरजवाले
बुरागाड़ा वाले
बूरे वाले
बूबना-बंसल
बूवासिया
बूवानी वाला
बेगराजका
बेगनिया
बेगवाल
बेरासरिया
बेरी
बेरीवाल
बेरोलिया-सिंघल
बेसवाल
बैराठी
बोडा
बोगी
बोदिया
बोरड़ीवाला
बोहरा
भगत (गोयल, गर्ग)
भगेडिया, भगेरिया (मित्तल, एरण)
भगूका
भगेलिया
भगोला वाले
भडेलिया
भट्टे वाले
भट्टू वाले
भदसाना वाले
भम्मनका

भरतिया
भरसिया
भाऊका
भागचंदका
भागेर
भागेरिया-बंसल
भाड़ाहाला-एरण
भांडेरवाले-सिंघल
भाजारी-गर्ग
भानगढ़का
भापड़ोदिया
भारतेंदू
भारूका-गोयल
भालूसरिया
भालोटिया-एरण
भावपुरका
भावसिंहका-सिंघल
भिवानी वाला
भीमसरिया
भीमराजका
भीमसारवाला
भीमराजका
भीमसहरवाला
भीवानिया
भीवापुरका
भुवानिया
भुवानेवाला
भुवानिया
भुवालका
भूखमारिया
भूड़ोदिया
भूतका-मित्तल
भूला,भूल्या-सिंक्ल
भूत
भूतिया-सिंघल

भूषणवाला
भोडूका-गोयल
भोजनगरवाला(गर्ग)
भौतिका
मकारीवाला
मंगतेड़िया
मंगालीवाले
मंगूली वाले
मंडावावाले(सिंक्ल)
मंडोलिया
मंडोरीवाले
मथुरावाले
मथुरिया(बंसल)
मदूपुरिया
मरोदिया
ममोधनिया
मलसीसरवाले
मसकरा,मसखरा
(बंसल)
महनसरिया
महमिया
महलका
महाटिया
महाडेरिया
महातिया
महासरवाले
महेशका
महेशदासका
माउण्डिया
माखरिया
मांगलिक
मांगेड़ीवाला
माडोठिया
मातनहेलिया
मादरिया

मादवाड़ी वाला
माधोपुरिया
मानपुरिया
मानसिंहका
मारकरिया
मारवाड़ी
मारूजीवाला
मालगुजार
मालधनी
मालसरिया
मावेडिया
मिंचनाबाद वाले
मिठड़ी वाले
मिण्डा-गोयल
मित्रुका
मिहाड़िया
मुकुदगढ़िया
मुकीम-गोयल
मुकुट वाले
मुंगीवाले-गर्ग
मूंगेवाले
मुडिया
मुनका
मुनीम
मुरथलिया
मुरसानवाले
मुरारका(गर्ग)
मुरोदिया(मित्तल)
मुंशी(एरण)
मुंशीमलवाले
मुंसरीवाले
मुस्कानी
मुसाहिब(बंसल)
मुसद्दी(मित्तल)

मुहालका
मेरठिया
मेहणसरिया(गर्ग)
मेहरा(मुदगल)
मोठवाले(सिंघल)
मोडा(गर्ग,सिंघल)
मोदी(गर्ग, गोयल)
मोर(गर्ग, गोयल)
मोहनका(गोयल)
मोहनसरिया(गर्ग)
योगी
रईस
रड़कवाले
रतनगढ़िया
रतेरिया
रंगवाले(गोयल)
राईया(गोयल)
राऊवाले
राजगढ़िया
(बंसल, सिंघल)
राजपुरिया(गर्ग)
राजवंशी
राजारामका
राजूसरिया
राणा(गोयल)
राणियावाले
रातड़िया
रातूसरिया
रानीवाला(गर्ग)
रामगढ़िया
रामनवमीवाले(गर्ग)
रामरायका
रामलालका(बंसल)
रामूका
(बंसल, सिंघल)

राय(एरण)
रायजादा(गोयल)
रायावाले
रावल
रावलवासिया
रासीवासिया
(सिंघल, गर्ग)
रिंगासिया
रिणका
रिणीवाले
रिटोलिया
रीगसवाले
रूइया
रूंगटा(गर्ग)
रूदावाले
रूपचंदका
रूपदासका
रूवाटिया(गोयल)
रूहटिया
रेखान(सिंघल)
रेजीमेंटवाले
रेडियोवाले
रेलवाले(गर्ग)
रोहिला(गोयल)
लक्कडी
लड़ीवाला(गर्ग)
लड़िया
(बिंदल, गोयल)
लच्छूका
लढ्ढा(सिंघल,गर्ग)
लदानिया
लक्ष्मणगढ़का
ल्हीला
लाठ(सिंक्ल,बंसल)
लाडसरिया

लालगढ़िया
लालपुरिया(सिंघल)
लालसरिया
लालाणी
लालावाले
लावा(गोयल)
लीला(गोयल)
लुडिया
लुहाणेवाला(गर्ग)
लुहारूका(गोयल)
लुहारीवाला
लढ़िया
लूणकरणसरिया
लूणका
लेबईवाल
लोड(गोयल)
लोटिया
लोढ़ा(बिंदल)
लोयलका-बंसल
लोया
लोहारिया
लोहारूवाला
लोहिया(गर्ग)
वटावर
वधानिया
व्या
वाणवाले(गोयल)
वावी(मंगल)
विछावतका
विजयका
बुचासिया
बुचासिया
वेश्य
वेय
वेरवाल

वेरनीवाले
वेद(गोयल,बंसल)
वैदिक(मित्तल)
वैश्य
शंभूका(जिंदल)
शरन
शस्त्रधारा
शाह (एरण, बंसल, सिंघल)
शाहपुरा वाले
शिवाड वाले
शीशवालिया
शेखावाटिया
शेरपुरवाले
शेरा वाले
शोभासरिया
शेरावाले(गर्ग,मित्तल)
सक्तिया
सकंर्द(गर्ग)
संगल(सिंघल)
सगरेवाला
सगी, सगाई
संगीवाला
संघी-बंसल
संघोलिया
संतरामजीका
सतनालीका
सतूका
सदवती
सफाड़िया
संदरीवाले
सनावड़वाला
सनेरवाला
समथरवाला
समराय वाला

समालिया
समोद वाले
सरसिलेवाला
स्याल
स्यामसरिया
सर्राफ(जिंदल, बिंदल, सिंघल)
सरावगी(गर्ग,बिंदल)
सलइयावाला
सलमेवाला(गोयल)
सलारपुरिया
सवाईका(गोयल)
सहारिया(एरण)
सांखूवाला
सांगानेरिया(गर्ग)
सांघी
साड़ीवाल
साठेवा
सांभरवाले
सानोदिया
सारत
साल्हावसिया
साव
सांवलका(बिंदल)
साहा
साहूवाला(गोयल)
साहूजैन(गर्ग,मित्तल)
साहेवाला
सिकरिया
सिंगला(सिंघल)
सिंगलिया(बंसल)
सिंघानिया(सिंघल)
सिघनोदिया
सितानी
सिताबराय वाला

सिद्धपुरवाले
सिदी(गर्ग)
सिपुरिया(मंगल)
सिवेटिया
सिसोदिया(मित्तल)
सींघई
सीतिया
सीवंणवाले
सीसाहाला
सुखजीका
सुगन्धी
सुतेरशाही
सुंदरका
सुद्रानिया
सुपारीवाला
सुरंगलीवाला
सुरेका(गोयल,गर्ग)
सुल्तानपुरिया
सुलतानिया(बंसल)
सूर्दवाले
सूगला(गर्ग)
सूजगढ़िया
सूतवाले(गर्ग)
सूतिया
सूरशाही
सेकड़ा
सेक्सरिया(जिंदल)
सेठ
सेठानीका
सेडूका
सेदपुरिया(एरण)
सेनावाले
सेलवाले
सेवतावाले
सोंथलिया(एरण)

सोदागर
सोमका(एरण)
सोनावाले(गोयल)
सोमनाथवाला(बंसल)
सोमूदिया
श्रीया
हटका
हठीरामका
हमीरवासिया
हरनामवाले
हरभजनका
हरलालका (एरण, मंगल)
हलवाई
हवेलिया(गर्ग)
हांडा(बंसल)
हाथीदांतवाले(गर्ग)
हालवासिया(गर्ग)
हालना
हांसलसरिया
हिंगोलीवाले
हिंडोरिया
हिम्मतरायका(बंसल)
हिम्मतसिंहका(गर्ग)
हिसारिया (मित्तल, सिंघल)
हीराखान वाला
हीरानंदका
हुडेत
हुडेकर
हुण्डीवाला
हुण्डेवाला
हेदराबादी
हेलीवाले
होजरीवाले

अग्रवालों के विभिन्न गोत्र एवं उनसे सम्बन्धित परिवार

गर्ग गोत्र

अग्रवालों में गर्ग गोत्र का सर्वोपरि स्थान है। कहते हैं, महाराजा अग्रसेन गर्ग गोत्र के थे, इसलिये गर्ग गोत्री अग्रवालों की संख्या भी सर्वाधिक पाई जाती है। गर्ग मुनि के नाम पर यह गोत्र प्रचलित है और इस गोत्र में लोहिया, डालमिया, गिंदोड़िया, खेतान, चमड़िया, केडिया, रूंगटा, हालवासिया, सरावगी, सुरेका, शोरावाले, गोटावाले जैसे अनेक अल्ल बंक वाले प्रतिष्ठित पारिवार आते हैं।

यहाँ गर्ग गोत्री कतिपय अग्रवाल परिवारों का परिचय दिया जा रहा है:-

लोहिया-पुराने जमाने में इस खानदान के लोगों द्वारा लोहे का व्यापार करने के कारण उनका लोहिया बंक प्रचलित हुआ। भारत के सुप्रसिद्ध समाजवादी नेता डॉ. राम मनोहर लोहिया के सेठ स्नेहीराम डूंगरमल लोहिया, ओ. पी. लोहिया (इण्डोरामा), अतुल लोहिया आदि लोहिया बंक से ही सम्बन्धित है।

गिंदोड़िया-परिवार में शादी-विवाह या मृत्युभोज के समय गिंदोड़ा बाँटने के कारण इस खानदान का बंक गिंदोड़िया प्रचलित हुआ। गिंदोड़ा चीनी से बना गोलाकार खाद्य पदार्थ होता हैं। शुभ कार्य पर इसे बाँटा जाता हैं।

गाड़ोदिया-इस वंश के लोगों का मूलस्थान गाड़ोद नामक स्थान होने के कारण ये गाड़ोदिया कहलाये। इस वंश के लोग दिल्ली, लक्ष्मणगढ़, जबलपुर आदि में पाए जाते हैं। सेठ लक्ष्मीनारायण गाड़ोदिया इस परिवार के प्रतिष्ठित पुरुष हुए, जिन्होंने लाखों रूपयों का दान राष्ट्रीय आंदोलन में प्रदान किया।

मोदी-इस खानदान के लोगों का मूल निवास स्थान लक्ष्मणगढ़ है। इस परिवार के अनेक बड़े-बड़े शिक्षण संस्थान, धर्मशालायें आदि बने हुए है। रसद (खाने-पीने की वस्तुओं) का व्यापार करने के कारण भी इन्हें मोदी कहा जाता है।

खेतान-खेतान वंश का अग्रवाल समाज में विशेष स्थान है। इस परिवार में कभी खेतसीदास जी नाम यशस्वी पुरूष हुए, जिससे उनके वंशज खेतान कहलाये। ये मूल रूप से झूंझनू के निवासी थे। सुप्रसिद्ध खेतान पंखों के निर्माता श्रीकृष्ण खेतान ही हैं।

चमड़िया-इस वंश के लोगों का मूल निवासस्थान फतेहपुर और गोत्र गर्ग है। वर्तमान में इस परिवार के लोग श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ आदि में भी बसे हुए हैं। फतेहपुर में शक्तिपीठ है।

डालमिया-शेखावाटी के डालमा नामक ग्राम से उठने के कारण इस वंश के लोगों का बंक डालमिया पड़ा। इनका गोत्र गर्ग है। सेठ रामकृष्ण डालमिया, जयदयाल डालमिया, श्रीमती दिनेशनंदिनी डालमिया आदि अनेक यशस्वी व्यक्तित्व हुए हैं। इस परिवार के नाम पर ही डालमियापुरम, डालमियानगर बसे हुए हैं।

केडिया-इस परिवार के लोगों का केड (झूंझनू) नामक स्थान से निकास होने के कारण ये केडिया कहलाये। इस वंश के लोग बाद में केड ग्राम से उठकर गूढ़ागोड़जी में बस गए थे। यह भी कहा जाता है कि इस

परिवार के सेठ पहूराम और भोलाराम जी ने सं. 1515 में एक केर की छड़ रोपकर नये शहर बसाने का मुहूर्त किया, जो बाद में केड नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस वंश के मूल पुरुष मुण्डल जी हुए, जिनके चार पत्नियां हुई, जो उनके साथ सती हो गई। उनकी छतरियां केड में बनी हुई है। इनकी केडिया जाति सभा, कोलकाता में है। पुष्करलाल केडिया का स्काउटिंग एवं समाजसेवा के क्षेत्र में विशेष योगदान है और इनके प्रयत्नों से कोलकाता में विशाल अग्रसेन भवन का निर्माण हो रहा है।

चूड़ीवाले-इस वंश के पूर्व पुरुष लम्बे समय से चूड़ी (जयपुर) नामक ग्राम में बसते थे। सेठ लच्छीराम चूड़ीवाला अत्यंत ही ख्यातनामा पुरुष थे। लक्ष्मणगढ़ में ब्रह्मचर्याश्रम की स्थापना की।

रूंगटा-इस वंश में रूद्यान जी नाम यशस्वी पुरूष हुए, वही शब्द अपभ्रंश होकर रूंगटा के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इनका गोत्र गर्ग है। इनका मूल निवास स्थान बगड़ है।

हालवसिया-इस परिवार के लोग मूल रूप से हालवास, नामक ग्राम (हरियाणा) के निवासी थे और बाद में भिवानी आदि में बसने के कारण हालवसिया नाम से प्रख्यात हुए। इस वंश में रायबहादुर सेठ विश्वेश्वर लाल, सेठ मोतीलाल, पुरूषोत्तमलाल जैसे अनेक प्रसिद्ध व्यक्तित्व हुए हैं। इस वंश द्वारा स्थापित सेठ विश्वेश्वरलाल हालवसिया ट्रस्ट देश के सबसे बड़े और पुराने ट्रस्टों में से एक है, जिसके द्वारा शिक्षा, साहित्य, धर्म, चिकित्सा आदि विभिन्न क्षेत्रों में लाखों-करोड़ों रूपयों की राशि विनियोजित की गई है।

नाथूरामजी का-शेखावाटी में ही लगभग 250 वर्ष पहले सेठ नाथूरामजी हुए, जिनके वंशज नाथूरामका कहलाये।

मुरारका-इस परिवार का मूल स्थान मुरार होने से वे मुरारका कहलाये। इस वंश में वसन्तलाल मुरारका जैसे सुप्रसिद्ध समाज सेवी हुए, जो अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के अध्यक्ष रहे तथा जिनकी गणना देश के महान् क्रांतिकारियों में होती है।

सरावगी-जैनधर्म से सम्बन्धित होने के कारण इस परिवार के लोग श्रावक कहलाये, जिसका अपभ्रंश सरावगी रूप में प्रचलित हुआ। ये जैनधर्म के अनुयायी हैं।

चिड़ीमार-यह परिवार मुख्य रूप से भिवानी से सम्बद्ध है।

हिम्मतसिंहका-इस वंश के लोगों का मूल निवास स्थान सिंघाणा है। 200 वर्ष पूर्व इस वंश में हिम्मतसिंह नामक गौरवशाली व्यक्तित्व, हुए, जिन के नाम से यह वंश हिम्मसिंहका कहलाया। यह भी कहा जाता हैं कि नवाब ने इस वंश की वीरता एवं साहस से प्रभावित होकर उन्हें हिम्मतसिंह की उपाधि प्रदान की, जिसके बाद से यह परिवार हिम्मतसिंहका कहलाया।

चौधरी-अग्रवाल समाज में अनेक ऐसे परिवार हैं, जिन्हें समाज में चौधराहट करने अथवा राज्य की सेवाएँ श्रेष्ठ ढंग से करने के कारण चौधरी को पदवी प्राप्त हुई और वे चौधरी नाम से प्रसिद्ध हुए।

रईस-अत्यंत शान-शौकत एवं रईसी ठाठ के कारण इस वंश के लोग रईस नाम से प्रसिद्ध हुए।

दीवान-इस परिवार के अग्रज हट्टीरामजी कश्मीर में प्राईम मिनिस्टर और लाला किशनचंद जी "द स्टेट" के दीवान रहे थे। इसलिये यह परिवार दीवान नाम से ख्यात हुआ।

तोपखानावाला परिवार-तोपखाने के कारण यह परिवार तोपखानावाला परिवार के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

इस परिवार में लाला नरसिंह, कुंवरसेन आदि अनेक प्रतिष्ठित पुरूष हुए।

संघी-इनका मूल निवास स्थान नारनौल, बंक संघी था। रायसाहब लाला हजारीमल संघी इस परिवार के प्रसिद्ध पुरूष थे।

इनके अलावा भी गर्ग गोत्र में विभिन्न बंकों के परिवार हैं।

गोयल गोत्र

अग्रवालों के 18 गोत्रों में गोयल का भी प्रमुख स्थान है। इस गोत्र के लोग उद्योग-व्यवसाय, दान-धर्म, सेवा, शिक्षा, मीडिया आदि सभी क्षेत्रों में छाये हुए हैं एवं देश के सभी भू-भागों में फैले हैं।

यहाँ कतिपय गोयल गोत्र से सम्बन्धित परिवारों का परिचय दिया जा रहा है-

मोदी-भारत के अग्रवाल परिवारों में मोदी खानदान का नाम अत्यंत प्रसिद्ध है। वैसे तो यह बंक पारसियों, खत्रियों एवं अन्य कई जातियों में भी प्रसिद्ध है, किन्तु अग्रवाल समाज के मोदी परिवार में नाम विशेष है।

मोदी परिवार में कानपुर का मोदी परिवार प्रसिद्ध हैं। इस परिवार का मूल निवास स्थान कानोड़ था, जहाँ से यह कानपुर चला गया। 1857 के संग्राम में इस परिवार के रामबक्शजी मोदी मिल्ट्री के कन्ट्रेक्टर थे और सेना को रसद की आपूर्ति करते थे। सरकार ने उनकी सेवाओं से प्रसन्न होकर उन्हे पूरे पंजाब के मोदीखाने का इंचार्ज बना दिया, जिससे यह परिवार पटियाला में रहने लगा तथा मोदी नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस परिवार की मुलतान, बेगमाबाद तथा देश के विभिन्न भागों में शाखायें थी।

इस परिवार में रायबहादुर मुलतानीमल, सेठ गूजरमल, केदारनाथ मोदी जैसे अनेक प्रसिद्ध व्यक्तित्व हुए हैं। मोदी बंक गर्ग गोत्री परिवारों का भी पाया जाता है।

गोयन्का -गोयल गोत्री परिवारों में गोयन्का वंश का विशेष स्थान है। कहते हैं कि इस वंश में गोविन्ददास नामक एक प्रसिद्ध पुरूष हुए, जिनके नाम से ही आगे चलकर यह परिवार गोयन्का कहलाया।

यह परिवार मुख्य रूप से चुरू, फतेहपुर निवासी है। इस परिवार के लोग उद्योग-व्यवसाय, शिक्षा, दान-धर्म, गौ-सेवा, समाज सेवा आदि सभी क्षेत्रों में अपना वर्चस्व बनाए हुए हैं।

इस गोत्र को सेठ रामचन्द्र हरिराम गोयन्का, के.टी.सी.आई., रायबहादुर सर बद्रीनाथ गोयन्का सी.आई.ई. विपश्यना पद्धति के सत्यनारायण गोयन्का, धार्मिक जगत् के गौरव, गीताप्रेस के संस्थापक जयदयाल गोयन्का, अग्रवाल समाज के गौरव नंदकिशोर गोयन्का, उद्योग-जगत् के सिरमौर आर.पी. गोयन्का जैसी अनेकानेक विभूतियां को जन्म देने का श्रेय प्राप्त है।

टीबड़ेवाल- इस वंश के लोगों का मूल निवास स्थान झूंझनू है। कहा जाता है कि इस परिवार के सेठ जेत रूपजी को, किसी कारणवश झूंझनू के पास ही एक टीबे पर निवास करने के कारण लोग टीबड़ेवाला कहने लगे, जिससे इस वंश का नाम टीबड़ेवाल प्रचलित हो गया।

राजस्थान के पूर्व मुख्य न्यायाधिपति एवं कार्यकारी राज्यपाल श्री नवरंगलाल टीबड़ेवाल इसी परिवार की विशिष्ट विभूति हैं।

भगत- इस वंश के लोग नवलगढ़ के निवासी थे तथा साधुसंतों की सेवा एवं उनके भोजनादि की व्यवस्था करने के कारण भगत नाम से सम्बोधित हुए।

मोर-ये मूल रूप से नवलगढ़ (शेखावाटी) के निवासी हैं, बंक मोर और गोत्र गोयल है। कुछ लोगों का कहना है कि इनकी हवेली पर मोर बैठते थे, इसलिए ये लोग मोर कहलाये, जबकि कुछ का कहना है कि मोरवा नामक स्थान से इनका निवास होने के कारण इनका बंक मोर प्रचलित हुआ।

कसेरा-काँसे या बर्तनों का व्यापार मुख्य रूप से करने के कारण **"कसेरा"** वंश प्रचलित हुआ। ये फतेहपुर, बिसाऊ, चूरू आदि के निवासी हैं।

गुड़वाला- यह भारत के गोयल गोत्री परिवारों में अत्यंत ही प्रतिष्ठित खानदान है। इस परिवार ने मुगल-सल्तनत के समय पर्याप्त प्रतिष्ठा अर्जित की और कहा जाता है कि शाही घराने को जितने रूपयों की आवश्यकता होती थी, यह परिवार उन्हे बिना ब्याज उपलब्ध कराता था। इस परिवार में सेठ नाढ़ोमल, लाला राधाकृष्ण, लाला छीतरमल, रायबहादुर नारायणदास, लाला रामजीदास, लाला सत्यनारायण आदि अनेक यशस्वी पुरूष हुए। सेठ रामजीदास गुड़वालों ने 1857 की क्रांति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

तोदी- इस परिवार के पूर्व पुरूष तोद नामक ग्राम से चलकर सीकर आए। तोद से आने के कारण वे तोदी कहलाये।

चोखानी- इस वंश के लोग मूल रूप से मुकुन्दगढ़, मण्डावा, शेखावाटी आदि के निवासी हैं। कहा जाता है कि इस वंश में सेठ चोखराम जी नामक प्रतिष्ठित व्यक्तित्व हुए, जिससे इस वंश का बंक चोखानी प्रचलित हुआ। इस परिवार में सेठ भगोतीराम, सेठ स्नेहीमल, रामदेव चोखानी जैसे अनेक सुप्रसिद्ध व्यक्तित्व हुए। रामदेव चोखानी शेयर एवं स्टॉक एक्सचेंज एवं मारवाड़ी समाज, कोलकाता के अग्रणी व्यक्तित्व थे। वे बंगाल विधान परिषद्, कोलकाता, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट आदि अनेक संस्थाओं के सदस्य एवं अ.भा.मारवाड़ी सम्मेलन के सभापति रहे।

कन्दोई- इस परिवार के लोग मुख्य रूप से गूढ़ा गौड़जी के निवासी थे। कन्द (मिठाई) का व्यापार करने के कारण कन्दोई कहलाये। पद्मश्री हनुमान बक्स कनोई इस समाज के सुप्रसिद्ध व्यक्तित्व थे, जिनके आसाम, तिनसुकिया आदि में बड़े-बड़े चाय बागान हैं। इस परिवार का शिक्षा, धर्म एवं दान के क्षेत्र में पर्याप्त योगदान है।

बंसल

अग्रवालों के प्रतिष्ठित गोत्रों में बंसल भी एक है। इस गोत्र के लोग प्रायः पूरे भारत में फैले हुए हैं तथा पोद्दार, भरतिया, जालान, झूंझनूवाला, रूइया गाड़ोदिया, नेमाणी, राजगढ़िया, बद्रुका, मरोदिया, साँधी, तुलस्यान, लोयलका, डाणी जैसे अनेक प्रसिद्ध बंक इसके अन्तर्गत आते हैं।

यहाँ हम इसी गोत्र से सम्बन्धित कतिपय बंकों एवं परिवारों का परिचय प्रस्तुत कर रहे हैं:-

पोद्दार (पोतदार)-भारत के सुप्रसिद्ध परिवारों में पोद्दार वंश का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस परिवार का मूल निवास स्थान चुरू है। कहा जाता है कि लगभग 650 वर्ष पूर्व इस परिवार के सेठ रायचंद्र जी नवाबी शासनकाल में फतेहपुर रामगढ़ शेखावाटी में खजाने का काम करते थे। खजाने के कार्य को मारवाड़ी में पोतदार कहते है। इसलिये यह परिवार पोतदार, पोद्दार नाम से प्रसिद्ध हुआ।

इस वंश में अनेक ऐसी विभूतियां हुई, जिन्होंने अपने साहस उद्योग, प्रतिभा, उदारता, दानशीलता आदि के कारण पर्याप्त यशार्जन किया और बड़े-बड़े शिक्षण संस्थानों, मंदिरों, धर्मशालाओं, हस्पतालों आदि का निर्माण जयपुर, चुरू, रामगढ़ शेखावाटी, फतेहपुर, भिवानी, कोलकाता, मुंबई आदि में करवाया।

सेठ आनन्दीलाल पोद्दार इसी घराने के थे, जिन्होंने कलकत्ता नगर निगम, पश्चिमी बंगाल विधानसभा,

मारवाड़ी एसोसिएशन आदि में उच्च पदों को सुशोभित किया।

सुप्रसिद्ध धार्मिक पत्रिका कल्याण के सम्पादक हनुमानप्रसाद भी पोद्दार वंशी ही थे।

भरतिया-इस परिवार के लोग मुख्य रूप से चुरू निवासी थे। गोत्र बंसल है। इस परिवार में सेठ शिवचंद्र भरतिया आदि अनेक प्रसिद्ध व्यक्तित्व हुए, जिन्होंने देश, साहित्य, समाज की सेवाएँ की।

रूइया-रूई का प्रमुख व्यापार, होने के कारण इस परिवार के लोगों का बंक **'रूइया'** प्रसिद्ध हुआ। ये मूलत: रामगढ़ निवासी थे और व्यापार आदि में आधिपत्य होने के कारण रामगढ़ सेठों का कहलाया। इस परिवार में रामनारायण रूइया जैसे अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तित्व हुए, जिनका व्यापार, दान-धर्म के क्षेत्र में पर्याप्त नाम था।

झूंझनू वाला-इस परिवार का मूल निवास स्थान झूंझनू था, जिससे आगे चलकर इसका 'झूंझनूवाला' बंक के पड़ा। इस परिवार में सेठ सूर्यमल झूंझनू वाला, सेठ बलदेवदास जगन्नाथ झूंझनूवाला, सेठ श्रीराम रामनिरंजनदास जैसी विभूतियां हुई, जिन्होंने परिवार के गौरव को बढ़ाया। सेठ सूर्यमल ने अनेकानेक धर्मशालाओं, मंदिरों का निर्माण करा पर्याप्त यशार्जन किया।

टांटिया-यह परिवार मूल रूप से बीदासर निवासी है। सरदारशहर में भी इनका काफी वर्चस्व है। गोत्र बंसल है। कहा जाता है कि इनके पूर्वजों की हवेली, में टांटियों (वर्रे) का छत्ता होने से यह परिवार 'टांटिया' नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस परिवार में सेठ रामेश्वर टांटिया का विशेष नाम है।

जालान-कहा जाता है कि इस वंश में सम्वत् 1354 के लगभग झूंझनू में बाबा जालीराम जी नामक प्रतापी पुरुष हुए। उन्हीं के नाम पर आगे चलकर इस परिवार का बंक जालान पड़ा। रिजर्व बैंक के पूर्व गवर्नर विमल जालान, मारवाड़ी समाज के विशेष व्यक्तित्व ईश्वर चन्द जालान, घनश्याम जालान, गीताप्रेस के संस्थापक व पटना स्थित जालान संग्रहालय के संस्थापक राधाकृष्ण जालान, केशरदेव, मोतीलाल, किशनलाल आदि इसी बंक में हुए। इसी परिवार में सेठ सूरजमल जालान, कोलकाता हुए। आप रतनगढ़ निवासी थे। आपने पश्चिमी बंगाल के व्यावसायिक एवं औद्योगिक जगत् में विशेष ख्याति अर्जित की तथा रतनगढ़, कोलकाता आदि में विशाल शिक्षण संस्थानों, विद्यालयों, महाविद्यालयों, चिकित्सालयों, पार्कों, सड़कों, मंदिरों आदि का निर्माण कर दान-धर्म एवं सेवा के क्षेत्र में विशेष प्रतिमान स्थापित किये। आपने ही काशी में मर्णिकाघाट पर धर्मशाला एवं हरिद्वार में **"हर की पौड़ी"** पर पुल का निर्माण करवाया था।

केजड़ीवाल-इस परिवार का मूल निवास स्थान केजड़ी होने से यह केजड़ीवाल कहलाया। जन लोकपाल बिल आन्दोलन के मुख्य सूत्रधार एवं दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजड़ीवाल भी इसी परिवार के हैं।

संघी-साँघी-इस परिवार के लोग मुख्य रूप से कैथल, रेजड़ी, नारनौल, पटियाला आदि के निवासी है। आपके परिवार में सेठ गंगादास जी प्रसिद्ध पुरुष हुए, जो अपने परिवार एवं सम्बन्धियों के साथ संघ बनाकर तीर्थ यात्रा करते थे। इससे आपका परिवार संघी-साँघी के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस परिवार के लोग मुख्य रूप से वर्तमान में हैदराबाद, दक्षिण भारत, जयपुर, पटियाला आदि में रहते है। अखिल भारतीय वैश्य महा-सम्मेलन के अध्यक्ष एवं सांसद गिरीश सांघी इसी परिवार से हैं।

डाणी (दानी)-इस परिवार के लोग मूल रूप से मेड़ता निवासी थे। इस परिवार में सेठ जयनारायण, सेठ रामनारायण आदि कई प्रतिष्ठित महानुभाव हुए। सेठ जयनारायण ने सुप्रसिद्ध बंगाली मर्चेण्ट की स्थापना की।

धानुका-इस परिवार में सेठ ध्यानचंद जी नामक यशस्वी पुरूष हुए, जिनके नाम से इस का बंक धानुका प्रचलित हुआ। कहा जाता है कि इनके समय में विपन्न अकाल पड़ा। चारों ओर हाहाकार मच गया। उस समय आपने धान के भंडारों को मुफ्त बँटवा दिया था। धान बाँटने के कारण ही यह परिवार धानुका नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस परिवार में सेठ कनीराम किशनलाल धानुक, डिब्रूगढ़, सेठ रामजीदास, गणपतराय हनुमान प्रसाद धानुका आदि कई प्रसिद्ध व्यक्तित्व हुए हैं। इस परिवार का चाय उद्योग में विशेष स्थान है। हनुमानप्रसाद धानुका धर्म-संघ के स्तम्भ रहे।

तुलस्यान-सेठ तुलसीदास जी के वंशज होने के कारण इस परिवार का बंक तुलस्यान पड़ा। मूल निवास स्थान झूंझनू होने के कारण इस परिवार के अनेक लोग झूंझनूवाला भी कहलाये।

शाह-इस परिवार का मूल निवास स्थान सूरजगढ़ (जयपुर) है। गोत्र बंसल है। राज्य में प्रतिष्ठित स्थान और अपार धन वैभव से सम्पन्न होने के कारण शाह कहलाये। सम्बन्धियों में पुकारा जाने वाला '**साहजी**' शब्द भी इसी का अपभ्रंश है। जयपुर, श्रीगंगानगर आदि विभिन्न स्थानों के इस परिवार के लोग बसे हैं।

रईस-इस परिवार के लोग अपनी शान-शौक एवं वैभव के कारण रईस कहलाये। हरियाणा, दिल्ली, उत्तरप्रदेश आदि देश के विविध स्थानों में रहते हैं। हिसार के लाला फतेहचंद रईस का भगवान् पार्श्वनाथ के मंदिर निर्माण में विशेष योगदान रहा।

सिंघल

सिंघल अग्रवालों का प्रमुख गोत्र है। इस गोत्र के लोग प्राय: राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तरप्रदेश आदि विभिन्न प्रांतों में फैले हुए है। जिस प्रकार सिंह जंगल का सम्राट माना जाता हैं, उसी प्रकार से अग्रवाल समाज में सिंघल गोत्री अग्रवालों ने उद्योग व्यवसाय दान-धर्म-सेवा, साहित्य, राजनीति सभी क्षेत्रों में अपनी अद्‌भुत प्रतिभा एवं क्षमता के बल पर विशेष स्थान बनाया है।

इस गोत्र में भारतेंदु हरिश्चंद्र, कमलापत सिंघानिया, पद्मावत सिंघानिया, लक्ष्मीपत सिंघानिया, विजयपत सिंघानिया, श्रीमती सुमित्रा भरतराम, भरतराम आदि सिंघल गोत्री परिवारों की ऐसी विभूतियाँ है, जिन पर भारत सरकार ने डाक-टिकट प्रकाशित कर एवं पद्मभूषण, पद्म-विभूषण, पद्मश्री जैसी उपाधियाँ प्रदान कर सम्मानित किया है।

संक्षेप में सिंघल गोत्री परिवारों का जीवन के हर क्षेत्र में योगदान रहा है और उनकी अग्रवाल समाज की गौरव-गरिमा बढ़ाने में विशेष भूमिका है।

इस गोत्र के कुछ परिवार इस प्रकार है -

कानूनगो-इस परिवार का मूल स्थान जींद स्टेट है। इस परिवार के लोग बादशाह औरंगजेब के समय से ही दीवान, कानूनगो, कमाण्डर इन चीफ जैसे उच्च पदों पर आसीन रहे, इसलिए यह परिवार कानूनगो के नाम से ख्यात हुआ। यह परिवार सिंघल गोत्री है।

राजगढ़िया-इस परिवार के लोग मूल रूप से फतेहपुर (शेखावाटी) निवासी थे। फतेहपुर से राजगढ़ में बसने के कारण यह परिवार प्रारम्भ में फतेहपुरिया और बाद में राजगढ़िया के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

इस परिवार का अभ्रक (Mica) व्यवसाय में प्रभुत्व रहा और उन्होंने अनेक हस्पतालों, विद्यालयों, समाज-सेवा एवं धार्मिक कार्यों में दानकर पर्याप्त यश अर्जित किया।

सिंघानिया-यह भारत के सुप्रसिद्ध अग्रवाल परिवारों में हैं और उद्योग-व्यवसाय, दान-धर्म, सेवा, शिक्षा-प्रसार आदि के क्षेत्र में यह परिवार राष्ट्रीय ही नहीं, अन्तरराष्ट्रीय वख्याति प्राप्त हैं। इस परिवार का मूल स्थान सिंघाणा (राजस्थान) होने के कारण यह परिवार सिंघानिया के नाम से ख्यात हुआ।

इस परिवार में जुग्गीलाल, कमलापत, लक्ष्मीपत, विजयपत, कैलाशपत, गौतमहरि, प्रदीप सिंघानिया, डी. सी. सिंघानिया, पूर्णमल सिंघानिया आदि अनेक विभूतियाँ हुई हैं, जिन्होंने उद्योग, व्यवसाय, धर्म-दान, शिक्षा आदि विधि क्षेत्रों में पर्याप्त नाम कमाया है। जे.के. औद्योगिक घराने का आज विश्व स्तर पर नाम है और जे.के. ऑरगेनाइजेशन, जे.के. पेपर, रायमण्ड ग्रुप, जे.के. टायर्स, विक्रांत टायर्स, स्टैण्डर्ड कैमिकल, जे के कॉटन स्पिनिंग मिल, लक्ष्मी सीमेंट आदि अनेक प्रतिष्ठान पूरे देश में फैले हैं। इस परिवार ने सिंघानिया विश्वविद्यालय, सर पद्मावत विश्वविद्यालय, कमला टावर तथा अनेक बड़े-बड़े शिक्षण संस्थानों, मंदिरों, सार्वजनिक संस्थाओं का निर्माण करा पर्याप्त ख्याति अर्जित की है और देश-विदेश में इसे अनेक नवीन उत्पादों के प्रवर्तन का श्रेय प्राप्त है। श्री पदमावत सिंघानिया संविधान परिषद् के सदस्य रहे। इस परिवार के श्री पदमावत, कमलापत, और लक्ष्मीपत सिंघानिया पर डाक-टिकट जारी कर भारत सरकार ने उन्हें विशेष सम्मान प्रदान किया है। विजयपत सिंघानिया ने माइक्रोसॉफ्ट विमान द्वारा सबसे लम्बी यात्रा कर विश्व स्तर पर कीर्तिमान बनाया है।

गनेड़ीवाला-यह भारत के प्रसिद्ध परिवारों में से एक है। गनेड़ी से निकास होने के कारण इस परिवार का बंक गनेड़ीवाला पड़ा। इस परिवार में सेठ जुगलदास महानंदराम, पूर्णमल रायसाहब, सेठ रामलाल, रामप्रसाद, चिमनलाल, सेठ तोलाराम, सेठ पोकरमल, सेठ धनराज, रामगोपाल गनेड़ीवाल, जैसे अनेक प्रसिद्ध व्यक्तित्व हुए। इस परिवार द्वारा हैदराबाद में करोड़ों रूपयों की लागत से सीताराम तथा बृजभगवान् के मंदिरों का निर्माण करवाया गया। उन्होंने लक्ष्मणगढ़ में वेंकटेश भगवान का तथा पुष्कर में श्रीरंगनाथ जी के मंदिर का निर्माण कराया, जो कला एवं स्थापित्य की दृष्टि से भारत के प्रसिद्ध मंदिरों में से हैं।

नेवटिया-यह परिवार नेवटा (शेखावाटी) स्थान से सम्बन्धित होने के कारण नेवटिया नाम से प्रसिद्ध हुआ। सिंघल गोत्री है। इस परिवार ने फतेहपुर शेखावाटी, कोलकात्ता, मुंबई आदि में देश सेवा, शिक्षा-प्रचार आदि में विशेष नाम कमाया है।

सर्राफ-सर्राफे (सोने-चाँदी) का काम (व्यवसाय) करने के कारण सर्राफ बंक का प्रचलन हुआ। इस बंक में विभिन्न गोत्रों के लोग पाये जाते हैं और प्राय: सम्पूर्ण देश में फैले हुए हैं। इस बंक में अनेक बड़े-बड़े दानी महानुभाव, उद्योगपति, देशभक्त हुए हैं, जिन्होंने अपने श्रेष्ठ कार्यो द्वारा देश और समाज का गौरव बढ़ाया है।

जींदगर-समझा जाता है कि जींद के निवासी होने के कारण इस परिवार के लोग जींदगर कहलाये। सिंघल गोत्र है। इस परिवार के लोग श्रीगंगानगर, जयपुर, संगरिया आदि में फैले हैं।

मित्तल

मित्तल भी अग्रवाल समाज का प्रमुख गोत्र है। जिनका देश के आर्थिक एवं औद्योगिक विकास में महत्त्वपूर्ण स्थान है।

इसी मित्तल गोत्र में लक्ष्मी मित्तल जैसे महान् उद्योगपति, मोबाईल मेन सुनील भारती मित्तल, सोम मित्तल, साहू शांतिप्रसाद जैन, साहू श्रेयांसप्रसाद जैन, साहू रमेशचंद्र जैन, प्रभुदयाल मित्तल, सतपाल मित्तल, पद्मश्री ओ.पी. मित्तल जैसे अनेक व्यक्तित्व पैदा हुए हैं, जिन्होंने अपने व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व द्वारा देश और समाज का नाम ऊँचा किया है।

रईस-सम्पन्न, समृद्ध एवं रईसी का जीवन जीने के कारण अनेक परिवार 'रईस' के नाम से ख्यात हुए। इस वकं के अन्तर्गत विभिन्न गोत्रों के अग्रवाल आते हैं ।

जौहरी-जवाहरात का व्यापार करने के कारण अनेक अग्रवाल परिवारों का बंक जौहरी नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस बंक के अंतर्गत मित्तल आदि विभिन्न गोत्रों के अग्रवाल आते है।

साहू-जैन- इस बंक में मुख्य रूप से साहू सलेखचंद्र जैन, रईस, नजीबाबाद का परिवार विशेष ख्याति रखता है। इस परिवार ने देश धर्म, साहित्य, समाज की सेवा के लिए जो कुछ किया है, वह इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों में अंकित करने योग्य है।

इस परिवार में ही साहू शान्तिप्रसाद जैन, साहू श्रेयांसप्रसाद जैन, साहू रमेशचंद्र, साहू समीर जैन, साहू विनीत जैन, श्रीमती रमा जैन, साहू दीपक जैन, श्रीमती इंदू जैन, आनन्द जैन जैसी अनेक विभूतियाँ उत्पन्न हुई हैं, जिन्होंने अपने श्रेष्ठ कार्यों द्वारा देश-जाति का गौरव बढ़ाया है।

जिंदल

जिंदल अग्रवालों का प्रमुख गोत्र है। इस गोत्र को महान स्वाधीनता सेनानी लाला लाजपतराय, सुप्रसिद्ध उद्योगपति ओम प्रकाश जिन्दल, सीताराम जिन्दल, विश्व की सबसे धनी माताओं में से एक सावित्री जिंदल, राजाबहादुर सर सेठ बंशीलाल, आनरेबल सेठ गोविंदलाल पित्ती, हैदराबाद, सुप्रसिद्ध समाजसेवी सीताराम सेक्सरिया, कल्याण के सम्पादक राधेश्याम खेमका, महान गौभक्त सीताराम खेमका आदि अनेकानेक विभूतियों को जन्म देने का श्रेय प्राप्त है।

यहां इस गोत्र से सम्बन्धित विभिन्न अल्ल-बंक और परिवारों का परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है।

पित्ती-यह दक्षिण भारत के सुप्रसिद्ध अग्रवाल परिवारों में है। इस परिवार ने अपनी उत्कृष्ट व्यापारिक प्रतिभा एवं साहस के बल पर करोड़ों रूपयों की सम्पत्ति अर्जित की और दान-धर्म- परोपकार के कार्यों में व्यय कर अपार प्रतिष्ठा अर्जित की।

सेक्सरिया-इस परिवार के लोग फतेहपुर शेखावाटी के समीप सेखसर गाँव के निवासी होने के कारण बाद में सेक्सरिया कहलाये। गोत्र जिंदल और बंक सेक्सरिया है।

सेठ गोविन्दराम सेक्सरिया का व्यवसाय विभिन्न प्रांतों में फैला हुआ था और आपने मारवाड़ी समाज में पर्याप्त प्रतिष्ठा अर्जित की। इस परिवार में सीताराम सेक्सरिया का विशेष नाम रहा। भारत सरकार ने आपको पद्मभूषण की उपाधि से सम्मानित किया था।

खेमका-इस परिवार के पूर्वज बिसाऊ (शेखावाटी), भिवानी आदि में निवास करते थे। इस परिवार राधेश्याम खेमका जैसे अनेक प्रतिष्ठित महानुभाव हुए हैं, जिन्होंने उद्योग-व्यवसाय के साथ सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में भी पर्याप्त भाग लिया। दिल्ली की मारवाड़ी धर्म्शाला इसी परिवार द्वारा बनवाई हुई है।

राधेश्याम खेमका सुप्रसिद्ध पत्रिका **"कल्याण"** के सम्पादक है।

रूईया (रूईवाले)-रूई का व्यापार करने वाले कई अग्रवाल परिवार रूईवाले बंक से प्रचलित हुए। इस परिवार में पं. अजीत प्रसाद जैन, लखनऊ का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

एरण गोत्र

एरण गोत्र भी अग्रवालों के 18 गोत्रों में से एक है। इस गोत्र में सुप्रसिद्ध गाँधीवादी नेता सेठ जमनालाल बजाज, कमलनयन बजाज, राहुल बजाज, श्री प्रताप जी सेठ अमलनेर, रायरामप्रताप आली, राजा इन्द्रमन, राजा ख्यालीराम बहादुर, राजा पटनीमल, प्रवीणचन्द्र एरण, रायकृष्णदास, राय सीताराम, राय गोविन्दचंद जैसे अनेक यशस्वी व्यक्तित्व हुए, जिन्होंने अपने कार्यों द्वारा अग्रवाल समाज को गौरवान्वित किया है।

बजाज-यह अग्रवाल समाज के सुप्रसिद्ध परिवारों में से एक है। बजाजे (वस्त्र) का व्यवसाय करने के कारण इसका बंक बजाज पड़ा। इस बंक में सेठ जमनालाल बजाज, कमलनयन, रामकृष्ण, राहुल बजाज जैसी विभूतियाँ पैदा हुई हैं, जिन पर कोई भी समाज गौरव का अनुभव कर सकता है।

सेठ जमनालाल बजाज ने 1918 में उन्होंने ही सर्वप्रथम अ.भा. अग्रवाल महासभा की स्थापना की। आपके परिवार की भी राष्ट्र के प्रति महान सेवाए रहीं।

मंगल गोत्र

कानोड़िया-मारवाड़ी अग्रवाल समाज में कानोड़िया परिवार भी विशेष स्थान रखता है। इस परिवार का मूल निवास स्थान कानोड होने के कारण में कानोडिया नाम से प्रसिद्ध हुए।

भागीरथ कानोडिया कोलकात्ता मारवाड़ी अग्रवाल समाज के स्तम्भ और महान् समाज सुधारक थे। आपने महिला शिक्षा के लिए जयपुर में कानोडिया महाविद्यालय की स्थापना की।

बिंदल

अग्रवालों के 18 गोत्रों में एक बिन्दल भी है। इस गोत्र में भी सेठ भगवानदास बागला, सेठ गोपीराम, सेठ आनन्दराय गजाधर, सेठ मंगतराम जैपुरिया जैसे प्रतिष्ठित व्यक्तित्व हुए :-

बागला-बागला परिवार के अग्रवालों का अत्यंत पुराना प्रतिष्ठित परिवार है। इस परिवार का मूल निवास स्थान चुरू रहा और **"बिंदल"** गोत्री है। इस परिवार में भगवानदास बागला बहुत ही यशस्वी पुरूष हुए। उनका व्यापार कोलकात्ता, रगूंन, ब्रह्मा, मुंबई आदि में फैला हुआ था। आपने चुरू, बीकानेर, ब्रह्मा, मांडले, काशी आदि में अनेक धर्मशालाओं, हस्पतालों, मंदिरों, अन्न क्षेत्रों, पाठशालाओं आदि का निर्माण कर महान् दानवीरता, समाज सेवा भावना का परिचय दिया।

जैपुरिया-यह परिवार भी भारत के प्रतिष्ठित अग्रवाल परिवारों में जैपुरिया है। मूल निवास जयपुर छोड़ नवलगढ़ में बसने के कारण इसका बंक जयपुरिया पड़ा। इस वंश में सेठ जयनारायण, सेठ तेजराम, सेठ रामकुमार, सेठ बिहारीलाल, सेठ बेणीप्रसाद, सेठ आनन्दराज गजाधर, सेठ मंगतूराम, सेठ पूर्णमल जैसे अनेक प्रतिष्ठित पुरूष हुए हैं, जिन्होंने उद्योग व्यवसाय के साथ दान-धर्म-सेवा, लोकोपकार के क्षेत्र में भी पर्याप्त लोकप्रियता अर्जित की।

तायल

तायल गोत्र में भी अनेक अग्रवाल हुए हैं, जिनमें रायसाहब लाला सरयूप्रसाद, फैजाबाद, रायबहादुर लाला धनीराम बलवंतराम तायल, हिसार, डॉ. विमलेंदु तायल, श्रीगंगानगर, लाला जयदेव रईस आदि इस गौत्र के प्रमुख व्यक्तित्व हैं। विमलेंदु तायल ने महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलपति पद को सुशोभित किया।

अग्रवाल/ वैश्यों के प्रमुख संगठन

अखिल भारतीय वैश्य अग्रवाल महासभा

वैश्यों का सर्वप्रथम संगठन **"सभाये.आजम"** नाम से खुर्जा में 1890 में गठित हुआ, जिसके अन्तर्गत **''वैश्योत्पत्ति चंद्रिका"** मासिक पत्र उर्दू में प्रकाशित होता था, जो बाद में हिन्दी में भी छपना प्रारम्भ हो गया। इस सभा द्वारा विधवा सहायता एवं छात्रों को छात्रवृत्ति देने जैसे कार्यक्रम प्रारम्भ किए गए, किन्तु 1909 में यह संगठन समाप्त हो गया, जिसे 1926 में पुन: अखिल भारतीय वैश्य अग्रवाल महासभा के नाम से अलीगढ़ में पुनर्जीवित किया गया। इस महासभा के अधिवेशन समय-समय पर विविध स्थानों में होते रहे। इसके 1966 अधिवेशन में असहाय विधवानिधि की स्थापना की गई, जो विधवाओं एवं जरूरतमंद छात्रों की मदद करती है। इस महासभा द्वारा प्रारम्भ में **"अग्रवाल"** बाद में **"अग्रवाल संदेश"** नाम से पत्रिका का प्रकाशन किया गया, जो वर्त्तमान में भी अलीगढ़ से प्रकाशित हो रही है। महासभा द्वारा 11-12 अप्रेल, 1987 को अपने शताब्दी समारोह के अवसर पर दिल्ली में एक विशाल आयोजन किया गया और समाज की प्रगति के लिए अनेक संकल्प लिए गए।

अखिल भारतीय वैश्य महासभा

सम्पूर्ण भारत में अग्रवाल एवं वैश्यों को संगठित करने का यह सर्वप्रथम प्रयास था। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जबकि अंग्रेज सरकार द्वारा भारत के वैश्य समाज की शक्तियों को छिन्न-भिन्न किया जाने लगा और समाज में नई-नई कुरीतियों का जन्म होने लगा था तो समाज-सुधार की दृष्टि से 1892 में लाला दुर्गाप्रसाद फर्रूखाबाद के नेतृत्व में वैश्य महासभा का गठन किया गया था।

इस महासभा ने वैश्य एवं अग्रवाल जाति के संगठन एवं सुधार की दिशा में अनेक कदम उठाए और 1892 से लेकर 1944 और उसके बाद भी भारत के कोने-कोने में लगातार अधिवेशनों का आयोजन कर सामाजिक जागरण की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किये तथा पर्दा प्रथा, बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, दहेज, दिखावा आदि के विरूद्ध वातावरण तैयार किया। सन् 1896 में बाल-विवाह में सुधार की दृष्टि से विवाह के पात्र लड़कों की आयु 16 वर्ष तथा लड़कियों के लिए 14 वर्ष निश्चित की। उर्दू के स्थान पर हिन्दी तथा संस्कृत के प्रयोग को प्रोत्साहित किया। छात्रों को अध्ययनार्थ छात्रवृत्तियाँ प्रदान की। महिला शिक्षा, शिल्प एवं उद्योग की शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए भी अनेक कदम उठाए गए।

सन् 1901 की जनगणना में जब वैश्यों के लिए **"बनिया-बक्काल"** शब्द का प्रयोग किया गया तो सभा ने उसका विरोध कर **"वैश्य"** शब्द स्वीकृत करवाया।

अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा

अग्रवालों का यह प्रमुख संगठन था, जिसकी स्थापना 1918 में वर्धा में अग्रवाल समाज के स्वनामधन्य व्यक्तित्व जमनालाल बजाज द्वारा की गई। इसका प्रथम अधिवेशन सेठ खेमराज श्रीकृष्णदास की अध्यक्षता में हुआ। अग्रवाल समाज को एकता के सूत्र में बाँधने का यह सबसे महत्त्वपूर्ण प्रयास था। इस सभा का द्वितीय अधिवेशन मुंबई में 1919 में हुआ था, जिसमें महात्मा गाँधी भी पधारे थे और गाँधी जी की अपील पर उन्हें हिन्दी

प्रचार के लिए 50 हजार रूपयों की थैली भेंट की गई तथा दस लाख रूपयों की राशि से अग्रवाल मारवाड़ी जातीय कोष की स्थापना भी की गई थी, जिसके द्वारा अग्रवाल छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्तियाँ प्रदान करने तथा मुंबई में अग्रवालनगर की स्थापना जैसे महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए गए।

1950 में इसका अधिवेशन सुप्रसिद्ध गाँधीवादी नेता कमलनयन बजाज के नेतृत्व और मास्टर लक्ष्मी नारायण के महामांत्रित्व में हुआ, जिसमें अग्रोहा में महाराजा अग्रसेन इंजीनियरिंग एवं टेक्नीकल कॉलेज स्थापित करने का निर्णय लिया गया और इस हेतु अग्रोहा में भूमि क्रय की गई, किन्तु यह योजना किन्हीं कारणवश सिरे न चढ़ सकी। 1975 में अग्रवाल सम्मेलन की स्थापना के बाद इस सभा की गतिविधियाँ प्राय: विलुप्त सी हो गई।

अग्रोहा विकास ट्रस्ट

अग्रोहा विकास ट्रस्ट वर्तमान में अग्रवालों का सबसे बड़ा और महत्त्वपूर्ण ट्रस्ट है। अग्रोहा को अग्रवालों के तीर्थधाम के रूप में विकसित करने के पावन उद्देश्य से इसकी स्थापना 1976 में हुई। सौभाग्य से ट्रस्ट को रामेश्वरदास गुप्त, तिलकराज अग्रवाल, मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल,बनारसीदास गुप्त, नंदकिशोर गोईन्का, हरपतराय टांटिया आदि सुयोग्य, समर्पित निष्काम समाज सेवियों का नेतृत्व प्राप्त हुआ, जिसके कारण अग्रोहा ने निर्माण की नई-नई मंजिलें छुई, कुलदेवी महालक्ष्मी, महाराजा अग्रसेन आदि के एक से बढ़कर एक भव्य मंदिरों का निर्माण हुआ, शक्तिसरोवर बना और इन सबके सामूहिक प्रयत्नों से अग्रोहा विश्व धरातल पर अग्रवालों के पाँचवें धाम के रूप में प्रतिष्ठित हो सका। इसके साथ ही ट्रस्ट ने 1995 में महाराजा अग्रसेन ज्योति रथ यात्रा का सफलतापूर्वक संचालन कर सम्पूर्ण देश-विदेश के अग्रवाल समाज में चेतना उत्पन्न करने का महत्त्वपूर्ण प्रयास किया।

ट्रस्ट की ये गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ बहुमुखी हैं, बहुविध हैं। ट्रस्ट ने अग्रवाल जाति का इतिहास, अग्रवालों से सम्बन्धित साहित्य तथा अग्रोहा धाम पत्रिका का प्रकाशन कर अग्रवालों को उनके गौरव से परिचित करवाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, ट्रस्ट के प्रयास से महाराजा अग्रसेन तथा अन्य अनेक अग्र विभूतियों पर डाक-टिकटों का प्रकाशन हुआ, राष्ट्रीय राजमार्ग सं. 10, सुपर हाइवे नं.1 तथा विशाल जलपोत का नामकरण महाराजा अग्रसेन के नाम पर हुआ। अनेक राज्य सरकारों ने महाराजा अग्रसेन जयंती पर सार्वजनिक अवकाश की घोषणा की, महाराजा अग्रसेन तथा सेठ द्वारिकाप्रसाद सर्राफ जैसे राष्ट्रीय पुरस्कारों का प्रवर्त्तन हुआ, अग्रोहा में अनाज मण्डी स्थापित करने तथा इसका पर्यटन स्थल के रूप में विकास करने जैसी योजनाएं बनीं। अग्रोहा के थेहों की आंशिक खुदाई हुई। सम्पूर्ण देश के अग्रवालों में आज जो अभूतपूर्व चेतना दिखाई दे रही है, उसका बहुत कुछ श्रेय अग्रोहा विकास ट्रस्ट को है।

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन

रामेश्वरदास गुप्त के प्रयत्नों से दिल्ली में 5-6 अप्रैल, 1975 को अखिल भारतीय अग्रवाल प्रतिनिधि सम्मेलन हुआ, जिसमें अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन स्थापित करने, अग्रोहा के पुनर्निर्माण तथा अन्य कई संकल्प लिए गए। उसी आधार पर 6 सितम्बर, 1975 को सम्मेलन की स्थापना हुई तथा बनारसीदास गुप्त इसके संस्थापक अध्यक्ष एवं रामेश्वरदास गुप्त महामंत्री बने।

सम्मेलन ने प्रारम्भ में काफी सक्रियता का परिचय दिया। सम्मेलन के प्रयास से ही अग्रोहा विकास ट्रस्ट का गठन होकर अग्रोहा के निर्माण की नींव रखी गई, 24 सितम्बर, 1976 को महाराजा अग्रसेन तथा बाद में अनेक अग्र विभूतियों पर डाक-टिकट जारी हुए, दिल्ली के निकलसन पार्क का तथा विशाल जलपोत नामकरण महाराजा अग्रसेन के नाम पर हुआ। अग्रोहा विकास प्राधिकरण के गठन तथा अग्रोहा में महाराजा अग्रसेन मेडिकल कॉलेज एवं हस्पताल की स्थापना में भी उसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

सम्मेलन द्वारा अग्रसेन फाउण्डेशन की स्थापना कर अग्रोहा में अग्र विभूति स्मारक का निर्माण कराया जा रहा है। स्मारक में महाराजा अग्रसेन मन्दिर का निर्माण भी किया गया है तथा उनके वैश्य-अग्र विभूतियों के चित्र भी लगाये गये है। फांउण्डेशन द्वारा अनेक योजनाएं भी हाथ में ली गई है। पत्रिका भी प्रकाशित होती है।

अखिल भारतीय अग्रवाल महासंघ, दिल्ली

इस महासंघ की स्थापना 9-10 जुलाई, 1977 की दिल्ली में अखिल भारतीय अग्रवाल सभाओं के एक मंच द्वारा राष्ट्रीय संगठन के रूप में की गई। इस संघ को प्रो. रामसिंह, शिवचरण गुप्ता, तिलकराज अग्रवाल, मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, वशेशरनाथ गोटेवाले, के.एन. मोदी सुप्रसिद्ध उद्योगपति आदि का संरक्षण प्राप्त रहा। संघ ने सामाजिक कुरीतियों, दहेजादि प्रथाओं दूर करने, दिन में विवाह तथा वैश्य समाज के व्यापार सम्बन्धी हितों के संरक्षणार्थ समय-समय पर अनेक कदम उठाए हैं। संघ द्वारा 'यशलोक' पत्र का प्रकाशन भी किया जाता है।

अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन

इस सम्मेलन की स्थापना 26 अप्रेल 1981 को नई दिल्ली के धर्मभवन में वैश्य समाज के विभिन्न घटकों के प्रतिनिधियों द्वारा वैश्य समाज के 25 करोड़ वैश्यों के राष्ट्रव्यापी संगठन के रूप में की गई। इस संगठन ने देश में फैले वैश्य समाज को सामाजिक एवं राजनैतिक दृष्टि से एकता के सूत्र में आबद्ध करने की दृष्टि से अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए और समय -समय पर कदम उठाये। बनारसी दास गुप्त, रामदास अग्रवाल, बजरंग लाल जाजू, रामेश्वरदयाल गुप्ता, रामनिवास लखोटिया, गोपाल मोरे, गिरीश सांघी, अशोक अग्रवाल आदि अनेक विभूतियों का इसे नेतृत्व प्राप्त हुआ। सम्मेलन ने चौदह सूत्री कार्यक्रम का प्रवर्तन किया, जिसमें वैश्य समाज के हितों की रक्षा के लिए आवश्यक निर्देश थे। सम्मेलन की ओर से दिल्ली, हैदराबाद, पटना आदि में विशाल वैश्य रैलियों और अनेक प्रांतों में रथयात्राओं का आयोजन किया गया। सम्मेलन संसद, विधानसभाओं में वैश्य प्रतिनिधित्व बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील है तथा आरक्षण को जाति के स्थान पर आर्थिक आधार पर करने और उसका लाभ पिछड़े वैश्य वर्ग को प्रदान करने तथा विभिन्न राज्यों के वैश्यों के उत्थान की मांग भी उठा रहा है।

सम्मेलन वैश्य समाज के हितों की रक्षार्थ निरन्तर गतिशील है। सम्मेलन द्वारा दिल्ली से वैश्य सम्मेलन पत्रिका प्रकाशित की जा रही है। सम्मेलन द्वारा हैदराबाद में महाराजा अग्रसेन की विशाल कांस्य प्रतिमा भी स्थापित की गई है, जिसका उद्घाटन तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल द्वारा किया गया। संगठन द्वारा जरूरतमंद परिवारों की आर्थिक सहायता भी की जाती है।

इसके अलावा भी अग्रवाल वैश्य समाज के अनेकानेक संगठन कार्यरत हैं।

अन्तरराष्ट्रीय वैश्य फेडरेशन (International Vaish Federation)

अन्तरराष्ट्रीय वैश्य फेडरेशन वैश्य समाज का एक ऐसा संगठन है, जो देश विदेश में स्थित वैश्य समाज के सभी घटकों में आपसी सामंजस्य स्थापित कर उन्हें एकजुट कर शक्तिशाली ताकत के रूप में उभारना है। यह संगठन वैश्य समुदाय को सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक रूप से संगठित करने की दिशा में प्रभावशाली रूप से कार्य कर रहा है। इसलिये संगठन द्वारा वैश्य वर्ग के लोगों को सामाजिक रूप से एक दूसरे के समीप लाने के साथ-साथ वैश्य व्यवसायियों को भी संगठित होकर आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। संगठन द्वारा जनकलयाण के साथ योग, स्वास्थ्य, बच्चों के सम्पूर्ण मानसिक-शारीकिर विकास, सह शैक्षणिक गतिविधियों, खेलकूद, महिला व युवा विकास समाज में राजनैतिक जागरण आदि कार्यक्रम भी चलाये जाते हैं।

फेडरेशन द्वारा समाज के लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए वैश्यरत्न, वैश्य चक्र, वैश्य युवा आदि अवार्ड भी प्रदान किए जाते हैं।

अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा

यह वैश्य समाज के प्रमुख घटक माहेश्वरी समाज की प्रमुख एवं सक्रिय संस्था है, जो देश विदेश में निवासरत माहेश्वरी समाज के नागरिकों को एकता के सूत्र में पिराने तथा समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति को सामाजिक व आर्थिक उन्नति के पथ पर अग्रसर करने के लिए है। संस्था का उद्देश्य समाज का सर्वांगीण विकास करना है। इसकी स्थापना 1908 में हुई।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए महासभा के अतिरिक्त अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला महासभा ,अ.भा. माहेश्वरी युवा संगठन,, माहेश्वरी प्रोफेशनल सेल आदि इकाईयों का संचालन किया जाता है। इस हेतु कृष्णदास जाजू ट्रस्ट की स्थापना भी की गई है।

विदेशों में अग्रवाल/वैश्य संगठन

अग्रवाल समाज का प्रसार विश्वव्यापी है और अमेरिका, ब्रिटेन आदि देशों में उनकी पर्याप्त संख्या है। वैश्वीकरण के इस दौर मे अनेक अग्रवाल स्थायी रूप से विदेशों में बस गए हैं और उनके परिवारों की संख्या बढ़ती जा रही है। अग्रवाल समाज में आई चेतना के कारण विदेशों में बसे ये अग्रवाल भी संगठित होकर अग्रवाल समाज की प्रगति एवं उन्नयन हेतु तरह-तरह की सामाजिक, धार्मिक एवं अन्य गतिविधियां करते रहते हैं।

यहां कतिपय ऐसे ही संगठनों का परिचय दे रहे हैं।

अग्रवाल एसोसिएशन, अमेरिका (AAA)

अमेरिका के हयूस्टन टेक्सास स्थित अग्रवालों ने अग्रवाल एसोसिएशन आफ अमेरिका (AAA) तथा अग्रवाल फाउण्डेशन की स्थापना की है। यह एसोसिएशन विविध प्रकार के, आयोजनों द्वारा अग्रवाल समाज के सदस्यों को जोडने, उनमें पारस्परिक सद्भाव की वृद्धि करने तथा समाज के प्रतिभावान छात्रों को उच्च शिक्षा प्राप्त

करने हेतु छात्रवृतियां प्रदान करने की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। एसोसिएशन द्वारा अग्रवाल परिवारों की आर्थिक सहायता भी की जाती है। फाउण्डेशन द्वारा उन अग्रवाल छात्रों को ब्याज रहित ऋण प्रदान किया जाता है, जिनके पास प्रतिभा होने के बावजूद आर्थिक संसाधनों का अभाव है।

अग्रवाल समाज, न्यूजर्सी, यू.एस.ए.(अमेरिका)

भारतीय मूल के विदेशों में बसे अग्रवालों में परस्पर भ्रातृत्व एवं सद्भाव के विकास हेतु अग्रवाल समाज , यू.एस.ए. के नाम से न्यूजर्सी (अमेरिका) में एक संगठन का निर्माण किया गया है, जो शैक्षणिक, धार्मिक, वैज्ञानिक, सांस्कृतिक, सामाजिक दृष्टि से वहां के अग्रवालों को जोडने एवं उनके विकास हेतु प्रयत्नशील है। यह संगठन समय-समय पर विविध प्रकार के आयोजनों को कर अग्रवालों को एक दूसरे से मिलने, उनके पारस्परिक सद्भाव बढ़ाने, कष्ट के समय एक दूसरे की सहायता करने, समाज सेवा के कार्यों को आगे बढ़ाने तथा हिंदू धर्म के प्रचार प्रसार एवं साम्प्रदायिक सद्भाव की स्थापना हेतु कार्य करता है।

अग्रवाल सभा, लंदन

लंदन (यूके.) स्थित अग्रवालों के संगठित करने और उनमें पारस्परिक सद्भाव की वृद्धि करने के उद्देश्य से तिलकराज अग्रवाल द्वारा इस संगठन की स्थापना की गई। यह सभा भी समय-समय पर लंदन में बसने वाले अग्रवालों के सम्मेलन आयोजन कर उन्हें एकता के सूत्र में आबद्ध कर अग्रवाल समाज के हितों के लिए कार्य करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

अन्तरराष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन

यह महासम्मेलन विश्वभर में फैले वैश्यों / अग्रवालों को संगठित कर उनके हितों की रक्षा हेतु प्रयासरत है। इसं संस्था की स्थापना में स्व. श्री रामदास अग्रवाल एवं रमेश चन्द्र अग्रवाल का विशेष योगदान रहा। यह सम्मेलन युवाओं को तकनीकी, औद्योगिक एवं प्रशासनिक पदों की शिक्षा के लिए छात्रवृतियां भी प्रदान करता है।

अग्रवाल बेसड इन कैनेडा (A.B.C.)

Agrawal Based in Canada

अग्रवाल बेसड कैनेडा-एक सामाजिक संगठन है, जो 1997 में कैनेडा में प्रारम्भ और 2001 में स्थापित हुआ। इस संगठन का उद्देश्य कैनेडा स्थित अग्रवालों का सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक दृष्टि से उन्नयन एवं अग्रवाल समाज की समृद्धि के लिये कार्य करना है।

इनके अलावा भी थाईलेण्ड, खाड़ी देशों, दुबई आदि में समाज के संगठन कार्यरत हैं। दुबई में वैश्य महाकुंभ के अवसर पर अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन गल्फ चेप्टर की स्थापना हो चुकी है।

अग्रवाल/वैश्य पत्र-पत्रिकाएं

अग्रवाल समाज मे सामाजिक जाग्रति उत्पन्न करने एवं उन्हें एकता के सूत्र में आबद्ध करने की दिशा में पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन सामाजिक संगठन के साथ-साथ ही होता रहा है। इस अवधि में न जाने कितनी पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ, कितनी अकाल दम तोड़ गई, कितनी ही चल रही हैं और उसके साथ नई-नई पत्रिकाओं के प्रकाशन का क्रम भी अविरत चालू है।

उपलब्ध जानकारी के अनुसार 19 वीं सदी के नवम दशक में अजमेर से अग्रवाल उपकारक पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ, जो अग्रवाल समाज का प्रथम पत्र था। इस पत्र के मुख्य पृष्ठ पर इसके प्रकाशन का उद्देश्य इन पक्तिंयों में अंकित रहता था-

श्री समाज उतम करण, विद्याबल विस्तार।
जासे सुख सम्पद लहे, अन्त होय भवपार।

इस पत्र में समाज सुधार एवं उसकी प्रगति से सम्बन्धित उपयोगी सामग्री होती थी और यह पत्र अग्रवाल समाज की सामाजिक एकता की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा था।

इसके साथ ही 1890 में कलकता से मारवाड़ी गजट नामक पत्र के प्रारम्भ होने का उल्लेख मिलता है। 1891 में सभायेआजम की स्थापना होने के बाद खुर्जा से वैश्योन्नति चन्द्रिका का प्रकाशन हुआ। यह पत्रिका उर्दू तथा हिन्दी दोनों भाषाओं में छपती थी। इसी कड़ी मे 1896 में श्री खेमराज कृष्णदास द्वारा 1896 में बंबई से वेंकटेश्वर समाचार का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। वैश्य हितकारी के नाम से भी एक उर्दू पत्र महासभा का ओर से मेरठ से निकला।

1891 में अजमेर से जैन प्रभाकर और 1895 मे जैन गजट का प्रकाशन हुआ। इन दोनों पत्रों में धर्म के साथ-साथ समाज की एकता एवं विकास पर भी बल दिया जाता रहा।

सन 1904 मे राजस्थानी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार शिवचंद्र भरतिया ने कोलकाता से मासिक वैश्योपकारक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया। इस पत्रिका में अजमेर से प्रकाशित उपकारक पत्र का भी समावेश था। इसमें समाज सुधार से सम्बन्धित रचनाओं के साथ धर्म-नीति एवं अन्य विषयों पर भी रचनाओं का समावेश होता था। मारवाड़ी भाषा में भी रचनाएं होती थीं।

कलकता से ही मारवाड़ी अग्रवाल नाम से पत्रिका का प्रकाशन अखिल भारतीय मारवाडी अग्रवाल महासभा द्वारा भी अनेक वर्षो तक होता रहा, जिसमें मारवाड़ी अग्रवाल समाज से सम्बन्धित रचनाएं एवं समाचार पर्याप्त मात्रा में होते थे और यह पत्रिका पूरे अग्रवाल समाज का प्रतिनिधित्व करती थी।

20वीं शताब्दी के प्रारम्भिक दशकों में अग्रवाल महासभा की स्थापना और वैश्य समाज में जाग्रति उत्पन्न होने के परिणामस्वरूप ज्यों-ज्यों चेतना बढ़ती गई, त्यों-त्यों समाज में पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन की आवश्यकता

भी बढ़ती गई। 1938 में पहले आगरा से अग्रवाल, फिर 1961 में अग्रवाल संदेश पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ, जो अब भी प्रकाशित हो रही है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात अनेक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। जैसे-आगरा से प्रकाश बंसल द्वारा 'अग्रबन्धु', नागपुर से हरिकिशन अग्रवाल द्वारा 'अग्रवाल समाचार', मास्टर लक्ष्मीनारायण अग्रवाल द्वारा 'अग्रोहा तीर्थ', अग्रवाल नवयुवक सभा श्री गगांनगर से अग्रवाल ज्योति, जोधपुर से अग्रवाल स्नेही, अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा समाज विकास, अग्रवाल समाज समिति जयपुर द्वारा अग्रगामी, मेरठ से वैश्य उत्थान तथा वैश्य गौरव आदि।

1973 में रामेश्वरदास गुप्त द्वारा दिल्ली से मंगल मिलन पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया, जिससे बाद में अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन की नींव पड़ी। यह पत्रिका 40 वर्ष से अविरत प्रकाशित हो रही है। उन्होंने सन 1975 के सम्मेलन के अवसर पर अग्रवाल वैश्य पत्र-पत्रिकाओं की प्रदर्शनी का भी आयोजन किया।

सम्मेलन एवं अग्रोहा विकास ट्रस्ट का स्थापना के बाद अग्रवाल वैश्य पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन का विशेष क्रम प्रारम्भ हुआ किंतु उनमें से कुछ पत्र चले, कुछ बंद हो गये। नई-नई पत्रिकाएं भी निरन्तर अस्तित्व में आ रही हैं। इन पत्र-पत्रिकाओं में युवा अग्रवाल, दिल्ली, अग्रसेन पत्रिका, इन्दौर, अग्रचिंतन, नागपुर, अग्रकेशरी गोंदिया, अग्रसेन पुष्पाञ्जली इन्दौर, अग्रणी संदेश जयपुर, अग्रपताका, आगरा, अग्रोदक, जयपुर, महाराजा अग्रसेन समाचार दिल्ली, कल हमारा है, मुजफ्फरनगर, अग्रोही कानपुर, समाज ज्योति मेरठ, संगठन युग, रायपुर, अग्रवाल टाइम्स, अग्रवाल समाज पत्रिका, अग्रसुधा सीकर, अग्रवाल प्रकाश चंडीगढ आदि का नामोल्लेख किया जा सकता है।

अग्रोहा विकास ट्रस्ट की स्थापना के बाद 1987 में ट्रस्ट की ओर अग्रोहाधाम पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। इस पत्रिका ने सामग्री तथा स्तर की दृष्टि से अग्रवाल पत्र-पत्रिकाओं में विशेष प्रतिमान स्थापित किया। यह पत्रिका अग्रवाल समाज की सर्वाधिक संख्या में छपने वाली राष्ट्रीय पत्रिका बन गई। इसके साथ ही अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन द्वारा अग्रवाल सम्मेलन, अ. भा. वैश्य महासम्मेलन द्वारा वैश्य सम्मेलन, अखिल भारतीय वैश्य अग्रवाल महासभा द्वारा अग्रवाल संदेश पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया। इनके अलावा विभिन्न सभाओं द्वारा माहेश्वरी, वैश्य संदेश, गहोई समाचार, महाजन समाचार, तैलिक वैश्य बंधु, सरालिया पत्रिका समाचार, माहेश्वरी संदेश, युवा माहेश्वरी, वैश्य आभा, खण्डेलवाल महासभा पत्रिका, राजधानी महावर संदेश, अग्रहरि समाज, विजयवर्गीय संदेश आदि पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जा रहा है।

अग्रवाल जाति के प्रवर्तक

महाराजा अग्रसेन

महाराजा अग्रसेन अग्रकुल के प्रवर्तक और अग्रवालों की आदि भूमि अग्रोहा के संस्थापक थे। वे विश्व की उन महान विभूतियों में थे, जो अपने सर्वजनहिताय कार्यो द्वारा युग-युग के लिए अमर हो जाते हैं। संस्कृत में एक कहावत है - कीर्ति यस्य स जीवति-संसार में जिसका यश है, वही जीवित है और महाराजा अग्रसेन इसी प्रकार की विभूति थे।

महाराजा अग्रसेन वर्तमान से हजारों वर्ष पूर्व उत्पन्न हुए किंतु वे आज भी अपनी प्रजावत्सलता, धार्मिकता, न्याय, श्रेष्ठ प्रवृतियों और आदर्शो के कारण जाने-जाते हैं। उन्होंने सहकारिता तथा समता के आधार पर एक ईट एक रूपैया जैसी प्रणाली का प्रवर्तन कर जिस सुखी समाज की स्थापना का आदर्श अपने राज्य में रखा, उसका उदाहरण विश्व में अन्यत्र मिलना कठिन है। वास्तव में वे अपने सत्कार्यो द्वारा युगों-युगों तक मानव जाति को प्रेरणा देते रहेंगे और उनके गुणों, आदर्शो व महान कार्यो को काल की सीमा में आबद्ध करना कठिन है।

महाराजा अग्रसेन का जीवनवृत्त और उसके स्त्रोत

प्राचीन भारत में इतिहास लेखन की क्रमबद्ध परम्परा न होने एवं विदेशी आक्रांताओं द्वारा इतिहास की अधिकांश सामग्री नष्ट अथवा क्षत-विक्षत कर दिए जाने के कारण अधिकांश प्राचीन महापुरूषों के जीवन के सम्बंध में प्रामाणिक जानकारी नहीं मिलती। परिणाम स्वरूप उनके अवतरण, अस्तित्व तथा कार्यो के सम्बंध में तरह-तरह के विवादास्पद प्रसंग मिलते है। उनके सम्बंध में जो भी सामग्री पुरातत्व-अवशेषों, लोकगाथाओं, जनश्रुतियों, किंवदंतियों तथा पौराणिक ग्रंथों के माध्यम से मिलती है, उन्हीं के आधार पर उनके जीवन कार्यो, उपलब्धियों आदि का मूल्यांकन संभव होता है।

खेद का विषय है कि महाराजा अग्रसेन के सम्बंध में भी ऐतिहासिक ग्रंथों में किसी प्रकार के सुस्पष्ट तथ्यों का अभाव है, जो कुछ उपलब्ध हैं, वह विभिन्न पौराणिक ग्रंथों, व्याख्यानों, भाटों के गीतों, जनश्रुतियों, किंवदतियों, वंशावलियों आदि के रूप में है और उनकी प्रामाणिकता भी निर्विवाद नहीं है। महाराजा अग्रसेन के जीवन चरित का प्रमुख आधार अब तक महालक्ष्मी व्रत कथा, उरुचरितम्, भाटों की वंशावलियां रही हैं किंतु वर्तमान में महर्षि जैमिनीकृत श्री अग्रउपाख्यान ग्रंथ के मिलने से महाराजा अग्रसेन के जीवन चरित में एक और नई कड़ी जुड़ी है, जिसे जयभारत का एक अंश बताया जाता है और जो मूल रूप से ताड़पत्र पर है। डॉ. परमेश्वरीलाल गुप्त की मान्यता है कि अग्रवंश वैश्यानुकीर्तनम् प्रक्षिप्त ग्रंथ है तथा उरूचरितम् की प्रामाणिकता संदिग्ध है। इस सम्बंध में भी विद्वानों में मतभेद हैं। अग्रोहा में मिले पुरातात्विक अवशेषों एवं अन्य ग्रंथों में उल्लिखित विवरणों से यह प्रमाणित हो चुका है कि प्राचीन समय में अग्रोहा राज्य का अस्तित्व था और उसकी स्थापना अग्र या अग्रसेन नामक किसी राजा ने की थी। अतः अग्रसेन का अस्तित्व स्वयं प्रमाणित है।

इसके अलावा प्राचीन अनुश्रुतियां, लोकगाथायें, विभिन्न वंशावलियां आदि भारतीय जनजीवन की परम्परा के अभिन्न अंग रहे हैं और उन्हें अविश्वसनीय मानना भारत की एक महान थाती को ठुकराना अथवा उसकी उपेक्षा

करना है। हाँ उनमें दिए गए तथ्यों या विवरणों पर विद्वानों में मतभेद हो सकते हैं, किंतु इस प्रकार के मतभेद स्वाभाविक भी हैं, क्योंकि मानव जाति का अधिकांश इतिहास इस प्रकार के विवादों से भरा पड़ा है। अत: महाराजा अग्रसेन के जीवन से सम्बधित विभिन्न प्रसंगों पर मतभेद होते हुए भी यह कहना उचित होगा कि महाराजा अग्रसेन अपने युग की महान विभूति थे, उन्होंने अपने राज्य में एक ईट एक रूपैया तथा सहकारिता, समानता, राजंतत्र में लोकतंत्र, गोत्रों की स्थापना आदि अनेक ऐसे महान कार्य किए थे, जिनके कारण आज भी भारतीय जनजीवन में उनका विशिष्ट स्थान है और वे राष्ट्र की अमूल्य धरोहर के रूप में हमेशा याद किए जाते रहेंगे।

महाराजा अग्रसेन का जन्म

महाराजा अग्रसेन के जन्म और काल को लेकर विभिन्न धारणाएं हैं फिर भी वर्तमान में उपलब्ध श्री अग्रसेन उपाख्यान के अनुसार उनका जन्म ईक्ष्वांकु सूर्यकुल में भगवान् राम के पुत्र कुश की कुल परम्परा में प्रतापनगर के राजा वल्लभसेन के यहां वैदर्भीसुता महारानी भागवती के कोख से द्वापर युग की अंतिम वेला में आश्विन शुक्ल प्रतिपदा को हुआ। यह वहीं वंश है, जिसमें राजा मान्धाता, दिलीप, रघु, अज, दशरथ, भगवान राम जैसे राजा हुए थे। कुश भगवान राम के बड़े पुत्र थे।

भगवान् राम तथा कुश की कुल परम्परा

आनन्द रामायण तथा अन्य ग्रन्थों में भगवान राम तथा कुश की कुल परम्परा का उल्लेख मिलता है। उसमें भगवान् राम के पूर्व तथा बाद के 61-61वंशजों का उल्लेख मिलता है।

उसके अनुसार हिमालय पर तपस्या के मध्य भगवान आदि नारायण से विष्णु, विष्णु से ब्रह्मा, ब्रह्मा से मरीचि, मरीचि से कश्यप, कश्यप से सूर्य, सूर्य से श्राद्धदेव उत्पन्न हुए। उन्हीं श्रद्धादेव को मनु के नाम से भी पुकारा जाता है। उनके परम प्रतापी इक्ष्वांकु , इक्ष्वांकु से कुकुत्स्थ, कुकुत्सथ से इन्द्रवाट, इन्द्रवाट से अनेना तथा उसके पश्चात कृताश्व, श्येनजित, भुवनाश्व, मान्धाता आदि राजा हुए।

मान्धाता के पश्चात् हर्यस्व,सत्यव्रत (त्रिशंकु) सत्यवादी हरिश्चंद्र, रोहित, बाहुक, सगर, अंशुमान, भगीरथ अश्मर्क, खटबांग, दिलीप, रघु, अज, दशरथ, भगवान् राम आदि राजा हुए। कुश इन्हीं भगवान् राम के बड़े पुत्र थे।

कुश के जन्म के सम्बंध में कहा जाता है कि जब रावण पर विजय प्राप्त कर भगवान् राम अयोध्या लौटे तो उन्होंने लोकापवाद के भय से सीता को त्याग दिया तथा त्यक्त सीता ने वाल्मीकि मुनि के आश्रम में शरण ली। उसके दो माह बाद ही महर्षि के आश्रम में ही कुश का जन्म हुआ। लव का जन्म महर्षि के तपोबल से माना जाता है, जो कुश का छोटा भाई कहलाया।

कुश के दो विवाह हुए प्रथम पूर्व देश के राजा भूरिकीर्ति की पुत्री चम्पिका से तथा दूसरा विवाह नागराज कुमुद की बहिन कुमुद्वती से। कुमुद्वती से कुश को 8 पुत्र तथा एक पुत्री हेमा की प्राप्ति हुई। चम्पिका के कोई पुत्र न हुआ। भगवान राम ने अनेक अश्वमेध यज्ञ किये तथा दूर-दूर तक अपने राज्य का विस्तार मालवा आदि ,

विभिन्न प्रदेशों में किया तथा उनका राज्य अपने भाइयों, पुत्र-पौत्रों आदि को सौंप दिया। जब वे साकेत धाम जाने लगे तो उन्होंने अयोध्या का राज्य भरत को सौंपना चाहा किंतु भरत द्वारा अनिच्छा प्रकट करने पर उन्होंने उसका भार बड़े पुत्र कुश को सौंप दिया। कुश बड़ा ही प्रतापी राजा था। उसके बड़े पुत्र का नाम अतिथि था, जिससे आगे राज्य कुल की परम्परा का विकास हुआ। आनन्द रामायण तथा अन्य ग्रंथों में उसकी कुल परम्परा की 61 पीढ़ियों का उल्लेख मिलता है।

कहते हैं कि अतिथि के निषेध, निषेध के नभ, नभ के पुण्डरीक, पुण्डरीक से क्षेमधन्वा, क्षेमधन्वा के बाद वज्रनाभ, अग्निवर्ण, शीघ्रग, तक्षक, वृहत्क्षण, वृहदश्य, पुष्कर, संजय, शाक्य, शुद्धोधन, प्रसेनजित आदि हुए। प्रसेनजित राजा विश्वसाह के पुत्र थे। उन्होंने एक अजेय पुरी का निर्माण किया। उनके प्रतापी पुत्र बृहत्सेन हुए। वृहत्सेन की कुल परम्परा में ही महाराजा बल्लभसेन का जन्म हुआ, जो प्रतापनगर के राजा थे। उनकी पत्नी का नाम भगवती था, जो विदर्भ नरेश की कन्या थी। इन्हीं भगवती की कोख से महाराजा अग्रसेन का जन्म हुआ।

आनन्द रामायण में प्रसेनजित की कुल परम्परा में ही क्षुद्रक, रणक, सुमित्र आदि का उल्लेख मिलता है।

महाराजा अग्रसेन के जन्मकाल सम्बन्धी धारणाएं

महाराजा अग्रसेन का जन्म किस मास व तिथि को हुआ, इसका उल्लेख तो मिलता है किन्तु निश्चित सन् या सम्वत् का उल्लेख नहीं मिलता। वर्तमान समय में इस सम्बंध में दो धारणाएं प्रमुख हैं-

(1) 21 सितम्बर 1976, अश्विन शुक्ल प्रतिपदा को भारत सरकार द्वारा महाराजा अग्रसेन के डाक टिकट प्रकाशन पर अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन में उनकी 5100वीं जयन्ती होने की घोषणा की थी और उसी के अनुसार वर्तमान में अग्रसेन जयंती मनाई जाती है, जिसके अनुसार उनका जन्मकाल 3125 ई. पू. अर्थात् 2017 में 5142 (3125+2017) वर्ष पूर्व निर्धारित होता है तथा उसी के अनुसार देश के विभिन्न भागों में अग्रसेन जयन्ती का आयोजन होता है।

(2) इसके साथ ही वर्तमान में उपलब्ध अग्रसेन उपाख्यान के अनुसार अग्रसेन ने महाभारत युद्ध में अपने पिता के साथ भाग लिया था और उनकी अवस्था उस समय 16 वर्ष की थी तथा उनकी भेंट भगवान् श्रीकृष्ण तथा युधिष्ठिर से भी हुई थी।

वर्तमान काल गणना के अनुसार महाभारत का युद्ध 3139 ई.पू. में हुआ था। उसमें यदि अग्रसेन के उस समय की अवस्था 16 वर्ष जोड़ दी जाय तो उनका जन्म काल 3155 ई.पू. अर्थात वर्तमान (2017) में 5172 वर्ष 3155+2017) पूर्व निर्धारत होता है।

मेरे मतानुसार जब तक अन्य कोई प्रमाण नहीं मिल जाता, इसी को उनका जन्मकाल मानना उचित होगा क्योकि इतिहासकारों के अनुसार लगभग यही समय भगवान कृष्ण तथा युधिष्ठिर का था। महाभारत युद्ध तथा उसके कुछ समय बाद ही कलियुग का अविर्भाव हुआ था तथा महाराजा अग्रसेन ने उसी समय 108 वर्ष की अवस्था तक कलियुग में राज किया था। अत: इन सब साम्यताओं के आधार पर 5172 वर्ष पूर्व उसका जन्म काल मानना ही तर्क संगत प्रतीत होता है।

सूर्यकुल परम्परा और वैश्य समाज

भारतीय समाज में सूर्य कुल परम्परा का अत्यंत महत्व है। श्री शान्तिस्वरूप गुप्त ने इसवंश के महत्व का वर्णन करते हुए कहा है कि यह वंश राजाओं -महाराजाओं तथा सम्राटों से आच्छादित एवं तेजोमय प्रकाशपुञ्ज की किरणों की माला से मण्डित, सैंकड़ों मणियों से सुसज्जित, शोभित और आलोकित रहा है, जिसका तेज समस्त भुतलों में व्याप्त होकर सम्पूर्ण भूमण्डल में चमचमाया, जिसका यशोगान समस्त देवताओं, दैत्यों, मुनियों, ऋषियों, महर्षियों, यक्षों, विद्वानों और सिद्ध पुरुषों द्वारा एक स्वर में किया गया, जिसकी गाथाओं को वेद वेदांगों, पुराणों -उपपुराणों तथा इतिहास में समेटा-बटोरा, पल्लवित, पुष्पित किया गया। जिसके नेरशों ने देश को चिरकाल तक के लिए सशक्त राष्ट्रीयता के सत्र से आबद्ध किया तथा देश की एकता, अखण्डता, शान्ति और समृद्धि के लिए सम्पूर्ण विश्व में एक आदर्श उपस्थित किया।

सूर्यवंश के इन्हीं राजाओं, महाराजाओं और सम्राटों से वंश वृद्धि होने के कारण अनेक वैश्य सम्राटों ने अपनी महिमा तथा गौरव से समाज को गौरवान्वित किया।

महाराजा अग्रसेन भी इसी प्रकार के सूर्यवंशोत्पन्न राजा थे, जिन्होंने अहिंसा एवं प्राणिमात्र के प्रति करूणा धर्म की रक्षार्थ क्षत्रिय कुल को त्याग वैश्य धर्म ग्रहण कर लिया था। उन्होंने अपनी कुल परम्परा को स्थायी एवं सुदृढ़ बनाने के लिए 18 यज्ञों का आयोजन किया किंतु यज्ञ में हिंसा को देख कर 18 वें यज्ञ में पशु बलि का निषेध कर क्षत्रिय के स्थान पर वैश्य कुल को अंगीकार कर महानता का परिचय दिया तथा उसके आधार पर एक नये अग्रकुल एवं एक ईट-एक रुपया जैसे सिद्धान्त का प्रवर्तन कर इतिहास में एक नये युग के प्रवर्तक बने।

यही नहीं, वैश्य वंश में महाराजा अग्रसेन ही नहीं, उनक अलावा भी अनेक सूर्यवंशी सम्राट हुए, जिन्होंने अपने यश तेज, पराक्रम द्वारा वैश्य समाज के गौरव को बढ़ाया।

भारतीय इतिहास में स्वर्णयुग के प्रणेता गुप्त काल के श्रीगुप्त, चन्द्रगुप्त प्रथम, समुद्र गुप्त,, चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य आदि सम्राट सूर्यवंशी ही थे। इसी प्रकार दिल्ली का सम्राट हेमचन्द्र विक्रमादित्य को भी सूर्यवंशी ही माना जाता है। जिसने हुँमायुँ को पराजित कर वीरता का प्रतिमान स्थापित किया।

इस प्रकार वैश्य वंशियों को इस बात पर गौरव करने का अधिकार है कि भगवान् श्रीराम जैसे सूर्यवंश से सम्बन्धित हैं तथा उनकी परम्परा महान है।

शिक्षा

अग्रसेन के जन्म पर परिवार में भारी खुशियां मनाई गई और बड़े होने पर महर्षि के आश्रम में उन्होंने विभिन्न विद्याओं की शिक्षा पाई। वहां उन्होंने छहों शास्त्र, वेदों आदि के साथ-साथ अस्त्र शस्त्रों के संचालन की भी विधिवत शिक्षा प्राप्त की।

महाभारत युद्ध में भाग

जब अग्रसेन 16 वर्ष के थे, तभी महाराजा वल्लभसेन को पाण्डवों की ओर से महाभारत युद्ध में भाग लेने का निमन्त्रण प्राप्त हुआ। इस युद्ध में जब अग्रसेन ने भी महाराजा वल्लभसेन के साथ जाना चाहा तो महाराजा ने उन्हें रोका तथा कहा कि अभी तुम 16 वर्ष के किशोर हो, तुम्हारा युद्ध में जाना उचित नहीं है किंतु कुमार अग्रसेन के यह कहने पर कि उन्होंने अपने गुरू ताण्डव से जो कुछ सीखा है, उसे प्रदर्शित करने का यही उपयुक्त समय है। अत:

माता भगवती की प्रेरणा से उन्हें युद्ध में शामिल होने कि आज्ञा मिल गई और वे अपने पिता के सहयोगी के रूप में महाभारत युद्ध में सम्मिलित हुए।

इस युद्ध में महाराजा वल्लभसेन ने अपूर्व शौर्य का प्रदर्शन किया किंतु युद्ध के 10वें दिन भीष्म पितामह के प्रबल आक्रमण से वे आहत हो अपने रथ से गिर पड़े। कुमार अग्रसेन ने जब अपने पिता को आहत होते हुए देखा तो उन्होंने भीष्म पितामह को ललकारते हुए उन पर जबरदस्त बाणों का प्रहार किया और 18 दिनों तक युद्ध में निरंतर अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते रहे।

युद्ध के समाप्त होने पर अपने पिता की मृत्यु से शोक संतप्त कुमार अग्रसेन को भगवान् श्री कृष्ण ने सान्त्वना प्रदान की और कहा कि आपके पिताश्री ने धर्मयुद्ध में अथाह शौर्य का प्रदर्शन करते हुए वीरगति प्राप्त की है। अतः शोकग्रस्त होना उचित नहीं है। इस प्रकार धैर्य बंधाये जाने पर कुमार अग्रसेन ने अपने पिता के श्राद्ध आदि कर्म किए तथा महाराजा युधिष्ठर से अपने राज्य प्रतापनगर जाने की आज्ञा चाही। महाराजा युधिष्ठिर ने युद्धभूमि में प्रदर्शित उनके शौर्य-पराक्रम की प्रशंसा की तथा भगवान् श्रीकृष्ण ने उन्हें छाती से लगा अपना आशीर्वाद प्रदान किया। इसके बाद प्रतापनगर पंहुच कर उन्होंने शोक संतप्त माताश्री एवं अन्य बंधु-बांधवों को धैर्य बंधाया तथा पिताश्री की दिवंगत आत्मा की शांति हेतु धर्म सम्बंधी अनुष्ठान किए।

आग्रेय राज्य की स्थापना

महाराजा वल्लभसेन की मृत्यु होने पर राज्य के मंत्रियों, ब्राह्मणों, कुलपुरोहित एवं प्रजाजनों ने जब सर्वसम्मति से अग्रसेन को उनके उत्तराधिकारी के रूप में राजा के पद पर अभिषिक्त करना चाहा तो अग्रसेन के चाचा कुंदसेन ने उसका विरोध किया तथा उन्हें बंदी बना कर मारने का उपक्रम रचा किंतु अपने एक विश्वसनीय अमात्य की सहायता से वे बच निकले और एक सुरक्षित मार्ग से वन में चले गये। वहाँ उनकी भेंट महर्षि गर्ग से हुई। वे उन्हें अपने आश्रम में ले गये तथा उन्हें राज्य कीर्ति,यश एवं सभी प्रकार के मनोरथ पूर्ण होने का आशीर्वाद प्रदान किया। उन्होंने अग्रसेन को राजा सुरभ का वृतांत भी सुनाया, जिन्हें मेधामुनि के सहयोग से खोया हुआ राज्य पुनः प्राप्त हो गया था। उन्होंने अग्रसेन को राज्य प्राप्ति के लिए महालक्ष्मी की आराधना करने का भी परामर्श दिया।

महर्षि गर्ग मुनि के कहने के अनुसार महाराजा अग्रसेन ने महालक्ष्मी के विग्रह की स्थापना कर उनकी तपस्या प्रारम्भ कर दी। उनकी तपस्या से प्रसन्न हो महालक्ष्मी ने उन्हें दर्शन दिया तथा वर मांगने को कहा। अग्रसेन ने महालक्ष्मी से सदैव उनके चरणों मे भक्ति बने रहने तथा हमेशा उनके बने रहने का वरदान मांगा। महालक्ष्मी ने उनकी समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होने का वरदान दिया। महालक्ष्मी से वरदान पाकर अग्रसेन महर्षि गर्ग के आश्रम में लौटे तो उन्होंने उन्हें महाराजा मरूत का दृष्टान्त देते हुए उद्देश्य की पूर्ति हेतु यज्ञ करने का आह्वान किया तथा बताया कि ऐसा करने से उन्हे भूमि में दबे अक्षय स्वर्ण कोष की भी प्राप्ति होगी।

अग्रसेन ने उनकी आज्ञानुसार यज्ञ किया और उसके साथ ही उन्हें भूमि में दबे विपुल स्वर्णकोष की भी प्राप्ति हुई। महर्षि गर्ग ने इसके साथ ही उन्हें अपने आश्रम के निकट विशाल भूमि पर नये राज्य की स्थापना के लिए प्रेरित किया। उनके आदेशानुसार अग्रसेन ने सब प्रकार के सुसम्पन्न आग्रेय राज्य की स्थापना की। महर्षि ने स्वयं उनका राज्याभिषेक किया। महाराजा अग्रसेन द्वारा अग्रोहा में राज्य स्थापित करने के मूल में महालक्ष्मीव्रत कथा में अग्र उपाख्यान से भिन्न एक अन्य कथा का भी उल्लेख मिलता है। उसके अनुसार अग्रसेन जब लोहागढ़ में अपने पिता का पिण्डदान कर एक जंगल से लौट रहे थे कि वहां एक अद्भुत घटना घटी। एक सिंहनी उसी समय प्रसव कर रही थी। अग्रसेन के लाव-लश्कर से उसके प्रसव में बाधा पड़ी तो सिंहनी के क्रुद्ध बच्चे ने जन्म लेते ही राजा

के हाथी पर प्रहार किया और अकल्पनातीत शौर्य को प्रदर्शित किया। यह देख कर राजा को बहुत आश्चर्य हुआ। राजा को आश्चर्य में पड़े देख राजा के साथ चल रहे धर्माचार्यो ने कहा की वास्तव में यह स्थान वीर प्रसूता है। आप अपने राज्य की राजधानी यहीं बनाये। अग्रसेन उस भूमि के शौर्य, पराक्रम, प्राकृतिक स्वरूप तथा धर्माचार्यो के परामर्श से बड़े प्रभावित हुए और उन्होंने वहीं अपनी राजधानी बनाने का निर्णय लिया।

एक ईट- एक रुपये की परम्परा

महाराजा अग्रसेन के **एक ईट- एक रुपये** की परम्परा का सूत्रपात, सुशासन की प्रशंसा सुन आस-पास के क्षेत्रों से लोग वहां बसने के लिए आने लगे। महालक्ष्मीव्रत कथा के अनुसार महाराजा अग्रसेन ने अपने आग्रेय राज्य में यह रीति प्रारम्भ की, कि उनके राज्य में जो भी नव आंगतुक बसने के लिये आए, राज्य में बसने वाले सभी नागरिक उसे सम्मानस्वरूप 1-1 रूपया, 1-1 ईट भेंट करें। राजा अग्रसेन की आदर्श राज्य व्यवस्था के कारण आग्रेय राज्य में बसने वाले परिवारों की संख्या बढ़ कर लगभग एक लाख हो गई। अत: उनके राज्य में जो भी नागरिक बसने आता, उसे समान रूप में मकान बनाने के लिए एक लाख ईटें और व्यवसाय चलाने के लिए एक लाख रुपये प्राप्त हो जाते थे। यह व्यवस्था सभी नागरिकों पर समान रूप से लागू थी, इसलिये उनके राज्य में सब समान थे। किसी प्रकार का छोटे बड़े का भेदभाव न था। वहां कोई गरीब एवं असहाय नहीं था। सबको रोटी-रोजी और आवास की सुविधा समान रूप से उपलब्ध थी। उनके राज्य की यह प्रणाली विश्व में अद्‌भुत थी।

इसके अतिरिक्त महाराजा अग्रसेन ने अपने राज्य में यह व्यवस्था भी प्रारम्भ की थी कि राज्य का कोई नागरिक दुर्देववश यदि आजीविका से विहीन हो जाए तो प्रजाजन स्वयं उसका सहयोग करें, ताकि वह सम्मानपूर्वक जीवन जी सके क्योंकि अभावों से ही राज्य में अपराध और अनैतिक प्रवृतियां उत्पन्न होती हैं।

माधवी से विवाह

आग्रेय गणराज्य की स्थापना के बाद महर्षि गर्ग ने राजा अग्रसेन को नागलोक में जाकर नागराज महीधर की कन्या माधवी से विवाह करने की आज्ञा दी। महाराजा अग्रसेन उनकी आज्ञानुसार महीधर की राजधानी मणिपुर गये। वहाँ उन्होंने एक मनोहारी उपवन मे निवास किया। वहीं उनकी भेंट माधवी से हुई, जो अपनी सहेलियों के साथ सरोवर में स्नान करने हेतु आई हुई थी। संयोगवश उसी समय एक सिंह के आने से जब माधवी और उसकी सहेलियां भयभीत हो गई, तो महाराजा अग्रसेन ने सिंह के चारों ओर बाणों का घेरा बना दिया। इससे माधवी और सहेलियों की प्राणरक्षा हो गई तथा सिंह भी सुरक्षित रूप से बच गया।

इस प्रकार के अनुपम शौर्य, पराक्रम और बुद्धिबल को देखकर माधवी महाराजा अग्रसेन के प्रति अभिभूत हो गई तथा मन ही मन उसने उन्हें पति के रूप में वरण कर लिया किंतु माधवी के पिता महीधर उसका विवाह राजा इन्द्र से करना चाहते थे। अत: महाराजा अग्रसेन को माधवी के साथ विवाह के लिए यातनाओं से होकर गुजरना पड़ा। उन्हें तरह तरह की परीक्षाएं देनी पड़ीं किंतु अन्तत: महारानी नागेन्द्री एवं प्रजाजन के परामर्श से उन्होंने अपनी पुत्री माधवी का विवाह महाराजा अग्रसेन से कर दिया और उन्होंने इस खुशी में अपने राज्य के एक तल का नाम अग्गरतल्ला करने की घोषणा की, जो वर्तमान त्रिपुरा की राजधानी अग्गरतल्ला है।

इसके साथ ही महाराजा महीधर ने जब अपने समाज में प्रचलित परम्परा के अनुसार अपनी अन्य कन्याओं का भी विवाह अग्रसेन से करना चाहा तो महाराजा अग्रसेन ने एकपत्नीव्रत के आदर्श का पालन करते हुए ऐसा करने से इन्कार कर दिया तथा नारी जाति के प्रति अपनी सम्मान भावना को प्रकट किया।

महाराजा अग्रसेन की आदर्श राज्यव्यवस्था

महारानी माधवी से विवाह कर महाराजा अग्रसेन निर्द्वन्द्व भाव से राज्य करने लगे। उनके राज्य में प्रजा सब प्रकार से सुखी थी। किसी को किसी वस्तु का अभाव न था। वहाँ निरन्तर लक्ष्मी एवं अन्य देवी देवताओं की आराधना चलती रहती थी। महाराजा स्वयं चारों वर्णों को उनके अपने कर्म में स्थापित कर सदैव धर्मपूर्वक उनकी रक्षा करते थे। इसके अलावा उनके राज्य में यज्ञ-यज्ञादि धर्म-कर्म निरंतर चलते रहते थे, जिससे वहाँ का वातावरण अत्यंत पवित्र रहता था।

देवराज इन्द्र के साथ युद्ध

महाराज अग्रसेन के इस प्रकार के सुख-समृद्धिपूर्ण राज्य को देखकर देवराज इन्द्र को ईर्ष्या हो गई और उन्होंने उनके राज्य में वर्षा बंद कर दी। इससे अन्न का उत्पादन बंद हो गया तथा प्रजा हा-हाकार करने लगी। महाराजा अग्रसेन ने जनता के कष्ट निवारणार्थ अपने राजकोष के द्वार जनता के लिए खोल दिए। उन्होंने राज्य में जल की व्यवस्था के लिए नहरें बनवाई। इस तरह से अग्रोहा राज्य पुनः धन-धान्य की वर्षा से सम्पन्न होने लगा। किंतु देवराज इन्द्र को यह सब कुछ अच्छा नहीं लगा और अग्निदेव को आदेश प्रदान कर वहाँ की समस्त फसलों को जलवा दिया। देव प्रकोप से रक्षा का अन्य कोई उपाय न देख महाराजा अग्रसेन ने काशी में जाकर महादेव की उपासना की । उनकी तपस्या से प्रसन्न हो भगवान महादेव ने उन्हें वर दिया तथा महालक्ष्मी की उपासना करने के लिए कहा। लक्ष्मी की कृपा से राज्य पर आया संकट समाप्त हो गया। देवराज इन्द्र ने महाराजा अग्रसेन से मैत्री कर ली। राज्य में फिर सुख-शान्ति की बयार बहने लगी। महाराजा अग्रसेन ने इस खुशी में अपनी राजधानी में महालक्ष्मी का भव्य मन्दिर बनवाया। इस प्रकार महाराजा अग्रसेन ने अपनी साधना से देवों को अपने अनुकूल किया तथा प्रजा की भी रक्षा की। उनके प्रयासों से उनका राज्य पुनः सुख-समृद्धि की ओर बढ़ने लगा।

महाराजा अग्रसेन द्वारा यज्ञों का आयोजन एवं अहिंसा धर्म का ग्रहण

महाराजा अग्रसेन के 18 पुत्र और एक पुत्री हुई। पुत्रों के नाम विभु, विक्रम, अजेय, विजय, अनल, नीरज, अमर, नगेंद्र, सुरेश, श्रीमंत, सोम, धरणीधर, अतुल, अशोक, सुदर्शन, सिद्धार्थ, गणेश्वर तथा लोकपति थे। कन्या का नाम ईश्वरी था, जिसका विवाह काशी नरेश महाराजा महेश से हुआ, जो मोक्षधर्म के पालन के कारण ब्रह्मस्वरूप महामुनि के रूप में विख्यात हुए। अग्रसेन के अन्य पुत्रों के विवाह नागराज वासुकी की कन्याओं से हुए। नागराज वासुकी ने जब अपना राज्य अग्रसेन को भेंट स्वरूप देना चाहा तो उन्होंने उसे लेने से इन्कार कर दिया तथा लोक के समक्ष अप्रतिग्रहता का आदर्श प्रस्तुत किया। महाराजा अग्रसेन का वंश जब सब प्रकार से पुत्र-पौत्रादि से सम्पन्न और विशाल हो गया तो उन्होंने अपने कुल की वृद्धि, उसे मर्यादित तथा व्यवस्थित रूप देने एवं कुल के शील-आचरण आदि की रक्षा के लिए वंशकर यज्ञ करने का निश्चय किया, उनका यह निर्णय उनके यश, धर्म तथा मर्यादा के सर्वथा अनुकूल था।

महाराजा अग्रसेन के राज्य में 18 कुल थे, जिनके प्रतिनिधियों की सहायता से महाराजा शासन का संचालन करते थे। इन्ही 18 कुलों के प्रतिनिधियों को यज्ञ का यजमान बनाया गया और 18 यज्ञ किये। महर्षि गर्ग के निर्देशन में यज्ञ की सम्पूर्ण तैयारियां सम्पन्न हुई। महर्षि गर्ग यज्ञ के आचार्य बने और महाराजा अग्रसेन ने यज्ञ के यजमान का स्थान ग्रहण किया। अन्य मुनियों को भी यज्ञ का ऋत्विज बनाया गया। चैत्र शुक्ल की पूर्णिमा तिथि थी। यज्ञ में सभी राजाओं तथा सम्मानित प्रजाजन को भी आमन्त्रित किया गया। यज्ञ की तैयारियां सब प्रकार से पूर्ण होने पर बैसाख मास के शुक्ल पक्ष में आश्लेषा नक्षत्र में यज्ञ की आहूतियों से विधिवत यज्ञ का प्रारम्भ हुआ।

देवताओं को हविष्य प्रदान किया गया।

इस प्रकार यज्ञ के चलते जब 17 दिन सम्पन्न हो गए तो महाराजा अग्रसेन को यज्ञ में होने वाली पशुहिंसा तथा बलि को देख कर उससे घृणा हो गई। उन्होंने सोचा, यज्ञ तो धर्म की कामना से किया जाता है किंतु उसमें यदि पशुबलि दी जाती है तो वह अधर्मपूर्ण है। ऐसा सोच कर उन्होंने आगे यज्ञ न करने का निश्चय किया। सभी मुनियों, बंधु-बांधवों ने उन्हें समझाने का प्रयत्न किया कि यज्ञ में पशुबलि धर्मविरूद्ध नहीं है और क्षत्रिय का यह धर्म है किन्तु अग्रसेन अपने निश्चय से विमुख नहीं हुए। उन्होंने कहा कि सभी जीवों को अपने प्राण प्रिय होते हैं। यदि हम किसी को जीवनदान नहीं दे सकते तो हमें उसके प्राण लेने का भी कोई अधिकार नहीं है। वे किसी भी ऐसे धर्म कर्म को स्वीकार नहीं कर सकते, जिसमें निरीह जीवों की बलि दी जाती है। अगर पशुओं की हत्या करने तथा काटने वाले ही स्वर्ग में जांएगें तो फिर नरक में कौन जाएगा? सच्चे क्षत्रिय का धर्म तो जीव मात्र की रक्षा करना है न कि हत्या करना। पशुओं की हत्या तथा बलि से मनुष्य नरक में जाता है। अत: यदि उनका क्षत्रिय धर्म इस पवित्र कर्म में आड़े आता है तो वे उसे स्वीकार नहीं कर सकते तथा ऐसा कह कर उन्होंने क्षत्रिय धर्म को त्याग वैश्य धर्म को ग्रहण करने की घोषणा कर दी क्योंकि प्रजा का पालन ही वैश्य धर्म है और उनके सभी कर्म-कृषि, गोपालन, उद्योग-व्यापार, गोपालन आदि जीवमात्र के निर्वाह में सहायक होते हैं। उन्होंने बड़े ही भावपूर्ण शब्दों में कहा-

सोऽहं सत्य प्रतिश्रवः वैश्यधर्मनुपालये
प्रजामेवानृशंस च वैश्य च राज्य व्रतमोत्तमम् अतः आदि। 73।

इसके साथ ही उन्होंने अपने सभी बंधुओं को भी हिंसा से दूर रहने का उपदेश दिया-

अहं स्व भ्रातृन पुत्रांश्च तथां कन्याः कुटुम्बिनः
इदमेवोपदिशामि कश्चिद्धधमाचरेत।

यज्ञ में पशुहिंसा से मुझे घृणा हो गई है। अत: मैं अब अपने समस्त बंधु-बांधवों, पुत्रों, कन्याओं, कुटुम्बियों तथा वैश्यकुलों को यही उपदेश देता हूं कि वे कोई हिंसा न करें।

महाराजा अग्रसेन के इस दृढ़ निश्चय एवं वैश्यवर्ण में परिवर्तन से 18वां यज्ञ बिना पशु-बलि के सम्पन्न हुआ।

इस प्रकार महाराजा अग्रसेन ने 18 यज्ञों द्वारा न केवल अहिंसा धर्म का प्रतिपादन किया अपितु उन्होंने 18 ऋषियों के नाम पर 18 यज्ञाधिपतियों को एक-एक गोत्र की संज्ञा देकर 18 गोत्र बना दिये तथा यह नियम बना दिया कि भविष्य में इन्हीं 18 गोत्रों के मध्य निज गोत्र को छोड़ कर परस्पर वैवाहिक सम्बन्ध होंगे। इस प्रकार महाराजा अग्रसेन एक नये वंश के प्रवर्तनकर्ता बने, जो बाद में उनसे सम्बन्धित होने के कारण अग्रवाल कहलाया। उनका यह कार्य ठीक उसी प्रकार से था,जिस प्रकार गुरू गोविन्दसिंह ने समाज के लोगों को संगठित कर एक नये सिक्ख समुदाय की स्थापना कर दी थी।

इसके साथ ही उन्होंने अपने समाज में 18 गोत्रों का प्रवर्तन कर तथा समान गोत्र में परस्पर विवाह का निषेध कर रक्त की पवित्रता बनाए रखने एवं उच्च चारित्रिक गुणों के विकास का महत्वपूर्ण कार्य किया। उनका यह कार्य आधुनिक सिद्धान्त पैतृकता के सिद्धान्त के अनुसार भी पूर्णतया सम्यक् था, जिसमें भिन्न गुणों वाले व्यक्ति से विवाह को ही श्रेष्ठ वंशवृद्धि के लिए उपयुक्त माना गया है।

महाराजा अग्रसेन की इसी संगठन क्षमता का परिणाम था कि आज भी अग्रवाल जाति हजारों वर्षों बाद एक संगठन के रूप में विद्यमान है और उसकी गणना विश्व की सर्वश्रेष्ट जातियों में होती है।

वास्तव में महाराजा अग्रसेन बड़े ही दूरदर्शी एवं कुशल सम्राट थे।

आदर्श प्रजापालक

महाराजा अग्रसेन आदर्श प्रजापालक शासक थे। उनके समय यद्यपि कुलीन शासन का प्रचलन था किंतु उन्होंने अपने राज्य को 18 कुलों में विभक्त कर तथा उनके निर्वाचित प्रतिनिधियों की सहायता से शासन का संचालन कर राजतंत्र में भी लोकतंत्र का प्रतिष्ठा की । वे अपनी प्रजा का पुत्रवत पालन करते थे, इसलिये कभी-कभी उनके कुलाधिपतियों को ही उनके पुत्र मानने का भ्रम हो जाता है। उनके राज्य में सभी जातियों-धर्मो के लोगों को समान अधिकार प्राप्त थे। किसी के साथ किसी प्रकार का भेदभाव न होता था। वृक्षों को काटना निषिद्ध था, जिससे पर्यावरण की रक्षा में सहायता मिलती थी।

राज्यत्याग और महालक्ष्मी की आराधना

महाराजा अग्रसेन ने इस प्रकार लोकहित का संवर्द्धन करते हुए 108 वर्ष की अवस्था तक राज्य किया और उसके बाद उन्होंने अपने सभी स्वजन, सभासदों की मंत्रणा से राज्य का भार अपने ज्येष्ठ पुत्र विभू को सौंप दिया तथा साथ ही उसे राजधर्म का सारगर्भित उपदेश दिया। उन्होंने विभू को उपदेश देते हुए कहा कि लक्ष्मी चंचल है। अतः व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह धन के प्रति आसक्ति न रखकर लोकहित द्वारा सच्चे यश का अर्जन करे, सदाचार की वृद्धि करे, न्याय-नीति का पालन तथा पुरुषार्थ के द्वारा जीवन में आने वाली विपतियों के निवारण का उपाय करे।

इसके लिए आवश्यक है कि राजा बुद्धिमान, शूरवीर, न्याय-नीति को जानने वाला तथा पक्षपातरहित होकर प्रजा का पालन करने वाला हो। इस हेतु उन्होंने राजा को भी स्वयं नियमों एवं विधान से बंधा हुआ बताया।

इस प्रकार विभूसेन को राज्यभार सौंपने के बाद महाराजा अग्रसेन ने महारानी माधवी के साथ वनगमन किया।

उसके बाद वे यमुना तट पर गए तथा वहाँ कुलदेवी महालक्ष्मी की कठोर आराधना की। उनकी आराधना तथा तपस्या से प्रसन्न हो लक्ष्मी ने उन्हें दर्शन दिए तथा उन्हें मुहमांगा वरदान देने को कहा। महाराजा अग्रसेन ने सदैव मन में उनकी भक्ति बने रहने तथा बुद्धि धर्म, सत्य ओर संयम मे बने रहने का आशीर्वाद मांगा तथा अपने वंश की वृद्धि और अभ्युत्थान की कामना की। उनकी अचल भक्ति तथा आराधना से प्रसन्न हो महालक्ष्मी ने उन्हें वरदान दिया कि उनका वंश सदैव तेज से परिपूर्ण और जगत विख्यात होगा। उनके यश से सम्पूर्ण विश्व आलोकित होगा। लोग महाराजा अग्रसेन के आदर्शो का अनुकरण करेगें तथा उनकी यशोगाथा सर्वत्र गूंजेगी। वे स्वयं लक्ष्मी भी उनके वंशजों से संतुष्ट हो उन्हें राज्य, दीर्घायुष्य श्रेष्ट पुत्र पौत्रादि प्रदान करेंगी एवं विश्व में उनके लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं होगा। जब तक अग्रवालों में मेरी पूजा होती रहेगी, सूर्य और चन्द्रमा बने रहेगें, तब तक वह भी उनके कुल में बनी रहेंगी तथा कभी उनका त्याग नहीं करेंगी।

कहते है कि महाराजा अग्रसेन को कुलदेवी महालक्ष्मी का यह वरदान मार्गशीर्ष पूर्णिमा को प्रदान किया गया। इसलिये इस दिवस को अग्रवालों द्वारा महालक्ष्मी वरदान दिवस के रूप में भी मनाया जाता है।

इस प्रकार लक्ष्मी महाराजा अग्रसेन तथा माधवी को वरदान दे अन्तर्ध्यान हो गई तथा महाराजा अग्रसेन तथा महारानी माधवी ने उत्तमोत्तम ज्ञान द्वारा सनातन अक्षरधाम धर्म का वरण कर लिया। उसके बाद उनके पुत्र विभूसेन ने अपने श्रेष्ठ कार्यो द्वारा महाराजा की कीर्ति को बढ़ाया। इस प्रकार महाराजा अग्रसेन ने उच्च आदर्शो से प्रेरित हो जीवन व्यतीत किया। वे सत्य, धर्म, प्रजापालन, पराक्रम, यश, बल, नीति, न्यायादि आदि सभी गुणों से सम्पन्न थे। वास्तव में जब तक यह पृथ्वी और आकाश रहेंगे,तब तक उनकी यह पावन यशोगाथा भी अमर रहेगी।

महाराज अग्रसेन के आदर्श और उनकी देन

महाराजा अग्रसेन का जीवन आदर्शों से पूर्ण रहा। उन्हें अग्रवाल समाज के रूप में एक ऐसे समाज के प्रवर्तन का श्रेय प्राप्त है, जिसका देश के आर्थिक एवं औद्योगिक विकास तथा लोकहितैषी कार्य में अप्रतिम योगदान है। उन्होंने आर्थिक विकास को राज्य की प्रगति का मूल मंत्र माना, इसलिए उन्होंने तलवार का त्याग कर तराजू को ग्रहण किया। उनके आदर्शों का ही परिणाम है कि शताब्दियां व्यतीत हो जाने पर भी अग्रवाल समाज की राष्ट्र के आर्थिक एवं औद्योगिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका है और इस समाज के मित्तल, जिंदल, बजाज, मोदी, गोयन्का जैसे घराने देश को आर्थिक दृष्टि से सशक्त बना विश्व में भारत का मान बढ़ा रहे हैं।

अहिंसा धर्म का प्रतिपादन

महाराजा अग्रसेन ने यज्ञों में पशु बलि और सब प्रकार की जीवहिंसा का विरोध किया और कहा कि अहिंसा ही सर्वश्रेष्ट धर्म है। जो धर्म क्रूर, नृशंस एवं हिंसा से युक्त है, वह कभी सच्चा धर्म नहीं हो सकता। इसलिए उन्होंने जीव मात्र के प्रति करूणा की भावना का प्रतिपादन किया तथा क्षत्रिय धर्म को त्याग वैश्य वर्ण को ग्रहण करने का भी संदेश दिया। उनका कहना था कि समुद्र भले ही अपने मर्यादा को लाँघ दे, हिमालय अपनी शीतलता को त्याग दे, चन्द्रमा से उसकी प्रभा लुप्त हो जाए किंतु वे किसी निरपराध जीव की हत्या नहीं कर सकते। इसलिये उन्होंने पड़ौसी राज्यों के साथ भी मैत्री पूर्ण व्यवहार किया और कभी युद्ध का मार्ग नहीं अपनाया। इस प्रकार 5100 वर्ष पहले अहिंसा धर्म का पालन करने के कारण वे गौतम बुद्ध, महावीर, ईसा मसीह, गाँधी से भी आगे निकल जाते हैं और उनके आदर्शों का ही परिणाम है कि आज भी अग्रवाल जाति शाकाहारी जाति के रूप में प्रख्यात है और वे जीव मात्र की रक्षा के लिए तत्पर रहते हैं।

लोकतंत्री शासन की नींव

महाराजा अग्रसेन के समय वंशानुगत शासन राजंतत्र का प्रचलन था किंतु उन्होंने अपने राज्य को 18 कुलों में विभक्त कर और उनके निवाचित प्रतिनिधियों की सहायता से शासन चला राजतंत्र में भी लोकतंत्र की नीव रखी। उनके राज्य में हर कार्य जनता के परामर्श से सम्पन्न होते थे और उनमें लोकहित को सदैव प्रतिमान दिया जाता था।

ट्रस्टीशिप की भावना

महाराजा अग्रसेन गाँधी जी की ट्रस्टशिप भावना के साकार रूप थे। एक सबके लिए, सब एक के लिए उनके जीवन का मूल दर्शन था। उनका एक ईट-एक रूपया का सिद्धान्त इसी दर्शन का जीवन्त रूप था। वे सर्वेभवन्तु सुखिन सर्वे संतु निरामया और जीओ तथा जीने दो की भावना से ओत-प्रोत थे। आज हम जिन लोकतंत्र, अन्त्योदय, धर्मनिरपेक्षता, शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व आदि सिद्धान्तों की बात करते हैं, वे किसी न किसी रूप में उनके राज्य में विद्यमान थे।

आदर्श समाजवादी - व्यवस्था के जनक

महाराजा अग्रसेन ने यद्यपि समाजवाद का ढ़ोल नहीं पीटा और न ही किसी ऐसे सिद्धान्त का प्रतिपादन किया किंतु वे विश्व इतिहास में आदर्श समाजवादी व्यवस्था के जनक कहे जा सकते हैं। उन्होंने अपने राज्य में एक ईट-एक रूपया जैसी आदर्श प्रणाली द्वारा एक ऐसे समाजवादी समाज की रचना में सफलता प्राप्त की, जहाँ गरीबी-अमीरी के बीच किसी प्रकार का भेदभाव न था। सबको रोटी-रोजी और आवास की सुविधा उपलब्ध थी। सब सुखी और सम्पन्न थे।

पर्यावरण की पवित्रता पर बल

इसके साथ ही उन्होंने पर्यावरण की पवित्रता पर बल दिया। यज्ञों में पशुबलि का निषेध, जैविक हिंसा का विरोध, तुलसी ,पीपल आदि की पूजा, वृक्षारोपण, धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन आदि उनकी इसी व्यवस्था के अंग थे। यज्ञों से उत्पन्न हुआ धुआं जहां आस-पास के वातावरण को पवित्र और रोग मुक्त रखता था, वहां यज्ञों के कारण जनता अनाचार-अत्याचार आदि से बची रहती थी। उनके राज्य में वृक्षों को काटना निषिद्ध था।

उद्योग एवं पुरूषार्थ पर बल

उन्होंने लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए सदैव उद्योग एवं पुरूषार्थ पर बल दिया। उनके द्वारा बार-बार लक्ष्मी की तपस्या करने का प्रति कार्य भी यही था कि लक्ष्मी सदैव उद्यमी पुरूष को ही प्राप्त होती है, इसलिए मनुष्य को सदैव उसकी प्राप्ति के लिए प्रयासरत रहना चाहिये।

उनके उपदेशों का ही प्रभाव है कि अग्रवाल जाति अपनी उद्यमशीलता के लिए प्रसिद्ध है और वे बिना किसी सहायता प्राप्त किए विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में भी सफलता प्राप्त करने में समर्थ होते हैं।

राजधर्म

महाराजा अग्रसेन ने राजधर्म का भी विस्तृत रूप से प्रतिपादन किया। उनका मत था कि राज्य का संचालन अत्यंत ही दुष्कर कार्य है। जो राजा बुद्धिमान हो, शूरवीर हो, न्यायनीति का मर्मज्ञ हो, अपनी रक्षा करने मे समर्थ हो, वही प्रजा का पालन कर सकता है। ऐसा राजा स्वयं विधि एवं नियमों से बंधा हुआ होता है। इसलिए उसका कर्तव्य है कि वह विधि एवं न्याय पूर्वक कर्तव्य करे। जिस राजा के राज्य में प्रजा दु:खी और पीड़ित रहती है तथा स्त्रियों का अपहरण होता है, ऐसा राजा धिक्कार के योग्य है। जो राजा सदाचारी होता है, प्रजा उसी का अनुसरण करती है तथा ऐसे राज्य में ही सदैव सुख-शान्ति रहती है।

महाराजा अग्रसेन का जन्म महाभारत काल में हुआ। उस समय के इतिहास तथा ग्रन्थों से पता चलता है कि राजा अनाचार में फंसे हुए थे। एक दूसरे पर अत्याचार, भाई-बहनों का कत्ल, जुआ खेलना आदि का बोल-बाला था। नारी जाति का कुल भी सुरक्षित नहीं था। बहु-विवाह की प्रथा प्रचलित थी। राजाओं का समय वैभव प्रदर्शन तथा पारस्परिक विवाद में अधिक व्यतीत होता था। देश में अराजकता का बोल-बोला था। यज्ञों में पशु बलि सामान्य बात थी। भाई-भाई के खून का प्यासा था। सदाचरण के आदर्श लुप्त होते जा रहे थे। ऐसे समय में महाराजा अग्रसेन ने आग्रेय राज्य की स्थापना की और अपने राज्य में एक रूपया एक ईट, सदाचार, नैतिकता, एक पत्नीव्रत, राज्य हित को सर्वोपरिता, अंहिसा, मानवता, सहकारिता, सहयोग, वसुधैव कुटुम्बकम् जैसे आदर्शों को अपना एक ऐसी पद्धति को जन्म दिया, जो शताब्दियां व्यतीत हो जाने पर आज भी अपनी श्रेष्टता के कारण जानी जाती है। जहां महाभारत में भाग लेने वाले राजवंशों का अस्तित्व दिखाई नहीं देता, वहां अग्रवाल जाति 5100 वर्ष बाद भी अपना अस्तित्व ही नहीं, अपनी गौरव गरिमा भी विश्व में फहराए है। जीवन का शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र हो, जहाँ उसकी अग्रगामिता न हो।

इस मध्य मिश्र की सभ्यता नष्ट हो गई, रोम और यूनान की सभ्यता भी केवल इतिहास के पन्नों में है। यहाँ तक कि सिकन्दर के काल की अनेक जातियों का नामों -निशान नहीं है किंतु अग्रवाल जाति, अग्रोहा और महाराजा अग्रसेन का अस्तित्व पूरी दीप्ति के साथ विद्यमान है, यह सामान्य बात नहीं है। किसी ने ठीक ही कहा है कि यूनान, मिश्र और रोम मिट गये जहां से, कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।

वास्तव में वे अपने युग के श्रेष्टतम सिद्धान्तों के सच्चे प्रतिनिधि थे और उनकी गणना ऐसी महान विभूतियों मे की जा सकती है, जो देश काल की सीमाओं को पार कर सर्वव्यापक होते हैं।

महाराजा अग्रसेन और अग्रवाल जाति

महाराजा अग्रसेन अग्रवाल जाति के प्रवर्तक थे, वंशकर्ता थे। इतिहास में ऐसे बहुत कम व्यक्ति हैं, जिन्हें किसी विशेष जाति या धर्म के प्रवर्तन का श्रेय प्राप्त होता हो। महाराजा अग्रसेन भी इसी प्रकार के गिने चुने व्यक्तियों में थे। यद्यपि वे क्षत्रिय कुल में उत्पन्न हुए थे, किंतु उन्होंने अपनी अद्वितीय प्रतिभा एवं क्षमता के बल पर एक नये नगर और राज्य की स्थापना की, जो उन्हीं के नाम पर आग्रेय,अग्रोदक या अग्रोहा कहलाता है। इसके साथ ही समानता, भाईचारे, सहयोग, सहकारिता आदि गुणों पर आधारित आदर्श समाजवादी राज्य की नींव रखी। उन्होंने अपनी दूरदर्शिता एवं अद्‌भुत संगठन क्षमता से 18 यज्ञों के माध्यम से 18 गोत्रों का प्रवर्तन कर एक शक्तिशाली उद्योग व्यवसाय प्रधान वैश्य समाज की नींव रखी, जो बाद में उन्हीं से सम्बन्धित होने के कारण अग्रवाल कहलाया तथा जिसका राष्ट्र ही नहीं, विश्व की प्रगति में विशिष्ट स्थान है और जो अपनी अग्रगामिता के कारण आज भी एक श्रेष्ठ जातिसमूह के रूप में पहचाना जाता है।

महाराजा अग्रसेन जयन्ती

महाराजा अग्रसेन जयन्ती प्रति वर्ष आश्विन शुक्ल प्रतिपदा को धूमधाम से मनाई जाती है। इस जयन्ती के विषय में कहा जाता है कि अग्रवालों के कुलपुरोहित स्वामी ब्रह्मानन्द ने समाज के लोगों को प्रेरित किया कि वे अपने अग्रज की जयन्ती धूमधाम से मनायें। इसी संदर्भ में अग्रोहा में एक भव्य आयोजन हुआ। धीरे-धीरे अग्रसेन जयन्ती मनाई जाने लगी। इसके बाद 1923 में अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के मुंबई अधिवेशन में सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पारित किया गया कि सभी अग्रवाल महाराजा अग्रसेन की जयन्ती पर्व आश्विन शुक्ल प्रतिपदा को मनायें। उसके बाद से ही सम्पूर्ण भारत में अग्रसेन जयन्ती मनाने का विशेष प्रचलन हुआ।

महाराजा अग्रसेन ज्योति रथयात्रा

पांचवें तीर्थ अग्रोहाधाम तथा अग्रोहा विकास ट्रस्ट की स्थापना होने के बाद 1995 में श्री नंदकिशोर गोईन्का, सुभाष गोयल एवं हरपतराय टांटिया के प्रयत्नों से यह निश्चय किया गया कि महाराजा अग्रसेन के सिद्धान्तों का पूरे भारत में प्रचार-प्रसार करने, अग्रोहाधाम से अग्रवालों को जोड़ने तथा अग्रवैश्य समाज को संगठित करने के उद्देश्य से विशाल ज्योति रथयात्रा का आयोजन किया जाये। तदानुसार 15 अप्रेल 1995 को श्रीगंगानगर (राज.) से इस यात्रा का शुभारम्भ ट्रस्ट के अध्यक्ष सुभाषचन्द्र ने अग्रध्वज फहराकर किया तथा हरपतराय टांटिया, रामेश्वरदास गुप्त, बी.डी. गुप्त, प्रो. गणेशीलाल, नंदकिशोर गोईन्का आदि के कुशल संयोजन में यह यात्रा लगभग 4 वर्ष तक लगातार चली और इसने राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, केरल, आंध्रप्रदेश, उत्तर प्रदेश, बंगाल जैसे विभिन्न राज्यों की लगभग तीन लाख किलोमीटर दूरी पार कर भारत के कोने-कोने में जाकर महाराजा अग्रसेन के आदर्शों का संदेश दिया तथा अग्रवाल जाति के 5100 वर्षों के इतिहास में एक नया प्रतिमान बनाया। वास्तव में नव जागरण एवं संगठन का स्वर निनाद करने में इस यात्रा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अ.भा. अग्रवाल सम्मेलन द्वारा भी अग्रोहा से 2015 में महाराजा अग्रसेन चेतना एवं सद्‌भावना रथयात्रा का आयोजन किया गया।

महाराजा अग्रसेन और उनके स्मारक

वैसे तो महाराजा अग्रसेन के सम्बन्ध में विभिन्न प्रकार के आयोजन समय-समय पर अनेक दशकों से हो रहे है, किंतु उन्हें विशेष बल 1975 में अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन तथा 1976 में अग्रोहा विकास ट्रस्ट की स्थापना से मिला और महाराजा अग्रसेन की स्मृति में स्थान-स्थान पर प्रतिमाएं, मन्दिर, शिक्षण संस्थान, मार्ग, वाटिकाएं आदि की स्थापना के साथ साथ राष्ट्रीय स्तर पर अनेक महत्वपूर्ण कार्य हुए, जिनमें कतिपय का उल्लेख किया जा रहा है-

महाराजा अग्रसेन धाम, हावड़ा

इस धाम का निर्माण घोड़ा घाटा, बागनान, जिला हावड़ा (प.बंगाल) में लगभग 300 बीघा भूमि निर्माणाधीन

है। इस योजना की नींव सुप्रसिद्ध समाजसेवी पुष्करलाल केड़िया द्वारा रखी गई । इसमें महालक्ष्मी मन्दिर, सभागार, अनुष्ठान भवन, आडिटोरियम, वानप्रस्थ आश्रम, महिला महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र, विकलांग सेवा केन्द्र, शोध केन्द्र एवं पुस्तकालय, बीएड कॉलेज, स्वरोजगार प्रशिक्षण केन्द्र, गौशाला, मनोविकास सेवा केन्द्र, अग्रसेन मेडिकल सेन्टर आदि विभिन्न प्रकल्प होंगे तथा पूर्णरूप से निर्मित होने पर यह महाराजा अग्रसेन के सबसे भव्य धामों में एक होगा। इस धाम का उद्घाटन एवं शिलान्यास पश्चिमी बंगाल के राज्यपाल श्री केसरीनाथ त्रिपाठी द्वारा 6 सितम्बर 2015 को बड़े ही भव्य वातावरण में किया गया।

डाक टिकट का प्रकाशन

महाराजा अग्रसेन के महत्व को देखते हुए भारत सरकार ने 24 सितम्बर, 1976 को उनकी पावन स्मृति में 25 पैसे का एक डाक टिकट 80 लाख की संख्या में प्रकाशित किया, जो किसी भी विभूति की स्मृति में प्रकाशित होने वाले टिकटों में प्रतिमान था। इस डाक टिकट का विभोचन तत्कालीन राष्ट्रपति फखरूदीन अली अहमद ने किया और कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. शंकरलाल शर्मा ने की। इसके बाद अग्र समाज की अनेक विभूतियों पर भी डाक टिकट प्रकाशित होने लगे। भारत सरकार द्वारा डाक टिकट प्रकाशन से महाराजा अग्रसेन तथा अग्रोहा को राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिली।

महाराजा अग्रसेन राष्ट्रीय राजमार्ग

महाराजा अग्रसेन की स्मृति में केन्द्रीय परिवहन मन्त्रालय ने दिल्ली से अग्रोहा होकर पाकिस्तान की सीमा फाजिल्का तक जाने वाले मार्ग का नामकरण महाराजा अग्रसेन राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 10 किया।

महाराज अग्रसेन जलपोत

भारतीय नौवहन निगम के द शिपिंग ऑफ इण्डिया ने 350 करोड़ की लागत से निर्मित एक लाख चालीस हजार टन के विशाल तेल वाहक जलपोत का नामकरण महाराजा अग्रसेन के नाम पर किया। यह पोत 264000 एम लम्बा, 460000 एम चोड़ा तथा 27000 एम गहराई से युक्त था। 25 जनवरी, 1995 को दक्षिण कोरिया में इसका जलावतरण समारोह सम्पन्न हुआ और भारत में भी इस अवसर पर मुम्बई में विशाल आयोजन सम्पन्न हुआ।

महाराजा अग्रसेन की प्रतिमाएं

दिल्ली नगर निगम के माध्यम से सरकार ने अन्तर्राज्य बस अड्डा दिल्ली के निकट स्थित निकलसन पार्क में 19 सितम्बर, 1990 को महाराजा अग्रसेन की भव्य प्रतिमा स्थापित की। अष्ट धातु से निर्मित यह प्रतिमा 12 फीट ऊँची है और दिल्ली में स्थापित अन्य प्रतिमाओं सें विशाल है। इसी प्रकार हैदराबाद में भी विशाल कांस्य प्रतिमा की स्थापना की गई। देश के अन्य भागों में भी सैंकड़ो प्रतिमाएं स्थापित हो चुकी हैं। आगरा एवं देश के कई अन्य भागों में महाराजा अग्रसेन के मंदिर भी बने हैं।

सुपर नेशनल हाईवे

आज तक देश में राष्ट्रीय राजमार्गो का निर्माण हो रहा था किंतु तत्कालीन परिवहनमंत्री जगदीश टाईटलर ने देश में 10 सुपर नेशनल हाईवे बनाने का निर्णय किया और दिल्ली से मुम्बई, बैगंलूर से कन्याकुमारी तक जाने वाले सुपर राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या एक का नामकरण महाराजा अग्रसेन पर करने की घोषणा की। इस मार्ग के निर्माण पर 25000 करोड़ रूपये से अधिक की राशि खर्च होने का अनुमान है।

महाराजा अग्रसेन बावड़ी

दिल्ली के केनाट पैलेस क्षेत्र की हैवी रोड़ पर महाराजा अग्रसेन बावड़ी है। पुरातत्व विभाग के अनुसार इस बावड़ी का निर्माण 700-800 वर्ष पूर्व हुआ।

अग्रवालों की आदि भूमि और सर्व वैश्यधाम

अग्रोहा

जहां एक महान संस्कृति का हृदय बसता है !

अग्रोहा अग्रवालों की आदि भूमि है। यह वह पावन स्थान है, जहाँ से अग्रवाल समाज का उद्भव हुआ, जिनके उद्योग व्यवसाय में वर्चस्व, दानशीलता, परोपकार की गाथाएं विश्व के कोने-कोने में गूंजी तथा भारतीय राष्ट्र की प्रगति का सेहरा जिनके मस्तक पर सुशोभित है और जिसके बल पर वह अपनी यशोगाथा पूरे विश्व में फहरा सकता है।

यही वह गौरवपूर्ण धरा है, जहाँ महाराजा अग्रसेन का समाजवाद, भ्रातृत्व, पारस्परिक एकता तथा सहयोग का संदेश गूंजा और एक ईट - एक रूपया जैसे महान समाजवादी सिद्धांत का उद्घोष हुआ। जिसके विषय में कहा जा सकता है कि इस प्रकार का सिद्धान्त न तो विश्व में अन्यत्र कहीं पनपा और आने वाला युग इस प्रकार के किसी सन्देश को देने में सक्षम होगा, उसकी कल्पना करना ही कठिन लगता है।

प्रारम्भ में अग्रोहा अग्रवालों के पांचवे धाम के रूप में प्रतिष्ठित था किंतु बाद में लिए गए एक निर्णयानुसार अग्रोहा भारत के 362 वैश्य घटकों के मुख्य धाम के रूप में भी जाना जाएगा। जहां समस्त वैश्य मिलकर राष्ट्र प्रगति का सिंहनाद करेगें। यह विश्व के सबसे बड़े वैश्य संस्कृति के केन्द्र के रूप में उभरेगा, ऐसी आशा की जाती है।

वास्तव में इस नगरी का इतिहास गौरवपूर्ण है और उसका कण-कण महिमामण्डित है।

स्थापना

श्री अग्रसेन उपाख्यान के अनुसार अग्रोहा राज्य की स्थापना महाराजा अग्रसेन ने ऋषि गर्ग की प्रेरणा से की थी। यह मरूप्रदेश की भूमि थी, जो बालू से परिपूर्ण एवं पश्चिम दिशा में फैली हुई थी। यहीं महाराजा अग्रसेन को खुदाई से नाना-प्रकार के रत्न, धन और सम्पति की प्राप्ति हुई थी। इस नगरी का निर्माण कुशल वास्तुविदों के निदेशन में विश्वकर्माओं द्वारा हुआ था और यह नगरी सम्पूर्ण शुभ लक्षणों से सम्पन्न थी।

इस नगरी का विस्तार 12 योजन लम्बा और 4 योजन चौड़ा अर्थात आयताकार था। यह नगरी बड़े-बड़े द्वारों से सुशोभित थी और इसमें विशाल राजमार्ग, कुएं, तालाब, बावड़ी, धर्मशालाएं, गौशालाएं, आश्रम और विराट भवन बने हुए थे। इस नगरी की सीमाएं सुरक्षित थी। ऊँचीं-ऊँचीं चार दीवारियाँ इसे वस्त्रों की भान्ति आवृत किए हुए थी और चारों ओर खाईयां होने के कारण यह नगरी शत्रुओं से सुरक्षित एवं सब प्रकार से अभेद्य थी।

नगर के मध्य में कुल देवी महालक्ष्मी का मन्दिर तथा इसके विभिन्न भागों में अन्य देवालय बने हुए थे, जहा निरन्तर महालक्ष्मी एवं अन्य देवी-देवताओं की आराधना चलती रहती थी। इस नगरी में बने ऊँचे-ऊँचे भवन इसकी शोभा में वृद्धि करते रहते थे। यह नगरी गोधन, राजधन, वाणिजधन सब प्रकार के धनधान्य से सम्पन्न थी और उसमें बड़े-बड़े धर्मपरायण, दानवीर तथा शूरवीर लोग निवास करते थे।

महालक्ष्मी व्रत कथा के अनुसार यह नगर द्वादश योजन में विस्तीर्ण व बहुत शुभ था। यहा पारावत्, सारस,

हंस, सारिका, मयूर, कोयल आदि पक्षियों के समूह विराजित थे। वृक्ष, फूलों, फलों तथा पत्तों से सुशोभित थे। यह विशाल पुरी हाथी, घोड़ों से शोभित और स्वर्ण रत्न आदि से परिपूर्ण थी। यहाँ अनेक प्रकार के यज्ञ होते रहते थे। धन-धान्य से सम्पन्न इस नगरी को देखकर ऐसा लगता था, मानो इन्द्रदेव की अमरावती स्वयं यहां उतर आई है। इस नगरी का निर्माण महाराजा अग्रसेन ने करोड़ों मुद्राओं के व्यय से कराया-

अकरो द्वशविस्तारं ज्ञातीन संवर्धयनन्ततः,
कोटिकोटि च मुद्रास्तत्र निवेशयत् ।।32।।
प्रसादमाला सुखद विधिकाश्च चतुष्पंथाः,
वाटिकाः पुष्पवाटीश्च सरः पंकज शोभितम्।।33।।
देव मन्दिर वापीच गोपुर द्वारशोभिताः
पारावतैः सारसैश्च हंसेः शाटिक मयूरकैः
कलकोकिल गथौस्तव नाना विराजते,
प्रसून माला फल पल्लवैः द्रुमाः ।।34।।
पुरी विशाला गज वाजि शोभिता,
सुवर्ण रत्न भरणादि संकुला।
प्रभूतयज्ञैः धनधान्यपूरिता।
यथेन्द्र देवैर्भूवि चामरावती ।। 35।।
नगरमध्ये देशेचे महालक्ष्यालयं शुभम्,
तन्मध्ये कमलादेवी पूजयेन्नि शिवासरम।। 36।।

डा. सत्यकेतु विद्यालंकार ने उस समय के जनपदीय नगरों का वर्णन करते हुए कहा है कि उस समय आजकल की तरह बड़े-बड़े राज्य नहीं थे। भारत में ही नही अन्य देशों में भी छोटे-छोटे राज्य होते थे। भारत के प्राचीन साहित्य में भारत के छोटे-छोटे राज्यों के लिए "गण" या "संघ" शब्द प्रयुक्त होता था। संघ का विस्तार क्षेत्र आजकल के जिलों के लगभग होता था। बीच में पुर या राजधानी होती थी और चारों ओर जनपद, पुर में सम्पन्न लोगों के घर और देवी-देवताओं के मन्दिर बने होते थे तथा विभिन्न व्यवसायी अपना अपना व्यवसाय करते थे। राज्य का संचालन वहीं से होता था। पुर के निवासी भी उसमें सहयोग करते थे और राज्य का संचालन चाहे वंशक्रम से कोई राजा कर रहा हो, अथवा अन्य व्यक्ति, उसके संचालन में विविध कुलों या परिवारों के मुखिया सम्मिलित हो सहयोग करते थे। अग्रोहा भी इसी प्रकार गण पर आधारित महत्वपूर्ण जनपद था।

प्राचीन अग्रोहा राज्य की सीमा और प्रमुख नगर

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अग्रवालों की उत्पति नामक पुस्तक में महाराजा अग्रसेन के प्राचीन राज्य की सीमा इस प्रकार लिखी है- उत्तर में हिमालय पर्वत और पंजाब की नदियां, दक्षिण और पूर्व में गंगा, पश्चिम में यमुना से लेकर

मारवाड़ तक का प्रदेश। राजधानी अग्रनगर (आग्रेय) था। राज्य में दूसरा बड़ा नगर आगरा था, जिसका शुद्ध नाम अग्रपुर है। यह नगर महाराजा अग्रसेन के राज्य के पूर्व-पश्चिम प्रदेश की राजधानी था। दिल्ली का शुद्ध नाम इन्द्रप्रस्थ था, गुड़गांव जिसका शुद्ध नाम गौड़ ग्राम था इसलिये अग्रवाल यहाँ की माता को पूजते हैं। महाराष्ट्र(मेरठः), रोहिताश्व(रोहतक), हांसी, हिसार जिसका शुद्ध नाम हिसांरि देश है, पुण्यपतन (पानीपत), करनाल, नगरकोट (कोटकांगड़ा), लवकोट (लाहौर), मण्डी, विलासपुर, गढ़वाल, जींद, सफीदों, नाभा, नारिनवल (नारनौल)आदि नगर इस राज्य में थे।

अग्रोहा की ऐतिहासिकता

डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार का मत है कि भारत में अनेक जातियों का उद्भव व विकास प्राचीन गणराज्यों के जनपदों से हुआ। उसी के अनुरूप माना जाता है कि अग्रवाल जाति का उद्गम आग्रेय जनपद से हुआ और वहीं से अग्रवाल भारत के विभिन्न भागों में फैले। जैसा कि अनेक प्राचीन राजधानियों और जनपदों के साथ हुआ, कालचक्र के प्रवाह से उनका अस्तित्व समाप्त हो गया तथा वर्तमान में केवल उनके खण्डहर बचे हैं। यही हाल अग्रोहा का हुआ। अग्रोहा गणराज्य कई कारणों से नष्ट हो गया तथा काल के प्रभाव से उसके खण्डहर मात्र रह गये, जो वर्तमान अग्रोहा के पास 650 एकड़ में फैले हैं।

वैसे पूर्व में अग्रोहा के अग्रवालों की जन्मस्थली होने की गाथा भाटों की पुरानी बहियों, बसनों एवं लोकप्रिय अनुश्रुतियों में प्राचीन काल से ही चली आ रही थीं किंतु सौभाग्य से 1888-89 में जब सी.टी. राजर्स तथा 1938-39 में एच.एल. श्रीवास्तव के नेतृत्व में यहां खुदाई की गई तो अन्य वस्तुओं, मनके, मूर्तियों, बर्तनों आदि के अतिरिक्त वहाँ पर्याप्त मात्रा में सैंकड़ों की संख्या में ऐसे सिक्के भी मिले, जिन पर अंकित था-"अग्रोदके अगाच्च जनपदस"

इन तीन शब्दों ने अग्रवाल जाति के इतिहास को जैसे नया मोड़ ही दे दिया। डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल एवं अनेक इतिहासकारों ने स्वीकार किया कि आजकल जिसे अग्रोहा कहा जाता है, उसी का प्राचीन नाम प्राकृत भाषा में अग्रोदक है। जैसे संस्कृत प्रथूदक नाम से कुरूक्षेत्र का नगर पिहोवा बना, उसी प्रकार अग्रोदक से अग्रोहा बन गया है। अग्रोहा से प्राप्त इन सिक्कों की लिपि के आधार पर इनका काल दूसरी सदी ईस्वी पूर्व स्वीकार किया गया।

यह दृष्टव्य है कि प्राचीन काल में अधिकांश राजधानियां किसी नदी या जलस्त्रोत के निकट ही स्थित थीं। डॉ. परमेश्वरीलाल गुप्त के अनुसार "अग्रोदक" शब्द का यदि संधिविग्रह किया जाए तो अग्र+उदक होगा। उदक का अर्थ जल या तालाब होना चाहिए। प्राचीन काल में जबकि मरूस्थली इलाकों में जल का अत्यधिक महत्व था। तालाबों अथवा जलाशयों का नाम विशिष्ट पुरुषों अथवा नगरों से सम्बन्धित करना सामान्य प्रक्रिया थी। इसी आधार पर हो सकता है कि "अग्र" नाम विशिष्ट व्यक्ति या राजा से सम्बन्ध होने के कारण उस तालाब का नाम "अग्रोदक" पड़ गया हो अथवा यह किसी "अग्र" नामक गणराज्य या नगर से सम्बन्धित रहा हो।

जो भी हो, अग्रोहा का अस्तित्व पुराना है और उसका सम्बन्ध अग्रवालों से रहा, यह निर्विवाद है। इसकी

प्राचीनता का उल्लेख ग्रंथों में भी मिलता है। डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकर की मान्यता है कि उसका अस्तित्व महाभारत काल में था। इस सम्बन्ध में उन्होंने महाभारत के निम्न श्लोक को उद्धृत किया है-

भद्रान रोहितकांश्चैव आग्रेयान् मालवानपि।
गणान् सर्वान् विनिर्जित्य नीतिकृत् प्रहसन्निव।।

इस श्लोक में जिस आग्रेयगण का उल्लेख किया गया है, वह निश्चित रूप से अग्रोहा ही था। उपर्युक्त श्लोक में भद्र, रोहितक, आग्रेय, मालव आदि गणों का निश्चित क्रम में उल्लेख है, आज भी उनकी भौगोलिक स्थिति उसी रूप में पायी जाने से उनकी प्रामाणिकता असंदिग्ध है। रोहतक, हरियाणा में अग्रोहा से कुछ दूर दक्षिण पूर्व में और भद्र अर्थात् वर्तमान भादरा, अग्रोहा के पश्चिम में विद्यमान है। फिरोजपुर, लुधियाना, पटियाला, नाभा आदि रियासतों का कुछ भाग मालव प्रदेश के नाम से प्रख्यात रहा है। अत: आग्रेयगण की प्रामाणिकता और उसकी भौगोलिक स्थिति को देखते हुए उसका वर्तमान अग्रोहा होना स्वयं सिद्ध है।

सुविख्यात पुरातत्ववेता डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल, डॉ. परमेश्वरीलाल गुप्त एवं राधाकमल मुखर्जी ने भी इस श्लोक की प्रामाणिकता और आग्रेयगण के अस्तित्व को निर्विवाद रूप से स्वीकार किया है। काठक संहिता, आपस्तंव श्रोत-सूत्र तथा पाणिनी की अष्टाध्यायी में भी आग्रायण, आग्रेयगण आदि का उल्लेख आया है, जो इस तथ्य की पुष्टि करते हैं।

डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल ने लिखा है कि "अग्रोदक" से ही अग्रोहा शब्द बना है। यह अग्रोहा या अग्रोदक एक जनपद की राजधानी था और उस जनपद का नाम "अग्र" था। अत: अग्रवाल जाति में अपने उद्गम के बारे में जो किंवदन्ती प्रचलित है, उसका आधार शुद्ध ऐतिहासिक है।

श्री वासुदेवशरण अग्रवाल ने अपनी पुस्तक "पाणिनीकालीन भारतवर्ष" में पाणिनी के काल का गंभीर अध्ययन प्रस्तुत किया है। पाणिनी के सूत्र 8/4/4/ में 6 वनों का उल्लेख किया है-

"वनं पुरगामिश्रका सिधका सारिका कोटसग्रेभ्य: पुरगावण, मिश्रकावण,
सिधकावण, सारिकावण, कोटरावण और अग्रेवण।"

"अग्रेवण' निश्चित रूप से अग्रजनपद, जिसकी राजधानी अग्रोदक (अग्रोहा) थी, में स्थित वन का नाम था। (पृ. 42)"

पाणिनी का काल 500 ईस्वी पूर्व माना जाता है। इससे स्पष्ट है कि ईस्वी पूर्व 500 से पहले भी अग्रजनपद की स्थिति थी।

वेदव्यास द्वारा रचित महाभारत ऐसा ग्रंथ है, जिसे आधुनिक युग में भी प्रामाणिक माना जाता है। वेदव्यास जी ने 18 पुराणों की रचना की, महाभारत में 18 पर्व हैं, महाभारत-युद्ध में 18 अक्षौहिणी सेना ने भाग लिया। युद्ध भी 18 दिन चला, युद्धभूमि में श्रीकृष्ण द्वारा कही गई गीता में भी 18 अध्याय हैं। अग्रवालों के भी 18 गौत्र हैं।

कालीचरण केशान की मान्यता है कि महाभारत में अग्रजनपद का उल्लेख और 18 संख्या का साम्य निश्चित रूप से इस तथ्य की और इंगित करता है कि महाभारत काल में अग्रजनपद (अग्रोहा) का अस्तित्व था और उसकी स्वतंत्र पहचान थी।

अग्रोहा सम्बन्धी उल्लेख यूनानियों के उन विवरणों में भी मिलता है, जिन्होंने सिकन्दर का प्रामाणिक इतिहास लिखा है। इन विवरणों में उल्लेख है कि सिकन्दर ने "अग्लसोई" नामक नगर पर आक्रमण किया था। डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार ने इस अग्लसोई को अग्रोहा या आग्रेयगण ही माना है। उनके अनुसार अग्गलस्सि निवासियों का नाम था और अग्लस उस स्थान का, जहाँ के ये लोग निवासी थे। डॉ. परमेश्वरीलाल गुप्त का मत भी यही है कि सिकन्दर अग्रोहा तक आया था और उसका विजित प्रदेश यही था। कर्टियस के अनुसार अग्लसोई जाति ने सिकन्दर का दृढ़तापूर्वक सामना किया और उसके पास 40000 पैदल सिपाही और 3000 घुड़सवारों की सेना थी। युद्ध के कारण इस नगर को भीषण क्षति उठानी पड़ी। अग्रोहा नगर पर विदेशी आक्रमणकारियों का अधिकार हो गया। एरियन के अनुसार इस नगर के 20000 निवासियों ने अपनी रक्षा का अन्य उपाय न देखकर नगर में आग लगा दी और उसी में अपने स्त्री, बच्चों के साथ कूद कर जल मरे, किन्तु नगर का दुर्ग सुरक्षित बचा लिया गया।

डॉ. गंगाराम गर्ग के अनुसार मैकिजल की एक प्रसिद्ध पुस्तक में सिकन्दर महान के भारत पर किये जाने वाले उक्त आक्रमण का वर्णन है।

जो भी हो, यूनानी इतिहासकारों द्वारा वर्णित "अग्लसोई" ही वर्तमान अग्रोहा था या नहीं, इस मत पर इतिहासकारों में कुछ मतभेद हो सकता है किन्तु ईस्वी पूर्व तीसरी सदी के लगभग अग्रोहा शासकों की उथल-पुथल का केन्द्र रहा, इसका प्रमाण वहाँ से प्राप्त यूनानी सिक्के, अमिंटस, ऐंटिअलकाइड, अफोलोडोट्स, इण्डोग्रीक आदि से भी होता है।

1938 में श्री एच.एल. श्रीवास्तव ने अग्रोहा के अवशेषों की खुदाई पुनः करवाई। पुरातात्विक रिपोर्टों ने इस तथ्य की पुष्टि की, 200 ई. पूर्व अग्रोहा एक विशाल समृद्ध नगर था और उसके बाद ही उसे जलाये या उजाड़े जाने जैसी कोई घटना हुई।

किसी भी राज्य या राष्ट्र की समृद्धि या सम्पन्नता कभी-कभी उसके अभिशाप का कारण भी बन जाती है। यही हाल अग्रोहा का हुआ। वहां एक सशक्त गणराज्य था। उसका वैभव बढ़ा-चढ़ा था। उसकी यही सम्पन्नता विदेशी आक्रमणकारियों के आकर्षण का बिन्दु बन गई। परिणामस्वरूप अग्रोहा को निरन्तर एक के बाद एक आक्रमणों और उथल-पुथल का सामना करना पड़ा।

ई.पू. 200 सदी के बाद के अग्रोहा का इतिहास उसके इसी उजड़ने बसने की कहानी है। इस पर तोमरों और चौहानों का आक्रमण हुआ, कुषाण और भारशिव नागवंश ने इस पर अपना अधिकार बनाये रखने की चेष्टा की, उज्जैन के राजा समरजीत की कुचालों का यह शिकार हुआ, किन्तु 12वीं सदी के अंत में मोहम्मद गौरी और गजनबी के आक्रमणों ने तो इसकी कमर तोड़ दी। अग्रोहा पूरी तरह से ध्वस्त कर दिया गया।

फिर भी जो ऐतिहासिक प्रमाण मिलते हैं, उससे स्पष्ट है कि अग्रोहा ने जैसे किसी भी परिस्थिति में पराजित

न होना सीखा था। उसमें परिस्थिति का सामना करने की दुर्दम्य शक्ति और लालसा थी। कभी हरभजशाह जैसे दानी की उदारता से, तो कभी दीवान नन्नूमल जैसे मातृभूमि-प्रेमी द्वारा अग्रोहा-निर्माण का प्रयत्न चलता रहा और अग्रोहा अपने गौरव की यशोपताका फहराता रहा।

ऐसा लगता है कि गौरी के आक्रमणों के बाद भी अग्रोहा ने कई बार अंगड़ाई ली थी। इतिहासकार जियाऊद्दीन बरनी के उल्लेख से पता चलता है कि फिरोजशाह तुगलक के काल में अग्रोहा का अस्तित्व विद्यमान था। यही नहीं इब्नबतूता के उल्लेखों से पता चलता है कि हिसार-ए-फिरोजा के निर्माण में उसने अग्रोहा के अवशेषों की सामग्री का उपयोग किया था। हिसार से अग्रोहा 22 किलोमीटर की दूरी पर था, अत: फिरोजखां तुगलक ने इसके मलबे को काम में लिया हो तो आश्चर्य की बात नहीं। इस प्रकार वहाँ के ध्वंसावशेष भी क्रमश: समाप्त होते गए।

कालान्तर में पटियाला राजा के यशस्वी दीवान नन्नूमल अग्रवाल (1765-1781) ने अग्रोहा को पुन: बसाने और उसका पुनर्निर्माण करने का एक और प्रयत्न किया। वे बड़े ही कुशल प्रशासक एंव सैन्य संचालक थे। उन्होंने अपने सैन्य बल से दिल्ली के मुगल सम्राट के अधीनस्थ फतेहाबाद, सिरसा, हांसी और हिसार जैसे महत्वपूर्ण नगरों को पटियाला राज्य में सम्मिलित कर लिया। जब हिसार उनके आधिपत्य में आ गया तो उन्होंने अग्रोहा में एक किले का निर्माण कराया, जिसके अवशेष आज भी देखने को मिलते हैं और उसे दीवान नन्नूमल का किला कहते है।

18वीं शताब्दी के अंत में सुप्रसिद्ध लेखक रेनेल ने अपने समय के भारत का एक नक्शा दिया है, जिसमें अग्रोहा का नाम भी है। इससे पता चलता है कि अग्रोहा का 18वीं शताब्दी में भी अस्तित्व था।

इस प्रकार अग्रोहा के विध्वंस और निर्माण के प्रयत्न चलते रहे किन्तु लगता है कि मोहम्मद गौरी के आक्रमण से पहले जो इसका विशाल और भव्य रूप था, वह फिर नहीं बन सका। गौरी के आक्रमण के पश्चात् अग्रोहा से निष्क्रमण करने वाले बहुसंख्यक अग्रवाल विभिन्न स्थानों में जाकर बस गए और वहां के स्थायी निवासी हो गए। भाटों के गीतों तथा अनुश्रुतियों से पता चलता है कि अग्रोहा छोड़ने वाले अग्रवालों ने पहले हिसार, हांसी, तोशाम, सिरसा, नारनौल, रोहतक, पानीपत, करनाल, जींद, कैथल, दिल्ली, मेरठ, सुनाम, जगाधरी, सहारनपुर, बूड़ियों, कानोड, नांगल आदि में बस्तियाँ बसाई, जो वर्तमान हरियाणा, पंजाब, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, दिल्ली और पूर्वी राजस्थान में थीं। इनके अतिरिक्त अमृतसर, अलवर, उदयपुर, आमेर, सांभर, कुचामन, मेड़ता, पाली आदि में भी अग्रवालों की बहुलता थी।

इस सब तथ्यों से स्पष्ट है कि वर्तमान अग्रोहा ही आग्रेय गणराज्य (अग्रोदक) की प्राचीन राजधानी और अग्रवाल जाति के वंशजों का वही आदि स्थल है।

वर्तमान समय में यह महाराजा अग्रसेन राजमार्ग सं. 10 पर हिसार से 22 तथा दिल्ली से 190 कि.मी. की दूरी पर बसा हुआ है। यहां अभी जाने के लिए रेल्वे मार्ग नहीं है और पधौने वाले यात्रियों को हिसार, सिरसा या फतेहाबाद से बस मार्ग द्वारा आना पड़ता है। बसें दिन रात हर समय उपलब्ध रहती हैं।

अग्रोहा के सम्बंध में विद्यमान विभिन्न अनुश्रुतियां एवं कथायें

अग्रोहा और लक्खी तालाब

अग्रोहा में लक्खी तालाब का उल्लेख मिलता है। कहते हैं, यह तालाब मीलों दूरी में फैला था और उसकी ख्याति दूर-दूर तक फैली थी। आज भी लोक-गाथाओं में उसका गौरव गान बड़े सम्मान के साथ किया जाता है। इस तालाब के निर्माण के पीछे एक बड़ी ही रोचक गाथा है, जो इस प्रकार है-

एक बनजारा था। नाम था-लक्खीसिंह। वह आजीविका की खोज में इधर-उधर भटक रहा था। जब वह घूमते-घूमते अग्रोहा पहुंचा तो उसने सेठ हरभजशाह के विषय में सुना। उस समय सेठ हरभजशाह लोक और परलोक की शर्त पर ऋण दे रहा था। उसे बड़ी प्रसन्नता हुई कि वह हरभजशाह से बड़ी राशि कर्ज के रूप में ले सकेगा और उसे कर्ज भी नहीं चुकाना पड़ेगा। भला परलोक को किसने देखा है? यह सेठ भी कितना भोला और मूर्ख है, जो इस तरह की बेतुकी शर्त पर अपना पैसा लुटा रहा है। कौन ऐसा मूर्ख होगा जो इस लोक में पैसा लौटायेगा? बस अब तो मौज ही मौज है। थोड़े ही समय में उसके हाथ में ढेर सारी राशि होगी और वह भी लखपति बन जायेगा।

मन में प्रसन्न होता हुआ वह हरभजशाह की दुकान पर आया और एक लाख रूपये मांगे। मुनीम ने पूछा कि भुगतान लोक में या परलोक में? बनजारे ने अगले लोक में चुकाने की बात कही। मुनीम ने परलोक वाली बही निकाली और लक्खी बनजारे का अंगूठा लगवा कर एक लाख रूपया दे दिया।

लक्खी बनजारा एक लाख रूपया लेकर खुश होता हुआ चला गया। उसकी खुशियों का कोई ठिकाना न रहा। अब उसका अपना मकान होगा, कारोबार होगा ।

किंतु कल्पनाओं का यह प्रवाह अधिक समय तक चालू न रह सका। उसने मन में अनुभव किया कि लाखों करोड़ों का व्यापार करने वाला इतना बड़ा महाजन मूर्ख नहीं हो सकता। उसे परलोक में रूपये चुकाने ही पड़ेंगे। पिछले जन्म में उसने जो पाप किये, उसके कारण उसे ये बनजारे के दिन देखने पड़ रहे हैं, अगर वह परलोक में सेठ के लाख रूपये नहीं चुका पाया तो उसका क्या हाल होगा? उसे सेठ का बैल बनकर रूपये चुकाने होंगे। तब तो उसकी हालत और भी बुरी होगीं अब सेठ के रूपये रखना उसके लिए कठिन हो गया। उसने तुरन्त उन्हें लौटाने का निश्चय किया।

एक-एक क्षण उसे भारी प्रतीत होने लगा। उसका मन भारी उधेड़ बुन में था। रह-रहकर यह आशंका उसे उद्वेलित किए थी कि यदि सेठ ने यह पैसा जमा करने से इंकार कर दिया तो फिर क्या होगा? उसे तो बैल बनना ही पड़ेगा। इन्हीं संकल्प-विकल्पों के बीच वह सेठ की गद्दी पर पंहुच गया और उसने रूपये लौटाने की इच्छा प्रकट की। सेठ जी के मुनीम ने बही देखकर कहा कि यह रूपये तो परलोक की शर्त पर लिए गए थे। अतः इस लोक में जमा नहीं हो सकते।

लक्खी बनजारे ने मुनीम जी की खूब मिन्नत की, हाथ जोड़े किंतु मुनीम जी का वही उत्तर था। बनजारे का हृदय अथाह निराशा के सागर में डूब गया। उसे अपने आप पर घृणा होने लगी। वह खिन्न हो निर्जन वनों, पहाड़ों में घूमने लगा। जो भी मिलता, उससे ऋणमुक्ति का उपाय पूछता। घूमते-घूमते उसे वन में एक योगिराज मिले। लक्खी बनजारा उनके पैरों पड़ रोने लगा और योगीराज से प्रार्थना की कि वे कृपा करके उसे ऐसा कोई मार्ग सुझाएं, जिससे उसे अगले जन्म में सेठ का बैल न बनना पड़े। योगीराज ने उसकी स्थिति से दयार्द्र हो उपाय सुझाया कि तुम इन रूपयों से अग्रोहा में एक तालाब खुदवाओ और उसमें स्वच्छ जल भरवा दो। उन्होंने उसे उसके आगे की योजना भी समझाई।

प्रसन्नचित लक्खी बनजारे ने योगीराज के बताए अनुसार ही सब कुछ किया। उसने अग्रोहा के समीप ही एक भव्य तालाब का निर्माण करवा उसमें जल भरवा दिया। उसने उसका ऐसा प्रबन्ध किया कि कोई भी उस तालाब से पानी न भर सके। महिलाएं, बच्चे, नर-नारी उस तालाब पर पानी भरने आते और बिना पानी भरे निराश लौट जाते। लक्खी सिंह का सबको एक ही जवाब होता यह सेठ हरभजशाह का निजी तालाब है। इसमें से किसी को भी पानी भरने या पीने की इजाजत नहीं है। शनैःशनै यह बात सेठ हरभजशाह के कानों में भी पंहुची। उसे यह बुरा लगा कि उसके नाम से पानी भरने से मना किया जाए और उसकी लोकनिंदा हो।

सेठ हरभजशाह ने लक्खीसिंह को बुला सारी बाते पूछीं और उसके आग्रह को देखते हुए उसका रूपया जमा कर तालाब से पहरा हटाने का अनुरोध किया। लक्खी बनजारा बड़ा प्रसन्न हुआ। तालाब का नाम भी लक्खी तालाब पड़ गया।

यह तालाब कई योजन लम्बा और चौड़ा था। कहते है कि यह 150 एकड़ में फैला था। उसका जल अत्यंत ही मधुर और शीतल था। उसे पीने और नहाने मात्र से अनेक रोग ठीक हो जाते थे। इस प्राचीन तालाब के अवशेष आज भी अग्रोहा में मौजूद हैं।

सेठ हरभजशाह

एक किंवदन्ती के अनुसार एक समय किसी श्रीचंद नामक एक बड़े साहूकार व्यापारी ने ग्यारह सौ ऊँट केशर बेचने के किए भेजी और अपने कारिंदों से कहा कि इन ऊँटों की केशर एक ही व्यापारी के हाथों बेचना। श्रीचंद के कांरिदे अनेक नगरों व कस्बों में घुमते हुए महम पंहुचे। उस समय वहाँ का करोड़पति व्यापारी सेठ हरभजशाह अपने रहने के लिए एक विशाल हवेली बनवा रहा था। जब हरभजशाह को बताया गया कि इस प्रकार ग्यारह सौ ऊँट केशर बिकने आई है और बेचने वाले एक ही व्यापारी को सारी केशर बेचना चाहते हैं और अभी तक उन्हें कोई ऐसा खरीददार नहीं मिला है तो हरभजशाह ने इसे अपनी आन-बान-शान के खिलाफ समझा। उसने अनुभव किया कि इससे उसके राज्य का सम्मान कम होगा। अतः उसने सारी केशर तगार में डलवाने तथा उसका मूल्य एक ही मुद्रा में चुकाने का आदेश दे दिया। उसने कहा कि केशर हवेली का रंग करने के काम आ जायेगी।

जब गुमाश्ते केशर को बेच वापिस पहुंचे और श्रीचंद ने विवरण सुना तो वह आश्चर्यचकित रह गया। वह अब तक अपने को ही सबसे सम्पन्न समझता था किन्तु अब उसे मालूम हुआ कि उसके समाज में सेठ हरभजशाह जैसे अग्रवाल भी बैठे हैं, जो अपनी जाति और राज्य की मान-मर्यादा की रक्षा के लिए लाखों रूपया खर्च कर सकते हैं। उसके दिल में भी अग्रोहा को लेकर दर्द था। उसने मन में अनुभव किया कि सेठ हरभजशाह जैसे दानी और

सम्पन्न च्यक्तियों के होते हुए अग्रोहा वीरान पड़ा रहे, यह उचित नही हैं। उसने उसी समय सेठ हरभजशाह को एक पत्र लिखा। पत्र में लिखा गया था कि जब तक उसकी पितृभूमि वीरान पड़ी है, यह सब धन-वैभव व्यर्थ है। कौन इसे देखेगा? अत: मकान बनाने से पहले अग्रोहा बसाना जरूरी है। अन्यथा सिर ऊँचा कर चलने का कोई अधिकार नहीं।

सेठ हरभजशाह ने उस पत्र को बार-बार पढ़ा। उसकी आत्मा उसे बार-बार धिक्कारने लगी कि जब तक अग्रोहा नहीं बसता, उसका यह धन-वैभव व प्रतिष्ठा बेकार है। अपनी मूंछों और पगड़ी को रखना तभी सार्थक होगा, जब वह अग्रोहा आबाद कर देगा। उसने अपनी मूंछों को कटा दिया, पगड़ी उतार दी और प्रतिज्ञा की कि जब तक अग्रोहा नहीं बस जायेगा, वह मूंछें नहीं रखेगा, पगड़ी नहीं पहनेगा, नंगे सिर रहेगा। उसने अग्रोहा से थोड़ी दूर पर दुकान खोली और यह घोषणा की, जो भी व्यक्ति अग्रोहा में आबाद होगा, वह लोक या परलोक में भुगतान की शर्त पर मनचाही रकम का माल और राशि उससे उधार ले सकेगा। राजा रिसालू ने उसकी सब तरह की मदद करने का आश्वासन दिया और थोडी ही दूरी पर फौज की व्यवस्था कर दी, ताकि हरभजशाह और वहाँ की जनता को कोई परेशान न कर सके। जब अग्रवालों ने उसकी यह प्रतिज्ञा सुनी तो वे वहाँ आकर बसने लगे और धीरे-धीरे अग्रोहा बस गया।

शीला माता

लक्खी तालाब के समीप ही सतियों की मढ़ियां है और वहीं थेह के पार लगभग 300 कदम की दूरी पर शीला माता की मढ़ी या मंदिर है। शीला माता की अग्रवालों में बड़ी मान्यता है और प्रतिवर्ष भाद्रपद अमावस्या को दूर-दूर के अग्रवाल बंधु अपने बच्चों का मुंडन कराने वहां बड़ी संख्या में आते हैं और वहां मेला जुटता है। अब इस मढ़ी के ऊपर मुम्बई के सेठ स्व. तिलकराज अग्रवाल एवं उनके सुपुत्र शीतलकुमार अग्रवाल ने प्रचुर धन-राशि व्यय करके एक भव्य, मनोहारी मंदिर बनवा दिया है। इसे मंदिर तक हरियाणा सरकार ने अब सड़क भी बना दी है, जिससे यात्रियों को काफी सुविधा हुई है। शीला देवी के बारे में प्रचलित कथा इस प्रकार है-

शीला कोट्याधीश सेठ हरभजशाह की पुत्री थी। हरभजशाह की कीर्ति और उसकी यशस्वी दान-गाथा उस समय चारों ओर फैली थी। जब शीला युवती हुई तो उसके विवाह की चिंता हरभजशाह को हुई। उसने वर की खोज में दूत इधर- उधर भेजे और सियालकोट के राजा रिसालू के दीवान महताशाह के साथ उसका सम्बन्ध निश्चित कर दिया।

विवाह की तैयारियाँ बड़ी धूमधाम और चाव से हुई। शीला ने बड़ी ही उमंगों के साथ पतिगृह में प्रवेश किया। वह बहुत ही गुणवती, सदाचारिणी और पतिव्रता थी। धीरे-धीरे उसके अनुपम सौन्दर्य और रूप की गाथा राजा रिसालू के कानों में पड़ी। वह उससे आकर्षित हो विवाह की इच्छा रखने लगा। मेहताशाह के रहते उसकी इच्छा का पूर्ण होना संभव नहीं था। अत: उसने चाल चली और मेहताशाह को उसने रोहतासगढ़ (संभवत: रोहतक) भेज दिया। मेहता का शीला पर पूर्ण विश्वास था, अत: वह उसे वहीं छोड़ रोहतासगढ़ चला गया। उसकी अनुपस्थिति में राजा रिसालू ने शीला को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए अनेक चालें चलीं, तरह-तरह के प्रलोभन दिए किंतु शीला ने उसकी एक न चलने दी। सब तरह से विफल हो, उसने शीला को बदनाम करने के लिए अंतिम चाल चली। उसने किसी तरह से अपने नाम की खुदी अंगूठी उसके शयनागार में छिपाकर रखवा दी।

कुछ समय बाद मेहता जब रोहतासगढ़ से लौटा तो शयनगृह में सोने के लिए गया तो अकस्मात् उसकी

दृष्टि उस अंगूठी पर पड़ गई। अंगूठी पर रिसालू का नाम देखते ही वह आग-बबूला हो गया। उसे शीला के चरित्र पर संदेह हो गया। शीला ने अपनी पवित्रता के अनेक प्रमाण दिए। महताशाह से राजा रिसालू की चाल की ओर ध्यान न देने के लिए अनुनय-विनय की किंतु मेहताशाह का एक बार आशंका से ग्रस्त मन और अधिक गहराता ही गया। राजा रिसालू का षड़यंत्र सफल हुआ। मेहताशाह ने शीला का परित्याग कर दिया।

शीला का मन इस प्रबल आघात से मर्माहत और आक्रांत हो उठा। वह वियोग में बिलखती, विलाप करने लगी। एक दिन वह इसी शोक-संतप्त अवस्था में पतिगृह को छोड़ प्राण-त्याग के लिए निकल पड़ी और असुध अवस्था में पितृ-गृह पंहुच गई।

उधर मेहताशाह को जब शीला द्वारा गृहत्याग का पता चला तो वह उद्विग्न हो गया। उसने अपने द्वारपाल हीरा सिंह और सेविका चंद्रावती से सत्य जानने का प्रयत्न किया। उसने बताया कि शीला ने मेहता शाह की अनुपस्थिति में उसे एक क्षण के लिए भी अपने से पृथक न होने दिया और वह उसकी पातिव्रत्य एवं सतीत्व की पूर्ण साक्षी है। उसने मेहताशाह को इस बात के लिए धिक्कारा कि उसने एक पतिपरायणा नारी पर अकारण संदेह कर उसे घर छोड़ने को विवश किया।

अब मेहताशाह को अपनी गलती का बोध होने लगा था। यदि उसने प्राण-त्याग दिये होंगे तो उसके पाप का प्रायश्चित संभव नहीं है। वह शीला की खोज में निकल पड़ा। उसे शीला का पता न था। वह एक स्थान से दूसरे स्थान, वन-बीहड़ और जंगलों में भटकने लगा। शनैः-शनैः उसकी मानसिक स्थिति विक्षिप्त की सी हो गई। जो भी मिलता, उससे पूछता कि क्या तुमने मेरी प्राणप्रिया शीला को देखा है? लोग उसे पागल समझ आगे बढ़ जाते।

उसकी दशा दीन-हीन हो गई। शरीर सूखकर कांटा हो गया। किसी को विश्वास ही न होता कि यही महताशाह है। कोई उसे पागल बताता और कोई ढ़ोंगी।

मेहताशाह को शीला का नाम सुन बड़ा संतोष मिला। उसने कहा-इतने दिनों बाद पहली बार तुमने मेरी प्राण-प्रिया के नाम से जीवन दान दिया है। यदि तुम उसका पता ठिकाना बता दो तो वह उसका आभारी रहेगा। साथ ही उसने पूछा कि उसकी प्राण-प्रिया शीला जीवित है तो वह कहाँ मिलेगी? वह कैसा अभागा है, जो अपनी प्राण-प्रिया के दर्शन तक नहीं कर पा रहा है?

सेविका ने उसकी बातों को प्रलाप समझा। उसका उत्तर दिए बिना वह वहाँ से चल पड़ी और शीला से मिलने पर उसने उसे सब वृतांत कह सुनाया। शीला ने अनुभव किया, हो न हो, वही उसका पति है, जो उसकी खोज में इस तरह मारा-मारा फिर रहा है। वह पति-दर्शन की कामना से व्यग्र हो घर से बाहर दौड़ी किंतु हत्भाग्य! वह मेहताशाह के दर्शन कर पाती, उससे पूर्व ही उसके प्राणपखेरू उड़ चुके थे। अपने पति मेहताशाह को मृत पा वह पछाड़ खा गिर पड़ी। उसकी वेदना का कोई अंत न था। भाव विह्वल हो उसने अपने प्राण त्याग दिये। पति-पत्नी दोनों एकाकार हो गए। ज्योति-ज्योति में मिल गई। दोनों का एक ही चिता पर संस्कार हुआ।

उधर राजा रिसालू को जब मेहताशाह द्वारा घर त्यागने का पता चला तो उसने उसकी खोज प्रारम्भ की। डगर-डगर घूमता अग्रोहा पंहुचा और उसने वहाँ दूर अपना डेरा डाला। जब उसे मेहताशाह और शीला की मृत्यु के बारे में पता चला तो उसे बड़ा दुःख हुआ। उसे अपने आप पर ग्लानि अनुभव होने लगी।

अग्रोहा में जिस स्थान पर राजा रिसालू ठहरा, उस स्थान पर आज भी रिसालू टीब्बे के नाम से अवशेष मिलते हैं। वास्तव में वह एक टीब्बा है और सरकारी कागजातों में मौजा रिसालखेड़ा के नाम से उसका उल्लेख मिलता है। यहाँ कुँएं के चिन्ह, मकानों की दीवारें, ईटें आदि अब भी देखने को मिल जाते हैं।

शीला के अमर प्रेम की स्मृति में अग्रोहा में शक्ति शीला मंदिर का निर्माण हुआ है। असंख्य लोग वहां पधारते हैं, माता की मनौती मनाते हैं, बच्चों का मुंडन संस्कार आदि कराते व चढ़वा चढ़ाते हैं। उनका विश्वास है कि माता की पूजा से उनकी सकल मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। प्रत्येक भाद्रपद अमावस्या पर वहाँ विशाल मेला भी लगता है।

अग्रोहा की रीत, एक मुद्रा व एक ईट

महाराज अग्रसेन व अग्रोहा राज्य के विषय में अनेक कथायें व किंवदन्तियां प्रचलित हैं किंतु उसमें एक मुद्रा एक ईट की किंवदन्ती सर्वाधिक लोकप्रिय है। इसके अनुसार वैभव की अवस्था में अग्रोहा में एक लाख घरों की आबादी थी। ये सब लोग अत्यन्त समृद्धिशाली, संगठन प्रेमी और समाज हितैषी थे। जब भी वहाँ कोई नवीन बंधु बसने के लिए आता था तो वहाँ का प्रत्येक परिवार उसे एक मुद्रा और एक ईट सम्मानस्वरूप भेंट करता था, जिससे वह तत्काल एक लाख मुद्राओं का स्वामी बन जाता और लाखों ईटों से उसका मकान बन जाता था। एक लाख रूपयों से वह अपना व्यवसाय-व्यापार चला लेता, जिससे वहाँ किसी प्रकार की बेकारी, बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न न होती थी। यह परम्परा किसी कारणवश व्यापार में घाटा लगने अथवा प्राकृतिक आपदा के आने पर भी दोहराई जाती थी। इस परम्परा का पालन समानता के आधार पर नवागंतुक को भी करना पड़ता था और उसे भी नये बसने वाले परिवार को एक ईट व एक रूपया देना पड़ता था। इस प्रकार पारस्परिक सहयोग व समानता की भावना पर आधारित होने के कारण इससे किसी प्रकार की हीनता या छोटे-बड़े की भावना पैदा नहीं होती थी। सभी दाता थे और सभी समान रूप से ग्रहणकर्ता।

अग्रोहा के पतन सम्बन्धी गाथाएं

अग्रोहा पर बार-बार आक्रमण हुए तथा वह अनेक बार उजड़ा और बसा। जब किसी गणराज्य के अधिवासी किसी आक्रान्ता की अधीनता स्वीकार नहीं करते थे, तो प्राय: आक्रमणकारी लौटते समय उनकी बस्तियों में लूटपाट करते और उसे आग लगा जाते थे। इससे अनेक बस्तियों के राख के अवशेष मिले हैं। अग्रोहा की खुदाई में भी मृण-मोतियों के साथ राख के ढ़ेर मिले है। इससे स्पष्ट है, वह भी किसी समय जला था। इसके वृतांत को हरपतराय टांटिया ने अपनी पुस्तक "अग्रोहा दर्शन" मे इस प्रकार दिया है-

बाबा धुंगनाथ और भविष्यवाणी

एक बार एक योगी बाबा जिनका नाम धुंगनाथ था, अपने एक शिष्य कीर्तिनाथ के साथ इस नगर में आये और यहां के सुरम्य और शांत वातावरण से प्रभावित हो समाधि लगाने का विचार किया और अपने शिष्य से कहा कि मैं समाधि लगाता हूँ। मेरे समाधि में रहने तक तुम इस नगरी से भिक्षा लाकर अपना काम चलाना और धूनी को चैतन्य करते रहना। इस प्रकार शिष्य को आदेश देकर बाबा ने समाधि लगा ली।

बाबा के आदेशानुसार कीर्तिनाथ भिक्षार्थ नगर में गया और कुम्हारिन से रस्सी और कुल्हाड़ी लेकर बन में

प्रस्थान किया तथा जंगल में लकड़ी काट-काट कर महात्माजी की धूनी को प्रज्वलित रखने तथा उन्हें बेच कर अपनी आजीविका चलाने का उपक्रम करने लगा। इस तरह तपस्या करते-करते छः मास की अवधि व्यतीत हो गई।

उस समय विदेशी आक्रमणकारियों के आक्रमण भारत पर बार-बार होते रहते थे। ये आक्रमणकारी राजा द्वारा अधीनता स्वीकार न करने पर क्रुद्ध हो सबक सिखाने की दृष्टि से जाते-जाते नगर को जला जाते अथवा भंयकर तोड़-फोड़ और विनाश कर जाते। तत्कालीन समय में अग्रोहा वैभव के चरम शिखर पर था और आक्रमणकारियों के मुख्य मार्ग पर पड़ता था। उस समय योगियों को दिव्य दृष्टि प्राप्त थी। वे अपनी दृष्टि से होने वाली घटनाओं को पूर्व में ही जान लेते थे। संभवतः महात्मा धुंगनाथ को भी अपनी दिव्य दृष्टि से ऐसी अनुभूति हुई कि अग्रोहा का शीघ्र ही विनाश होने वाला है। अग्रोहा में निवास करने और तपस्या करने के कारण उनमें अग्रोहावासियों के प्रति ममत्व की भावना उत्पन्न हो गई थी। वे उसके विनाश को अपने नेत्रों से नहीं देख सकते थे। इसलिए उन्होंने दयार्द्र हो कर अपनी तपस्या भंग करते हुए शिष्यों तथा कीर्तिनाथ के माध्यम से नगर में डोंडी पिटवा दी कि अग्रोहा का जल्दी ही विनाश होने वाला हैं। वहाँ आग बरसेगी और जिसको भी सुरक्षित बचना है, वह यहां से निकल जाए।

इस प्रकार कीर्तिनाथ और उसके साथियों ने आवाज लगा लगाकर नगर के भावी विनाश की सूचना नगरवासियों को दे दी। कुल्हाड़ी और रस्सी देकर सहायता करने वाली कुम्हारिन को भी सचेत कर दिया। जिन लोगों ने योगी की भविष्यवाणी पर विश्वास किया, वे नगर को छोड़ कर किसी सुरक्षित स्थान पर चले गये किंतु काफी संख्या में लोग इस भविष्यवाणी को कपोल कल्पित समझ वहीं रह गए। कुम्हारिन ने अपना डेरा डण्डा उठा कर पास ही के तीन मील दूर स्थित स्थान पर अपना तम्बू लगा लिया। जिस स्थान पर उसने डेरा लगाया, वहीं उसके नाम से एक गांव बस गया, जिसका नाम "कुम्हारिया चक" पड़ा और आज भी वह अग्रोहा के समीप स्थित है।

योगिराज के बताये निश्चित समय पर अग्रोहा में भंयकर विनाश हुआ और अग्रोहा देखते-देखते राख का ढेर बन गया। वही राख का ढेर आज का लम्बा चौड़ा 566 एकड़ भूमि में फैला थेह है। थेह के नीचे मकानों, किले आदि के अवशेष स्पष्ट दिखाई देते हैं। बाबा धुंगनाथ की इस भविष्यवाणी के सम्बन्ध में अनेक चमत्कारिक उल्लेख भी मिलते है।

सिकन्दर का आक्रमण और अग्रोहा का विनाश

अग्रोहा के विनाश सम्बन्धी एक अन्य वृत भी लोक-प्रसिद्ध है। कहते हैं कि यूनान के बादशाह सिकन्दर ने भारत से स्वदेश लौटते समय अग्रोहा के वैभव की कहानी सुनी। उसने वहाँ की समृद्धि एंव वैभव से ललचा कर अपनी सेनाओं को उस पर आक्रमण करने का आदेश दे दिया किंतु सफलता न मिलने पर भेदनीति का आश्रय लेते हुए उसने गोकुलचंद और रत्नसेन नामक दो राजवंशी पुरूषों को भारी प्रलोभन देकर अपनी ओर मिला लिया।

अमावस्या की एक घनघोर रात्रि में जबकि अग्रोहावासी निद्रा में मग्न थे, इन देशद्रोहियों की सहायता से सिकन्दर की सेनाओं ने अग्रोहा पर आक्रमण कर दिया। गोकुलचंद और रत्नसेन, द्वारपाल और रक्षको को धोखा

देकर दुर्ग में प्रविष्ट हो गए और अपने ही बंधुओं के विरूद्ध विदेशी सेना का सहयोग कर घोर विश्वासघात का परिचय दिया किंतु अग्रोहा के वीर सैनिकों ने उनका दृढ़तापूर्वक मुकाबला किया। बड़ा ही घमासान युद्ध हुआ। युद्ध की समाप्ति पर सहस्त्रों स्त्रियां, जिनके पति युद्धभूमि में शहीद हो गए थे, अपने-अपने पतियों के साथ जौहर की ज्वाला में हर हर महादेव कहते हुए लक्खी तालाब के किनारे राज्य की बलि-बेदी पर अर्पित हो गई। इतिहास में जौहर की यह सर्वप्रथम घटना थी। इस प्रकार अग्रोहा की ललनाओं ने त्याग और बलिदान का महान इतिहास लिखा।

अग्रोहा का विध्वंस और समरजीत

भाटों के गीतों से समरजीत नामक एक राजा का उल्लेख मिलता है, जिसने अग्रोहा पर विजय प्राप्त की थी। श्री बहालसिंह ने अपनी पुस्तक में इस घटना का उल्लेख करते हुए लिखा है कि यह घटना विक्रमी संवत् 758 में घटित हुई। उस समय धर्मसेन अग्रोहा का राजा था। यह राजा प्रजा का शत्रु था। मालूम होता है कि उस समय अग्रोहा में जो152 तालुके थे, वे उसके विरूद्ध उठ खड़े हुए थे। अग्रोहा के धर्मपाल और इन्द्रसेन-चाचा-भतीजा-राज्य से बगावत कर उज्जैन के राजा समरजीत के पास चले गए और उसे प्रेरित कर अग्रोहा पर चढ़ाई करा दी। अग्रोहा का शासक हार गया और उस दिन से अग्रोहा का पतन प्रारम्भ हो गया।

इस विजय के उपलक्ष में राजा समरजीत ने दोनों चाचा-भतीजा को क्रमशः पूर्वी बंगाल और पश्चिमी बंगाल, जो उस समय उसके उपनिवेश थे, पुरस्कारस्वरूप प्रदान कर दिए। यह ई. 701 के लगभग की बात है। कहा जाता है कि इन्हीं धर्मपाल के वंशज राजा महीपाल ने "पालवंश" और राजा वल्लभसेन ने "सेनवंश" की स्थापना की और उन्होंने लगभग 500 वर्ष तक बंगाल पर शासन किया।

इस आक्रमण के फलस्वरूप हो सकता है कि अग्रोहावासी अग्रोहा छोड़कर समीपस्थ पानीपत, नारनौल, झुंझनू आदि स्थानों में जाकर बस गए हों।

अलबरूनी (1080) ने अपने ग्रंथ "किताबुल हिन्द" में लिखा कि उनके दिल्ली जाने वाले रास्ते में एक ध्वस्त नगर के चिन्ह मिले थे, जो पूरी तरह ढह चुका था, वहां कोई रहने वाला नहीं था। ऐसा लगता है कि इस काल के बाद अग्रोहा ने मध्यकाल में एक बार पुनः अपनी समृद्धि प्राप्त कर ली थी क्योंकि जियाऊद्दीन बरनी के उल्लेख से पता चलता है कि मुलतान से दिल्ली यात्रा के मध्य सम्राट फिरोजशाह तुगलक अग्रोहा में ठहरा था। किसी सम्राट का किसी नगर में विश्राम करना यह सिद्ध करता है कि वह उस समय प्रसिद्ध रहा होगा तथा इतना समृद्धिशाली रहा होगा कि जिससे एक राजा अपने पूरे लश्कर के साथ वहां ठहर सके। इतिहासकारों के अनुसार सम्राट ने हिसार-ए-फिरोजा के निर्माण में हिन्दू मंदिरों-नगरों का मलबा काम में लिया था। अग्रोहा जो हिसार से 22 किलोमीटर की दूरी पर था, उसके अवशेष यदि इसके निर्माण में लिए लगाए गए हों तो आश्चर्य नहीं। हिसार के गूजरी महल, फिरोजशाह मस्जिद, जहाज कोठी और फतेहाबाद की मस्जिद आज भी इस सत्य को प्रमाणित करते हैं। लगता है 1254 में शहाबुद्दीन गौरी के आक्रमण के बाद यह नगर काफी विध्वंस हो चुका था और उसी समय अग्रोहा निवासी वहां से निष्क्रमण कर संयुक्त प्रदेश, पंजाब, मारवाड़ के भिन्न-भिन्न स्थानों में जा बसे और वणिक-व्यापार से अपनी जीविका चलाने लगे। संभव है उसी समय उन्होंने तलवार को त्याग मुख्य रूप से तराजू ग्रहण कर ली हो, क्योंकि लगातार युद्धों के कारण व्यापार संभव नहीं था।

अग्रोहा के थेह एवं उनके पुरातात्विक अवशेष

आज अग्रोहा एक कस्बे के रूप में स्थित है, जहां पुराने अग्रोहा की स्मृति स्वरूप 566 एकड़ में 87 फुट ऊंचा विशाल थेह फैला हुआ है। इन थेहों से उसकी प्राचीनता एवं ऐतिहासिकता का बोध होता है।

अग्रोहा में फैले इन थेहों में उसके उत्थान पतन की गाथा छिपी पड़ी हैं। इतिहास की इस अमूल्य धरोहर को जानने के लिए पुरातात्विक विभाग एवं अन्य अनेक बंधुओं ने समय-समय पर महत्वपूर्ण प्रयास किए हैं।

इस सम्बन्ध में पुरातात्विक खनन एवं अध्ययन का सर्वप्रथम प्रयास 1888 ई. में सी. जे. रोजर्स ने किया। उन्होंने एक छोटे टीले की 16 फुट की गहराई तक खुदाई करवाई। इस खुदाई में राख के ढेर भी मिले, जिनसे पता चलता है कि यहां कभी भयानक अग्नि कांड हुआ था। वहां कुछ अलंकृत ईंटे भी मिली, जिससे उस अनुश्रुति को बल मिला, जिसके अनुसार अग्रोहा आने वाले हर व्यक्ति को एक रूपया एक ईट भेंट की जाती थी। इसके अलावा उन्हें कुछ सिक्के, मनके, नग्न मूर्तियों के टुकड़े, मिट्टी के खिलौने आदि भी मिले, जिन पर अग्नि कांड के चिह्न थे। इस खुदाई की रिपोर्ट रोजर्स ने केवल दो ढाई पृष्ठों में दी। यद्यपि इससे अग्रोहा के विषय में कोई ठोस जानकारी नहीं मिली किंतु डॉ. परमेश्वरीलाल गुप्त के अनुसार जो भी सामग्री मिली, उससे अनुमान लगाना कठिन नहीं है कि अग्रोहा का जो रूप उस समय सामने आया, वह 12वीं शताब्दी का रहा होगा। इतिहास में 1194 ई. में अग्रोहा पर मोहम्मद गौरी के आक्रमण का उल्लेख मिलता है तथा कहा जाता है कि उसने अग्रोहा को जलाकर राख का ढेर बना दिया था। संभवत: ये अवशेष उसी काल के रहे होंगे।

इसके पश्चात 1938-39 में भारतीय पुरातत्व विभाग के निर्देशन में हीरालाल श्रीवास्तव ने अग्रोहा के थेह में परीक्षात्मक उत्खनन करवाया। इस खुदाई से पता चला कि टीले के नीचे एक सुनियोजित नगर की बस्ती थी। उसके मकान पक्की ईंटों से बने थे और निवास गृह एक दूसरे से अलग थे। कमरों में प्रवेश के लिए दरवाजे थे। वहां से मिट्टी की कुछ मोहरें, जली हुई मूर्तियां, अनाज तथा जला हुआ हस्तलिखित ग्रंथ, सोने के एक मनके सहित भी प्राप्त हुआ। ग्रंथ के जल जाने से उसकी विषय वस्तु का पता तो न चल सका किन्तु लिपि के आधार पर उसका समय 9वीं शताब्दी अनुमान किया जाता है।

मंदिर के अलावा वहां बराह, कुबेर, महिषमर्दिनी दुर्गा की चार हाथों वाली मूर्तियां भी मिली हैं। कुबेर धन के देवता हैं। इससे अनुमान होता है कि अग्रोहा के वैश्य लोग लक्ष्मी के साथ धन के अधिपति कुबेर की पूजा भी करते होंगे। ये मूर्तियां 9वीं सदी की अनुमान की जाती हैं।

स्वामी ओमानंद सरस्वती ने हरियाणा के मुद्रांक में अग्रोहा से प्राप्त कुछ मुद्राओं का उल्लेख किया है। ये मुद्रांक मिट्टी की मोहर की छाप हैं जो किसी पार्सल पर लगाई जाती थीं। इससे प्रमाणित होता है कि अग्रोहा ऐसा नगर था जिसका सम्बन्ध ईसा पूर्व काल में विदेशों से था और वहां का वाणिज्य- व्यवसाय इतनी उन्नत अवस्था में था कि गोपनीय खरीतों का आदान-प्रदान भी होता था।

अग्रोहा से प्राप्त विशिष्ट सामग्री उसके सिक्के भी हैं, जो सैंकड़ों की संख्या में विभिन्न लिपियों तथा चिह्नों को धारण किए हुए हैं। एच.एल. श्रीवास्तव ने जिन सिक्कों का अपनी रिपोर्ट में उल्लेख किया है, उनमें चांदी के पांच सिक्के विशेष हैं, जो मिट्टी के बर्तन में गड़े हुए मिले। ये सिक्के पश्चिमोत्तर देशों तथा ग्रीक-राजाओं के हैं, जिनका काल ईसा पूर्व दूसरी, पहली शताब्दी रहा। इन सिक्कों में अमिन्टास की दास, अपोलोडोटेस स्टेटो और

अमिन्टास के सिक्के प्रमुख हैं। एक आहत मुद्रा भी है, जिस पर सूर्य वृक्ष आदि अंकित हैं। इन सिक्कों से यह प्रमाणित होता है कि यहां की बस्ती गुप्त काल के पूर्व की है, क्योंकि उस समय इन सिक्कों का चलन उठ गया था।

दूसरे बर्तन में 51 चौकोर सिक्के भी बरामद हुए हैं, जिन पर एक ओर अग्रोदक अगाच्च जनपद (अग्रोदक में रहने वाले अगाच नामक जनपद का सिक्का, यह अगाच्च आग्रेय का प्राकृत रूप है) लिखा है तो दूसरी ओर वृषभ या वेदिका की आकृति बनी हुई है। इन सिक्कों का अत्यधिक महत्व है क्योंकि उनसे पता चलता है कि वहां अग्रोहा जनपद का अस्तित्व था और यह अस्तित्व प्रमाणसम्मत है।

इन सिक्कों से प्रमाणित होता है कि कुषाण व गुप्तकाल में अग्रोहा का अस्तित्व विद्यमान था।

यूनानी लेखकों व ग्रंथों में अगलस्तोई, अगलस्तेई, अर्गासेनेई, अग्रासिनेई, अगातिनेई का उल्लेख मिलता है। डॉ. परमेश्वरीलाल गुप्त का मत है कि ये अग्रश्रेणी के ही रूप है। यदि यह सत्य है तो निश्चित रूप से सिंकदर के समय "अग्र" नामक शस्त्रोपजीवी एक श्रेणी थी। उसने सिकंदर का डट कर सामना किया था और बाद में जनपद का रूप ले लिया था। श्रेणी एक प्रकार के व्यवसाय, वाणिज्य अथवा शिल्प का संगठन होता था। श्रेणियों को अपने सदस्यों पर अनुशासन बनाए रखने के लिए विधान बनाने का अधिकार था। उनके पास सैनिक बल भी होता था। उनकी सेना इतनी बड़ी संख्या में होती थी कि वे आक्रमण और रक्षा दोनों में समर्थ होती थीं। कालान्तर में इन श्रेणियों की राजनैतिक महता भी हो गई और उन्होंने स्वतंत्र गण अथवा जनपद का रूप ले लिया। इस प्रकार की श्रेणियों को वार्ताशस्त्रोपजीवी कहा जाता था। गुप्त का मत है कि इसी कारण यूनानी लेखकों ने अग्र नामक समूह का उल्लेख अग्रश्रेणी, अग्रसिनेई आदि रूप में किया है, जो ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

अग्रवंश शोध संस्थान नई दिल्ली के प्रयास से पुरातत्व विभाग, हरियाणा सरकार ने 22 मार्च 1979 से अप्रेल तक एवं 11 जनवरी 1980 से 29 मार्च 1980 तक, 14 जनवरी 1981 से 28 अप्रेल 1981 तक अग्रोहा के अवशेषों की खुदाई की। 1982 और 83 में भी उत्खनन कार्यो को आगे बढ़ाया गया।

1978-79 में बिना प्राकृतिक सतह की मिट्टी तक पहुंचे 4.3 मीटर की गहराई तक खुदाई की गई और शक-कुषाण समय से प्रारम्भिक गुप्तकाल के अवशेष पाए गए। 1979-80 में टीले के उत्तरी ढलान पर प्राकृतिक सतह की मिट्टी तक खुदाई का काम शुरू किया गया। खुदाई से विभिन्न कालों की जानकारी मिली, जो ईसा की 3-4 शताब्दी से लेकर ईसा की 12वीं-13वीं सदी तक की है। इस खुदाई में टेरीकोटा की एक सील भी पाई गई, जिस पर ब्राह्मी लिपि में "श्री नारायणदेव" लिखा है। मिट्टी की एक अन्य सील पर "श्रीसंकसा" लिखा है। ताम्बे के कुछ सिक्के भी मिले हैं, जो पुरातात्विक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

पुरातत्व विभाग, निदेशालय हरियाणा सरकार ने 1978-79 की रिपोर्ट में लिखा था कि - यह स्थान महाभारत में वर्णित आग्रेय गणतंत्र की राजधानी था। ऐसा विश्वास है कि इसे अग्रवाल समुदाय के महाराजा अग्रसेन ने बसाया था।

अग्रोहा की खुदाई से प्राप्त कुछ वस्तुएं विभिन्न संग्रहालयों में भी सुरक्षित रखी गई हैं। वहां से प्राप्त एक मूर्तिफलक लंदन के विक्टोरिया अलबर्ट म्यूजियम में है। चंडीगढ़ के संग्रहालय में भी यहां से प्राप्त तीन मूर्तियां हैं। जो भी हो, अग्रोहा के खंडहर अपने में महान इतिहास छिपाए हैं।

वर्तमान में अग्रोहा में एक विशाल संग्राहलय स्थापित किए जाने की योजना है।

अग्रोहा के पुनरूद्धार सम्बन्धी प्रयत्न

अग्रोहा के विध्वंस होने के बाद अग्रवाल देश के विभिन्न भागों में फैल गए और उनका अग्रोहा से कोई विशेष सम्बन्ध न रहा। अग्रोहा शताब्दियों तक खण्डहर रूप में पड़ा रहा किंतु किसी ने उसको सुधारने की आवश्यकता न समझी। इस बीच में कभी-कभी हरभजशाह द्वारा लोक-परलोक की शर्त पर ऋण दिए जाने अथवा दीवान नानूमल द्वारा वहाँ किला निर्माण से उसके निर्माण के कुछ-कुछ प्रयत्न हुए भी किंतु विशेष सफलता न मिली।

किंतु समय सदैव एक सा नहीं रहता। परिवर्तन सृष्टि का नियम है। 1893 में भारतेंदु बाबू हरिश्चन्द्र ने अग्रवालों की उत्पति नामक पुस्तिका लिखी और अग्रवालों को ध्यान दिलाया कि अग्रोहा उनकी जन्मभूमि है और महाराजा अग्रसेन उनके आदि पुरूष हैं। 1888 और 1938 में हुए अग्रोहा के अवशेषों की खुदाई से पता चला कि यह स्थान कभी महाराजा अग्रसेन की राजधानी था और अग्रवालों के साथ इसका विशेष सम्बन्ध था। इससे अग्रवालों मे अपनी पितृभूमि को लेकर कुछ सुगबुगाहट हुई किंतु उसके पुनरूद्धार की दिशा में कोई सार्थक प्रयत्न न हुआ। अंतत: अग्रवालों के गुरू स्वामी ब्रह्मानंद ने इस सम्बंध में अलख व जागृति उत्पन्न करने की चेष्टा की कि अग्रोहा उनकी आदिभूमि है और वे उसके निर्माण की सुध लें।

गुरू ब्रह्मानन्द के प्रयत्नों से 1915 में भिवानी के सेठ भोलाराम डालमिया और लाला सांवलराम ने अग्रोहा में एक गौशाला की स्थापना की और 1939 में सेठ रामजीदास बाजोरिया ने वहाँ एक धर्मशाला तथा महाराजा अग्रसेन का मन्दिर बनवाया,जो आज भी विद्यमान है। इसके साथ ही सेठ विश्वेश्वरदयाल हालवासिया ट्रस्ट ने धर्मशाला के समीप ही एक कुएं और प्याऊ का निर्माण कराया।

अग्रवाल समाज में उत्पन्न चेतना को देखते हुए 1918 में सेठ जमनालाल बजाज की प्रेरणा से अग्रवाल महासभा की स्थापना हुई और 1919 में महासभा का अधिवेशन वहाँ हुआ, जिसमें अग्रोहा निर्माण का संकल्प व्यक्त किया गया। 1952 में उनके पुत्र स्वर्गीय कमलनयन बजाज की अध्यक्षता में वहाँ पुन: सम्मेलन का आयोजन हुआ किंतु इस मध्य में अग्रोहा निर्माण की कोई योजना सिरे न चढ़ सकी।

1965 में मास्टर लक्ष्मीनारायण अग्रवाल ने अग्रोहा में महाराजा अग्रसेन इंजीनियरिंग कॉलेज की स्थापना हेतु महाराजा अग्रसेन इंजीनियरिंग एण्ड टेक्निकल सोसायटी के नाम से अग्रोहा के थेह के समीप 234 एकड़ जमीन खरीदी। वहाँ मण्डी बसाने पर भी विचार हुआ किंतु सफलता न मिली।

अंतत: 1975 में अग्रोहा में निर्माण की वेला उस समय आई, जब रामेश्वरदास गुप्त के प्रयत्नों से दिल्ली में 5-6 अप्रैल, 1975 को अखिल भारतीय अग्रवाल प्रतिनिधि सम्मेलन का आयोजन हुआ और उसमें अग्रोहा निर्माण का संकल्प लिया गया। परिणाम स्वरूप 1975 में अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन और 1976 में अग्रोहा विकास ट्रस्ट का गठन हुआ। 29 सितम्बर 1976 को अग्रोहा में निर्माण कार्य हेतु सोसाइटी ने अपनी 23 एकड भूमि ट्रस्ट को प्रदान कर दी। सर्वप्रथम 22 कमरों की धर्मशाला का उद्घाटन हुआ, जिसमें तिलकराज अग्रवाल का विशेष योगदान रहा। उसके बाद 31 अक्टूबर 1982 को महाराजा अग्रसेन मन्दिर का उद्घाटन सम्पन्न हुआ। उसमें हरियाणा के तत्कालीन मुख्यमंत्री भजनलाल एवं राजीव गांधी भी पधारे।

उसके बाद महालक्ष्मी मन्दिर का निर्माण प्रारम्भ हुआ और 28 अक्टूबर 1985 को इस में कुलदेवी महालक्ष्मी जी की प्रतिमा स्थापित की गई। मन्दिर के प्रारम्भिक निर्माण कार्यो में बनारसीदास गुप्त, श्रीकिशन मोदी,

रामेश्वरदास गुप्त, तिलकराज अग्रवाल, सीताराम जिंदल, ओमप्रकाश जिंदल आदि का विशेष योगदान रहा।

अग्रोहा में निर्माण कार्यो को तब विशेष गति मिली, जब नंदकिशोर गोईन्का ने अग्रोहा निर्माण समिति का तथा उनके सुपुत्र जी. टी. वी. के चेयरमेन सुभाषचन्द्र ने ट्रस्ट के अध्यक्ष पद का कार्यभार संभाला। आपने अग्रोहा के निर्माण कार्यो को विशेष गति दी तथा उनके पद सम्भालने के बाद अग्रोहा में नये-नये मन्दिरों के गुम्बद निरंतर ऊँचे होते ही गये।

अग्रोहा में 300 x 400 फुट का विशाल शक्ति सरोवर बनवाया गया, जिसमें सुप्रसिद्ध कलाशिल्पी परीड़ा द्वारा भव्य समुद्रमंथन की झांकी का निर्माण किया गया। इस सरोवर का उद्घाटन स्वामी सत्यमित्रानन्द जी के सान्निध्य में 1986 में हुआ और उसमे 41 पवित्र नदियों के जल की स्थापना की गई।

उसके बाद ट्रस्ट परिसर में भोजनशाला, धर्मशाला की प्रथम मंजिल पर 22 कमरों तथा शक्ति सरोवर पर 68 कमरों, भगवान् मारूति की 90 फीट ऊँची प्रतिमा, विद्यादायिनी सरस्वती के मन्दिर, नौकायन आदि का निर्माण हुआ। महालक्ष्मी मन्दिर के आगे ही 120 X160 फुट का एक विशाल हाल बनाया गया, जिसमे 5000 व्यक्ति एक साथ बैठ कर किसी भी कार्यक्रम का आनन्द ले सकते है। इसके अलावा वैष्णों देवी, तिरूपति बाला जी, अग्रेश्वर महादेव, भैरोबाबा, हिमानी बाबा अमरनाथ, भगवान द्वारिकाधीश, रामेश्वरम् धाम, संकटमोचन हनुमान, भगवान् मारूति की चरणपादुका आदि के भव्य मन्दिरों का निर्माण कराया गया। हनुमानजी की प्रतिमा के समीप ही मथुरा के अग्रबंधुओं द्वारा विशाल ब्रजवासीभवन और उसके सामने ही आगरा के बंधुओं द्वारा दो मंजिला आधुनिकतम सुख-सुविधाओं से युक्त एक विशाल अग्रसेन माधवी भवन बनवाया जा रहा है, जिससे अग्रोहा में आने वाले तीर्थयात्रियों के लिये आवास की कोई समस्या रहेगी। इसके अलावा आवासीय सुविधा उपलब्ध कराने की दृष्टि से 1983 में महाराजा अग्रसेन हाऊस बिल्डिंग को ओपरेटिव सोसाईटी की भी स्थापना की गई है।

ट्रस्ट परिसर का मुख्य द्वार भी अत्यंत कलात्मक एवं भव्य बनाया गया है और उस पर लगी हुई भगवान् श्रीकृष्ण के गीतोपदेश तथा महाराजा अग्रसेन की मूर्तियां दूर से ही यात्रियों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं।

इनके अलावा अग्रोहा में महाराजा अग्रसेन, भगवान राम, कृष्ण, शिव,शेषशायी विष्णु, गजग्राह, गंगावतरण आदि की भव्य झाकियों का निर्माण कराया गया है, जो बड़ी ही चिताकर्षक हैं।

देश में अब तक चार धाम थे। अग्रोहा को अग्रवालों के पांचवे धाम की संज्ञा दी गई है। अग्रोहा में आने वाले यात्रियों को पाँचों धामों के दर्शन एक साथ हो सकें, इसके लिए अग्रोहा मे महाराजा अग्रसेन और महालक्ष्मी के साथ-साथ बद्रीनाथ, रामेश्वरमधाम, जगन्नाथपुरी एवं द्वारिकाधाम के निर्माण की योजना भी हाथ में ली गई है और इनमें करोड़ों रूपयों की राशि से भव्य द्वारिका एवं रामेश्वरम् धाम का निर्माण हो चुका है और इन पंक्तियों के लिखे जाने तक जगन्नाथपुरी तथा बद्रीनाथ धाम निर्माणाधीन हैं।

उधर थेह के दूसरी ओर माता शीला की मढी पर शक्ति शीला माता के भव्य मन्दिर का निर्माण सेठ तिलकराज अग्रवाल मुंबई द्वारा अग्रोहा विकास संस्थान के सहयोग से किया गया है।

अग्रोहा निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि अग्रोहा में महाराजा अग्रसेन मेडिकल कॉलेज एंव शोध संस्थान का निर्माण है। इसके अलावा अग्रोहा में अग्रविभूति स्मारक भी निर्माणाधीन है।

अग्रोहा को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने तथा उसे रेलवे द्वारा जोड़ने की घोषणा भी सरकार द्वारा की गई है और इस सम्बंध में रेल विभाग द्वारा सर्वे भी करवाया जा चुका है।

अग्रोहा के दर्शनीय स्थल

1976 से पूर्व अग्रोहा एक वीरान स्थल था। यहाँ तक कि भवन निर्माण के लिए जल की व्यवस्था भी हिसार आदि समीपस्थ क्षेत्रों से करनी पड़ती थी, आज वही अग्रोहा अग्रवालों के पाँचवें धाम एवं विश्व के सुंदर दर्शनीय स्थलों में से एक का रूप धारण कर चुका है। वहाँ बड़े-बड़े मेलों, समारोहों का आयोजन होता है और प्रतिदिन देश विदेश से यात्री आकर अपने को कृत कृत्य अनुभव करते हैं।

अग्रोहा के दर्शनीय स्थलों को मुख्य रूप से चार भागों में विभक्त किया जा सकता है-

1)- अग्रोहा धाम एवं अन्य धार्मिक स्थल 2)- अग्रोहा का मेडिकल कॉलेज एवं हस्पताल

3)- अग्रोहा के पुरातात्विक स्थल 4)- अन्य।

अग्रोहा धाम (अग्रोहा विकास ट्रस्ट)

अग्रोहा का सबसे मुख्य दर्शनीय स्थल अग्रोहाधाम है, जो महाराजा अग्रसेन राष्ट्रीय राजमार्ग 10 पर स्थित है। इसका विकास अग्रोहा विकास ट्रस्ट द्वारा अग्रवालों के पाँचवे धाम के रूप में करवाया जा रहा है। इस धाम में अनेकानेक मन्दिर एवं दर्शनीय स्थल हैं, जिनका विवरण संक्षिप्त रूप से नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है-

कुलदेवी महालक्ष्मी मन्दिर- अग्रोहा के मन्दिरों में यह सबसे प्रमुख है और ट्रस्ट परिसर अग्रोहा धाम में मुख्य द्वार के बिल्कुल सामने स्थित है। इसमें महालक्ष्मी की बड़ी ही भव्य प्रतिमा स्थापित है। महालक्ष्मी अग्रवालों की कुलदेवी है और अग्रवालों को वर प्राप्त है कि जब तक उनके कुल में महालक्ष्मी की पूजा होती रहेगी, तब तक वे उनके वंश तथा धन धान्य की वृद्धि करती रहेंगी। यह मन्दिर पूरे भारत ही नहीं, विश्व के कतिपय लक्ष्मी मंदिरों में विशिष्ट स्थान रखता है। प्रतिमा के समीप ही महाराजा अग्रसेन, शेषशायी अग्रवाल विष्णु, गजग्राह आदि की मनोहर झांकियां हैं। मन्दिर का गुम्बद 180 फुट ऊँचा है और स्वर्णमण्डित होने से दूर से ही यात्रियों को अपनी ओर आकर्षित करता है। 28 अक्टूबर 1985 को शरद पूर्णिमा के अवसर पर इस मन्दिर को प्राणप्रतिष्ठा हुई और सिद्ध पीठ के रूप में इसकी मान्यता है। यहां मनौती मनाने से इष्ट सिद्ध होती है, ऐसी मान्यता है।

महाराजा अग्रसेन मन्दिर-कुल देवी महालक्ष्मी मन्दिर के दायीं ओर ही यह मन्दिर स्थित है। इसमें अग्रवालों के कुलाधिपति महाराजा अग्रसेन की मनोहारी प्रतिमा विद्यमान है। मन्दिर का निर्माण जनवरी 1979 में प्रारम्भ हुआ और 31 अक्टूबर 1982 को इसे जनता के दर्शनार्थ खोला गया। मन्दिर के सामने ही महाराजा अग्रसेन से सम्बन्धित एक ईट एक रूपया सहित विभिन्न झांकियों को प्रदर्शित किया गया है।

वीणावादिनी सरस्वती का मन्दिर- लक्ष्मी के साथ सरस्वती की भी आराधना आवश्यक है। बिना विवेक बुद्धि के लक्ष्मी स्थायी नहीं रहती। इसलिए अग्रोहा में कुलदेवी महालक्ष्मी के मन्दिर के समीप ही इस मन्दिर का निर्माण किया गया है। इससे माँ वीणावादिनी का बड़ी ही दिव्य प्रतिमा है। सन् 1993 में शरदपूर्णिमा के अवसर पर इस मन्दिर को जनता के दर्शनार्थ खोला गया और 24 अक्टूबर 1999 को इसमें स्वर्ण कलश की स्थापना की गई।

भगवान विष्णु मन्दिर- यह मन्दिर अत्यन्त भव्य है। इसमें भगवान विष्णु की बड़ी ही भव्य प्रतिमा है।

शक्ति सरोवर- मन्दिर के ठीक पृष्ठ भूभाग में 300 X 400 फीट के आकार में यह विशाल शक्ति सरोवर बना है। इसमें देश की 41 नदियों के पावन जल की स्थापना की गई तथा 1986 में भारतमाता मन्दिर के संस्थापक सत्यमित्रानन्द जी गिरी द्वारा इसका उद्घाटन किया गया। सरोवर के मध्य में समुद्र मंथन की अत्यंत ही सुदंर झांकी बनी है तथा चारों ओर प्रथम मंजिल पर 68 कमरों का निर्माण करवाया गया है। इस सरोवर पर पूर्णिमा, अमावस्या एंव अन्य धार्मिक अवसरों पर स्नान करने हेतु दूर-दूर से यात्री आते हैं। शक्ति सरोवर का द्वार भी कलात्मक है और

उसकी शोभा में चार चाँद लगाता है।

वैष्णों देवी की गुफा एवं मन्दिर- सुप्रसिद्ध वैष्णों देवी मन्दिर के अनुकरण पर अग्रसेन मन्दिर के प्रथम तल पर विशाल गुफा बना कर इस मन्दिर का निर्माण कराया गया है। मन्दिर के मध्य ही माँ वैष्णों देवी का भव्य पिंडी स्थित है, जिसके दर्शन करने के लिए माँ के भक्त दूर-दूर से आते हैं। यह मन्दिर वास्तुकला का श्रेष्ठ रूप प्रदर्शित करता है।

तिरूपति बालाजी मन्दिर- तिरूपति बालाजी की बड़ी ही मान्यता है और दक्षिण भारत के सबसे बड़े और सुप्रसिद्ध मन्दिरों मे उसकी गणना होती है। अग्रोहा धाम पधारने वाले यात्रियों को भी उसके दर्शन हो सकें, इस हेतु अग्रोहा धाम में भी प्रथम तल पर पावन तिरूपति बालाजी मन्दिर का निर्माण कराया गया है। इसमें स्थित बालाजी की प्रतिमा बड़ी ही मनोहारिणी है ।

द्वारिकाधीश मन्दिर- अग्रोहा में अग्रवालों को पाँचों धामों के दर्शन एक साथ हो सके इस हेतु वहाँ कुलदेवी महालक्ष्मी तथा महाराज अग्रसेन के अलावा अन्य चारों सुप्रसिद्ध धामों के निर्माण का निर्णय लिया गया और इसी सन्दर्भ में इस विशाल द्वारिकाधीश मन्दिर का निर्माण बृजवासी भवन की पृष्ठभूमि में कराया गया। इस मन्दिर में भगवान् द्वारिकाधीश तथा अन्य प्रतिमाएं अत्यंत ही भव्य और चिताकर्षक हैं तथा मन्दिर को बड़े ही कलात्मक रूप से बनाया गया है। मन्दिर में भगवान् श्री कृष्ण की लीलाओं की विद्युत झांकियां भी दर्शनार्थियों को मंत्रमुग्ध करने वाली हैं।

रामेश्वरम धाम- शक्ति सरोवर के पीछे स्थित यह रामेश्वरम धाम भगवान भोलेनाथ के भक्तों के लिए वरदानस्वरूप है और दक्षिण में समुद्र तल पर स्थित मध्य रामेश्वरम् धाम के दर्शन कराता है। मुख्य मन्दिर में नांदी, गणेश आदि की प्रतिमाएं बड़ी भव्य हैं। इसके साथ ही अन्य द्वादश ज्योतिर्लिंगों की भी स्थापना की गई है। मन्दिर के द्वार के समक्ष अग्रवालों के 18 गोत्रों से सम्बन्धित 18 मढ़ियों का भी निर्माण कराया गया है।

भगवान मारूति की 90 फीट ऊँची प्रतिमा एवं संकटमोचन मन्दिर - अग्रोहा धाम का एक विशेष आकर्षण है हनुमान जी की विशाल 90 फीट ऊँची प्रतिमा। यह संभवत: हनुमान जी की सबसे ऊँची एवं विशाल प्रतिम है। इस प्रतिमा के नीचे संकटमोचन हनुमान जी का मन्दिर है। इस मन्दिर में अग्रोहा धाम में खुदाई के समय निकली हनुमान जी की प्रतिमा के साथ भगवान् बजरंगबली की प्रतिमा की स्थापना की गई है।

बाबा अमरनाथ की बर्फानी मूर्ति- मन्दिर के ऊपरी भाग में बाबा अमरनाथ की बर्फानी मूर्ति की भी स्थापना की गई है, जिसमें बाबा अमरनाथ की हिम से बनी आकृति के दर्शन निरंतर भक्तों को प्राप्त होते रहते हैं।

अग्रेश्वर महादेव मन्दिर- बृजवासी अतिथि भवन के बाहर बने इस मन्दिर में अग्रेश्वर भगवान महादेव के साथ-साथ बांकेबिहारी भगवान श्रीकृष्ण तथा अन्य देवी-देवताओं के विग्रह स्थापित हैं। इस मन्दिर का शुभारम्भ 22 अप्रेल, 1997 को पूज्य कार्ष्णि गुरू शरणानंद जी महाराज के करकमलों द्वारा हनुमान जंयती के अवसर पर हुआ।

चरणपादुका मन्दिर- अग्रोहा में खुदाई करते समय भगवान मारूति की एक प्रतिमा प्राप्त हुई। इस प्रतिमा की प्राप्ति से अग्रोहा का महत्व हनुमान जी के धाम के रूप में और बढ़ गया तथा दूर-दूर से दर्शनार्थी हनुमान जी की इस प्रतिमा के दर्शन हेतु आने लगे। इस प्रतिमा की स्थापना संकटमोचन हनुमानमन्दिर मे कर प्राकट्य स्थल पर भगवान् मारूति का चरणपादुका मन्दिर बना दिया गया। इस मन्दिर के दर्शन कर भगवान् मारुति जी के भक्तों को बड़ी ही शान्ति मिलती है।

अन्नपूर्णा देवी मन्दिर-माता अन्नपूर्णा विश्व का भरण-पोषण करने वाली देवी है। यह पार्वती माता का ही स्वरूप है तथा कृषि विज्ञान की जननी भी वही मानी जाती है। अग्रवाल समाज भी कृषि व्यवसाय से सम्बन्धित

है। इसलिये अग्रोहा में माँ अन्नपूर्णा के मन्दिर की भी स्थापना की गई है।

भैरों बाबा मन्दिर और रज्जु मार्ग- अग्रोहा में माँ वैष्णों देवी का मन्दिर बना कर उसका सम्बंध रज्जु मार्ग से बाबा भैरू के मन्दिर से जोड़ा गया है। मान्यता है कि माँ वैष्णों देवी की यात्रा तब तक सम्पन्न नहीं होती, जब तक भैरव बाबा के दर्शन नहीं कर लिये जाते। इसलिए भैरवबाबा के इस मन्दिर की स्थापना वैष्णों देवी के मन्दिर से कुछ ही दूर माँ सरस्वती के गुम्बद स्थल पर की गई है। इससे अग्रोहा धाम पधारने वाले दर्शनार्थी माँ वैष्णों देवी के साथ भैरों बाबा के दर्शनों का भी लाभ प्राप्त कर सकते है।

जगन्नाथपुरी धाम- अग्रोहा धाम के पूर्व में चारों धामों में से एक श्री जगन्नाथ धाम की भी स्थापना की जा रही है। इस मन्दिर की नींव अग्रोहा अग्रोहा मेले के अवसर पर रख दी गई है। इस मन्दिर का निर्माण हो जाने के बाद अग्रोहा में बद्रीनाथ धाम का निर्माण कार्य हाथ में लिया जायेगा। उसके निर्माण से अग्रोहा वास्तव में पाँचों धाम का एक मात्र केन्द्र हो जाएगा।

अग्रसेन माधवी भवन- भगवान मारूति की प्रतिमा के समक्ष ही विशाल दो मंजिला अग्रसेन माधवी भवन आगरा के बंधुओं की ओर से बनाया गया है। यह भवन पूर्णतया वातानुकूलित और आधुनिक सुख सुविधाओं से युक्त है। इसमें महाराजा अग्रसेन तथा माँ माधवी की भव्य प्रतिमाएं भी स्थापित की गई हैं।

डायनासोर- मुख्य मन्दिर के समीप ही कृत्रिम पहाड़ी का निर्माण कर वहां विशालकाय डायनासोर का निर्माण किया गया है, जो सृष्टि के आदि वन्यजीवों का सुंदर परिचय देता है।

बाबा भोलेनाथ की प्रतिमा- ट्रस्ट परिसर में बाबा भोलेनाथ की प्रतिमा भी स्थापित की गई है, जिस पर निरंतर जलधारा प्रवाहित होती रहती है।

महाराजा अग्रसेन शोध केन्द्र- ट्रस्ट परिसर में ही महाराजा अग्रसेन शोध केन्द्र की स्थापना 1994 में डॉ. चम्पालाल गुप्त की प्रेरणा से की गई है। इस शोध केन्द्र हेतु अनेक दुर्लभ ग्रन्थ हरिराम गुटगुटिया द्वारा प्रदान किये गए। अग्र इतिहास में रूचि रखने वाले शोधार्थियों के लिए यह स्थान महत्व पूर्ण है।

अन्य दर्शनीय स्थल- अग्रोहा धाम देश विदेश के यात्रियों का आकर्षण स्थल बन सके, इस हेतु वहां विशाल अप्पूघर की स्थापना कर विद्युतचालित रेलो, झूलों, तरह-तरह के मनोरंजन साधनों एवं नौकायन की व्यवस्था की गई है, जो विशेष रूप से अग्रोहा आने वाले बच्चों तथा अन्य यात्रियों के मनोरंजन के श्रेष्ट केन्द्र हैं। इसके अलावा मन्दिर में भगवान राम, कृष्ण आदि की विद्युत झांकियों के साथ गंगावतरण, समुद्र मंथन आदि की झांकियां भी दर्शनीय हैं।

अन्य स्थल

शक्ति शीला मन्दिर- ट्रस्ट परिसर से कुछ दूरी पर माता शीला की मढ़ी पर भव्य शक्तिशीला का मन्दिर है। इस मन्दिर का निर्माण सेठ तिलकराज अग्रवाल द्वारा अग्रोहा विकास संस्थान के सहयोग से कराया गया है। यह मन्दिर शीला और मेहताशाह के अमर प्रेम की गाथा अपने में संजोए है और इस मन्दिर का निर्माण लाल पत्थर से अत्यंत ही कलात्मक ढ़ंग से हुआ है। इसमें शक्तिशीला की मढ़ी के साथ-साथ भगवान् राधाकृष्ण, सीताराम, अष्टभुजा दुर्गा, शकंर-पार्वती, माँ शेरावाली, लक्ष्मी-पार्वती, हनुमान जी आदि के भव्य विग्रह स्थापत्यकला की दृष्टि से यह मन्दिर उत्तरी भारत के श्रेष्ठ मन्दिरों में से एक है और प्रतिवर्ष असंख्य यात्री उसके दर्शनार्थ आते है। माता की मढ़ी पर बच्चों के मुण्डन संस्कार की प्रथा भी यहां सदियों से प्रचलित है और भाद्रपद अमावस्या को यहां विशाल मेला लगता है। यहाँ मनौती मनाने और पत्र-पुष्प चढाने से व्यक्ति की सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं, ऐसी

लोकमान्यता है। वर्तमान में मन्दिर की व्यवस्था एवं सार सम्भाल का कार्य शीतलकुमार अग्रवाल कर रहे हैं।

महाराजा अग्रसेन का प्राचीन मन्दिर- अग्रोहा मुख्य मार्ग पर ही महाराजा अग्रसेन का प्राचीन मन्दिर और धर्मशाला है। इस मन्दिर का निर्माण कोलकात्ता के सेठ रामजीदास बाजोरिया द्वारा विक्रम संवत 1995 में कराया गया। इस मन्दिर में संगमरमर से बनी हाथ में तलवार धारण किए महाराजा अग्रसेन की प्रतिमा सुशोभित है और यह अग्रसेन के प्राचीन मन्दिरों में माना जाता है। अग्रोहाधाम का निर्माण होने के बाद में इस मन्दिर का जीर्णोद्धार कर इसे नवीन रूप दिया गया है।

अग्रविभूति स्मारक- अग्रोहा में ही अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन द्वारा महाराजा अग्रसेन फाऊंडेशन की स्थापना कर विशाल अग्रविभूति स्मारक का निर्माण कराया जा रहा है। यह स्मारक 10 एकड़ भूमि में फैला है और इसमें महाराजा अग्रसेन, माँ माधवी तथा 18 पुत्रों का दरबार बना है। इस स्मारक में देश की स्वतंत्रता के लिए मर मिटने वाले शहीदों की प्रतिमाओं के साथ महाराजा अग्रसेन की प्रतिमा, विशाल संग्रहालय एवं अन्य स्थलों का निर्माण कराये जाने की योजना है।

महाराजा अग्रसेन मेडिकल कॉलेज एवं शोधकेन्द्र- अग्रोहा के दर्शनीय स्थलों में महाराजा अग्रसेन मेडिकल कॉलेज एवं शोध केन्द्र भी है। अग्रोहा के ऐतिहासिक खण्ड़हरों के सामने 1000 शैयाओं वाला यह विशाल हस्पताल एवं मेडिकल कॉलेज दूर से ही अपने ऊँचे विशालकाय भवनों एवं भव्य प्रवेश द्वार द्वारा यात्रियों को आकर्षित करता है।

अग्रोहा के थेह - अग्रोहा में 566 एकड भूमि में फैला तथा 87 फुट ऊँचा यह थेह ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है और यहां एक महान संस्कृति के अवशेष छिपे पड़े हैं। कहते है कि यहा कभी महाराजा अग्रसेन की राजधानी थी और सब प्रकार से सुख समृद्धि का निवास था।

गोयन्का उद्यान - राष्ट्रीय राजमार्ग पर गोयन्का परिवार द्वारा निर्मित यह उद्यान अग्रोहा आने वाले यात्रियों के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र है। इसे तरह तरह के प्राकृतिक दृश्यों, पुष्पों आदि से सुसज्जित किया गया है।

श्री अग्रसेन वैष्णव गौशाला - अग्रोहा में हरियाणा की सबसे प्राचीन गौशालाओं में से एक है। 1915 में इसकी स्थापना सेठ भोलाराम डालमिया तथा लाला सांवलराम के प्रयत्नों से की गई इसमें हजारों की संख्या में गायों को रखने की व्यवस्था है ।

प्रेक्षागृह एवं आडिटॉरियम - अग्रोहाधाम में अग्रोहा विकास ट्रस्ट द्वारा 20 करोड़ की लागत से यह प्रेक्षागृह एवं आडिटॉरियम निर्माणाधीन है। इसमें अग्रोहा सहित सम्पूर्ण वैश्य समाज से सम्बन्धित ऐतिहासिक अवशेषों, पुरातात्विक सामग्री, दुर्लभ साहित्य का संग्रह होगा तथा विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन होगा।

अग्रोहा बना पंचम धाम

अग्रोहा को अग्रवालों के पांचवें धाम की संज्ञा दी गई है। अब तक अग्रवालों के चार धाम थे किंतु अग्रोहा में बद्रीनाथ, रामेश्वरम, द्वारिका और जगन्नाथपुरी धाम के बनाने की योजना से अग्रोहा ने वास्तव में पांचवे धाम का रूप धारण कर लिया है और उसके दर्शन कर वहां पधारने वाला यात्री अपने जीवन की कृतकृत्य कर सकता है। आज अग्रोहा थेहों की वीरान स्थली नहीं, विश्व के श्रेष्ट दर्शनीय स्थल का रूप धारण चुका है। कुलदेवी महालक्ष्मी मन्दिर के साथ-साथ शक्तिशीला पीठ, विद्यादायिनी सरस्वती एवं वैष्णों देवी का मन्दिर बन जाने से वह शक्ति पीठ तथा हनुमान जी का मंदिर तथा 90 फीट ऊँची प्रतिमा बनने से वह भारत का दूसरा सालासर धाम बन गया है, जहां भारी संख्या में लोग आकर मन्नत मनाते और अपनी मनोकामनाओं को पूर्ण करते हैं।

अग्रवाल तथा वैश्य समुदाय की विभिन्न क्षेत्रों में भूमिका तथा योगदान

अग्र-वैश्य समाज प्रतिभा तथा कौशल में अग्रणी और उसने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी अग्रगामिता प्रकट कर वैश्य अग्र, श्रेष्ठि जैसी संज्ञाओं को सार्थक किया हैं। यहां समाज की कतिपय ऐसी ही अग्रगामी विभूतियों का परिचय दिया जा रहा है।

महाराज अग्रसेन -विश्व में एक ईट एक रूपये जैसे महान समाजवादी सिद्धान्त के प्रवर्तक। 80 लाख डाक टिकट प्रकाशित होने का प्रतिमान ।

लाला लाजपतराय -भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अप्रतिम नेता। शेरे पंजाब होने का सर्व प्रथम गौरव प्राप्त। भारत में श्रमिक आंदोलन के प्रवर्तकों में अग्रणी।

जमनालाल बजाज - भारत के स्वाधीनता आंदोलन के प्रथम भामाशाह, जिन्होंने अपनी सम्पूर्ण सम्पति तथा परिवार देश के लिए समर्पित करने का आदर्श प्रस्तुत किया ।

राममनोहर लोहिया- भारत में विपक्षी दल के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता, जिन्होंने नेहरू जी के विरूद्ध चुनाव लड़ने का साहस दिखाया तथा जिनके चुनाव में विजयी होकर लोक सभा में प्रथमबार प्रवेश करने पर भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू सहित समस्त सांसद खडे होकर करतल ध्वनि से उनका स्वागत किया ।

आप भारत में प्रथम गैर कांग्रेसी शासन के सूत्रधार भी थे।

लक्ष्मी मित्तल - विश्व के सर्वाधिक धनाढ्यों की सूची में बिलगेटस तथा बारेन बाफेट के बाद स्थान पाने वाले प्रथम भारतीय। एशिया तथा यूरोप के सबसे धनी व्यक्तियों की सूची में निरन्तर सात बार तथा गिन्नीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में पांच पांच कीर्तिमान स्थापित करने वाले एक मात्र व्यक्तित्व। विश्व में सर्वाधिक स्टील उत्पादन का कीर्तिमान ।

पद्मावत कमलापत एवं लक्ष्मीपत सिंघानिया - एक ही उद्योगपति परिवार के तीन दिग्गज, जिन पर प्रथम बार भारतीय डाकतार विभाग ने डाक टिकट जारी किए ।

शेखर गुप्ता - इण्डियन एक्सप्रेस पत्र समूह के सम्पादक एवं निदेशक, जिन्हें भारत में प्रिंट एवं मीडिया क्षेत्र में उत्कृष्ट पत्रकारिता को प्रोत्साहित करने के लिए सर्वप्रथम भारी राशि के 21 से अधिक रामनाथ गोयन्का श्रेष्ठ पत्रकारिता पुरस्कार सूत्रपात करने का श्रेय प्राप्त है।

बनारसीदास- मुगलकाल के जैन अग्रवाल कवि, जिन्होंने किसी भी भारतीय भाषा में सर्वप्रथम आत्मकथा लिखी ।

रामकृष्ण डालमिया - भारत के प्रथम उद्योगपति, जो राष्ट्र भक्ति की भावना से प्रेरित होकर 1945 से पहले ही करोड़ों रूपयों की राशि भेंट कर चुके थे तथा जिनसे अनेक राष्ट्रीय नेताओं को मासिक पेंशन प्राप्त होती थी।

डॉ. स्वराजपाल - ब्रिटेन के सबसे बड़े हाउस ऑफ लार्डस के उपसभापति जैसे उच्च पद को सुशोभित करने वाले प्रथम भारतीय।

प्रीता बंसल - अमेरिका के सुप्रीम कोर्ट की एटार्नी जनरल तथा कानून के सुपर स्टार की संज्ञा प्राप्त ।

डॉ. रामनारायण अग्रवाल - भारत में अग्नि प्रक्षेपणास्त्र मिसाइल प्रणाली के जनक। मिसाइलों के निर्माण द्वारा भारत को सुरक्षा की दृष्टि से आत्म निर्भर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान ।

डा. पी.एस गोयल - दुश्मन के ठिकानों को हवा से हवा में तथा आकाश , जल-थल कहीं भी नष्ट कर सकने वाली 2013 में विकसित मिसाइल के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान तथा भारत को विश्व के छः सबसे बड़े परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्रों की सूची में प्रतिष्ठापित ।

सीताराम जिन्दल- भारत में एक-एक करोड़ रुपयों के सबसे बड़े सीताराम जिन्दल पुरस्कारों के प्रवर्तक । दानवीरों में अग्रणी ।

सुनील भारती मित्तल- 1992 में दिल्ली से सेल्यूलर मोबाईल सेवाओं का प्रारम्भ कर भारत के मोबाइल क्षेत्र में क्रांति लाने वाले अग्रणी व्यक्तित्व तथा मोबाइलमेन । टेलीकॉम क्षेत्र के विश्व दिग्गज।

अनिल अग्रवाल - वेदान्ता रिसोर्सज के चेयरमेन तथा विश्व में एल्यूमिनियम तथा अन्य धातुओं के उत्पादन में सबसे अग्रणी मेटलमेन। उड़ीसा में वेदान्ता विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु 6000 करोड़ (वन विलियन डॉलर) का दान तथा 2014 में अपनी सम्पति की 75 प्रतिशत राशि 16200 करोड़ रुपये के दान की घोषणा कर पूरे भारत के लोकोपकारियों में कीर्तिमान स्थापित ।

सुभाषचन्द्रा - 1992 में जी.टी. वी के प्रर्वतन द्वारा भारत में सेटेलाईट आधारित टी.वी. कार्यक्रमों का सूत्रपात करने वाले मनोरंजन एवं मीडिया जगत के अग्रणी व्यक्तित्व। विश्व में सर्वाधिक दर्शकों वाला टी. वी चैनल।

राहुल बजाज - भारत में ऑटो क्षेत्र के अग्रणी व्यक्तित्व।

हनुमान प्रसाद पोद्दार-आधुनिक भारत के प्रथम निस्पृह व्यक्तित्व, जिन्होंने भारत सरकार के भारत रत्न अलंकरण को स्वीकार करने से मना कर दिया। कल्याण के सम्पादक एवं गीताप्रेस के संस्थापक।

सत्यनारायण गोयन्का- विश्व में बिपश्यना ध्यान पद्धति के सबसे बड़े आचार्य तथा पेगौड़ा के निर्माता।

मेहर मित्तल - पंजाबी फिल्मों के सर्वश्रेष्ठ कॉमेडियन होने का कीर्तिमान ।

रामनाथ गोयन्का - इण्डियन एक्सप्रेस के जुझारू सम्पादक, जो भारत में सत्ता परिवर्तन के लिए विख्यात थे।

सुरेन्द्र गोयल - प्रथम एयरवाइस मार्शल, जिन्हें अंग्रेज सरकार ने एम.वी.ई. से सम्मानित किया। भारत की वायु सैन्य क्षमता बढ़ाने में विशेष योगदान ।

बलदेवराज दूदवेवाला - प्रथम भारतीय मारवाड़ी बैंक के संस्थापक ।

ज्योतिप्रसाद अग्रवाल- भारत के प्रथम ऐसे अग्रवाल, जिनके नाम पर डिब्रूगढ़ स्थित एयरपोर्ट समर्पित किया गया है।

बलवंत राय मेहता- भारत में राज्य विकेन्द्रीकरण एवं पंचायती राज के प्रवर्तक।

मदनलाल अग्रवाल- भारत में एकल विद्यालयों के प्रमुख प्रवर्तक तथा 55000 से अधिक एकल विद्यालयों की स्थापना।

एच.वी. शेट्टी- भारत के प्रथम वैज्ञानिक जिन्होंने विमान का निर्माण कर मैसूर के महाराजा को समर्पित किया।

बालचन्द हीराचन्द - भारत में जलयान तथा एयरक्राफ्ट उद्योग के प्रथम संस्थापक।

लाला लाजपतराय - पंजाब नैशनल बैंक के मुख्य संस्थापकों में एक ।

अजय अग्रवाल - दिल्ली की तिहाड़ जेल को नया रूप देने वाले दिल्ली के प्रथम आयुक्त।

अरविन्द केजड़ीवाल - दिल्ली विधान सभा के 2015 के चुनावों में आम आदमी पार्टी को 95.4 प्रतिशत सीटों पर विजय दिला पूरे भारत में सर्वाधिक बहुमत का प्रतिमान स्थापित करने वाले सम्भवत: प्रथम नेता।

डॉ. भगवानदास - भारत के सार्वजनिक क्षेत्र की प्रथम विभूति, जिन्हें देश के सर्वोच्च भारत रत्न अलंकरण को सबसे पहले प्राप्त करने का सौभाग्य मिला।

डॉ. हर्षवर्धन - विश्व स्वास्थ्य संगठन के सर्वोच्च महानिर्देशक पद पर पहुंचने वाले प्रथम भारतीय ।

विमल जालान - अन्तरराष्ट्रीय मुद्राकोष के भारत के प्रथम अधिशाषी निदेशक तथा रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया के गवर्नर।

खेमराज श्रीकृष्णदास- विश्व में सर्वप्रथम हनुमान चालीसा का प्रकाशन करने वाला प्रमुख अग्रसंस्थान।

श्री प्रकाश - पाकिस्तान में भारत के प्रथम उच्चायुक्त तथा 4-4 राज्यों के राज्यपाल ।

भारतेंदु हरिश्चन्द्र - आधुनिक हिन्दी साहित्य के जन्मदाता तथा स्वतंत्रता संग्राम के अमर उद्घोषक ।

राष्ट्ररत्न शिवप्रसाद गुप्त-काशी में विश्व के सबसे प्रथम भारतमाता मंदिर तथा काशी विद्यापीठ के संस्थापक।

डा0 धर्मवीर - भारत के सबसे कुशल राज्यपाल तथा प्रशासक ।

सर शादीलाल-किसी उच्च न्यायालय में नियुक्त होने वाले प्रथम मुख्य न्यायाधिपति।

काका हाथरसी- भारत के हास्य कवियों के सम्राट।

लाला कंवरसेन - राजस्थान की सबसे बड़ी इंदिरा गांधी नहर परियोजना के प्रमुख सूत्रधार। आपने ही पंजाब में भाखड़ा बांध की परिकल्पना की तथा उसे पाकिस्तान में जाने से बचाया ।

डा. बी. के गोयल - भारत में सुप्रसिद्ध हृदयरोग विशेषज्ञ, जिन्हें चिकित्सा जगत में पद्मविभूषण, पद्मभूषण तथा पद्म श्री जैसे तीन-तीन उच्च राष्ट्रीय अलंकरण प्राप्त करने का सौभाग्य मिला ।

अनन्त अग्रवाल - विश्व में ऑनलाईन शिक्षा के सबसे बड़े ख्यातानामा शिक्षाविद्।

सरगंगाराम - पंजाब में सर्वप्रथम लिफ्ट सिंचाई योजना का प्रवर्तन कर हरित क्रांति लाने वाले भारत के प्रथम आधुनिक इंजीनियर और दिल्ली स्थित सर गंगाराम हस्पताल के संस्थापक।

राकेश झुंझनूवाला - भारत के बारेन बाफेट। शेयर बाजार के अग्रणी व्यक्तित्व ।

जगमोहन डालमिया - क्रिकेट के प्रथम एशियाई ख्याति प्राप्त व्यक्तित्व, जिन्हें अन्तरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद् का अध्यक्ष बनने का गौरव प्राप्त हुआ।

विजयपत सिंघानिया - माइक्रोसाफ्ट विमान द्वारा इंग्लेण्ड से भारत की यात्रा करने वाले प्रथम वैज्ञानिक।

राजेन्द्र गुप्ता - एक लाख सत्तर हजार किलोमीटर पैदल यात्रा का कीर्तिमान स्थापित करने वाले प्रथम भारतीय यात्री।

प्रकाश अग्रवाल - कम्प्यूटर के लिए चिप निर्माण में अग्रणी अमेरिका की सिलीकोनवेली स्थित नियोमोजिक कॉर्पोरेशन के अध्यक्ष

अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र में वैश्य अग्रवाल

वैश्य अग्रवाल भारत का प्रमुख समाज है, जिस पर कोई भी राष्ट्र गौरव का अनुभव कर सकता है। वैसे तो यह समाज भारत की कुल आबादी के 2-25% का प्रतिनिधित्व करता है परन्तु भारत को दुनिया के सबसे शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में प्रतिष्ठापित कर विभिन्न क्षेत्रों में भारत की यशोपताका फहराने वाले वर्गों में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। यदि आज भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति तथा विश्व के छः सर्वाधिक परमाणु शक्ति से सम्पन्न राष्ट्रों की पंक्ति के रूप से उभर रहा है, तो उसमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका इस समाज के असंख्य उद्योगपतियों एवं डॉ. रामनारायण अग्रवाल, डॉ. पी.एस. गोयल, जयपाल मित्तल जैसे वैज्ञानिकों, इंजीनियरों एवं प्रतिभाओं की भी है, जिनके कारण आज भारत को यह गौरव प्राप्त हो रहा है।

आंखों मे वैभव के सपने संजोये, पग में तूफानों सी गति और हृदय में आसमान को मुट्ठी में भर लेने की चाह लिए यह समाज आज भारत को दुनिया की महाशक्ति के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए सन्नद्ध है।

इस समाज के युवा अत्यंत प्रतिभाशाली होते हैं और उनकी कार्यक्षमता अद्वितीय होती है। इसलिए अमेरिका, ब्रिटेन, एशिया, यूरोप, खाड़ी देशों में इस समाज के तकनीशियनों, सॉफ्टवेयर इंजीनियरों, डॉक्टरों, वैज्ञानिकों, प्रबंधन सलाहकारों (सी.ई.ओ.) आदि की भारी मांग है और वहां के बड़े-बड़े प्रतिष्ठानों, संस्थानों में उन्हें सेवारत देखा जा सकता है। विशेषकर चिकित्सा, स्वास्थ्य, तकनीकी सेवा, इंजीनियरिंग, प्रबंधन, प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उनकी प्रतिभा का लोहा विदेशी भी स्वीकार करते हैं। यहां तक कि नासा जैसे उच्च वैज्ञानिक अनुसंधान केन्द्रों में भी उनकी पर्याप्त संख्या में मांग रहती है।

यही नहीं, भारत के अग्र युवाओं ने अमेरिका, यू.के., कनाडा जैसे बड़े देशों की राजनीति में भी अपना विशेष स्थान बनाने में सफलता प्रदान की है। यहां तक कि विश्व राजनीति का सबसे बड़ा केंद्र व्हाइट हाउस भी उनकी प्रतिभा से अछूता नहीं रहा है। इस समाज के पीयूष बाबी जिंदल, डॉ. स्वराजपाल, प्रीत बंसल, मंजु गनेड़ीवाल, संजय गुप्ता, विनोद गुप्ता, जय गोयल, डॉ. पवन सिंघल आदि ने इन देशों के शासन-प्रशासन में महत्त्वपूर्ण भागीदारी निभा कर तथा वहां के उच्च सम्मानित पदों पर आसीन होकर यह प्रमाणित कर दिया है कि अग्रवाल जीवन के हर क्षेत्र में नेतृत्व की क्षमता रखते और अपनी प्रतिभा से दुनिया के किसी भी देश या स्थान में अपना विशिष्ट स्थान बना सकते हैं। (अमेरिका के राष्ट्रपति ओबामा हों या क्लिंटन अथवा बुश, सबने उनकी प्रतिभा को स्वीकारा है तथा उन्हें शासन-प्रशासन के महत्त्वपूर्ण पदों पर समान रूप से आसीन किया है।)

यहां तक कि संयुक्त राष्ट्र संघ के महत्त्वपूर्ण पदों तथा विदेशी राजदूत के रूप में भी उनकी नियुक्तियां हो रही हैं और वे वहां अपनी प्रतिभा का परिचय दे रहे हैं।

इसके साथ ही अप्रवासी भारतीय अग्रवालों ने विदेशों में मित्तल फाउण्डेशन, अम्बिका पाल फाउण्डेशन, गौरव फाउण्डेशन, गोयल फाउण्डेशन जैसे बड़े-बड़े ट्रस्टों, फाउण्डेशनों, दातव्य संस्थानों की स्थापना भी की है, जो वहां शिक्षा, धर्म, समाज सेवा, दान, परोपकारिता, क ा, संस्कृति आदि के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। विदेशों में भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के प्रचार प्रसार में भी उनकी विशेष भूमिका है। वे विदेशों में भारत के सच्चे प्रतिनिधि हैं।

..... आगे के कुछ पृष्ठों में हम इन्हीं में से कतिपय विभूतियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का उल्लेख करेंगे

बिहार

बिहार में मोतीलाल केजरीवाल, गौरीशंकर डालमिया, रामेश्वरलाल सर्राफ, रामजीवन हिम्मन्तसिंहका, देवीप्रसाद अग्रवाल, विष्णु मोदी, नागरमल मोदी, गोरीशंकर अग्रवाल, संतलाल जालान, सरयुप्रसाद अग्रवाल, हरिकृष्ण रांची, राजेश्वर अग्रवाल, डालटनगंज, मदनलाल अग्रवाल झरिया, शालिग्राम गाड़ोदिया रांची, श्याम कृष्ण अग्रवाल दुमका, हरिराम गुटगुटिया, मधुसुदन अग्रवाल आदि ऐसी अनेकानेक अग्र/वैश्य विभूतियां थी, जिन्होंने 1942 के आन्दोलन में जबरदस्त साहस का परिचय दिया । जेल गये, पूरे प्रांत में इस आजादी के आन्दोलन को फैलाया।

दिल्ली

अगस्त आन्दोलन के संदर्भ दिल्ली के विश्वबंधु गुप्ता, हनुमन्त सहाय अग्रवाल, बृजकृष्ण चांदीवाला, पार्वती देवी डीडवानिया आदि के योगदान को भी नहीं भुलाया जा सकता।

मुम्बई

मुम्बई के मदन लाल जालान को इस आन्दोलन में गुप्त कार्यकर्ताओं की सहायता करने के आरोप में सजा हुई। सोहनलाल अग्रवाल, मुम्बई, 1942 के तुफानी आंदोलन में क्रांतिकारी पम्पलेट निकालने वालों में अग्रणी थे और उस अपराध में आपने वर्ली और यरवदा जेल में 9 माह की सजा काटी। रायबहादुर गोविन्दलाल के सुपुत्र मदनलाल पित्ती मुम्बई को इस आन्दोलन कें इसलिए गिरफ्तारी का सामना करना पड़ा क्योंकि आंदोलन के सुप्रसिद्ध फरार नेता अच्युत पटवर्धन को अपने यहां ठहरने दिया और गैर कानूनी ढंग से रेडियो का संचालन किया। मुम्बई यूथ लीग की स्थापना में भी आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा।

श्रीनिवास बगड़का सरकार की दृष्टि में इतने खूंखार थे कि जेल से रिहाई के समय आप पर दिन में एक बार पुलिस चौकी में आकर हाजरी देने की पाबंदी सरकार ने लगा दी थी।

महिलाओं ने भी दिया योगदान

श्रीमती पार्वती डीडवानिया, इन्दुमती गोयन्का, जानकी देवी बजाज, मुसद्दी, शान्तिदेवी, राधादेवी, शकुन्तला गोयल, चम्पादेवी भारूका, दयावती सर्राफ, सरस्वती देवी गाडोदिया, ज्ञान देवी, भगवान देवी सेक्सरिया आदि ने भी आजादी के इस आन्दोलन में सक्रिय योगदान देते हुए अपूर्व साहस का परिचय दिया था।

आजादी के इस प्रथम आन्दोलन में अनगिनत अग्रवालों/वैश्यों ने अपने-अपने ढंग से जो कुर्बानियां दी उनका यदि संकलन किया जाये तो आजादी के आन्दोलन में अग्रवाल समाज के योगदान पर एक नया इतिहास तैयार हो सकता है।

क्रांतिकारी अग्रवाल/वैश्य

सामान्यतया कहा जाता है कि अग्रवाल(वणिक)/वैश्य शांतिप्रिय होते हैं किन्तु आवश्यकता पड़ने पर सिर पर कफन बांध बड़े से बड़े जोर-जुल्म से टक्कर लेने में भी संकोच नहीं करते ।

यहां अग्रवाल/वैश्य समाज के ऐसे ही कतिपय क्रांतिकारियों, राष्ट्रभक्त शहीदों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत है-

सेवाराम मोर

सतारा और महाबलेश्वर के बंदियों को छुड़ाने, सरकारी खजाने को लूटने तथा ब्रिटिश अधिकारियों की हत्या के आरोप में 8 सितम्बर को फाँसी की सजा।

लाला झनकूमल सिंघल

1857 के प्रथम स्वातंत्र्य समर मे मेरठ मण्डल के ग्राम धौलाना के 14 देशभक्तों को विद्रोह के आरोप में पकड़कर पेड़ पर फांसी पर लटकाया गया था, इनमें तेरह राजपूत थे, तो चौदहवें थे- लाला झनकूमल सिंघल। उस समय अंग्रेज अधिकारी ने कहा था 'लाला तुम इन हत्यारे राजपूतों के जाल में कैसे फंस गए?' लाला ने तपाक से उत्तर दिया था- साहब, हमारे पूर्वज भामाशाह ने महाराणा प्रताप को मुगलों के विरूद्ध आजादी की लड़ाई में जिस तरह सहयोग दिया था, उसी तरह मेरा भी फर्ज था कि अपने देश को आजाद कराने के इस संघर्ष में साथ दूं। यह सुनकर गोरा अधिकारी क्रोध से पागल हो उठा था तथा उसने तमतमाते हुए कहा था-'सबसे पहले इस बनिये के गले में फंदा डाला जाये' और हजारों आतंकित ग्रामीणों की उपस्थिति में लाला झनकूमल सिंघल हंसते-हंसते फांसी पर झूल गए थे। आज भी उनका स्मारक धौलाना में बना हुआ है, जो उनकी शहीदी का चिरस्रूथायी कीर्तिस्तम्भ है।

सेठ रामजीदास एवं राजाराम गुड़ वाले

आप 1857 की क्रांति में भामाशाह की भूमिका निभाने वाले ख्याति प्राप्त व्यापारी थे। आपके कोष में सदैव लक्ष्मी वास करती थी। स्थान-स्थान पर पशुओं एवं यात्रियों की सुविधा हेतु गुड़ बांटने के कारण आपको 'गुड़वाला' नाम से ख्याति हुई। मुगल बादशाहों तथा ईस्ट इंडिया कम्पनी को जब भी धन की आवश्यकता पड़ती, आप से ऋण लेकर काम चलाते थे। आप दिल्ली के वासी थे।

1857 की क्रांति में बहादुरशाह जफर को सेना को वेतन देने व अस्त्र-शस्त्रादि खरीदने के लिए जब धन की आवश्यकता हुई तो सेठ रामजीदास ने उन्हें दो करोड़ रुपये दिए। इस धन के समाप्त होने पर दूसरी बार चार करोड़ और तीसरी बार भारी राशि स्वातंत्र्य संघर्ष हेतु पुनः प्रदान की। किंतु किसी कारणवश जब यह स्वतंत्रता संघर्ष असफल हो गया तो अंग्रेजों ने बहादुरशाह को बंदी बना रंगून जेल भेज दिया तथा आपको बहुादरशाह को सहायता देने के अपराध में गिरफ्तार कर फांसी के फंदे पर लटका दिया तथा आपका करोड़ों- अरबों का खजाना जब्त कर लिया। इस प्रकार आपने स्वातंत्र्य प्रेम की महान कीमत चुकाई।

लाला मटोलचन्द अग्रवाल

आप डासना(गजियाबाद) निवासी थे तथा बहादुरशाह जफर के अनन्य मित्रों में एक थे। जब अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष करते-करते बहादुरशाह का खजाना खाली हो गया तो उसने अपना दूत मटोलचंद के पास भेजकर कुछ धन राज्य को उधार देने का आग्रह किया। लाला मटोलचंद ने इसके लिए बिल्कुल देर न लगाई तथा अपना समस्त सोना, चांदी, जेवर तथा लाखों करोड़ों की राशि बैलगाड़ी में भर डासना से दिल्ली जा पहुंचाई तथा बहादुरशाह को समर्पित करते हुए बोले- 'यह राशि ऋण न समझी जाए। इसे मैं राष्ट्र की स्वाधीनता के यज्ञ में छोटी सी आहूति के रूप में भेंट कर रहा हूं।' लाला मटोलचंद के ये शब्द सुन बहादुरशाह की आंखें सजल हो आई।

इसी धन से ही बहादुरशाह ने अंग्रेजों से युद्ध कर रही भारतीय सेना को बकाया वेतन का भुगतान किया था। इस सहायता के बदले मटोलचंद को राजद्रोह के अपराध में गिरफ्तार कर फांसी की सजा दे दी थी। देश की स्वाधीनता के लिए हुए संग्राम में अपनी समग्र पूंजी समर्पित कर देने वाले लाला मटोलचंद का यह बलिदान उस संधर्ष का महान स्वर्णिम पृष्ठ है।

लाला हुक्मचंद अग्रवाल

लाला हुक्मचंद अग्रवाल का जन्म हांसी में 1819 ई. में सुप्रसिद्ध कानूनगो परिवार में हुआ। अपनी योग्यता व प्रतिभा के बल पर आपने दिल्ली के अंतिम बादशाह बहादुरशाह जफर के दरबार में उच्च पद प्राप्त किया। आपके बादशाह के साथ संबंध बहुत ही अच्छे हो गए। सन् 1841 मे आपको हांसी व करनाल के कुछ इलाकों का कानूनगो नियुक्त किया गया। इस बीच अंग्रेजों ने भी हरियाणा प्रांत को अपने सम्पूर्ण नियंत्रण में ले लिया किंतु आप हृदय से अंग्रेज भक्त न बन सके। 1857 मे विद्रोह का स्वर फूटने पर आपने दिल्ली जाकर बादशाह से भेंट की और हांसी पहुंच अपने देश भक्त वीरों को एकत्र कर हरियाणा से होकर दिल्ली की ओर बढ़ रही अंग्रेजी सेना को भारी हानि पहुंचाई किंतु शाही सेना के सहायतार्थ न पहुंचने पर आपको निराशा का सामना करना पड़ा। आपके इस कार्य के नतीजे में फकीरचंद और मिर्जा मुनीर ने भी सहायता पहुंचाई । उनके इस अपराध में लाला हुक्मचंद, उनके भतीजे फकीरचंद तथा मिर्जा बेग को गिरफ्तार कर लिया गया। तीनों को हिसार लाया गया और सरसरी कार्यवाही के बाद 19 जनवरी 1858 को लाला हुक्मचंद तथा मिर्जा मुनीर बेग को लाला जी के मकान के सामने ही फांसी दे दी गई। उनके भतीजे फकीरचंद को भी अंग्रेज सैनिकों ने जबरदस्ती पकड़ कर के फाँसी के तख्ते पर लटका दिया। गोराशाही की क्रोधाग्नि इसी से शांत नहीं हुई। उनके संबंधियों को उनका शव नहीं दिया गया। उनकी धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने के लिए लाला हुक्मचंद के शव को हिन्दु धर्म की परम्परा के विरूद्ध भंगियों द्वारा दफनाया गया और मुस्लिम धर्म के विपरीत मुनीर बेग के शव को भंगियों द्वारा जलवा दिया। इस प्रकार लाला हुक्मचंद 40 वर्ष की अवस्था में ही देश के लिए शहीद हो गए। आपकी करोड़ों रुपऐ की चल-अचल सम्पत्ति को अंग्रेजी सरकार ने कोड़ियों के भाव नीलाम कर दिया। हांसी निवासियों ने इस महान वीर शहीद की स्मृति में 22.1.1961 को हुक्मचंद पार्क की स्थापना की, जो उनकी स्मृति का आज भी जीवन्त चिन्ह है।

मास्टर अमीरचंद

मास्टर अमीरचंद दिल्ली एक ऐसे ही महान क्रांतिकारी थे, जिन्होंने अपने जीवन की परवाह न करके शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य की नींव को हिला दिया था। दिल्ली के सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी लाला हरदयाल उनके ही छात्र थे। उनका लाहोर के विप्लव दल और उसके क्रांतिकारियों- रासबिहारी बालमुकंद आदि से गहरा संबंध था। उनका दरीबां कलां मकान सदा क्रांतिकारियों के लिए खुला रहता था और एक प्रकार से क्रांतिकारियों का केन्द्र ही बन गया था।

1905 में बंग भंग आंदोलन तथा स्वराज्य की मांग से जब अंग्रेजी साम्राज्य के प्रति विरोध की भावना सम्पूर्ण देश में फूट पड़ी तो दिल्ली भी उसकी आंच से मुक्त नहीं रह सकी और उस समय क्रांतिकारी आंदोलन का नेतृत्व किया, मास्टर अमीरचंद ने। आप दिल्ली में 26 दिसम्बर 1912 को हुए लार्ड हार्डिंग बम काण्ड के प्रमुख सूत्रधार थे। लार्ड हार्डिंग का जुलूस जब दिल्ली में टाउन हॉल, चांदनी चौक के रास्ते लाल किला के आम दरबार की ओर कूच कर रहा था तो आपके नेतृत्व में एक बम लार्ड हार्डिंग के हाथी के दौरे पर बड़ी तेज आवाज से फटा और फीलर खाने का जमादार होदे पर ही टुकड़े-टुकड़े हो गया। दूसरा व्यक्ति भी, जो उसके समीप खड़ा था, बुरी तरह से घायल हो गया। लार्ड हार्डिंग इस बमकाण्ड से बाल-बाल बच गया किन्तु इस काण्ड ने ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला दी। उनका यह सपना चूर-चूर हो गया कि अंग्रेज दिल्ली में सुरक्षित हैं। उनके इस काण्ड में लाला हनुमंतसहाय भी सहयोगी बने और उन पर अंग्रेजी राज्य के प्रति विद्रोह का मुकदमा चला। अनेक बड़े-बड़े लोगों ने आपके मुकदमे की पैरवी की किंतु अंतत: 25 अक्टूबर 1914 को आपको फांसी की सजा सुना दी गई और 8 मई 1915 को आपको दिल्ली की जेल में फांसी दे दी गई। आप हंसते-हंसते मातृभूमि की बलि वेदी पर अर्पित हो गए।

लाला हनुमंतसहाय

दिल्ली के सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी, जिन्हें लार्ड हार्डिंग बमकाण्ड में काले पानी तथा आजीवन कारावास की सजा मिली। आप उनके क्रांतिकारियों के गुरु थे तथा आपका घर क्रांतिकारियों के लिए सुरक्षित स्थान तथा अस्त्र-शस्त्रों का भंडार गृह समझा जाता था। आप महान क्रांतिकारी स्वाधीनता सेनानी थे। आपने सितारा और महाबालेश्वर की जेलों में बंद कैदियों को छुड़ाने का प्रयत्न किया तो अंग्रेजों ने आपको राष्ट्रद्रोह के अपराध में 8 सितम्बर 1857 को फांसी के फंदे पर लटका दिया।

बसन्तलाल मुरारका

बसन्तलाल मुरारका बंगाल के क्रांतिकारियों में अग्रणी थे। बंगाल में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की लपटें फूटने पर आपने क्रांतिकारियों की खुलकर मदद की और प्रसिद्ध क्रांतिकारी शरदचंद्र को एक लाख ग्यारह हजार रुपए की थैली भेंट कर आपने महान राष्ट्रभक्ति का परिचय दिया। आपने अग्रवालों के प्रथम राजबंदी होने का गौरव प्राप्त किया। आपने सुभाषचंद्र बोस की आजाद हिंद सेना के लिए धन जुटाने में भी भूमिका निभाई।

चाचा-भतीजा-लाला खूबराज एवं सत्यनारायण सर्राफ

राजस्थान वीरों की भूमि है। यहां एक से एक बड़े वीर हुए हैं, जिन्होंने देश के लिए कुर्बानी देकर राष्ट्रभक्ति के क्षेत्र में नये इतिहास की रचना की है।

अग्रवाल समाज के ऐसे ही दो महान योद्धा थे - चाचा - भतीजा - लाला खूबराज और सत्यनारायण सर्राफ, जो राजस्थान के भादरा निवासी थे और जिन्होंने बीकानेर राजशाही एवं ब्रिटिश दासता से लड़ते-लड़ते अपने जीवन की आहूति दे दी थी। उस समय बीकानेर राजशाही के अत्याचार चरम सीमा पर थे। चाचा भतीजे ने जब इन अत्याचारों से महाराजा गंगासिंह को अवगत कराना चाहा तो उन्होंने चाचा-भतीजे के इन लोकहितैषी प्रयासों को ही राजद्रोह मान लिया तथा खफा हो अपने दमन चक्र को और तेज कर दिया तथा उन्हें जेल में डाल उन पर राजद्रोह का आरोप लगाकर मुकदमा चला दिया। यह मुकदमा भारत के इतिहास में बीकानेर षड्यंत्र केस 1932 के नाम से चर्चित हुआ और उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैली।

यह मुकदमा 21 माह तक चला और इसमें 1933 में लाला खूबराज को साढ़े तीन वर्ष और लाला सत्यनारायण सर्राफ को साढ़े चार वर्ष की सजा सुनाई गई तथा उन्हें असहनीय यातनाएं दी गई। उसके बाद भी इन्होने अनेक अत्याचार सहे और देश की आजादी के लिए शहीद हो गये। चाचा-भतीजे के इस महान त्याग और राष्ट्रप्रेम की यह गाथा हमेशा अमर रहेगी।

क्रांतिकारी जयदेव गुप्ता

'जयदेव गुप्ता' भगतसिंह का सहपाठी थे तथा लाला लाजपतराय द्वारा स्थापित डीएवी स्कूल में पढ़े थे। भगत सिंह की माता विद्यावती उन्हें अपना पांचवां पुत्र कहती थीं। मैट्रिक के बाद उन्होंने नेशनल कॉलेज में प्रवेश लिया, जहां सुखदेव, भगवतीचरण और यशपाल से उनका परिचय तथा क्रांतिकारी विचारों का वपन हुआ। लाला लाजपतराय की मृत्यु के बाद सांडर्स के वध के बाद आपको पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। उन्हें 15 दिन पुरानी अनारकली हवालात में बंद रखा। भगत सिंह का पता तथा अन्य गोपनीय बातें पूछने के लिए उसे अनेक यंत्रणाएं दी गई।

प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका

आप बचपन में ही क्रांतिकारी विपिनबिहारी गांगुली के सम्पर्क में आए तथा आपका झुकाव क्रांतिकारी घटनाओं की ओर हो गया। रोडाआर्म्स काण्ड में सरकार ने आपको बंगाल से बाहर निष्कासित कर दिया तथा दुमका जेल मे नजरबंद रखा। इस कांड में आपने ब्रिटिश शस्त्रागार से हथियार पार कर उन्हें विद्रोहियों तक पहुंचाने में मदद की।

रामचंद्र मुसद्दी, मानपुर

1930 में सशस्त्र क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद आपके यहां 9 माह रहे। क्रांतिकारियों को मदद उपलब्ध कराना आप अपना कर्त्तव्य समझते थे।

रोशनलाल गुप्त करूण, आगरा

आगरा के सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी, जो अंग्रेजों के विरूद्ध बम विस्फोट में अग्रणी रहते थे।

राधामोहन गोकुल जी

उत्तर प्रदेश के क्रांतिकारी नेता, स्वाधीनता सेनानी, क्रांति दल के संस्थापक। 1904 में कलकत्ता में बंगाली

क्रांतिकारियों के सम्पर्क मे आए तथा 1914 में रोडा कम्पनी द्वारा विदेशों से मंगाए गए हथियारों व कारतूसों को पार कर क्रांतिकारियों तक पहुंचाने में सहभागी रहे। कानपुर में क्रांतिकारी पार्टी का गठन और क्रांतिकारियों को निरंतर सहयोग प्रदत्त। क्रांतिकारी गतिविधियों में लगातार लिप्त रहने के कारण 1921, 1930 मे जेल यात्रा।

बहुत कम लोगों को जानकारी होगी कि शहीदे आजम भगतसिंह ने जिस पिस्तोल से लाला लाजपतराय के हत्यारे साण्डर्स को मारा था, उसे उपलब्ध कराने में आपकी विशिष्ट भूमिका थी।

सेठ मोहनलाल पित्ती

ह्न आप हैदराबाद निवासी थे। आपने नाना साहब पेशवा के भतीजे राव साहब को हैदराबाद में नर्वदागिरी मठ में ठहराया। अंग्रेजों की जब इसकी सूचना मिली तो उन्होंने पित्ती पर 75000रु. का जुर्माना लगाया।

प्राचार्य नरेन्द्रदेव

ह्न महान समाजवादी नेता। सोशलिस्ट पार्टी के संस्थापक, बनारस विश्वविद्यालय के कुलपति।

डा. भगवानदास माहौर

ह्न काकोरी षड्यंत्र काण्ड के सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी, महान राष्ट्रभक्त। आजीवन काले पानी की सजा।

विपिनचंद्र पाल

ह्न सुप्रसिद्ध लाल-बाल-पाल त्रयी के नेता, बंगाल के वैश्य परिवार में जन्म तथा उत्कृष्ट देश भक्त। ब्रिटिश सरकार को जड़ से हिलाने में अभूतपूर्व योगदान।

मन्मथनाथ गुप्त

ह्न सुप्रसिद्ध बंगाली क्रांतिकारी एवं भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी। काकोरी षड्यंत्र काण्ड के अभियुक्त। अनेक पुस्तकों के लेखक।

अमरनाथ बांठिया (ओसवाल)

ह्न तांत्या टोपे के विश्वसनीय सेनानी, जिन्होंने जियाराव सिन्धिया का सम्पूर्ण खजाना भारत को अंग्रेजो से मुक्त कराने के लिए तांत्या टोपे को सौंप अनुपम देशभक्ति का परिचय दिया। फाँसी की सजा।

वीरांगना झलकारी बाई (तंतुवाय वैश्य)

ह्न महारानी लक्ष्मीबाई की सहयोगिनी 1857 के समर में अद्‌भुत् शौर्य का प्रदर्शन एवं अपनी विलक्षण प्रतिभा, वीरता, स्वामिभक्ति के लिए प्रसिद्ध तंतुवाय वैश्य।

हरगोविंद गुप्त (गुलहरे वैश्य)

ह्न मुख्य क्रांतिकारी तथा योद्धा।

सेठ पूर्णमल हैदराबाद

ह्न आप क्रांतिकारियों की मदद करने में सदैव अग्रणी रहते थे। आपको क्रांतिकारी नाना साहब पेशवा के भतीजे रावसाहब को भोजन भेजने व अपराध में भी जुर्माना लगाया गया।

कृष्णदास सारड़ा

ह्न अंग्रेज विरोधी राजनीति में भाग लेने पर फाँसी की सजा। महाराष्ट्र के शोलापुर निवासी।

सेठ जयगोपालदास, हैदराबाद

अंग्रेजों द्वारा सेठ मोहनलाल पित्ती आदि पर किए गए जुर्मानों से आहत होकर जब हैदराबाद के अग्रवालों ने इसका बदला लेने की योजना बनाई तो आपकी हवेली की छत से हैदराबाद रेजीडेंसी पर आक्रमण किया गया। इस विद्रोह के आरोप में आपके परिवार का कत्ल कर दिया गया।

श्रीरामनारायण चौधरी, अजमेर

आप1911 में ही क्रांतिकारी दल में सम्मिलित हो गए और सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी नेताओं, रासबिहारी बोस एवं शचीन्द्र सान्याल के प्रमुख सहयोगी के रूप में कार्य किया।

बटुकनाथ अग्रवाल

महान क्रांतिकारी। युवावस्था में ही अध्ययनकाल में चन्द्रशेखर, सुखदेव, राजगुरू आदि क्रांतिकारियों के सम्पर्क में आए तथा गुप्त अड्डों पर उनके संदेश पहुंचाने का कार्य किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात क्रांतिकारी शहीदों की स्मृति में शहीद उद्यान की स्थापना।

गौरीशंकर गर्ग बोहरे

काकोरी षड़यन्त्र के प्रमुख अभियुक्त शीतला गली बम कांड तथा अगस्त क्रांति में कारावास भोगने वाले महान क्रांतिकारी। 1925 में काकोरी ट्रेन डकैती कांड में गिरफ्तारी। निरंतर क्रांतिकारी संगठनों से संबद्ध रहे ।

विमलप्रसाद जैन

चंद्रशेखर आजाद, सरदार भगतसिंह तथा अन्य क्रांतिकारियों को सहयोग देने वालों में अग्रणी।

प्रो. रामसिंह

तेजस्वी स्वाधीनता सेनानी, जिन्हें 1919 में अध्ययन करते समय पुलिस ने खतरनाक राजद्रोही घोषित कर पंजाब से निष्कासित कर दिया था। वे महीनों तक स्वाधीनता संबंधी साहित्य तैयार कर दिल्ली भेजते रहे। हिन्दुत्व के प्रबल समर्थक एवं हिन्दू महासभा के अध्यक्ष।

रघुवरदयाल गोयल

राजाओं ने निरकुंश शासन के प्रबल विरोधी। 1932 में बीकानेर पड़यंत्र केस के प्रमुख अभियुक्तों की पैरवी द्वारा उत्कृष्ट देशभक्ति का परिचय। अनेक बार जेल यात्रा तथा बीकानेर से निर्वासन का दण्ड, राजस्थान में खाद्य,कृषि आपूर्ति, वनमंत्री आदि के रूप में सेवाएं।

कामरेड बनारसीदास

1930-31 के सविनय अवज्ञा आंदोलन एवं अन्य सत्याग्रहों में खुलकर भाग एवं जेल यात्रा। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में पुन: बंदी। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी में प्रमुख कार्यकर्ता एवं सदस्य। समाजवादी देशों के साथ मैत्री के प्रबल पक्षधर ।

राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम की महान विभूतियां एवं नायक

राष्ट्रपिता विश्ववंद्य

महात्मा गांधी

भारत की ही नहीं, विश्व की महान विभूतियों में से एक। स्वतंत्रता आंदोलन के महान नेता, जिनके कुशल नेतृत्व में देश ने अंग्रेजों के विरूद्ध आजादी की लड़ाई लड़ी और आजादी प्राप्त की। सत्य, अहिंसा के महान उपासक। वैश्य समाज के महान नेता जो राजनीति में रहते हुए महात्मा कहलाये और एक लाठी, लंगोटी के सहारे कभी सूर्य अस्त न होने वाले ब्रिटिश सम्राज्य का अंत करने में सफल हुए। आपने समस्त जाति, धर्म, वर्ग, सम्प्रदायों के लोगों को एक समझा। उन्हें पुत्रवत स्नेह प्रदान किया, जिसके कारण सम्पूर्ण देश वासियों ने उनके नेतृत्व में एक होकर आजादी की लड़ाई लड़ी और आप पूरे राष्ट्र के राष्ट्रपिता बन गए और आपको बापू की संज्ञा प्राप्त हुई। भारत में नेता तो अनेक हुए किंतु राष्ट्रपिता की संज्ञा प्राप्त करने का सौभाग्य केवल आपको प्राप्त हुआ।

अहिंसा सत्यग्रह के बल पर आजादी प्राप्त करने के कारण आपकी गणना विश्व के महान हिंसक नेताओं में होती है और आप विश्व की जानी मानी विभूतियों में से एक माने जाते हैं।

आपने राजनीति में सदैव शुचिता पर बल दिया। कभी किसी पद की आकांक्षा न की। आप स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश के महानायक बन सकते थे किंतु आपने 1934 में ही सक्रिय राजनीति से सन्यास ले लिया और जवाहरलाल नेहरू को कांग्रेस पार्टी का नेतृत्व सौंप दिया तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरन्त पश्चात कांग्रेस पार्टी को भंग कर राजनीति का विकेन्द्रीकरण करने की सलाह दी थी।

वे महान नेता होने के साथ-साथ महान समाज सुधारक, उच्च कोटि के विचारक, शिक्षाप्रेमी और सब कुछ थे। उन्होंने स्त्री शिक्षा, दलितोद्धार एवं दीनों - असहायों की सहायता के लिए बहुत कुछ किया। जिसकी प्रेरणा से सेठ जमनालाल बजाज, घनश्याम दास बिड़ला, सीताराम सेक्सरिया जैसे असंख्य वैश्य नेताओं ने भी इस आजादी के आंन्दोलन में तन-मन-धन से सहयोग किया और जेल की यातनाएं सहीं।

वे स्वदेशी के भी महान उपासक थे। उन्होंने जीवन ट्रस्टीशिप पर बल दिया और कहा कि पूंजीपति धनाढ्य लोग स्वेच्छा से अपने धन का लोककल्याण के लिए उपयोग करें। उनके जीवन में हिंसा का कोई स्थान न था। वे सर्वधर्म समभाव के उपासक थे। दोनो के सच्चे हितैषी थे । दरिद्रनारायण थे।

आपकी स्मृति में विश्व में अनेक स्थानों पर मूर्तियां स्थापित की गई, डाक टिकट जारी की गईं। भारत में भी आप पर 15 अगस्त 1948 को सर्वप्रथम डाक टिकट जारी किया और उसके बाद डाक टिकट पर सर्वाधिक प्रकाशित होने वाले आप प्रथम नेता है। आप ही संभवत: भारत के एक मात्र ऐसे नेता है, जिनके चित्रों को भारतीय मुद्रा पर छापा जाता है। आपके नाम पर लगभग 120 देशों में डाक टिकट तथा 150 देशों में मूर्तियां स्थापित हो चुकी हैं।

इस प्रकार की महान विभूति को जन्म देकर वैश्य जगत गौर की अनुभूति कर सकता है। वे वास्तव में वैश्य समुदाय के नहीं, मानवमात्र के सच्चे नेता ओर बंधु थे। उन जैसे महान नेता की आज के युग में कल्पना ही नहीं की जा सकती। इतिहास में उनका नाम सदैव स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा।

पंजाबकेसरी- लाला लाजपतराय

लाला लाजपतराय, स्वतंत्रता संग्राम के अप्रतिम सेनानी और पूरे भारत के गौरव थे, जिन्होंने देश की आन-बान और शान को बनाए रखने के लिए अपना तन-मन-धन सब कुछ अर्पित कर दिया। उनका जन्म 28 जनवरी 1865 को जिला फिरोजपुर के ढूडीके ग्राम में एक सामान्य अध्यापक श्री राधाकृष्ण के यहां हुआ। उनके जन्म के समय देश पर अंग्रेजों का प्रभुत्व था। पराधीनता के कारण भारतीयों की दशा दीन-हीन थी। भारतीय और कुत्तों का प्रवेश निषिद्ध है, इस प्रकार की तख्तियां ब्रिटेन के होटलों पर लगी रहती थी। ऐसी स्थिति में लाला लाजपतराय नींव के ऐसे पत्थर बने, जिस पर स्वाधीनता का महल खड़ा हुआ। आपने अपनी वाणी, भाषा और लेखनी से देश के लाखों-करोड़ों लोगों में देश भक्ति की वह मशाल जलाई, जिसने ब्रिटिश साम्राज्य को हिलाकर रख दिया और आजादी के आंदोलन को नई गति, नई दिशा मिली।

लाला जी बचपन से ही प्रतिभाशाली थे। उन्होंने 17 वर्ष की अवस्था मे ही एक साथ मैट्रिक की दो -दो परीक्षाएं पास कर लीं। पिताजी के पास इतने साधन नहीं थे कि वे बच्चे को पढ़ा सके किंतु आपने मात्र 8 रुपये जैसी मासिक छात्रवृत्ति से लाहौर से वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। आपने हिसार से अपना वकालत का व्यवसाय प्रारंभ किया किंतु शीघ्र ही लाहौर चले गए।

लाला जी वहां आर्य समाज के स्वामी श्रद्धानंद के सम्पर्क में आए और वे उनके सम्पर्क से जन जागरण के केंद्र बन गए। वे आर्य समाज को अपनी माता कहते थे। उन्होंने वहां डॉ.ए.बी. जैसी शिक्षा संस्थानों की आधारशिला रखी और 1902 तक आते-जाते वे शिक्षा-क्षेत्र के एक अग्रणी व्यक्ति बन गए।

देशभक्ति की उत्कृष्ट भावना के कारण आप 1888 में कांग्रेस के इलाहाबाद अधिवेशन में सम्मिलित हुए और आपमें देशभक्ति का वह जज्बा पैदा हुआ, जिससे आप 23 वर्ष की अवस्था में ही कांग्रेस के प्रभावशाली नेता बन गए। परिणामस्वरूप आपको कांग्रेस अधिवेशन का सभापति बनाया गया।

लालाजी कांग्रेस में गरम दल का प्रतिनिधित्व करते थे और लाल-बाल-पाल त्रयी के प्रमुख नेता थे। वे ईट का जवाब पत्थर से देने में विश्वास करते थे। देश के लाखों लोग लाला जी के आह्वान पर आजादी के आंदोलन में कूद पड़े। ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति रोष की भावना उत्पन्न होने लगी। उनके भाषणों से सरकार तिलमिला गई और लालाजी को पकड़कर भारत से निर्वासित कर दिया गया, किंतु विदेश में जाकर भी लाला जी अपनी वाणी और लेखनी से स्वाधीनता की अलख जगाते रहे। उन्होंने अंग्रेजी में अनेक उच्च कोटि की पुस्तकें लिखी।

उन्होंने 1920 में गांधीजी के असहयोग आंदोलन को सफल बनाने में भी पूरा योगदान दिया तथा जेल यात्रा की ।

लालाजी का व्यक्तित्व हिमालय के समान विराट था। वे स्वाधीनता सेनानी होने के साथ-साथ कुशल लेखक, शिक्षक, पत्रकार, समाजसेवी, समाज सुधारक, मानवता प्रेमी सब कुछ थे। उन्होंने सदैव लोकहित को प्रमुखता दी।

पंजाब में सिंह तो अनेक हुए किंतु पंजाब-केसरी या शेर -ए-पंजाब की उपाधि केवल उन्हें ही प्राप्त हुई। वे वास्तव में अपने समय के निर्विवाद नेता थे।

1928 में अंग्रेजी सरकार ने साइमन की अध्यक्षता में एक कमीशन भारत भेजा। लोग चाहते थे कि उसमें भारत का प्रतिनिधित्व हो किंतु अंग्रेज सरकार ने उनके प्रस्ताव को ठुकरा दिया। परिणामस्वरूप उसका भारत में प्रबल विरोध हुआ। 30 अक्टूबर 1928 को जब कमीशन लाहौर पहुंचा तो लालाजी के नेतृत्व में विशाल जुलूस निकालकर उसका विरोध किया। अंग्रेजी प्रशासन ने निहत्थे आंदोलनकारियों पर गोली चला दी तथा लाठियों से बर्बरतापूर्ण प्रहार किये, किंतु लालाजी जरा भी झुके नहीं। परिणामस्वरूप वे घायल हो गए। उनका वृद्ध कमजोर

शरीर इन प्रहारों को नहीं सह सका और 17 नवम्बर 1928 को भारत माता का यह सपूत लाखों भारतवासियों को बिलखता हुआ छोड़कर चला गया। मरते समय लालाजी ने तीव्र शब्दों में घोषणा की कि उनके शरीर पर किया गया एक-एक लाठी का प्रहार अंग्रेजी साम्राज्य के ताबुत में अंतिम कील सिद्ध होगा। उनकी भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई और सम्पूर्ण देश ने अंग्रेजों को बोरिया-बिस्तर बांधकर जाते हुए देखा।

भारत सरकार ने उनकी स्मृति में 28 जनवरी 1965 को डाक टिकट का प्रकाशन कर राष्ट्र की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इतिहास में उनका नाम सदैव स्वर्ण अक्षरों में अंकित रहेगा।

महान गाँधीवादी नेता

जमनालाल बजाज

कहते हैं कि महाराणा प्रताप के समय एक भामाशाह पैदा हुआ था, जिसने मेवाड़ राज्य की रक्षा के लिए अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति उनके चरणों मे रख दी थी किंतु शताब्दियां व्यतीत होने पर भी सेठ जमनालाल बजाज को छोड़कर वैसा भामाशाह शायद अन्य कोई पैदा नहीं हुआ, जिन्होंने अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति तथा परिवार को देश की आजादी के लिए समर्पित कर भामाशाह की उज्ज्वल परम्परा को आगे बढ़ाया हो। देश के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने वाले इस सपूत को जन्म देने का श्रेय अग्रवाल समाज को ही है।

इस नरपुंगव का जन्म 4 नवम्बर 1889 को राजस्थान के कासीकावास (सीकर) कस्बे में एक अग्रवाल परिवार मे हुआ। उन्हें गांधीजी के पांचवे दत्तक पुत्र की भी संज्ञा प्राप्त है।

वे स्वाधीनता आंदोलन के महान सेनानी थे। आजादी के आंदोलन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। उनके राजनीतिक जीवन का प्रारंभ लोकमान्य तिलक से प्रभावित हो 1915 में गांधीजी के संपर्क मे आकर फला-फूला। गांधी जी ने उनके आग्रह को देखते हुए उनके पैतृक गांव सेवाग्राम (वर्धा) को ही अपनी कार्यस्थली बनाया और बजाजजी की मृत्युपर्यन्त वहीं रहे।

नेपोलियन कहा करता था- सेना चलती है पेट के बल पर और सेनापति तभी लड़ सकता है, जब बनिया उसकी तैयारी करे।

इस मध्य आपने अपने दायित्व को बड़ी कुशलता से निभाया तथा आंदोलन को कुशलतापूर्वक चलाने में मदद की।

जब भी गांधी जी को आंदोलन के लिए धन या कार्यकर्ताओं को आवश्यकता पड़ती, वे जमनालाल को कहते और जमनालाल अपने प्रभाव से उन्हें पूरा करते। उन्होंने गांधी जी को जैसे इन चिंताओं से मुक्त कर दिया था।

1920 में आजादी के आंदोलन से जुड़ने के बाद वे अपनी मृत्युपर्यन्त 1942 तक देश के लिए कार्य करते रहे। वे आजीवन कांग्रेस के कोषाध्यक्ष भी रहे और आंदोलन के लिए धन जुटाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

आजादी के आंदोलन में उन्होंने न केवल स्वयं भाग लिया और जेल गए अपितु उनके परिवार कोई ऐसा सदस्य नहीं बचा, जिसने इस आंदोलन में अपनी आहूति न दी हो अथवा कभी न कभी जेल यात्रा न की हो। उनके पुत्र कमलनयन बजाज, पुत्री मदालसा नारायण, दामाद श्री मन्नारायण , पत्नी जानकी देवी सहित समस्त भाई - बांधवों ने अपने-अपने ढ़ंग से इस आंदोलन में भाग लिया और जेल भी गए। श्री कुलकर्णी ने इसलिए जमनालाल बजाज परिवार को देशभक्तों के परिवार की संज्ञा दी है।

उन्होंने राजनीति मे रहते हुए कभी वंश -परम्परा, तुष्टिकरण अथवा जातिवाद को बढ़ावा नहीं दिया। उन्होंने अपने धन का सार्वजनिक कार्यो में प्रयोग कर ट्रस्टीशिप का उत्कृष्ट उदाहरण भी देश के समक्ष प्रस्तुत किया।

11 फरवरी 1942 को इस महान देशभक्त का निधन हो गया। उनके निधन पर गांधी जी ने अपनी संवेदना

प्रकट की तथा इसे अपनी व्यक्तिगत क्षति बताया। भारत सरकार ने भी उनकी स्मृति में 4 नवम्बर 1970 को डाक टिकट जारी किया।

डॉ. राममनोहर लोहिया

भारतीय राजनीति के क्षितिज, विरोधी दल के नेता, उच्च कोटि के राष्ट्रभक्त और अजेय पौरुष के धनी डॉ. राममनोहर लोहिया का जन्म 23 मार्च 1910 को फैजाबाद के अकबरपुर (उ.प्र.) ग्राम के हीरालाल अग्रवाल के एक मारवाड़ी परिवार में हुआ। आप बचपन से ही क्रांतिकारी विचारों के थे, इसलिए शिक्षा प्राप्त करने के लिए आपने इंग्लैंड के स्थान पर जर्मनी को चुना और एक ऐसे देश में शिक्षा प्राप्त करने से इन्कार कर दिया, जिसने देश को गुलाम बना रखा था। 1932 में उन्होंने बर्लिन विश्वविद्यालय से डाक्टरेट प्राप्त की।

1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में जब महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल जैसे सभी प्रमुख नेताओं को बंदी बना लिया गया तो आप एक मात्र ऐसे नेता थे, जिन्होंने भूमिगत रहकर आजादी के आंदोलन का संचालन किया।

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व तथा पश्चात आप दोनों ही स्थितियों में देश के लिए संघर्षरत रहे। आपने आजादी से पूर्व जिस तीव्रता से देश को अंग्रेजी राज्य से मुक्ति प्रदान करने के लिए संघर्ष किया, उसी मुस्तैदी से वे देशवासियों को उनके अधिकार दिलाने के लिए सत्ताधारी दल से संघर्ष करते रहे।

आप विरोधी दल के सबसे बड़े सशक्त नेता थे। उनके जैसे महान विपक्षी नेता आज तक दूसरा और कोई नहीं हुआ। वे 1963 से 1967 तक लोकसभा के सांसद रहे। जब वे संसद में अपनी बात रखते थे तो सम्पूर्ण संसद हाल उनकी वक्तृता से गूंज उठता था। वे हमेशा तर्क सहित अपनी बात बड़ी ही प्रामाणिकता से रखते थे।

गोवा के मुक्ति आंदोलन में भी आपकी सक्रिय भूमिका रही। 1946 में आपने गोआ मुक्ति के लिए पुर्तगाली सरकार के विरुद्ध संघर्ष किया। नेपाल को भी राजशाही से मुक्ति दिलाने में भी उनका पर्याप्त सहयोग रहा।

वे कांग्रेस तथा वंशवादी शासन के प्रबल विरोधी थे। इसके साथ ही भारत में गैर कांग्रेसी शासन के सूत्रधार थे। उन्होंने बार-बार जनता का ध्यान दिलाया कि वे देश में लगातार पांच वर्ष तक कांग्रेसी कुशासन को न सहें तथा रोटी की तरह उसे पलटते रहें। उनकी कथनी-करनी में कोई अन्तर न था। वे जो कहते, वह करते थे।

वे भारत में समाजवादी आंदोलन के जनक भी थे। उन्होंने देश में इसके लिए 1934 मे सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना की तथा कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के पत्र का सम्पादन किया।

आप एक कुशल नेता, महान विचारक, प्रबुद्ध चिंतक और मानवतावादी के साथ अच्छे लेखक भी थे। आपने 100 से अधिक छोटी-बड़ी पुस्तकें लिखी। वे हिन्दी के भी प्रबल पक्षधर थे। उनका मत था कि हिन्दी ही हिन्दुस्तान की विशेष पहचान है। इसलिए उन्होंने डॉ. रघुवीर के साथ मिलकर अंग्रेजी हटाओ, देश बचाओ आंदोलन को भी चलाया।

आपने अपनी विदेश यात्रा में विश्व के महान वैज्ञानिक आईन्स्टीन से भी भेंट की थी।

12 अक्टूबर 1977 को भारत माता के इस महान अग्रसपूत का निधन हो गया। उनकी स्मृति बनाए रखने के लिए विलिंगडन हस्पताल का नाम बदलकर डॉ. राममनोहर लोहिया हस्पताल कर दिया। उनकी स्मृति में सर्वप्रथम 12 अक्टूबर 1977 को तथा दूसरी बार 23 मार्च 1997 को डाक टिकट जारी किए गए। केंद्रीय संसद हाल में उनका तेल चित्र लगाया गया। उत्तर प्रदेश सरकार ने भी उनकी स्मृति में अवध विश्वविद्यालय का नामकरण डॉ. राममनोहर लोहिया विश्वविद्यालय कर दिया। **यद्यपि आज लोहिया नहीं हैं, उन जैसी फिजां भी नहीं है किंतु देश तथा दूसरों के लिए जीने वाले कभी मरते नहीं हैं। लोहिया अमर हैं तथा वे सदा अमर ही रहेंगे।**

राष्ट्ररत्न शिवप्रसाद गुप्त

महान स्वाधीनता सेनानी। सुप्रसिद्ध काशी विद्यापीठ के संस्थापक, भारत माता मंदिर के निर्माता, दैनिक आज पत्र तथा ज्ञानमंडल के संस्थापक, महात्मा गांधी और जवाहरलाल के निकटतम सहयोगी। जयप्रकाशनारायण एवं सैंकड़ों क्रांतिकारियों की मुक्तहस्त से सहायता। महान दानवीर, संयुक्त प्रांत में कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में सर्वप्रथम पूर्ण स्वतंत्रता के लक्ष्य की घोषणा। 28 जून 1988 को 105वीं जयंती पर 60 पैसे का डाक टिकट जारी। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी द्वारा डाक टिकट का विमोचन।

लाला देशबंधु गुप्ता

लाला देशबंधु महान स्वाधीनता सेनानी एवं उच्चकोटि के पत्रकार थे। 1921 से लेकर 1942 तक सात बार जेल यात्रा की। आपकी धर्मपत्नी सोनू ने भी गिरफ्तारी दी। आपका वर्तमान हरियाणा को स्वतंत्र राज्य का दर्जा दिलाने तथा दिल्ली राज्य को स्वायतता दिलाने में भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। आप उच्चकोटि के आर्यसमाजी एवं वैदिक सिद्धान्तों के विद्वान थे। 'तेज' पत्र के आजीवन सम्पादक रहे और इण्डियन न्यूज क्रानिकल का भी सम्पादन किया। पंजाब विधानसभा के विधायक और दिल्ली से सांसद रहे। हिन्दू महासभा के माध्यम से हरिजनोद्धार एवं हिंदूओं के उत्थान के लिए आपने कार्य किया। आपकी महान सेवाओं को देखते हुए भारतीय डाकतार विभाग ने आप पर सितम्बर 2010 में डाक टिकट जारी किया। प्रधानमंत्री मनमोहनसिंह ने टिकट का विमोचन किया।

रामचरण अग्रवाल (1917-1970)

स्वाधीनता सेनानी व दिल्ली के लोकप्रिय नेता। महात्मा गाँधी आदि प्राय: सभी नेताओं के साथ स्वाधीनता संग्राम में संघर्ष। 1939, 1942, 1945 में जेल यात्रा। आसफअली के साथ दिल्ली कूच यात्रा में भाग। दिल्ली के प्रथम उपमहापौर, दिल्ली नगर निगम एवं मेट्रोपोलियन के सदस्य। डाकतार विभाग द्वारा आपकी स्मृति में 2009 में डाक टिकट का प्रकाशन किया गया।

ब्रिजलाल बियाणी

स्वाधीनता आंदोलन के प्रमुख सेनानी, गांधीवादी सिद्धान्तों के प्रबल समर्थक ,विदर्भकेसरी के नाम से ख्यात। माहेश्वरी समाज के अग्रणी नेता। मध्यभारत के वितमंत्री भी रहे। डाक टिकट प्रकाशित।

कृष्णदास जाजू

महान गांधीवादी देशभक्त। गांधीजी के अनुयायी। 1938 में माहेश्वरी समाज की स्थापना। आपकी स्मृति में समाज द्वारा कृष्णदास जाजू स्मारक की स्थापना की।

रामकृष्ण धूत

महान समाजसेवी एवं राष्ट्रभक्त, हैदराबाद निजाम राज्य के विरूद्ध सत्याग्रह। अनेक बार जेल-यात्रा, गांधीवादी सिद्धांतों के परम अनुयायी।

अमर जीवी पोट्टीरोमोल- (पोट्टिरामुल)

आधुनिक आंध्र प्रदेश के निर्माण, जिन्होंने मद्रास से पृथक आंध्रप्रदेश का निर्माण करने के लिए विश्व का सबसे 98 दिन का लम्बा उपवास किया और अन्तत: प्राणों की बलि दे दी। गांधी जी के कट्टर अनुयायी, हरिजनों की समस्या समाधान हेतु अनेक बार लम्बे उपवास। गांधी जी ने उनकी महान क्षमता को देखते हुए कहा था-'यदि पोट्टी रोमोल जैसे कुछ ही समर्पित कार्यकर्ता उन्हें मिल जाये, तो वे भारतवर्ष को एक वर्ष में ही स्वतंत्र करा सकते है। 24 जनवरी 1960 को देहावसान।

स्वतंत्र भारत और अग्रवाल/वैश्य समाज

असंख्य बलिदानों एवं प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप देश 15 अगस्त 1947 को आजाद हो गया। अग्रवाल वैश्य समाज ने विभिन्न ब्रिटिश उपक्रमों को खरीद कर हस्तान्तरण की इस प्रक्रिया को सुगम बनाया ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इस समाज की भारतीय राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका रही। देश में जब लोकतंत्रीय शासन की स्थापना होने पर नये संविधान का निर्माण होने लगा तो इस समाज के प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका, श्रीप्रकाश, डॉ. रघुवीर, पद्मावत सिंघानिया, नेमिशरण जैन, घनश्याम सिंह गुप्त आदि ने संविधान सभा के सदस्य रूप में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसी प्रकार भारत पाक विभाजन से उत्पन्न रक्तिम काण्ड में पाकिस्तान में नियुक्त प्रथम उच्चायुक्त श्री प्रकाश ने हिन्दुओं के जान और माल की रक्षा में विशेष भूमिका निभाई।

यद्यपि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 200 वर्षों की गुलामी से क्षतविक्षत भारत के आर्थिक पुनर्निर्माण का प्रश्न सामने था और अग्रवाल वैश्य समाज ने अपनी सम्पूर्ण शक्ति देश की आर्थिक स्थिति को सुधारने और उद्योग धन्धों की स्थापना में लगा दी। साथ ही राजनीति में बढ़ते भ्रष्टाचार, जातिवाद, वंशवाद, आरक्षण, भाई भतीजावाद, चारित्रिक मूल्यों के पतन आदि के कारण वह राजनीति से निरन्तर दूर होता गया, फिर भी इस देश की संसद, राज्य सभा, विधानसभाओं तथा केन्द्रीय एवं प्रांतीय मंत्रिमण्डल में पहुंच कर इस समाज के लोगों ने देश की राजनीति ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

स्वाधीन भारत की राजनीति में इस समाज ने जो भूमिका निभाई, उसके लिए डा0 धर्मवीर, श्रीमन्नारायण अग्रवाल, श्री श्रीप्रकाश, डा. रघुवीर, देश बंधु गुप्ता, ईश्वरदास जालान, शान्तिभूषण, मोहनलाल सुखाड़िया, चन्द्रभान गुप्ता, सुन्दर सिंह भण्डारी, बनारसीदास गुप्त, रघुकुल तिलक, आचार्य जुगल किशोर, राम प्रकाश गुप्त, सुदर्शन अग्रवाल आदि का नामोल्लेख ही पर्याप्त होगा। वैसे स्वंतत्र भारत की राजनीति का पूरा इतिहास ही ऐसे नामों से भरा पड़ा है। डा0 धर्मवीर जैसा कुशल प्रशासक एवं राज्यपाल आज तक इस भारत में दूसरा कोई न हुआ। वे पचास वर्षों तक विभिन्न राजपदों पर रहे, किन्तु कभी उन पर किसी प्रकार का दाग न लगा।

इसी प्रकार पीयूष गोयल, डा. हर्षवर्द्धन, अरविन्द पानगाढ़िया, विजय गोयल, शान्तिभूषण, सतीशचन्द्र अग्रवाल,कृष्णकुमार गोयल, वेदप्रकाश, गोयल, चमनलाल गुप्त आदि का केन्द्रीय मंत्रिमण्डल के सदस्य रूप में राष्ट्र की प्रगति में विपुल योगदान रहा है।

इसी प्रकार राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय दलों में भी इस समाज की कमोवेश भूमिका रही है। कांग्रेस को इस समाज ने जमनालाल बजाज, लाला लाजपतराय, श्री प्रकाश, राष्ट्ररत्न शिव प्रसाद गुप्त सर सीताराम, जैसे असंख्य दिग्गज नेता प्रदान करने का श्रेय इस समाज को प्राप्त है। डा0 राममनोहर लोहिया भारत में समाजवादी दल के स्तम्भ माने जाते हैं तो सरला माहेश्वरी कम्युनिष्ट पार्टी के प्रमुख नेता रही हैं। अरविन्द केजड़ीवाल आम आदमी पार्टी के संस्थापक हैं। नरेश अग्रवाल की समाजवादी दल में महत्वपूर्ण भूमिका है। सुंदरसिंह भण्डारी, पीताम्बरदास, डा0 रघुवीर, रामदास, प्रमोद महाजन, सुशील कुमार मोदी आदि का भी भाजपा में कम योगदान नहीं रहा है।

भारतीय लोकतंत्र को नई दिशा

इसके अलावा जब जातिवाद, वोट बैंक, तुष्टिकरण, दल-बदल गठबन्धन, सरकारों आदि के कारण जब भारतीय लोकतंत्र की जड़ें डगमगाने लगीं तो इस समाज के अनेक लोगों ने जनलोकपाल एवं भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन का सूत्रपात कर भारत में सत्ता परिवर्तन की लहर उत्पन्न की, जिससे दिल्ली में आम आदमी पार्टी तथा केन्द्र में 30 वर्षो के इतिहास में प्रथम बार बहुमत पर आधारित भाजपा सरकार की स्थापना में मदद मिली। भारत को विश्व के सबसे शक्तिशाली राष्ट्र की पंक्ति में प्रतिष्ठापित करने में इस समाज का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उग्रज पूरे भारत तथा विदेशों में जो (भरत का डंका बज रहा है) इसके मूल में इस समाज के लोगों की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता।

राष्ट्रहित के प्रति समर्पित, व्यापक दृष्टिकोण

यह समाज देश की सुख-समृद्धि और सद्भाव का प्रतीक है। यही देश का एक मात्र ऐसा समाज है, जो अपने लिए कभी सुख-सुविधाओं, विशेष, रियायतों, अधिकारों की मांग नहीं करता अपितु अपने बुद्धि एवं परिश्रम के बल पर राष्ट्र को देता ही देता है। आज जबकि पूरा देश, जाति-धर्म, सम्प्रदाय आदि को लेकर जूझ रहा है, अग्रवाल/वैश्य समाज ही ऐसा समाज है, जो इन सबसे परे रहकर पूरे राष्ट्र के हित की बात करता है। इसका दृष्टिकोण सदैव विशाल और राष्ट्रीय एकता, अखण्डता का पोषक होता है। राजनीति को सदैव सेवा का माध्यम माना । देश पर जब भी किसी प्रकार का संकट आया, इसने खुल कर मदद की और अपने सेवा के हाथ आगे बढ़ाये ।

इस समाज ने जमनालाल बजाज, लाल लाजपतराय, डा0 राममनोहर लोहिया, शिव प्रसाद गुप्त, ब्रिज लाल बियाणी, डा. गोविन्द दास जैसी अनेक राजनीतिक विभूतियां देश को प्रदान की है, जिनका नाम लेने से ही जिह्वा पवित्र होती है। आज के युग में इस प्रकार के आदर्श दुर्लभ हैं।

भारतीय राजनीति में अग्रवाल/वैश्य समाज के कुछ विशिष्ट व्यक्तित्व

भारतीय राजनीति में इस समाज की भूमिका कितनी विशद रही है, इसके परिचय स्वरूप हम आगे के कुछ पृष्ठों में अग्रवाल/वैश्य समाज के राजनीति से सम्बद्ध कतिपय व्यक्तित्वों का संक्षेप में उल्लेख कर रहे हैं। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि भारतीय राजनीतिक का कोई भी क्षेत्र या भूभाग इस समाज के योगदान से अछूता नहीं रहा है और उसने अपने योगदान से राजनीति के प्रत्येक क्षेत्र को गौरवान्वित किया है।

संवैधानिक पद (राष्ट्रपति/उपराष्ट्रपति)

बी.डी. जती

भारत के उपराष्ट्रपति, कर्नाटक के सावलगीग्राम में जन्म/स्वाधीनता आंदोलन में भाग। प्रजापरिषद् के समय जमरवाड़ी रियासत के मुख्यमंत्री। 1949 में बम्बई राज्य विधानसभा के सदस्य तथा संसदीय सचिव ।मैसूर राज्य के वितमंत्री, मुख्यमंत्री, खाद्यमंत्री, पाण्डिचेरी के लेफ्टिनेंट, 1972 में उड़ीसा के राज्यपाल, 1974 में भारत सरकार के उपराष्ट्रपति जैसे पद को सुशोभित। राष्ट्रपति फखरूद्दीन अली अहमद की मृत्यु पर कार्यवाहक राष्ट्रपति भी रहे। 1979 में पदमुक्त।

वसव समिति के सदस्य के रूप में बसवाश्रम व अनेक लोकोपकारी कार्यो का संचालन।

राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री

पद्मभूषण डॉ. धर्मवीर

सर्वाधिक कुशल राज्यपाल एवं प्रशासक

भारत के कुशल ईमानदार प्रशासकों एवं राजनेताओं में डॉ. धर्मवीर का नाम मुख्य है, जो 70 साल तक निरंतर एक के बाद एक उच्च प्रशासनिक एवं राज्यपाल जैसे उच्च पदों पर रहने के बावजूद जिनकी ईमानदारी, कार्यकुशलता पर किसी प्रकार का प्रश्नचिह्न नही लग पाया और जिनका पूरा जीवन इस बात का प्रत्यक्ष उदाहरण है कि व्यक्ति शासन-प्रशासन में उच्च पद पर आसीन होकर भी यदि चाहे तो के नैतिक मूल्यों का पालन करते हुए आगे बढ़ सकता है।

आपका जन्म 20 जनवरी 1906 को राजा ज्वालाप्रसाद के परिवार में हुआ। 1931 मे आई.सी.एस. बने और 1945 तक विभिन्न उच्च पदों पर कार्य किया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 1947 में केन्द्रीय संयुक्त सचिव बने और दिल्ली के मुख्य आयुक्त, मंत्रिमंडलीय सचिव (केबिनेट सचिव) जैसे पदों को संभाला। 1950 -51 में भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के निजी सचिव का पद संभाला और लदंन स्थित ब्रिटिश उच्चायुक्त में वाणिज्यिक सलाहकार रहे।

आपकी महान प्रतिभा को देखते हुए आपको 1954 में चेकोस्लाविया के राजदूत पद पर नियुक्त किया गया।

उसके बाद 1963-64 में दिल्ली का मुख्य आयुक्त बनाया गया, जहां आपने बड़ी ही कुशलता का परिचय दिया।

प्रशासन के इन उच्च पदों पर रहने के बाद आपने 1966-67 में पंजाब हरियाणा, 1967से 1969 तक पश्चिमी बंगाल, 1969 से 1972 तक कर्नाटक के राज्यपाल पदों को संभाला और भारत के श्रेष्ठतम राज्यपाल के रूप में अपनी छवि अंकित की।

1973-1976 तक आप भारत स्काउट्स एंड गाइड के अध्यक्ष रहे। इसके बाद आपको भारतीय पुलिस आयोग के अध्यक्ष जैसा महत्वपूर्ण पद सौंपा गया, जिस पर आप 1983 तक रहे और पुलिस सेवा में सुधार हेतु अनेक महत्वपूर्ण सुझाव दिये।

भारत के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. जहाँगीर होमी भाभा के निधन के बाद आपने कुछ समय भारतीय परमाणु ऊर्जा आयोग के अध्यक्ष पद को भी संभाला।

इस प्रकार राष्ट्र के महत्वपूर्ण प्रशासनिक एवं उच्च राजनीतिक पदों पर लगातार 70 वर्षो तक सेवाएं प्रदान करने के बाद आपका 16 सितम्बर 2000 को निधन हो गया।

1999 में राष्ट्र के प्रति आपकी महान सेवाओं को देखते हुए आपको पद्मभूषण से सम्मानित किया गया।

गाँधीवादी नेता एवं राज्यपाल

रघुकुल तिलक

महान गाँधीवादी नेता, कुशल शिक्षाविद् एवं स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी। स्वतंत्रता संग्राम में भाग तथा 1932-33 एवं 1942 में जेल यात्रा। 1939 से 1946 तक उत्तरप्रदेश विधान सभा के सदस्य तथा संसदीय सचिव के रूप में कार्य। 1958 से 1960 तक राजस्थान लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष रहे।

राष्ट्र के प्रति आपकी सेवाओं को देखते हुए आपको 12 मई 1977 को राजस्थान के राज्यपाल का पदभार सौंपा गया, जिस पर आप 8 अगस्त 1981 तक रहे। आपने इस पद पर रहते हुए उच्चकोटि की चारित्रिक निष्ठा, कर्तव्य के प्रति दायित्व एवं ईमानदारी का परिचय दिया।

नवंरगलाल टिबड़ेवाल

राजस्थान के उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश तथा 1998 में राज्य के कार्यवाहक राज्यपाल पद का भी कुशलतापूर्वक निर्वहन। 1978 से 1986 तक स्टेटबार कौंसिल के सदस्य एवं अध्यक्ष। सामान्य अग्रवाल परिवार में जन्म लेकर राजस्थान उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश तथा राज्यपाल जैसे उच्च पद पर पंहुचने वाले अनुकरणीय व्यक्तित्व। अग्रोहा विकास ट्रस्ट राजस्थान के पूर्व अध्यक्ष।

चार प्रांतों के राज्यपाल

पद्मविभूषण श्री श्रीप्रकाश

स्वंतत्रता प्राप्ति के समय उत्तरप्रदेश के स्वाधीनता आंदोलन में जिन दो परिवारों का विशेष योगदान रहा, उनमें इलाहाबाद के नेहरू परिवार के साथ काशी के डॉ. भगवानदास परिवार का नाम विशेष रूप से आता है। श्रीप्रकाश इन्ही डॉ. भगवानदास के गणमान्य पुत्र थे।

आप भारत की उन महान विभूतियों में थे, जिनका आजादी के आंदोलन तथा आजादी के पश्चात् राष्ट्र निर्माण दोनों में विशेष योगदान रहा।

आप युवावस्था में ही आजादी के आंदोलन में सम्मिलित हो गए तथा अनेक बार जेल यात्रा की। आप कांग्रेस के भी खास कार्यकर्ता थे। यही कारण कि 1934 के केन्द्रीय विधानसभा चुनावों में पिता-पुत्र डॉ. भगवानदास एवं श्रीप्रकाश दोनों की जोड़ी एक साथ चुनी गई। बाद में आप 1946 में केन्द्रीय विधानपरिषद् (संविधान निर्मात्री सभा) के सदस्य भी चुने गये। 1952 में आम चुनाव होने पर वे सांसद के लिए चुने गये।

आप जवाहरलाल नेहरू के अत्यंत विश्वसनीय सहयोगियों एवं अतंरग मित्रों में से थे। इसलिये स्वाधीनता प्राप्ति के बाद आपको अनेक उच्चपदों का दायित्व सौंपा गया।

आजादी की प्राप्ति के बाद आप पाकिस्तान में भारत के प्रथम उच्चायुक्त नियुक्त किये गये और विभाजन जनित समस्याओं के समाधान तथा लाखों दंगापीड़ित लोगों की जान और माल की रक्षा के लिए उल्लेखनीय कार्य किया तथा अपने प्राणों की बाजी लगा कर भी दंगा पीड़ित क्षेत्रों में गए।

इसके बाद आप 1949-50 में असम, 1952-56 तक मद्रास एवं 1956 में मुंबई और महाराष्ट्र के राज्यपाल नियुक्त किए गए। आपने इन पदों पर रहते हुए असीम कार्यकुशलता का परिचय दिया।

आप संभवत: चार-चार राज्यपाल पदों को सुशोभित करने वाले प्रथम व्यक्तित्व थे। इसके अलावा आपने केन्द्रीय वाणिज्य मंत्री तथा अन्य अनेक उच्च पदों को भी सुशोभित किया एवं कांग्रेस के महासचिव भी रहे।

आपने विभिन्न पदों पर रहते हुए लगभग 60 वर्ष तक राष्ट्र की अमूल्य सेवाएं की।

भारत सरकार ने राष्ट्र के प्रति आपकी अनुपम सेवाओं को देखते हुए आपको 1957 में पद्मविभूषण से अलंकृत किया तथा 1991 में दो रूपये की डाक टिकट जारी की। आप वास्तव में अग्रवाल समाज के ही नहीं, पूरे राष्ट्र के गौरव थे।

गुजरात के महामहिम राज्यपाल

श्रीमन्नारायण अग्रवाल

भारत के महान गाँधीवादी नेता तथा उनके सिद्धान्तों के भाष्यकार। स्वतंत्रता आंदोलन में भाग तथा महात्मा गाँधी, बिनोबा भावे, जमनालाल बजाज तथा जवाहरलाल नेहरू जैसे नेताओं के साथ कार्य।

1948 में योजना आयोग तथा 1950 में संसद के सदस्य। योजनाओं को ग्रामोन्मुख बनाने में विशेष योगदान। गाँधीजी की शिक्षा नीति के प्रबल समर्थक।

1964 में नेपाल के राजदूत बने और 1967 से 1975 तक गुजरात के राज्यपाल रहे। इन पदों पर रहते हुए आपने अपने कार्य कौशल एवं व्यवहार द्वारा पदों की गरिमा बढ़ाई, जिससे गुजरात के लोग आज भी उनके कार्यकाल को गौरव से याद करते हैं।

उत्तरांचल तथा सिक्किम के राज्यपाल

सुदर्शन अग्रवाल

सार्वजनिक जीवन में 40 से अधिक वर्षों तक उच्च पदों पर रह कर सेवा का आदर्श प्रस्तुत करने वाले विशिष्ट व्यक्तित्व।

1956 में पंजाब व दिल्ली की न्यायिक सेवा से जुड़े। 1971 से 1981 तक राज्यसभा के महासचिव (सैक्रेट्री

जनरल) जैसे उच्च पद पर कार्य। 1986 में भारत सरकार के केबिनेट सचिव। 1972 में राष्ट्रपति चुनाव के प्रभारी।

तदन्तर सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के सदस्य के रूप में उल्लेखनीय भूमिका।

जनवरी 2003 में उत्तराखंड के राज्यपाल बने और उसके बाद 25 अक्टूबर 2007 से जुलाई 2008 तक सिक्किम के राज्यपाल पद को सुशोभित किया।

रोटरी फाउण्डेशन ऑफ इण्डियां के चेयरमेन तथा उत्तराखंड में रोटेरी ब्लड बैंक की स्थापना में योगदान। उत्तराखण्ड के मेधावी छात्रों के प्रोत्साहन हेतु राज्य में हिमज्योति फाउण्डेशन की स्थापना।

2004 में अग्रोहा विकास ट्रस्ट के महाराजा अग्रसेन राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित।

सुंदर सिंह भण्डारी

भारतीय जनसंघ के संस्थापक नेता, उपाध्यक्ष, बिहार एवं गुजरात के राज्यपाल, राज्यसभा के सांसद भी रहे।

गोपालकृष्ण गांधी

पश्चिमी बंगाल के पूर्व राजपाल, महात्मागांधी के पौत्र, 2004 से 2009 तक भारतीय प्रशासनिक सेवा के सदस्य एवं कूटनीतिज्ञ। दक्षिणी अफ्रिका तथा श्रीलंका में उच्चायुक्त।

वीरेन शाह

राज्यपाल पश्चिमी बंगाल, लोकसभा एवं राज्यसभा के सांसद।

पी.वैंकट सुवैया

कर्नाटक एवं बिहार के राज्यपाल। कर्नाटक में गृहराज्यमंत्री भी रहे।

मोहनलाल सुखाड़िया

आधुनिक राजस्थान के निर्माता, 16 से अधिक वर्षों तक राजस्थान के मुख्यमंत्री तथा बाद में कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडू के राज्यपाल। राजस्थान (भारत) के सर्वाधिक सफल मुख्यमंत्रियों में गणना। 1948 से 1952 में राजस्थान के मंत्री तथा 1954 से 1971 तक मुख्यमंत्री। 1980 में लोकसभा के सांसद।

स्वाधीनता आंदोलन में भी सक्रिय रहे और भारत छोड़ो आंदोलन में 18 माह की सजा।

भारत सरकार द्वारा डाक टिकट जारी।

चंद्रभानु गुप्ता

भारतीय राजनीति के लौह पुरुष, अनेक वर्षों तक उत्तरप्रदेश के मंत्री तथा तीन बार मुख्यमंत्री पद को सुशोभित।

कोठारी षड्यंत्र काण्ड मे अनेक क्रांतिकारियों की प्राणरक्षा। उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष भी रहे।

तख्तमल जैन

मध्यभारत के मुख्यमंत्री एवं लोकप्रिय नेता।

के. गुटर रोसैया

आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे। तेलगू कोमटी वैश्य।

बुकनकेरी गप्पा पुटाथेमना गागिय

कर्नाटक के मुख्यमंत्री पद को सुशोभित।

मेहरचंद महाजन

जम्मू कश्मीर के भारत विलय में महत्वपूर्ण भूमिका तथा जम्मू कश्मीर के प्रथम मुख्यमंत्री, भारत के सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश पद को सुशोभित।

सुंदरलाल पटवा

1990 से 1997 तक मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री। भारतीय जनतापार्टी के मुख्य नेता, दो बार मुख्यमंत्री, सांसद, सचेतक एवं केंन्द्रियमंत्री रहे। पद्मविभूषण से सम्मानित।

शिवचरण माथुर

राजस्थान के दो बार मुख्यमंत्री रहे। 1981 से 1985 तथा 1988 से 1989 तक। कांग्रेस के मुख्य नेता। माथुर वैश्य।

बलवंतराय मेहता

गुजरात के दूसरे मुख्यमंत्री, स्वतंत्र सेनानी, लोकतांत्रिक, विकेन्द्रीकरण एवं पंचायतीराज के मुख्यनेता व वास्तुकार। सांसद लोक सभा।

वीरेन्द्रकुमार सकलेचा

मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश, 1978 से 1980। भाजपा के मुख्य नेता।

हीरालाल देवपुरा

मुख्यमंत्री राजस्थान, विभिन्न पदों को सुशोभित। राजस्थान विधान सभा के अध्यक्ष तथा कांग्रेस के महामंत्री भी रहे।

भारत छोड़ो आंदोलन में जेलयात्रा।

गोपीकृष्ण विजयवर्गीय

मध्यभारत के मुख्यमंत्री। सफल प्रशासक तथा स्वतंत्रता सेनानी। अनेक बार जेलयात्रा, तत्कालीन मध्यभारत कांग्रेस के अध्यक्ष। मध्यभारत देशी लोक राज्य परिषद् की स्थापना तथा अध्यक्ष। मध्यभारत के उद्योगमंत्री तथा राज्यसभा के सदस्य भी रहे। विभिन्न देशों की यात्रा।

16 मार्च 1984 को निधन।

सुरेश मेहता

मुख्यमंत्री गुजरात। भारतीय जनता पार्टी के मुख्य नेता।

अग्रगौरव - हरियाणा के मुख्यमंत्री

बनारसीदास गुप्त

अग्रवाल समाज के राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त लोकप्रिय नेता एवं हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री।

भिवानी के एक सामान्य अग्रवाल परिवार में जन्म। 1938 में जवाहरलाल नेहरू के ओजस्वी भाषण को सुनकर आजादी के आंदोलन में भाग। 1941 में जींद रियासत को निरंकुशता के विरोध में आंदोलन तथा जेल यात्रा। जींद राज्य में प्रजामण्डल की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान। 1947 के भारत छोड़ो आंदोलन में 16 माह की जेल तथा हाथ-पैरों में हथकड़ियां।

1946 में जींद विधानसभा के सदस्य तथा जींद रियासत को पंजाब में सम्मिलित कराने में महत्वपूर्ण भूमिका।

स्वदेशी, हिन्दी तथा मद्यनिषेध जैसी रचनात्मक प्रवृतियों के लिए आजीवन कार्य। हरियाणा प्रदेश हिन्दी सम्मेलन के अध्यक्ष।

हरियाणा बनने के बाद हरियाणा विधानसभा के सदस्य, 1972 में विधानसभा अध्यक्ष तथा विद्युत, सिंचाई, कृषि, सहकारिता, वित्तमंत्री, उपमुख्यमंत्री जैसे राज्य के कई महत्वपूर्ण पदों पर कार्य। हरियाणा के विकास में विशेष योगदान।

हरियाणा के दो बार मुख्यमंत्री रहने का गौरव प्राप्त, प्रथम बार दिसम्बर 1975 से 30 अप्रेल 1977 तक मुख्यमंत्री रहे और बाद में 1990 में पुनः मुख्यमंत्री पद का दायित्व सभांला तथा ईमानदार, कुशल मुख्यमंत्री के रूप में छवि अंकित की। 1996 में राज्यसभा के सदस्य और छः वर्षो तक सांसद के रूप में भूमिका।

अग्रवाल समाज के ख्याति प्राप्त नेता तथा अग्रोहा के विकास तथा निर्माण में विशेष भूमिका। अग्रोहा में महाराजा अग्रसेन मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान। 29 अगस्त 2007 को निधन।

आपकी स्मृति में आपके पुत्र अजय गुप्ता द्वारा बनारसीदास गुप्त फाउण्डेशन की स्थापना तथा अनेकानेक लोकोपकारी गतिविधियों का संचालन।

उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री

बाबू बनारसीदास (बुलन्दशहर)

कुशल राजनीतिज्ञ एवं उत्तरप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री। 1930 से ही स्वंतत्रता संग्राम में भाग तथा अनेक बार जेल यात्रा। आप उत्तरप्रदेश के उन दबंग नेताओं में थे, जिन्होंने ब्रिटिश शासन को खुली चुनौती दी थी तथा 1939 में जब गवर्नर मल्कमहती बुलन्दशहर आए थे, तो आपने उनके विरोध में प्रदर्शन किया तथा उनकी गाड़ी के आगे बैठ गए थे और क्रांतिकारियों के साथ खुल कर आंदोलन में भाग लिया। आपने डीडवाना में गुप्त रूप से बम बनाने का प्रशिक्षण भी प्राप्त किया था। बाद में गाँधी जी के प्रभाव से अहिंसक आंदोलन में सम्मिलित हो गए। 1942 में आपको पेड़ से बांध कर बेतों से पिटा गया, तथा अमानवीय यातनाएं दी गई किंतु आप झुके नहीं। आपने ब्रिटिश

सरकार का विरोध सहते हुए भी अपने मकान में अनेक कांग्रेसी नेताओं को प्रश्रय दिया।

1946 में आप उत्तप्रदेश विधान सभा के सदस्य चुने गये। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 1962 में उत्तरप्रदेश विधानसभा के सदस्य बने तथा गोविंदवल्लभ पंत ने आपकी विशिष्ट योग्यता को देखते हुए आपको संसदीय सचिव पद पर नियुक्त किया। 1967 तक उत्तरप्रदेश में मंत्री रहे। 1972 में राज्यसभा के लिए निर्वाचित तथा कार्यवाहक उपसभापति के रूप में कार्य। आपातकाल में पुनः जेलयात्रा।

1977 में उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री बने और 17 फरवरी 1980 तक इस पद को सुशोभित किया। इस पद पर रहते हुए आपने अत्यंत कुशलता का परिचय दिया तथा आर्थिक आधार पर आरक्षण का प्रावधान तैयार किया। 1983 में लोकसभा सासंद चुने गये। 3 अगस्त 1983 को आपका निधन हो गया। भारत सरकार ने आपकी स्मृति में डाक टिकट का भी प्रकाशन किया।

आपके पुत्र अखिलेशदास एवं हरेन्द्र अग्रवाल भी सांसद और उत्तरप्रदेश की राजनीति में उनकी विशेष भूमिका ।

मुख्यमंत्री उत्तरप्रदेश तथा मध्यप्रदेश के राज्यपाल

रामप्रकाश गुप्ता

आपका जन्म 26 अक्टूबर 1923 को झाँसी में हुआ। आप भारतीय जनतापार्टी के प्रमुख नेताओं में थे। चरणसिंह के नेतृत्व में जब उत्तरप्रदेश में प्रथम गैरकांग्रेसी मंत्रिमण्डल बना तो आप उसमें उपमुख्यमंत्री नियुक्त किए गए। इसके बाद आप उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री पद को सुशोभित किया।

आप कुछ समय तक मध्यप्रदेश के राज्यपाल भी रहे। मई 2004 को आपका निधन हो गया।

वृषभानु

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद पेप्सू राज्य के प्रथम मुख्यमंत्री, प्रखर स्वतंत्रता सेनानी, प्रजामंडल आंदोलन में सक्रिय भूमिका तथा अनेक बार जेल यात्रा।

प्रभुलाल पटवारी

आप मोरारजी के समय तमिलनाडू के राज्यपाल रहे। आप बड़े ही ईमानदार और कुशल प्रशासक थे।

रामकिशन

आप पंजाब के मुख्यमंत्री रहे।

दिल्ली के मुख्यमंत्री तथा आम आदमी पार्टी के संस्थापक

अरविंद केजरीवाल

दिल्ली राज्य के दो बार मुख्यमंत्री। आम आदमी पार्टी के संस्थापक। 2006 में एशिया के प्रतिष्ठित मेग्सेसे पुरस्कार से सम्मानित। भारतीय सिविल सेवा उत्तीर्ण।

समाज सेवी अन्ना हजारे के साथ जनलोकपाल एवं भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन का नेतृत्व तथा रामलीला मैदान में अभूतपूर्व प्रदर्शन। 2012 में आम पार्टी की स्थापना तथा 2013 में दिल्ली के विधानसभा चुनावों में वर्षों से चली आने वाली कांग्रेस पार्टी को हटाकर तथा 2015 के चुनावों में 70 में से 67 सीटें एवं 95.7 प्रतिशत बहुमत प्राप्त

कर नया प्रतिमान स्थापित किया। देश में एक नये राजनैतिक परिवर्तन की शुरूआत। 48 वर्षों से संसद में लंम्बित जनलोकपाल बिल पास कराने में सफलता।

शासन में रहते हुए विविध संघर्षों के बीच दिल्ली में शिक्षा, स्वास्थ्य आदि मूलभूत समस्याओं के समाधान के लिए प्रयास।

विजय रूपाणी

गुजरात के मुख्यमंत्री, भारतीय जनता पार्टी के नेता, अगस्त 2016 में मुख्यमंत्री पद की शपथ।

रघुवरदास

झारखण्ड के मुख्यमंत्री तथा भाजपा के नेता। मंत्री भी रहे। जनता पार्टी के सदस्य भी रहे। 1995 से लगातार पांच बार विधायक निर्वाचित तथा 2014 में मुख्यमंत्री पद की शपथ ।

सुशीलकुमार मोदी

बिहार के मुख्य भाजपा नेता, 2005 से 2013 तक तथा वर्तमान में उपमुख्यमंत्री एवं वित्तमंत्री, विधायक, सांसद तथा भाजपा के महासचिव के रूप में कार्य।

श्रीमती सुमित्रा महाजन

अध्यक्ष, लोकसभा, सांसद, जुलाई 2002 से मई 2003 तक केन्द्रीय सूचना एवं संचार मंत्री। लोकसभा अध्यक्ष पद पर आसीन होने वाली दूसरी महिला।

भारतीय संविधानसभा के सदस्य

प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका

सुविख्यात- सॉलीसीटर एवं विधिवेता, कुशल सांसद, भारतीय संविधान निर्मात्री सभा के सदस्य, बंगाल विधानसभा में तीन बार तथा 1952 से लेकर 1972 तक लोकसभा एवं राज्य सभा के लगातार सांसद रहे। स्वाधीनता आंदोलन से लेकर गांधी,नेहरू, लालबहादुर शास्त्री, श्रीमती इंदिरा गांधी, मोरारजी देसाई, राजीव गांधी तक के शासन के प्रत्यक्ष दृष्टा तथा साक्षी। कोलकाता के जनजीवन के आठ दशकों तक प्रभावित करने वाले मुख्य व्यक्तित्व। 102 वर्ष की आयु में निधन ।

नेमिशरण जैन- संविधान सभा के सदस्य, स्वतंत्रता सेनानी, 1913,1930,1942 में जेलयात्रा, उत्तरप्रदेश विधान परिषद् के सदस्य एवं सांसद लोकसभा।

डा0 रघुवीर- उच्चकोटि के विद्वान, भाषाविद् एवं कोषकार। भारतीय जनसंघ के पूर्व अध्यक्ष। भारतीय संविधान सभा के सदस्य। 1952 एवं 1956 में राज्य सभा के सांसद। हिन्दी के प्रबल पक्षधर ।

श्री प्रकाश -केन्द्रीय विधानसभा के सदस्य। केन्द्रीय मंत्रिमण्डल में वाणिज्यमंत्री, असम, महाराष्ट्र आदि के राज्यपाल तथा पाकिस्तान में भारत के प्रथम उच्चायुक्त रहे ।

पद्मावत सिंघानिया- भारतीय औद्योगिक जगत के स्तंभ।भारत के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका। संविधान सभा के सदस्य।भारत सरकार द्वारा डाक टिकट जारी।

सेठ दामोदर स्वरूप-संविधान सभा के सदस्य

डा0 रामचन्द्र गुप्ता- संविधान सभा के सदस्य

घनश्याम सिंह गुप्त -सदस्य संविधान सभा

केन्द्रीय मंत्रिमण्डल में मंत्री एवं सदस्य (वर्तमान तथा पूर्व)

डा. हर्षवर्द्धन :- केन्द्र में विज्ञान, तकनीक तथा भूविज्ञान मंत्री, पूर्व में स्वास्थ्य मंत्री एवं परिवार कल्याण मंत्री, अध्यक्ष, भाजपा, दिल्ली।

विजय गोयल :- संसदीय कार्य मंत्री, राज्यसभा सांसद, अध्यक्ष दिल्ली भाजपा, पूर्व केन्द्रीय युवा एवं खेल व श्रम एवं संसदीय मंत्री रहे।

कृष्ण कुमार गोयल-सुप्रसिद्ध सांसद, विधायक एवं केन्द्रीय मंत्रिमण्डल के सदस्य। 1962-67 तथा 1990 में राजस्थान विधानसभा के सदस्य तथा उद्योग एवं राजकीय उपक्रम मंत्री बाद में कोटा क्षेत्र से लोकसभा के सांसद तथा 1977 से 1979 तक मोरारजी देसाई केन्द्रीय मंत्रिमण्डल में केन्द्रीय वाणिज्य, सहकारिता, नागरिक, आपूर्ति आदि विभागों के राज्यमंत्री। भारतीय जनता पार्टी के प्रमुख नेता तथा आपातकाल में 18 माह की जेलयात्राह्न।

सोमनाथ - दिल्ली के लोकप्रिय नेताओं में एक।अनेक वर्षों तक केन्द्रीय मंत्रिमण्डल के सदस्य रहे।

पीयूष गोयल - केन्द्रीय रेल एंव कोयला मंत्री, कोषाध्यक्ष भाजपा, सांसद राज्यसभा। भाजपा के मंत्रिमण्डल के सबसे प्रभावी मंत्रियों में एक । विद्युत क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान। कोषाध्यक्ष भाजपा। पर्वू विद्यूत एवं ऊर्जा मंत्री। भारत में बुलेट ट्रेन के सभारंभ के श्रीगणेश का श्रेय।

सतीश चन्द्र अग्रवाल-भाजपा के लोकप्रिय नेता। पूर्व विधायक, सांसद, एवं केन्द्रीय मंत्रिमण्डल के सदस्य। 1957 से 1972 तक राजस्थान विधानसभा के लगातार सदस्य। 1968 में राजस्थान प्रदेश जनसंघ के अध्यक्ष। अनेक बार जेल यात्रा। 1977 में जनता शासन में केन्द्रीय मंत्रिमण्डल में वित्त राज्य मंत्री। सुप्रसिद्ध अर्थवेता एवं आर्थिक मामलों के सलाहकार, शिशु कल्याण परिषद के अध्यक्ष।

कमल मुरारका - सुप्रसिद्ध राज्य सभा सदस्य, केन्द्र में चन्द्रशेखर, मंत्रिमण्डल में राज्यमंत्री के पद को सुशोभित।

शान्तिभूषण-पूर्व केन्द्रीय विधि एवं न्याय मंत्री। 1977 में लोक सभा सांसद तथा मंत्री, उत्तरप्रदेश के एडवोकेट जनरल। सुप्रीमकोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता, जनलोकपाल आंदोलन के सूत्रधार।

सन्तोष बागड़ोदिया- पूर्व सांसद एवं केन्द्रीय कोयला मंत्री, उद्योगपति ।

वेदप्रकाश गोयल - पूर्व केन्द्रीय जहाजरानी मंत्री, मुंबई के सुप्रसिद्ध भाजपा नेता।

पवन बंसल - केन्द्रशासित प्रदेश चंडीगढ़ से लगातार चार बार सांसद तथा राज्यसभा के पूर्व सदस्य । केन्द्रीय मंत्रिमण्डल में वित्त राज्य मंत्री, संसदीय कार्य एवं जल संसाधन मंत्री तथा रेल मंत्री जैसे महत्वपूर्ण पदों पर कार्य। पंजाब प्रदेश युवा कांग्रेस तथा अखिल भारतीय कांग्रेस कार्यकारिणी के सदस्य तथा अधिकारी।

प्रेमचन्द गुप्ता-कम्पनी राज्य मंत्री, भारत सरकार।

मुरली देवड़ा- सुप्रसिद्ध उद्योगपति, सांसद एवं केन्द्र में 2004 से 2008 तक पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री। राज्य सभा के सांसद तथा दशकों तक मुंबई कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष एवं कांग्रेस को मजबूत करने में योगदान।

डा0 अखिलेशदास-उत्तरप्रदेश के सांसद तथा मुख्यमंत्री बनारसीदास के सुपुत्र। केन्द्र सरकार में इस्पात राज्य मंत्री । बसपा के पूर्व महामंत्री।

मिलिन्द देवड़ा-सुप्रसिद्ध सांसद एवं केन्द्रीय पेट्रोलियम मंत्री मुरली देवड़ा के सुपुत्र। सबसे युवा सांसद, 27 वर्ष की अवस्था में दक्षिणी मुंबई से सांसद। केन्द्र में मंत्री। समाज सेवा, राजकीय विद्यालयों में आर्थिक दृष्टि

से कमजोर बच्चों के लिए निःशुल्क कम्प्यूटर शिक्षा में रूचि ।

चमनलाल गुप्ता- केन्द्रीय मंत्रिमण्डल में 2002-2004 तक रक्षा राज्य मंत्री। खाद्य प्रसंस्करण, नागरिक उद्योग मंत्री पद को भी सुशोभित। भाजपा के मुख्य नेता ।

प्रकाशचंद सेठी - मध्यप्रदेश के प्रमुख कांग्रेसी नेता, मुख्यमंत्री एवं केन्द्रीय सरकार के पेट्रोलियम, रसायन, खनिज, इस्पात, धातु गृह, रक्षा, विदेश आदि अनेक मंत्रालय के मंत्री।

अजीत कुमार जैन- पूर्व खाद्यमंत्री, भारत सरकार।

मोहन धारिया- पूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं सांसद

सीताराम केसरी- पूर्व समाज कल्याण मंत्री, भारत सरकार, कांग्रेस के प्रमुख नेता एवं केन्द्रीय सरकार के विविध पदों पर कार्य।

प्रकाश जायसवाल- पूर्व केन्द्रीय कोयला मंत्री भारत सरकार।

प्रमोद महाजन- सांसद, केन्द्रीय मंत्री एवं लोकप्रिय सांसद।

विक्रम महाजन- केन्द्रीय नेता।

सांसद (पूर्व-वर्तमान)

जयप्रकाश अग्रवाल- सांसद लोकसभा एवं राज्य सभा, दिल्ली नगर निगम के प्रमुख नेता संसद की अनेक समितियों के सदस्य एवं दिल्ली प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष ।

रामदास अग्रवाल - भाजपा के पूर्व प्रमुख नेता तथा कोषाध्यक्ष तथा राजस्थान भाजपा के अध्यक्ष, सांसद राज्यसभा, अध्यक्ष, अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन जैसे अनेक।

रामेश्वर टांटिया - सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी, 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भाग, लोकनायक जयप्रकाशनारायण के सहयोगी। 1957 से 1962 तक लोकसभा के सांसद। उत्कृष्ट समाजसेवी, मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी के अध्यक्ष। अनेक धार्मिक एवं शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना।

रामकुमार भुवालका - सांसद राज्यसभा, स्वाधीनता सेनानी। पांच बार जेल यात्रा, पश्चिमी बंगाल विधान परिषद् के सदस्य।

सीताराम जयपुरिया - सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं राज्य सभा के सांसद। अनेक औद्योगिक संगठनों के अध्यक्ष तथा श्रेष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता।

राधेश्याम आर. मुरारका- सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं 1952,1957 तथा1962 में झुंझुनू क्षेत्र से लोकसभा में प्रतिनिधित्व। अनेक संसदीय तथा संविधान संशोधन समितियों के सदस्य तथा अध्यक्ष। 1978 से 1984 तक राजस्थान से जनता पार्टी के प्रत्याशी रूप से राज्य सभा के सदस्य। वित्त, वाणिज्य, उद्योग एवं बैंकिग में विशेष दक्षता।

पीताम्बरदास- जनसंघ के अध्यक्ष, स्वाधीनता सेनानी, 1958 से 1968 तक उ.प्र. विधान परिषद् तथा 1968 से 1974 तक राज्यसभा के सदस्य ।

प्रो0 कृष्णचन्द्र- स्वाधीनता सेनानी, सत्याग्रह आंदोलन में भाग। वृंदावन नगरपालिका के अध्यक्ष, उ.प्र से कांग्रेस विधायक एवं सांसद।

मुरली मनोहर अग्रवाल - राज्यसभा सांसद। सुप्रसिद्ध उद्योगपति, शिक्षा एवं अर्थशास्त्री ।

मोतीलाल अग्रवाल - जालौर (राज0) से लोकसभा सांसद।

श्री मन्नारायण अग्रवाल - वर्धा (महाराष्ट्र) से प्रथम सांसद ।

सुदर्शन अग्रवाल- राज्य सभा सांसद।

विष्णु मोदी- अजमेर (राज.) से लोक सभा सांसद।

संतोष भरतिया - फर्रूखाबाद से निर्वाचित लोकसभा सांसद।

धर्मपालसिंह गुप्ता- राजनाद गांव से लोक सभा सांसद।

संतराम सिंघल - पटियाला(पंजाब) से लोकसभा के सांसद।

सुभाष चंद्रा- सांसद, राज्यसभा, जी टीवी.

प्रदीप कुमार जैन- सांसद लोकसभा।

महेश पोद्दार- सांसद, राज्य सभा।

ओम प्रकाश जिंदल- कुरूक्षेत्र से लोकसभा सांसद, विधायक एवं मंत्री, हरियाणा।

सेठ गोविन्ददास- भारतीय संसद में सर्वाधिक काल तक अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाले लोकप्रिय नेता। हिन्दी प्रेमी।

वीरेन्द्र अग्रवाल- छपरा (बिहार) से लोकसभा सांसद।

सत्यपाल जैन- चंडीगढ़ से लोकसभा का प्रतिनिधित्व।

नवीन जिंदल- कुरूक्षेत्र से लोकसभा में प्रतिनिधित्व।

प्रवीण एरण - बरेली क्षेत्र से लोकसभा में प्रतिनिधित्व।

विजयइन्द्र सिंघल- संगरूर (पंजाब) से लोकसभा सांसद।

विष्णुहरि डालमिया - सांसद, राज्यसभा, विश्वहिन्दू परिषद के सुप्रसिद्ध नेता।

प्रेममनोहर- सुप्रसिद्ध जननेता एवं उद्योगपति, 1968 से 1972 तथा 1977 से 1980 तक राज्य सभा में सांसद, जनसंघ के कोषाध्यक्ष भी रहे।

राजेन्द्रप्रसाद मोदी - सुप्रसिद्ध उद्योगपति, सांसद राज्यसभा।

भीखूराम जैन - सुप्रसिद्ध सांसद, महानगर परिषद् के लोकप्रिय नेता।

सतीशचन्द्र बरेली- स्वाधीनता सेनानी, जेलयात्रा,भारत छोड़ो आंदोलन में भाग, 1952 में लोकसभा सांसद।

नारायणप्रसाद गुप्त- मध्यप्रदेश भाजपा के अध्यक्ष, सांसद राज्यसभा।

रामचरण अग्रवाल- स्वाधीनता सेनानी, सांसद।

सुरेन्द्रप्रकाश गोयल- 2004 में गाजियाबाद क्षेत्र से लोकसभा सांसद।

रघुनाथप्रसाद खेतान - पश्चिमी बंगाल से लोकसभा एवं राज्यसभा का प्रतिनिधित्व। कांग्रेस संसदीय बोर्ड के कोषाध्यक्ष।

रामनाथ पोद्दार - भारत के प्रमुख उद्योगपति, सेठ आनन्दीलाल पोद्दार के सुपुत्र। सदस्य, मुम्बई राज्य विधानसभा, सांसद लोकसभा, सदस्य मुम्बई नगर निगम। महाराष्ट्र सरकार द्वारा जस्टिस ऑफ पीस उपाधि से सम्मानित।

लक्खीराम अग्रवाल- म.प्र. भाजपा के अध्यक्ष, लोकप्रिय नेता एवं सांसद।

कृष्णचंद्र अग्रवाल - रायपुर से सांसद।

माणकभाई अग्रवाल- सबसे पुराने सांसदों में एक। मंदसौर से निर्वाचित।

बी.पी. सिंघल - सांसद, मुरादाबाद (उ.प्र.)।

श्रेयांसप्रसाद जैन- सुप्रसिद्ध उद्योगपति,स्वाधीनता सेनानी, जेलयात्रा, 1952 से 1958 तक राज्यसभा सांसद।

नवलकिशोर, बरेली- स्वाधीनता सेनानी, जेलयात्रा, विधायक उत्तर प्रदेश विधानसभा, 1957-1962 तक उ.प्र. मंत्रिमण्डल के सदस्य, लोकसभा-सांसद।

छेदालाल गुप्ता - स्वाधीनता सेनानी, जेलयात्रा, उ.प्र. विधानसभा सदस्य, 1958 में लोकसभा सांसद।

श्रीमती सावित्री श्याम- उत्तरप्रदेश विधानपरिषद् की सदस्या एवं लोकसभा सांसद।

धीरेन्द्र अग्रवाल- सांसद लोकसभा, बिहार।

भारतभूषण अग्रवाल - लोकप्रिय सांसद, लोकसभा, आपातकाल में जेलयात्रा, 1957 के पंजाब हिन्दी आंदोलन में भाग।

श्यामसुंदर गुप्ता- लोकसभा सांसद (1977), कोलकाता के महापौर, अनेक आंदोलनों में भाग और जेलयात्रा।

कंवरलाल गुप्ता- भाजपा के लोकप्रिय नेता, सांसद, दिल्ली विधानसभा तथा नगर निगम के सदस्य, आपातकाल में 19 माह जेलयात्रा, दिल्ली नागरिक परिषद् के अध्यक्ष।

शोभना भरतिया- दिल्ली से राज्यसभा सांसद, 2006

श्रीकिशन मोदी - सुप्रसिद्ध उद्योगपति, सांसद लोकसभा, अग्रोहा विकास ट्रस्ट के अध्यक्ष।

मुकंदलाल अग्रवाल- पीलीभीत से 1952 से लोकसभा सांसद।

घमण्डीलाल बंसल- रेवाड़ी क्षेत्र से लोकसभा के प्रथम सांसद ।

सालिगराम भरतिया - मुंबई से लोकसभा सांसद ।

रामप्रकाश गर्ग - पटियाला से लोकसभा सासंद।

हरिराम नाथानी - भीलवाड़ा से लोकसभा के प्रथम सांसद ।

रामेश्वर नेवटिया - शाहजहांपुर से लोकसभा के प्रथम सांसद ।

श्रीचन्द सिंघल - अलीगढ़ से प्रथम लोकसभा सांसद ।

बनारसीदास झुंझुनुवाला - भागलपुर (विहार) से लोकसभा के लिए दो बार निर्वाचित।

नरेश अग्रवाल - सांसद,राज्यसभा,उ.प्र. मंत्रिमण्डल की प्रमुख सदस्य तथा समाजवादी पार्टी के महामंत्री।

मूलचन्द जैन- कैथल से दूसरी-तीसरी लोकसभा के सदस्य।

कमलनयन बजाज- गांधीवादी नेता जमनालाल बजाज के सबसे बड़े सुपुत्र । वर्धा से लोकसभा में प्रतिनिधित्व।

एस.के सांघी- जालौर (राज0) से दूसरी, चौथी, पांचवी लोकसभा में प्रतिनिधित्व।

डा0 राममनोहर लोहिया - फरूंखाबाद से तीसरी-चौथी लोकसभा में प्रतिनिधित्व। विरोधी दल के लोक प्रिय नेता ।

श्रीचन्द गोयल - चण्डीगढ से लोकसभा का प्रतिनिधित्व ।

रामकिशन गुप्ता - हिसार से लोकसभा का प्रतिनिधित्व ।

देवकीनन्दन पाटोदिया- जालौर से लोकसभा सांसद ।

कमलाप्रसाद अग्रवाल - तेजपुर (असम)से लोकसभा सांसद।

वीरेन्द्र अग्रवाल - मुरादाबाद से लोकसभा में प्रतिनिधित्व ।

रामनाथ गोयन्का - विदिशा से लोकसभा के सदस्य। इण्डियन एक्सप्रेस के संस्थापक ।

श्रीकिशन अग्रवाल - लोकसभा सांसद

हीरालाल पटवारी - तेजपुर से लोकसभा सांसद ।

भीखूराम जैन - दिल्ली से लोकसभा का प्रतिनिधित्व ।

मदनमोहन अग्रवाल - सांसद राज्य सभा- 2000 ।

नारायणप्रसाद गुप्ता - मध्यप्रदेश के लोकप्रिय भाजपा नेता, स्वतंत्रता सेनानी, अनेक बार जेल यात्रा, गोवा मुक्ति आंदोलन में सत्याग्रही जत्थों का नेतृत्व, जनलेखा समिति के सदस्य ।

मास्टर आदित्येन्द्र- सुप्रसिद्ध गांधीवादी नेता, राज्य सभा सांसद, राजस्थान मंत्रिमण्डल में वित्तमंत्री तथा कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष ।

लाला राधारमण अग्रवाल - दिल्ली के स्वाधीनता सेनानी, गांधीवादी नेता, सांसद।

शिवचरण गुप्ता - दिल्ली के सुप्रसिद्ध राजनेता, दिल्ली नगरनिगम और विधानसभा के सदस्य, स्थायी समिति के अध्यक्ष। सदरबाजार दिल्ली संसदीय क्षेत्र से 1962 में लोकसभा का प्रतिनिधित्व।

राममूर्ति- लोकसभा सांसद, बरेली, उत्तरप्रदेश विधान सभा सदस्य एवं 1951 से 67 तक राज्य मंत्रिमण्डल में विभिन्न पदों कों सुशोभित। जनता पार्टी के सक्रिय नेता ।

कैलाशप्रकाश - सुविख्यात सांसद, स्वतंत्रता सेनानी, उत्तरप्रदेश में शिक्षा, वित्त, पंचायत राज, श्रम, स्वायतशासन, बद्रीनाथ, केदारनाथ मंत्री आदि अनेक पदों पर कार्य। 1977 में मेरठ क्षेत्र से लोकसभा का प्रतिनिधित्व।

अमरनाथ अग्रवाल - सांसद, उत्तरप्रदेश 1952 ।

गिरीश सांघी -सांसद राज्य सभा, अ.भा. वैश्य महासम्मेलन के अध्यक्ष।

वीरेनशाह- सांसद, राज्य सभा।

निहालसिंह जैन - सांसद, लोकसभा।

रामप्रसाद गोयन्का - सुप्रसिद्ध उद्योगपति, सांसद राज्य सभा-2000

रामगोपाल गर्ग- 1952 में बिहार से राज्य सभा सांसद ।

राजेन्द्रकुमार पोद्दार - बंगाल, बिहार से राज्य सभा में प्रतिनिधित्व ।

राहुल बजाज- सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं राज्यसभा सांसद ।

विश्वबंधु गुप्ता - 1984 में दिल्ली से राज्य सभा सांसद।

सतपाल मित्तल- पंजाब से 1976 में राज्यसभा सांसद।

संजय डालमिया- सांसद राज्यसभा, 1974।

सुरेन्द्रमोहन-1978 में उत्तरप्रदेश से राज्य सभा सांसद ।

श्यामलाल गुप्ता - बिहार से राज्यसभा सांसद ।

विश्वनाथ झुंझनूवाला- लोकसभा सांसद, चितौडगढ़ (राज.)

ईश्वरचन्द्र गुप्ता- राज्य सभा सांसद, उ.प्र।

जगन्नाथप्रसाद अग्रवाल- सांसद राज्यसभा 1952

जी.पी. गोयल- सांसद राज्यसभा, उ.प्र. 1980

पूर्णमल लोहिया - सांसद, राज्यसभा 1952

पन्नालाल सरावगी - सांसद राज्य सभा, पं.बंगाल 1962 ।

परमेश्वरलाल- सांसद राज्यसभा, बिहार, 1992

बनारसीदास गुप्ता - हरियाणा मुख्यमंत्री, सांसद राज्य सभा- 1996.

बेनीप्रसाद अग्रवाल - सांसद राज्य सभा, प.बंगाल-1952

बालकृष्ण गुप्ता - राज्य सभा सांसद, उ.प्र

बनवारी लाल कुच्छल - सांसद, 2004

विमल जालान - सांसद, राज्यसभा।

हरेन्द्र अग्रवाल - सांसद ।

भूपेश गुप्ता -सुप्रसिद्ध सांसद ।

रजनी रंजन साहू - बिहार के लोकप्रिय नेता, सांसद, राज्यसभा, राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन एवं वैश्य एकता शताब्दी समारोह के संयोजक।

इन्द्रजीत गुप्ता - सुप्रसिद्ध सांसद ।

कमलनाथ - सांसद ।

बी.आर. नाहटा - सांसद ।

रामलाल गुप्ता - सांसद ।

रमेश वैश्य - सांसद ।

प्यारेलाल खण्डेलवाल - सांसद ।

अनन्तराम जायसवाल - सांसद ।

बाबूलाल शाह - सांसद ।

जयंतीलाल शाह - सांसद ।

एस.के.साहू - सांसद ।

श्रीमती रतनकुमारी - सांसद ।

सोमाभाई पटेल - सांसद ।

समरेदुं कुटू - सांसद ।

वैकुण्ठनाथ साहू - सांसद ।
शिव प्रसाद साहू - सांसद (तैलिक वैश्य)।
श्रीमती प्रभावती गुप्ता - सांसद, बिहार।
बलवंत सिंह मेहता - सांसद ।
राजकुमार धूत - सांसद -मुम्बई।
ईश्वरलाल जैन - सांसद, जलगांव ।
विरधीचन्द जैन - सांसद ।
मोहनलाल सुखाड़िया - सांसद, मुख्यमंत्री एवं राज्यपाल ।
श्रीमती इंदु सुखाड़िया - सांसद ।
जनकराज गुप्ता - सांसद जम्मू।
कृष्णकुमार बिरला - सांसद ।
रामलखन गुप्ता - सांसद ।
ताराचंद - सांसद ।
डा. लोकेशचन्द्र - सांसद, सरोलिया वैश्य।
सेठ अचलसिंह - सांसद ।
इन्द्र विद्यावाचस्पति - सांसद ।
एस.एन. प्रसाद - सांसद ।
ओंकारनाथ - सांसद ।
काशीराम गुप्त - सांसद ।
किरण माहेश्वरी - सांसद, केबिनेट मंत्री , राजस्थान सरकार।
गुमानमल लोढ़ा - सांसद ।
गोपीकृष्ण विजयवर्गीय - सांसद ।
चंदूलाल साहू - सांसद ।
छेदालाल गुप्त - सांसद ।
जे.के. जैन - सांसद ।
डालचन्द- सांसद ।
देव प्रसाद जैन - सांसद ।
नवलकिशोर राय - सांसद ।
पुष्पदत जैन - सांसद ।

विधानसभा अध्यक्ष, सचेतक, संसदीय सचिव (पूर्व-वर्तमान)

देशबंधु गुप्ता- अध्यक्ष पंजाब विधानसभा
डा. मुतैया चेट्टियार - अध्यक्ष, तमिलनाडु, विधानसभा
शान्तिलाल चपलोत - अध्यक्ष, राजस्थान विधानसभा
महावीर प्रसाद जैन- मुख्य सचेतक, राजस्थान विधान सभा।
ओम बिड़ला- संसदीय सचिव, राजस्थान विधानसभा।
मंगतराम सिंघल- मुख्य सचेतक, दिल्ली विधानसभा।
कविन्द्र गुप्ता- अध्यक्ष, जम्मू एवं कश्मीर विधानसभा।
गौरीशंकर अग्रवाल- अध्यक्ष, छतीसगढ़, विधानसभा।
रामनिवास गर्ग- अध्यक्ष, दिल्ली विधानसभा।

विधानसभा सदस्य एवं राज्यों में मंत्री
दिल्ली (पूर्व तथा वर्तमान)

नन्दकिशोर गर्ग- भाजपा दिल्ली के महामंत्री, दिल्ली विधानसभा के संसदीय कार्यमंत्री, भाजपा के सचेतक तथा दिल्ली नगर निगम के भी सदस्य रहे। 2013 के चुनावों में पुन: विजयी।

सत्यनारायण बंसल - दिल्ली नगरनिगम स्थायी समिति के अध्यक्ष । आपातकाल में जेलयात्रा। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ व भाजपा के प्रमुख कार्यकर्ता।

डा. हर्षवर्धन - पूर्व संसदीय कार्यमंत्री।

श्यामाचरण गुप्त - भाजपा के प्रमुख कार्यकर्ता, दिल्ली नगरनिगम के एल्डरमेन, महानगरपरिषद् के अध्यक्ष, 1952 में दिल्ली विधानसभा के सदस्य ।

राजेन्द्रकुमार गुप्ता - दिल्ली के पूर्व महापौर तथा परिवहन मंत्री। दिल्ली भाजपा के प्रमुख नेता। दिल्ली नगर निगम के एल्डरमेन तथा अनेक बार जेलयात्रा ।

मंगतराम - सचेतक दिल्ली विधानसभा।

देवेन्द्रकुमार जैन - दिल्ली नगर निगम एवं महानगर परिषद, के सदस्य । नागरिक सुरक्षा संगठन के प्रमुख अधिकारी। आपातकाल में लम्बी जेलयात्रा ।

जितेन्द्रकुमार (कालू भैया)- विधायक, दिल्ली विधानसभा ।

आलोककुमार गर्ग- दिल्ली विधानसभा के विधायक।

श्यामलाल गर्ग- दिल्ली विधानसभा तथा महानगर निगम के सदस्य।

डा0 नरेन्द्रनाथ - दिल्ली मंत्रिमण्डल के सदस्य तथा विधायक।

जयभगवान अग्रवाल - विधायक दिल्ली ।

रूपचन्द गुप्ता- दिल्ली के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भाग तथा जेलयात्रा।

मंगतराम सिंघल - उद्योगमंत्री, दिल्ली सरकार

मांगेलाल गर्ग- दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष तथा प्रमुख लोकप्रिय नेता।

राजेश जैन - विधायक, दिल्ली विधानसभा।

देशराज चौधरी- स्वाधीनता सेनानी, अनेक बार जेलयात्रा । 1962 में दिल्ली नगरनिगम के महापौर एवं अनेक समितियों के अध्यक्ष ।

राजकुमार जैन - महानगर परिषद दिल्ली के सदस्य, विविध आंदोलनों में अनेक बार जेल यात्रा ।

चरतीलाल गोयल- दिल्ली राज्य विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष। 1967 से 1975 तक दिल्ली नगर निगम के सदस्य तथा महापौर। भारतीय जनता पार्टी के प्रमुख नेता, युवा एवं खेल मत्री विजय गोयल के पिता श्री। आपातकाल में जेल यात्रा । अग्रवाल समाज के विशिष्ट व्यक्तित्व।

प्रो0 राजेशकुमार जैन- अनेक राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग तथा जेल यात्रा। महानगर परिषद् दिल्ली के सदस्य ।

वीरेशप्रताप चौधरी - भारतीय एवं दिल्ली प्रदेश युवा कांग्रेस के महामंत्री। दिल्ली महानगर निगम के सदस्य तथा सुप्रसिद्ध सामाजिक एवं राजनैतिक कार्यकर्ता।

जनार्दन गुप्त - दिल्ली के जुझारू नेता । विभिन्न राजनैतिक आंदोलनो में भाग तथा 25 से अधिक बार जेल यात्रा । दिल्ली नगर निगम एवं महानगर परिषद् के सदस्य। आपातकाल में जेलयात्रा।

सविता गुप्ता - दक्षिणी दिल्ली से दिल्ली नगर निगम की महापौर।

मीरा अग्रवाल - दिल्ली नगर निगम महापौर ।

श्यामलाल गर्ग - कोषाध्यक्ष, भाजपा दिल्ली

रामकिशन सिंघल- आप पार्टी से विधानसभा के सदस्य।

राजेश गर्ग- विधायक।

विजेन्द्र गर्ग विजय- विधायक आप।

शिव चरण गोयल- विधायक आप

मोहिन्द्र गोयल- विधायक

रामनिवास गोयल- अध्यक्ष दिल्ली विधानसभा

राजेश गुप्ता- विधायक

विजेन्द्र गुप्ता- विधायक, विपक्ष के प्रमुख नेता

उत्तरप्रदेश

नरेश अग्रवाल - समाजवादी पार्टी के प्रमुख नेता तथा महामंत्री। 1980 से लेकर अनेक बार विधानसभा के सदस्य तथा उ.प्र. मंत्रिमण्डल में परिवहन एवं ऊर्जामंत्री सहित विभिन्न पदों को सुशोभित । राज्य के लोकप्रिय व्यक्तित्व।

राममूर्ति - 1930, 32 , 41 में जेल यात्रा। उत्तर प्रदेश विधानसभा के सदस्य एवं उत्तर प्रदेश सरकार में 1951 से 67 तक विभिन्न पदों को सुशोभित। 1977 में जनता पार्टी के टिकट पर बरेली संसदीय क्षेत्र में लोकसभा के लिए निर्वाचित।

कैलाशप्रकाश - सुविख्यात सांसद, स्वतंत्रता सेनानी, उत्तरप्रदेश में शिक्षा, वित्त, पंचायत राज श्रम स्वायत्त शासन, बद्रीनाथ मंत्री के रूप में अनेक पदों पर कार्य।

राजेन्द्रप्रसाद गुप्त - उ.प्र के पूर्व वित्त मंत्री। 1977 से लगातार उत्तरप्रदेश विधानसभा में अनेक बार

प्रतिनिधित्व तथा अपातकाल एवं अन्य आंदोलनों में 15 बार जेल यात्रा ।

आचार्य जुगलकिशोर-महान शिक्षा शास्त्री तथा गांधीवादी नेता, उत्तरप्रदेश के शिक्षामंत्री, लखनऊ, कानपुर विश्वविद्यालय में उपकुलपति पद को सुशोभित किया। स्वाधीनता आंदोलन में पति-पत्नी द्वारा संयुक्त रूप से अनेक बार जेलयात्रा, गुजरात विद्यापीठ के अध्यक्ष तथा सरदार भगतसिंह, सुखदेव बोहरा आदि क्रांतिकारियों के राजनीतिक गुरू रहे।

दयालकृष्ण एडवोकेट - सुप्रसिद्ध समाजसेवी, अग्रोहा में बृजवासी अतिथि भवन निर्माण के सूत्रधार, पूर्व गृह राज्यमंत्री, उत्तरप्रदेश सरकार।

प्रवीण ऐरण - उत्तरप्रदेश मंत्रिमण्डल में स्वास्थ्य तथा अन्य विभागों कें मंत्री।

सत्यप्रकाश अग्रवाल - मेरठ क्षेत्र से उत्तरप्रदेश विधानसभा के विधायक ।

डा0 जयगोपाल गर्ग - स्वंतत्रता सेनानी, अनेक बार जेल यात्रा, 1957 से 1962 तक उत्तर प्रदेश विधान सभा तथा 1973 में विधान परिषद् के सदस्य ।

केशव गुप्त - स्वतंत्रता सेनानी, 1930,32,40 मे जेल यात्रा। उत्तरप्रदेश विधानसभा के विधायक।

द्वारिकाप्रसाद मित्तल - स्वतंत्रता सेनानी, 1929, 31 तथा 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भाग तथा जेल यात्रा। 1952 से 1957 तक उ.प्र. विधानसभा के सदस्य।

शीतलप्रसाद -स्वाधीनता सेनानी, 1930 के जनआंदोलन में भाग, 1969 से 1972 तक आगरा विश्वविद्यालय के कुलपति ।

जगन्नाथप्रसाद -स्वाधीनता सेनानी, असहयोग एवं अन्य आंदोलनों में भाग तथा जेल यात्रा।

सोमांशप्रकाश - उत्तरप्रदेश विधानसभा के विधायक, कांग्रेस, जनतादल, जनता मोर्चा आदि में विभिन्न पदों पर कार्य ।

सुरेश बंसल - बरेली से निर्वाचित विधायक ।

अनूपकुमार गुप्ता - महरौली से निर्वाचित सपा विधायक ।

देवेन्द्र अग्रवाल - उत्तरप्रदेश से निर्वाचित विधायक

सुधीर अग्रवाल - विधायक एवं मंत्री उ.प्र. मंत्रिमण्डल ।

श्रीमती शान्ति देवी - शिक्षा मंत्री आचार्य जुगलकिशोर की धर्मपत्नी, स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भाग तथा अनेक बार जेल यात्रा। सम्पूर्ण जीवन देश सेवा के लिए समर्पित। उत्तरप्रदेश विधान परिषद् की सदस्या।

अजयकुमार गुप्ता - समाजवादी दल से उत्तर प्रदेश विधायक।

राधामोहन अग्रवाल - भाजपा से उ.प्र विधायक।

सुनील अग्रवाल- विधायक।

सुरेश बसंल - बसपा से उत्तरप्रदेश विधायक

नीतिक अग्रवाल - समाजवादी दल के उत्तरप्रदेश विधानसभा सदस्य ।

विवेक बसंल - विधायक, अलीगढ़

विमलकल्याण अग्रवाल- विधायक उ.प्र.

अनुराग गोयल - उत्तरप्रदेश कल्याणसिंह मंत्रिमण्डल में प्रमुख सचिव।

गोविन्द सहाय- विधायक एवं मंत्री,उत्तरप्रदेश सरकार

ज्योतिप्रसाद वकील - विधायक, उ.प्र. विधानसभा

सुरेश सिंघल - विधायक उत्तरप्रदेश

राजकुमार अग्रवाल - विधायक उत्तरप्रदेश

बृजभूषण शरण - विधायक, उत्तरप्रदेश

बाबूराम मित्तल - विधायक, उत्तरप्रदेश

राधाकिशन अग्रवाल - उच्चकोटि के देश भक्त, स्वाधीनता सेनानी, समाजसेवी, अनेक बार जेल यात्रा। 1946 1953 में उ.प्र. विधानसभा सदस्य, उ.प्र. लोकसेवा आयोग तथा माध्यमिक शिक्षा आयोग के सदस्य।

श्रीकृष्ण गोयल - स्वाधीनता सेनानी, उत्तरप्रदेश सरकार में स्वायत्त शासन मंत्री। बदांयू से विधायक तथा 1957 से 1962 तक विधानसभा सदस्य। 1968 में विधान परिषद् के सदस्य।

जगदीशशरण अग्रवाल - उ.प्र. के स्वायत्त शासन मंत्री एवं विधानसभा अध्यक्ष । अनेक बार विधानसभा एवं विधान परिषद् के सदस्य निर्वाचित ।

सत्यप्रकाश विकल - उत्तरप्रदेश विधानसभा के विधायक ।

रविकांत गर्ग - उत्तरप्रदेश के लोकप्रिय ऊर्जा मंत्री तथा विभिन्न पदों को सुशोभित ।

शिवप्रसाद गुप्ता - उत्तरप्रदेश विधान परिषद् के अध्यक्ष तथा सुप्रसिद्ध स्वाधीनता सेनानी।

प्रवीण एरण - उत्तरप्रदेश मंत्रिमण्डल में स्वास्थ्य मंत्री।

अमित अग्रवाल - विधायक उत्तरप्रदेश ।

जगदीशप्रसाद अग्रवाल - आपने कांग्रेस सेवादल के संयोजक रूप में नेहरू जी को भी परेड कराई । स्वतंत्रता आंदोलन में अमानवीय यातनाएं।

राजेश अग्रवाल- वित्तमंत्री, उ.प्र.

अतुल गर्ग - स्वास्थ्यमंत्री, उ.प्र., विधायक-गाजियाबाद

संजय गर्ग- विधायक -सहारनपुर

ओम प्रकाश अग्रवाल - विधायक

विद्यासागर गुप्ता - विधायक

देवकीनंदन विभव - विधायक

प्रकाशनारायण गुप्त - विधायक

वेद प्रकाश गुप्ता - विधायक, अयोध्या

सत्यप्रकाश अग्रवाल - विधायक, मेरठ कैंट

महेश कुमार गोयल- विधायक खेरागढ़

राजकुमार अग्रवाल - विधायक, सनदीला

पंकज गुप्ता - विधायक, उन्नाव

रितेश कुमार गुप्ता - विधायक, मुरादाबाद

डा. मोहनदास अग्रवाल - विधायक गोरखपुर

हरियाणा

श्रीमती लेखवती जैन -स्वाधीनता सेनानी एवं हरियाणा विधानसभा की सदस्या एवं उपाध्यक्ष।

प्रो. गणेशीलाल - श्रेष्ठ वक्ता, भाजपा के लोकप्रिय नेता, हरियाणा के सहकारिता, श्रम, रोजगार, मद्यनिषेध एवं आबकारी मंत्री।

चरणदास शोरेवाला- हरियाणा राज्य के वित्त मंत्री।

रामसरनचंद मित्तल- हरियाणा के पूर्व वित्त मंत्री तथा विधानसभा अध्यक्ष । पंजाब में भी 1964-67 तक मंत्री।

मांगेराम गुप्ता - पूर्व वित्त मंत्री हरियाणा, प्रादेशिक अग्रवाल सम्मेलन एवं हरियाणा व्यापार मण्डल के पूर्व अध्यक्ष, हरियाणा सरकार में विविध उच्च पदों को सुशोभित । अनेक बार जेल यात्रा।

मूलचन्द जैन - स्वतंत्रता सेनानी, पूर्व सांसद, हरियाणा राज्य के आधुनिक निर्माण में मुख्य भूमिका, हरियाणा योजना आयोग के उपाध्यक्ष, वित्त मंत्री एवं 1952 से 1957 तक संयुक्त पंजाब के सांसद रहे।

सेठ श्री किशनदास - हरियाणा के वित्त, आबकारी एवं कराधान मंत्री।

प्रेमसुखदास खजांची - मंत्री, हरियाणा सरकार।

सागरराम गुप्ता- पंजाब एवं हरियाणा विधान सभा के 1962, 1967 में विधायक, हरियाणा मंत्रिमण्डल में श्रम एवं वित्तमंत्री। सुप्रसिद्ध श्रमिक नेता एवं भारतीय राष्ट्रीय व्यापार संघ के महासचिव।

फकीरचन्द गर्ग - उपाध्यक्ष विधानसभा।

सुभाष गोयल - निकाय मंत्री, हरियाणा।

बलवंतराय तायल - हरियाणा मंत्रिमण्डल में वित्त मंत्री ।

मुनीशचन्द्र गुप्ता - गृह सचिव, हरियाणा सरकार।

रामभज अग्रवाल - हरियाणा विधानसभा के विधायक एवं सुप्रसिद्ध उद्योगपति ।

बृजमोहन सिंघल - विधायक, हरियाणा विधानसभा।

ओमप्रकाश जैन - हरियाणा राजनीति के लोकप्रिय स्तम्भ, विधायक हरियाणा विधानसभा

मांगेलाल गुप्त - विधायक, हरियाणा विधानसभा

ओमप्रभा जैन -पंजाब विधानसभा की विधायिका,उपशिक्षा, स्वास्थ्य, योजना, राजस्व, वित्त मंत्री जैसे अनेक पदों को सुशोभित। हरियाणा मंत्रिमण्डल में भी कराधान, पुनर्वास, डेयरी, पर्यटन मंत्री।

सीताराम बाघला -स्वाधीनता सेनानी, 1962-67 में विधानसभा सदस्य, भूदान आदोलन में 200 बीघा भूमिदान

डी.के बंसल - विधायक, अम्बाला क्षेत्र।

जयप्रकाश गुप्ता - विधायक, करनाल।

गोपाल काण्डा - गृह राज्य मंत्री, हरियाणा ।

बजरंगदास गर्ग - विधायक, हरियाणा।

घनश्यामदास सर्राफ - विधायक।

महाशय बनारसी दास - स्वतंत्रता सेनानी, अनेक बार जेल यात्रा, 1952-57-62 में हरियाणा (थानेसर) के विधायक।

रामचन्द्र सिंघल - विधायक सोनीपत ।

रमेशकुमार गुप्ता - विधायक।

देवेन्द्रकुमार बंसल - विधायक अम्बाला

सावित्री जिन्दल - हरियाणा में राजस्व, आवास एवं अन्य मंत्री पदों को सुशोभित।

सीताराम सिंघल-हरियाणा में गुडगांव से विधायक। हरियाणा मंत्रिमण्डल में औद्योगिक प्रशिक्षण, व्यावसायिक शिक्षा, खेल, सांस्कृतिक मंत्री, भाजपा सदस्य, हरियाणा खादी बोर्ड के अध्यक्ष, आपातकाल में जेल यात्रा।

लाला रूलियाराम - विधायक, हरियाणा विधानसभा

ओमप्रकाश गर्ग - विधायक, हरियाणा

गोपीराम गुप्ता - विधायक, पुण्डरी

कस्तूरीलाल गोयल - विधायक, हरियाणा

चमनलाल सर्राफ - विधायक, हरियाणा

बलदेव गोयल - हांसी क्षेत्र से विधानसभा सदस्य, हरियाणा मंत्रिमण्डल में आबकारी, कराधान, विधि, न्याय मंत्री, जनता दल, हरियाणा के अध्यक्ष ।

असीम गोयल-विधायक , अम्बाला

उमेश अग्रवाल- विधायक गुड़गांव

विपुल गोयल- विधायक, फरीदाबाद

डा. कमला गुप्ता- विधायक हिसार

मक्खन लाल सिंघल- विधायक, सिरसा

घनश्याम सर्राफ - विधायक भिवानी

ज्ञानचन्द गुप्ता- विधायक पंचकुला

गौरीशंकर सिंघल - पूर्व विधायक जींद , हरियाणा

श्यामलाल सत्याग्रही - सिरसा के सुप्रसिद्ध स्वाधीनता सेनानी, अनेक बार जेल यात्रा, पंजाब विधान सभा के सदस्य, गौरक्षा तथा राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रबल समर्थक।

प्रभावती गुप्ता - मंत्री, हरियाणा सरकार

शारदारानी अग्रवाल - मंत्री, हरियाणा सरकार

कविता जैन - विधायक, सोनीपत

मक्खनलाल सिंघल - विधायक सिरसा

सुशील रोहतगी - विधायक

मध्यप्रदेश

घनश्यामसिंह गुप्त - म.प्र. विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी आंदोलन के प्रणेता

रामचन्द्र अग्रवाल - विधायक, मध्यप्रदेश विधानसभा

गुलाबचन्द्र - जबलपुर निगम के महापौर, विधायक मध्यप्रदेश विधानसभा

डॉ. रमेश अग्रवाल - मध्यप्रदेश विधानसभा के सदस्य ।
बृजमोहन अग्रवाल - भाजपा से मध्यप्रदेश के विधायक ।
संतोषकुमार अग्रवाल - जनता दल से निर्वाचित मध्य प्रदेश के विधायक ।
बद्रीनारायण अग्रवाल - जनता दल से निर्वाचित मध्य प्रदेश के विधायक।
हनुमानप्रसाद गर्ग - विधायक भाजपा, मध्यप्रदेश।
रामप्रकाश गर्ग - विधायक भाजपा, मध्यप्रदेश।
चन्द्रकांत गुप्त - विधायक, मध्यप्रदेश विधानसभा।
मगनलाल गोयल - सदस्य, मध्यप्रदेश विधानसभा।
विद्याभूषण अग्रवाल - विधायक तथा मंत्री, मध्यप्रदेश।
कृष्णकुमार गुप्ता - उच्च शिक्षा एवं खनिज मंत्री, मध्य प्रदेश।
सुश्री लीलाराय - 1952 में मध्यप्रदेश की विधायिका।
कन्हैयालाल रामेश्वर अग्रवाल - विधायक मध्य प्रदेश।
सुदर्शन गुप्ता - विधायक मध्य प्रदेश
उमाशंकर गुप्ता - विधायक, म.प्र. एवं मंत्री।
रमेश अग्रवाल - विधायक, मध्यप्रदेश।
परेश अग्रवाल - विधायक मध्यप्रदेश।
श्रीकिशन धनानिया - विधायक, रायगढ़ ।
सेवाराम गुप्ता - विधायक, मुरैना।
रामहित गुप्ता - मध्यप्रदेश के वित्त मंत्री तथा लोकप्रिय नेता।
लक्ष्मीनारायण गुप्त - विधायक।
राधावल्लभ विजयवर्गीय - विधायक।
राघवजी - विधायक।
पारस जैन- विधायक।
छोटेलाल सरावगी - विधायक।
शरद जैन - विधायक।
अल्का जैन - विधायक।
ताराचन्द गोयल- विधायक।
रामगोपाल गुप्त - विधायक।

राजस्थान

कालीचरण सर्राफ - विधायक, अध्यक्ष, जयपुर भाजपा। छः बार विधायक निर्वाचित होने का श्रेय, मंत्रिमण्डल में स्वास्थ्य एवं चिकित्सा मंत्री, उच्च शिक्षा एवं तकनीक मंत्री जैसे महत्वपूर्ण पदों को सुशोभित।

गुलाबचंद कटारिया - गृहमंत्री, राजस्थान
मोहनलाल गुप्ता - भाजपा नेता, विधायक, जयपुर के महापौर।
रामानन्द अग्रवाल - राजस्थान विधानसभा सदस्य।
मदनमोहन सिंघल - आयोजना राज्य मंत्री।
मोहनलाल मोदी - विधायक एवं स्वतंत्रता सेनानी।
सांवरमल मोदी - विधायक एवं स्वतंत्रता सेनानी
मुक्तिलाल मोदी - विधायक नीमकाथाना क्षेत्र तथा स्वतंत्रता सेनानी।
विष्णुमोदी - विधायक, विधानसभा
बनवारीलाल सिंघल - विधायक भाजपा, अलवर।
विजय बंसल - विधायक
दुर्गाप्रसाद अग्रवाल - विधायक
बद्रीप्रसाद गुप्ता - मंत्री, राजस्थान सरकार
बृजप्रकाश गोयल - मंत्री, राजस्थान सरकार
मीना अग्रवाल - विधायिका, राजस्थान विधानसभा
ओमप्रकाश गुप्ता - विधायक राजस्थान विधानसभा तथा मुख्य सचेतक भाजपा
कृष्णगोपाल गर्ग - विधायक।
कामिनी जिन्दल- विधायिका।
चंदनमल वेद- पूर्व वितमंत्री, राजस्थान।
शान्तिलाल चपलोत - अध्यक्ष ,राजस्थान विधानसभा।
रामप्रसाद लढ्ढ़ा - मंत्री।
गोकुललाल असावा - विधायक
प्रमोद जैन भाया - मंत्री
बलवंतसिंह मेहता- संसद सदस्य, राज्यमंत्री, स्वाधीनता सेनानी।
माणक चंद सुराणा - विधायक
पुरुषोत्तम मंत्री - विधायक
रतनलाल ताम्बी - विधायक
रिखबचंद धारीवाल - मंत्री
सूर्यनारायण चौधरी - विधायक
त्रिलोकचन्द जैन - विधायक
ओम बिड़ला - संसदीय सचिव, राजस्थान विधानसभा
गोपाल बाहेती- विधायक
डी.के. बंसल - विधायक

श्याम सुन्दर लोढ़ा - विधायक
अर्जुनसिंह देवड़ा- विधायक
सुभाष बहेड़िया - विधायक
महावीर प्रसाद जैन - विधायक
ज्ञान पारख - विधायक
अशोक नवलखा - विधायक

पंजाब

मदनमोहन मित्तल - भाजपा से पंजाब विधान सभा के सदस्य ।
स्वरूपचंद सिंघल - शिरोमणि अकाली दल से विधायक, मुख्य संसदीय सचिव विधायक पंजाब ।
प्रेम मित्तल - शिरोमणि अकाल दल से पंजाब के विधायक ।
चिरंजीलाल गर्ग - विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी मंत्री, पंजाब।
ओमप्रकाश गुप्ता - विधायक।
ज्ञानचन्द गुप्ता - विधायक।
भूषणचन्द गुप्ता - खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति सचिव, पंजाब।
दीनानाथ अग्रवाल - विधायक लुधियाना।
राजकुमार गुप्ता - विधायक पंजाब विधानसभा।
सुरेन्द्र सिंघल - वित्तमंत्री पंजाब, सांसद राज्य सभा।
देशबन्धु गुप्ता - अध्यक्ष, पंजाब विधानसभा।
जोगेन्द्र पाल जैन - मोगा से निर्वाचित कांग्रेसी विधायक।
प्रकाश चन्द गर्ग - संगरूर से निर्वाचित अकाली विधायक।
मंगतराय बंसल - विधायक।

हिमाचल प्रदेश

राजीव बिंदल - सोलन विधानसभा क्षेत्र से प्रतिधिनिधित्व। पूर्व मंत्री स्वास्थ्य एवं आयुर्वेद विभाग, हरियाणा । भाजपा हिमाचल प्रदेश के कोषाध्यक्ष।

पश्चिमी बंगाल

सीताराम सेक्सरिया - सुप्रसिद्ध गांधीवादी नेता। गांधी जी के अनन्य सहयोगी। 1941-42 के स्वाधीनता आंदोलन में भाग तथा जेल यात्रा। हिन्दी, खादी तथा महिला शिक्षा के समर्थक।

बद्रीप्रसाद पोद्दार-सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं पश्चिमी बंगाल की राजनीति के प्रमुख व्यक्तित्व। लगभग 11 वर्षों तक विधानसभा के सदस्य तथा कांग्रेस विधायक दल के नेता ।

रघुनाथ खेतान - पश्चिमी बंगाल से लोकसभा एवं राज्य सभा का प्रतिनिधित्व एवं कांग्रेस संसदीय बोर्ड के कोषाध्यक्ष ।

सर बद्रीप्रसाद गोयन्का - बंगाल विधान परिषद् तथा कोलकता इम्प्रूवमेन्ट ट्रस्ट के सदस्य। रिजर्व बैंक

ऑफ इण्डिया के निदेशक। अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष तथा उत्कृष्ट सामाजिक कार्यकर्ता।

राजेश खेतान - कोलकाता उच्च न्यायालय के सॉलीसिटर तथा पश्चिमी बंगाल विधानसभा में प्रतिनिधित्व, कुशल विधिवेता।

सत्यनारायण बजाज - विधायक पश्चिमी बंगाल।

ईश्वरदास जालान - पश्चिमी बंगाल विधान सभा के पूर्व अध्यक्ष, विधि मंत्री एवं मारवाड़ी समाज के लोकप्रिय नेता। 15 वर्षो तक लगातार पश्चिमी बंगाल में मंत्री पद सुशोभित ।

रामकृष्ण सरावगी - कोलकाता नगरनिगम के सदस्य। 1967 से 1972 तक बड़ा बाजार क्षेत्र से पश्चिमी बंगाल विधानसभा में प्रतिनिधित्व तथा राज्य मंत्रिमण्डल के सदस्य । सुप्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता।

मदनलाल अग्रवाल-विधायक।

उड़ीसा

वेदप्रकाश - उड़ीसा राज्य में खाद्य एवं आपूर्ति मंत्री

प्रह्लादराय लाठ - विधायक, उड़ीसा विधानसभा।

अरूण कुमार साहू - विधायक

नर्रासिंह साहू - विधायक

आंध्रप्रदेश

नरेश अगव्राल-कांग्रेस विधायक, इच्छायु ।

के.रौसेयाह - मंत्री।

छत्तीसगढ़

अमर अग्रवाल - वित्त, स्वास्थ्य, वाणिज्य, नगरीय प्रशासन एवं सांख्यिकी मंत्री।

कृष्णकुमार गुप्ता - विधानसभा उपाध्यक्ष

बृजमोहन अग्रवाल - गृह सचिव, पर्यटन, युवा कल्याण मंत्री छत्तीसगढ़

सत्यनारायण अग्रवाल - मंत्री छत्तीसगढ़

के.एल अग्रवाल - स्वास्थ्य मंत्री, छतीसगढ़

गौरीशंकर अग्रवाल - विधायक

जयसिंह अग्रवाल - विधायक

राजकमल सिंघानिया - विधायक

बनवारीलाल गोयल - विधायक, विधानसभा उपाध्यक्ष

विजय अग्रवाल - विधायक

झारखण्ड

रामचन्द्र केसरी - विधायक

राम प्रकाश महतो - विधायक

अशोक कुमार भगत - विधायक
ताराचन्द जैन- विधायक

महाराष्ट्र

जमनालाल गोयल - मंत्री, महाराष्ट्र राज्य
दीनदयाल - मंत्री, महाराष्ट्र सरकार।
गोपालशंकर गोंदिया - विधायक महाराष्ट्र।
चन्द्रकांता गोयल - विधायिका , महाराष्ट्र विधानसभा
छगनलाल भोरूका - विधायक
राधेश्याम अग्रवाल - अकोला से विधायक
हिम्मत कोठारी - विधायक भाजपा
कैलाश विजयवर्गीय - विधायक
के.एल. अग्रवाल - विधायक
ब्रजमोहन धूत - विधायक
बाबूलाल सीताराम महाजन - विधायक
ओम प्रकाश सकलेचा - विधायक
जगदीश गुप्ता - विधायक, अमरावती
गोपीकिशन बाजोरिया - विधायक, अकोला
राजेंद्र जन - विधायक
डा. विमल मूंदड़ा - पूर्व मंत्री-विधायक
मंगल प्रभात लोढ़ा - विधायक, मुंवर
राजेन्द्र दरड़ा - शिक्षामंत्री महाराष्ट्र
मनीष जैन - विधायक, जलगांव
संदीप बाजोरिया - विधायक
जयप्रकाश मूंदड़ा- पूर्वमंत्री

बिहार

सुशीलकुमार मोदी - बिहार के लोकप्रिय नेता,2005 से 2013 तक उपमुख्यमंत्री, वित्त मंत्री, लोकसभा सांसद तथा बिहार विधान संसदीय दल के नेता । संकटकालीन स्थिति एवं जय प्रकाश नारायण आंदोलन में जेल यात्रा । भाजपा से सम्बद्ध ।

सीताराम जगराजका - बिहार विधान परिषद् सदस्य, झारखण्ड राज्य के निर्माण में विशेष भूमिका ।

गौरीशंकर डालमिया - विधायक, विधानसभा एवं विधान परिषद् ।

नागरमल मोदी -विधायक, बिहार विधान सभा।

शंकरप्रसाद टेकड़ीवाल - विधायक, बिहार विधानसभा

श्रीमती राजकुमारी हिम्मतसिंहका - विधायिका

रामावतार अरुण - बिहार विधानसभा सदस्य।

मोतीलाल केजरीवाल - सुप्रसिद्ध स्वाधीनता सेनानी, बिहार के गांधी संज्ञा से सुशोभित। अनेक बार जेलयात्रा ।

संजय सरावगी - विधायक

श्याम विहार प्रसाद - जे.डी.यू. विधायक

संजय कुमार गुप्ता - विधायक

विरेन्द्र चौधरी- विधायक

मोहन लाल अग्रवाल - विधायक भाजपा

अमर अग्रवाल - विधायक,भाजपा

हर्ष महाजन - विधायक

हरिनारायण - विधायक

रमादेवी - विधायक

उत्तराखण्ड

दिनेश अग्रवाल - विधायक देहरादून

जयप्रकाश जैसवाल - विधायक

शैलेन्द्र मोहन सिंघल - विधायक

प्रेमचन्द अग्रवाल - अध्यक्ष विधानसभा, ऋषिकेश विधानसभा से लगातार चार बार विधायक, संसदीय सचिव, औद्योगिक विकास।

गोआ-दमनद्वीप

एन.डी.अग्रवाल - दक्षिण गोआ

इनके अलावा भी भारतीय राजनीति में अग्रवाल समाज के हजारों की संख्या में विशिष्ट व्यक्तित्व हुए हैं, जिनके नाम इस सूची में नहीं आ पाए हैं। उन सबके उल्लेख के लिए किसी स्वतंत्र ग्रंथ की अपेक्षा होगी ।

आर्थिक क्षेत्र और अग्रवाल-वैश्य समाज

आज भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति के रूप में जाना जाता है और उसको गणना अमेरिका तथा चीन के बाद सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में होने लगी है। यद्यपि देश की इस प्रगति में विभिन्न समुदायों का योगदान है किंतु यदि सूक्ष्म रूप से विश्लेषण करें तो इसमें सर्वाधिक योगदान अग्रवाल। वैश्य समाज का है। आज इस समाज के अनेक ऐसे व्यक्तित्व हैं, जिन्हें आर्थिक, औद्योगिक जगत की विभूति के रूप में जाना जाता है और जिनका भारत के आर्थिक विकास में विशेष योगदान है।

अग्रवाल वैश्य समाज का प्रमुख घटक और उद्योग-व्यवसाय प्रधान समाज माना जाता है। इसी वैश्य अग्रवाल समाज का कौशल था कि भारत की पहचान सोने की चिड़िया के रूप में होती थी और उसका वैभव इतना बढा था कि दुनिया भर के देश उससे व्यापार करने के लिए यहाँ खीचें चले आते थे।

इसीलिये इतिहास का वैदिक काल हो या मुगल अथवा गुप्त काल, उसे सर्वदा सम्मान जनक स्थान प्राप्त था। अग्रवालों ने इन्हीं कारणों से व्यवसाय उद्योग में विशेष प्रगति की और भारत ही नहीं विश्व की प्रमुख व्यापारिक जातियों में उसकी गणना होने लगी।

अग्रवाल/वैश्य समाज की आर्थिक क्षेत्र में विशेषताएं

किसी भी समाज को इतिहास में यों ही महत्व नहीं मिल जाता, उसके पीछे अनेक कारण होते हैं। अग्रवाल -वैश्य समाज में भी ऐसी कुछ विशेषताएं हैं, जिनके कारण आर्थिक एवं औद्यौगिक जगत में उसे वरीयता प्राप्त है।

इनमें से कतिपय विशेषताओं का उल्लेख निम्नानुसार किया जा सकता है-

(1) व्यवसाय एवं उद्योग में दक्षता-

अग्रवाल-वैश्य समाज की सबसे बड़ी विशेषता उसकी उद्योग-व्यवसाय में दक्षता है। इस समाज में एक विशेष प्रकार का कौशल, प्रतिभा है, जिसके कारण इसकी गणना देश के सर्वश्रेष्ठ उद्योगपतियों एवं व्यवसायियों में होती है।

यह समाज देश के आर्थिक विकास की धूरी है और पूरे विश्व में आज भारत जो विश्व की तीसरी सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति के रूप में उभर रहा हैं, उसमें इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है।

इस समाज में साहस एवं जोखिम उठाने की प्रवृति, दृढ़ संकल्प, अनवरत परिश्रम, प्रबन्धन में, कौशल, व्यापार की नब्ज को पहचानने की शक्ति, नये-नये विचारों, नये कौशल एवं नई तकनीकों को अपनाने की क्षमता, महत्वाकांक्षा, आशावादिता, सकारात्मकता, संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग, कम लागत में ही श्रेष्ठ उत्पादों का निर्माण तथा कम मुनाफे में अधिकाधिक व्यापार आदि कुछ ऐसी विशेषताएं हैं, जिन्होंने इस समाज को उद्योग-व्यवसाय प्रधान समाज के रूप में प्रतिष्ठापित करने में सहायता की है।

(2) परिश्रमी, साहसी एवं जोखिम उठाने की प्रवृतिः-

इस समाज के लोग बड़े ही परिश्रमी, साहसी होते हैं। यदि कुछ प्राप्त होने की संभावना हो तो वे दिन रात एक कर देते हैं। सात-समुद्र पार भी व्यापार करने चले जायेंगे। अपनी इसी प्रवृति के कारण इतिहास के उस युग में जबकि यातायात के कोई साधन नहीं थे, यात्रा पैदल या बैलगाड़ियों द्वारा की जाती थी। एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचने में कभी-कभी महीनों लग जाते थे, पास में किसी प्रकार के साधन नहीं थे, जंगली और खूंखार जातियां, जलवायु बिल्कुल विपरीत, बीसों किलोमीटर तक पीने के लिए पानी नहीं, इस प्रकार की विषम, भयावनी

परिस्थितियों में इस समाज के साहसी, जाँबाज व्यापारी, एक लोटा, एक डोरी हाथ में लेकर व्यापार के लिए निकल पड़े और आसाम, बंगाल, बिहार, उड़ीसा, नागालेण्ड, मणिपुर, नेपाल, सिक्किम, भूटान, लंका आदि दुर्गम क्षेत्रों में अपना व्यवसाय जमाने में सफलता प्राप्त की।

(3) वित्तीय कुशाग्रता एवं व्यापार के रूख को पहचानने की क्षमता-

इस समाज में वित्तीय कुशाग्रता और व्यापार के रूख को पहचानने की अदभुत क्षमता होती है, जिसके कारण ये उद्योग-व्यवसाय में कभी मात नहीं खाते। जहां सरकारी उद्योग, सब प्रकार की सुविधाएं मिलने पर भी करोड़ों अरबों का घाटा देते हैं, इस समाज के उद्यमी सब प्रकार के राजनैतिक एवं प्रशासनिक अवरोधों के बीच भी अपना स्थान बनाने में सफल हो जाते हैं। स्वंतत्रता प्राप्ति के पश्चात् भ्रष्ट प्रशासन एवं नौकरशाही से लोहा लेकर उद्योगों की स्थापना कोई सरल कार्य नहीं था किंतु इस समाज ने स्वतंत्र भारत में बड़े उद्योगों की स्थापना कर उसे वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित करने में जो महान योगदान दिया है, उससे उसकी अनुपम क्षमता प्रकट होती है।

(4) नवीन सोच, नई शैली और गतिशील दृष्टिकोण-

इस समाज के लोग बड़े ही गत्यात्मक होते हैं। नये युग की आवश्यकताओं को पहचानना, उनके अनुरूप अपने को ढ़ालना, नई-नई तकनीकों को अपनाना तथा उद्योग-व्यापार के क्षेत्र में हर समय नेतृत्व की भावना-उनकी कुछ ऐसी विशेषताएं है, जिनके कारण कभी गद्दियों एवं मसनदों पर बैठ कर छोटे-छोटे गाँवों-कस्बों में व्यापार चलाने वाले इस समाज के दुकानदार आज बड़े-बड़े कम्प्यूटर, इंटरनेट एवं आधुनिक संसाधनों से सुसज्जित शोरूमों, औद्योगिक प्रतिष्ठानों के मालिक हैं। आज उनके व्यवसाय का संचालन देश-विदेश के उच्च तकनीकी संस्थानों में प्रशिक्षित सीए, एम.बी.ए. कर रहे हैं। , जो उद्योग- व्यवसाय में नये नये क्षेत्रों में प्रवेश तथा विदेशी कम्पनियों के अधिग्रहण आदि द्वारा व्यापार को नये-नये क्षितिज प्रदान कर रहे है तथा उनके कारण व्यापार ने भी राष्ट्रीय के स्थान पर अन्तरराष्ट्रीय रूप धारण कर लिया है।

(5) महत्वाकांक्षी, दूरदृष्टा एवं आत्मविश्वास से परिपूर्ण -

ये बड़े ही दूरदृष्टि होते हैं। अब कौन से स्थान पर, किस उद्योग की स्थापना करना उचित रहेगा, इसकी उनको अद्भुत पहचान होती है। इस समाज के युवाओं में सदैव कुछ न कुछ नया कर दिखाने की ललक रहती है। इस कारण ये नये-नये उद्योग-व्यवसाय में प्रवेश कर अपनी अद्भुत प्रतिभा प्रदर्शित करते है। यही कारण है कि छोटे-छोटे कस्बों में पैदा होने वाले इस जाति के युवाओं ने आज देश ही नही, विदेशों में भी प्रबंधन, उद्योग-व्यवसाय, इंटरनेट, कम्प्यूटर इंजीनियरिगं, मीडिया, बैंकिग आदि में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है।

(6) व्यवहार कुशलता एवं उत्पादों की प्रामाणिकता-

इस समाज के लोगों की विशेषता उनकी व्यवहार कुशलता, शालीन व्यवहार और व्यापार में प्रामाणिकता है। अब भी इस विशेषता के कारण उनका व्यवसाय निरन्तर बढ़ता है। इस समाज के अनेक ऐसे औद्योगिक घराने हैं जो अपने उत्पादों की विश्वसनीयता के लिए विख्यात हैं और ग्राहक उन्हें ऊँचा मूल्य देकर भी खरीदने के लिए तत्पर रहते हैं।

अग्रोहा से निष्क्रमण और उद्योग-व्यवसाय की स्थापना

इतिहास साक्षी है कि भारत के वैश्य अग्रवाल 16 वीं शताब्दी से ही अग्रोहा -राजपूताना से निष्क्रमण कर देश के विभिन्न भागों में फैलने लगे थे और निरन्तर आगे बढते ही गए। 18 वीं-19 वीं शताब्दी तक तो अग्रवालों का

व्यापार पूरे देश में फैलने लगा था। इस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना के बाद रेल एवं संचार सुविधाओं का विस्तार होने पर तो इस समाज ने व्यापार-व्यवसाय में और भी प्रगति की तथा वे देश के दूर-दूर हिस्सों में फैल गये। कुछ मारवाड़ी अग्रवाल कोलकाता, असम बंगाल होते हुए ब्रह्मा तक पंहुच गए। उत्तरप्रदेश, दिल्ली, राजस्थान, हरियाणा (पंजाब) की मण्डियां अग्रवाल-वैश्य व्यापारियों से पट गई। कोलकाता का सुता पट्टी बाजार हो या मुंबई का कालकाजी मार्केट, सम्पूर्ण भारत के मुख्य बाजारों में अग्रवाल-वैश्य सेठों की पगड़ियां ही पगड़ियां दिखाई देने लगीं। अनाज, कपड़ा, जूट, चांदी, चाय- जिस व्यवसाय में भी उन्होंने हाथ लगाया, वही चरम सीमा पर पंहुच गया। यहां तक कि बैंकिंग, बीमा, सर्राफा जैसे व्यवसायों में भी इस समाज के लोगों का वर्चस्व दिखाई देने लगा। रामगढ़ के पोद्दारों, मध्य भारत के सेक्सरियों की गद्दियां दूर दूर तक फैल गई।

मुगलों ने भी मारवाड़ी अग्रवालों-वैश्य को अपने राज्यों में विशेष वरीयता दी। मुगलकाल में विशेष कर वित्त, मालखाने और राज्य कोष का प्रभार अग्रवालों-वैश्य को ही सौंपा जाता था।राजा लोग और मुगल शासक भी आवश्यकता पड़ने पर व्यापारियों से ऋण लेते थे। पुराने बही खातों से पता चलता है कि बीकानेर, चुरू के राजाओं ने मिर्जामल पोद्दार से ऋण लिया। कर्नल टॉड के अनुसार आजादी से पहले 520 मारवाड़ी फर्मों में 333 केवल अग्रवालों की ही थीं, जिनका मूल निवास स्थान शेखावाटी था। बिहार, असम और बंगाल के व्यापार में तो एक प्रकार से अग्रवालों का आधिपत्य हो गया था।

जगत सेठ और उनका वर्चस्व

मुगलों और अंग्रेजों के समय अनेक मारवाड़ी फर्मों का व्यवसाय इतना वर्चस्व था कि वे अपने जमाने के एक रॉकफेलर और फोर्ड थे तथा उनके बड़े-बड़े नवाबों तथा स्वयं इस्ट इण्डिया कम्पनी एवं डच तथा फ्रेंच कम्पनियों को उनसे ऋण लेना पड़ता था तथा उनका राज्य में इतना प्रभाव था कि उनके संकेतों पर मुगल सम्राट बनते और बिगड़ते थे।

इस प्रकार के व्यवसायियों में सेठ माणकचन्द, फतेहचन्द थे, जो नवाब सिराजुद्दोला के समय 17वीं शताब्दी में मुर्शिदाबाद में जाकर बस गए थे तथा उनका व्यापार हुंगटा, कोलकाता, वाराणसी और दूर-दूर तक फैला था। उनके पास इतनी अकूत सम्मान और वैभव था। देखते हुए सेठ माणकचंद के पुत्र फतेहचन्द को 1728 में नवाब द्वारा जगतसेठ की उपाधि प्रदान की गई, जिससे इस समाज के वैभव और व्यवसाय में आधिपत्य का अनुमान लगाया जा सकता है।

अंग्रेजी शासन काल में भी वह वर्चस्व बना रहा। अंग्रेज फर्मो ने भी अग्रवालों-वैश्य/मारवाडियों के मेहनती और व्यवसाय कुशल होने के कारण उन्हें ही अपनी बेनियनशिप का कार्यभार सौंपा। अंग्रेजो के समय इस समाज के सेठ जयनारायण स्नेहीराम, सेठ ताराचंद घनश्यामदास, सोजीराम हरदयाल, महानंद गनेड़ीवाले, मिर्जामल पोद्दार, सूरजमल नागरमल, सर हरिराम घनश्यामदास, बद्रीनाथ गोयन्का आदि ने व्यवसाय में अत्यंत प्रगति की और अनेक फर्मो की गद्दियां देश के दूर-दूर भागों में फैली थीं। अनेक अग्रवालों-वैश्य ने तो विभिन्न वस्तुओं के व्यापार में इतनी प्रगति कर ली थी कि वे अपने व्यवसाय के सम्राट गिने जाते थे। इसलिये सेठ हनुमानदास कनोई को टी-किंग, गोविन्दराम सेक्सरिया और रामनारायण रूइया को काटन किंग, मोतीलाल झुंझुनूवाला को सिल्वर किंग, बंशीधर जालान को जूटकिंग, बलदेवदास दूदवेवाला को शेयर किंग, आरपी गोयन्का को टेकओवर किंग के नाम से जाना जाता था। बैंकिंग में भी इस समाज को विशेष दक्षता प्राप्त थी और भारत के 10 में से 9 व्यापारी तथा बैंकर मारवाड़ी समाज के थे।

बैंकिग व्यवसाय

बैंकिंग व्यवसाय में इस समाज का योगदान इतना था कि प्रथम मारवाड़ी बैंक की स्थापना इस समाज के बलदेवदास दूदवेवाल और ओंकारमल सर्राफ ने की थी। रामनारायण रूइया का बैंक ऑफ इण्डिया की स्थापना में योगदान था। मुंबई में यूनियन बैंक की स्थापना भी इस समाज के व्यापारियों द्वारा की गई। सुप्रसिद्ध उद्योगपति रामकृष्ण डालमिया द्वारा युनाइटेड बैंक ऑफ इण्डिया तथा भारत बैंक की स्थापना की गई। लाला लाजपतराय पंजाब नेशनल बैंक के प्रवर्तकों से थे। बाद में यह बैंक भी डालमिया के नियन्त्रण में आ गया। हिंदुस्तान कमर्शियल बैंक की स्थापना में पद्मावत सिंघानिया तथा मंगतुराम जैपुरिया का विशेष योगदान रहा। मास्टर लक्ष्मीनारायण अग्रवाल ने वैश्य बैंक की स्थापना की।

उद्योग धंधों में प्रवेश और उनका विकास

यद्यपि प्रारम्भ में अग्रवाल-वैश्य समाज का झुकाव मुख्यत: व्यवसाय तक सीमित था, किंतु युग की मांग को देखते हुए उन्होंने उद्योग जगत में भी प्रवेश किया। उपस्थित साक्ष्यों से पता चलता है कि 1860 के आस-पास अग्रवाल मारवाड़ी वैश्यों ने अनेक मिलों की स्थापना कर ली थी और 1940-50 के दशक तक आते-आते अग्रवाल-वैश्य घरानों ने औद्योगिक जगत में प्रतिष्ठित स्थान बना लिया था। सुप्रसिद्ध औद्योगिक घराने जुग्गीलाल कमलापत सिंघानिया ने 1921 में सर्वप्रथम सूती वस्त्र मिल, 1926 में पोद्दारों ने कॉटन मिल, गूजरमल मोदी ने वनस्पति मिल, सूरजमल जालान ने 1928 ने जूट मिल सेठ बच्छराज जमनालाल बजाज ने शुगर मिल, रामकृष्ण डालमिया ने सीमेंट, पेपर, केमिकल, जैपुरिया ने स्वदेशी काटन मिल आदि की स्थापना कर ली थी और चाय, जूट, पटसन, सीमेंट, कागज, केमिकल, इंजीनियरिंग, चीनी आदि अनेक उद्योगों में इस समाज का प्रवेश हो गया था।

स्वतंत्र भारत की औद्योगिक प्रगति में योगदान

देश के स्वाधीन होने पर शताब्दियों की आर्थिक एवं राजनैतिक पराधीनता के पश्चात् क्षत-विक्षत भारत के आर्थिक पुनर्निर्माण का यक्ष प्रश्न देश के समक्ष उपस्थित था। साथ ही विदेशी कम्पनियों के रहते भारत की आर्थिक स्वायतता खतरे में थी। ऐसे समय में अग्रवाल वैश्य समुदाय ने अंग्रेजी कम्पनियों को खरीद कर भारत की आर्थिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त किया।

स्वंतत्र भारत में यद्यपि भ्रष्टाचार, लालफीताशाही, इंस्पेक्टरी राज, करों की अधिकता, पग-पग पर कानूनी रूकावटें आदि अनेकानेक बाधाएं थी। देश में उद्योग धंधो की स्थापना सहज कार्य नहीं था। फिर भी इस समाज ने देश के आर्थिक एवं औद्योगिक विकास में भूमिका निभाई। विदेशी उद्योगों का अधिग्रहण किया तथा विदेशों में भी नई नई इकाईयों की स्थापना की। अनेक ऐसी औद्योगिक इकाईयां थीं, जो सर्वप्रथम इस समाज के उद्योगपतियों द्वारा स्थापित की गई। इससे देश के औद्योगिक विकास को नई गति मिली।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश को सर्वाधिक करोड़पति देने का श्रेय भी इस समाज को मिला।

आठवें दशक के बाद जब देश में उदारीकरण, वैश्वीकरण, भूमण्डलीकरण का दौर चला और व्यापार-व्यवसाय में नई नई चुनौतियों उपस्थित होने लगीं, तो इस समाज के उद्योगपतियों ने उद्योगों में लगातार बढ़ती स्पर्धा एवं वैश्वीकरण की चुनौतियों का सामना करने के लिए उद्योगों में नई-नई तकनीकों का समावेश किया। नवीन युग तथा नये परिप्रेक्ष्य में इंजीनियरिंग, सॉफ्टवेयर, सूचना प्रौद्योगिकी, दूरसंचार (टेलीकॉम) आदि नये नये उद्यमों की स्थापना की, उदारीकरण का लाभ उठाते हुए विश्व में नई-नई औद्योगिक इकाईयों का लगाया। 2000 तक के आते

जाते तो इस समाज के औद्योगिक घरानों की गूंज पूरे भारत तथा विश्व तक व्याप्त हो गई। 21वीं शताब्दी के द्वितीय दशक में मोदी सरकार द्वारा प्रवर्तित सभी योजनाओं में इस समाज की महत्वपूर्ण भूमिका है।

भारत के उद्योगों में वर्चस्व

आज देश में शायद ही कोई ऐसा उद्योग हो, जिसमें इस समाज का प्रवेश या प्रभुत्व न हो। गैस, कोयला, पैट्रोलियम, जहाजरानी, इस्पात, इंजीनियरिंग, सूचना प्रौद्योगिकी, सॉफ्टवेयर, दूरसंचार, शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन, परिवहन, आधारभूत संरचना, वैज्ञानिकी, सीमेंट, रिटेल बाजार, विद्युत उत्पादन, ऊर्जा, रसायन, कृषि, खाद, बागवानी, ऑटो, औषधि निर्माण (फार्मास्युटिकल) तकनीक, दूरदर्शन प्रसारण आदि सभी क्षेत्रों में इस समाज के उद्योगपति नेतृत्व करते हुए प्रतीत होते हैं।

इस समाज के उद्योगपति एल.एन मितल पूरे विश्व में स्टीलकिंग, अनिल अग्रवाल (वेदान्ता) मेटलमेन, सुनील भारती मित्तल मोबाईलमेन, सुभाषचन्द्रा (जी.टी.वी) मनोरंजन एवं मीडिया जगत के बादशाह माने जाते हैं।

एस्सार वोडाफोन के शशि एवं रवि रुइया का तेल, गैस, खनन एवं मोबाईल में, बी.के. मोदी (स्पाइस मोबिलिटी) का दूरसंचार (टेलीकॉम) क्षेत्र में विशेष नाम है। रूइया समूह (एस्सार एनर्जी), ऊर्जा उत्पादन में भी विशेष स्थान रखता है। बिड़ला समूह का वस्त्र, जूट, सीमेंट, शिपिंग, मोटर,फिलामेंट आदि विभिन्न उद्योगों में महत्वपूर्ण स्थापना।

इसी प्रकार मीडिया क्षेत्र में शोभना भरतिया (हिन्दुस्तान समूह) इंदू जैन (टाइम्स ऑफ इण्डिया समूह), शेखर गुप्ता (इण्डियन एक्सप्रेस), रमेशचन्द्र अग्रवाल (भास्कर) का, फार्मास्युटिकल क्षेत्र में देशबंधु गुप्ता, अजय पीरामल, नंदिनी पीरामल, स्वास्थ्य के क्षेत्र में स्वाति पीरामल, ऑटो निर्माण क्षेत्र में राहुल बजाज, मधुर बजाज, विद्युत उपकरण निर्माण क्षेत्र में शिशिर बजाज, लाइटनिंग उद्योग में जयप्रकाश अग्रवाल (सूर्या), क्यामतराम गुप्ता, निजी विमानन सेवाओं में नरेश गोयल (जेट ऐयरवेज) चाय उद्योग में के.के. जाजोदिया तथा बी.एम. खेतान, पंखा निर्माण क्षेत्र में श्रीकृष्ण खेतान, वस्त्र उद्योग में रामप्रसाद पोद्दार, विजयपत सिंघानिया (रायमण्ड) सीमेंट उद्योग में सुरेशकुमार नेवटिया (अम्बुजा), रघुपति सिंघानिया, विनीता सिंघानिया, रीयल इस्टेट में हर्षवर्धन नेवटिया, सुरेन्द्र गुप्ता (गोल्ड शूक), एल्युमिनियम उद्योग में सीताराम जिंदल, अनिल अग्रवाल, आयरन उद्योग में ओ.पी जिन्दल, सज्जन जिंदल, ट्रेक्टर निर्माण में लक्ष्मणदास मित्तल (सोनालिका), परिवहन उद्योग में रमेशचंद्र अग्रवाल, प्रभुदयाल अग्रवाल, सत्यप्रकाश आर्य, कृष्ण कुमार अग्रवाल, कृषि क्षेत्र में बद्रीनारायण वारवाले, गैस पाइप निर्माण में बालकृष्ण गोयन्का (वेलस्पून), लक्जरी में अतुल-गायत्री रुइया, आभूषण उद्योग में बलराम गर्ग (पी.जे. ज्वेलर्स), डायमण्ड उद्योग में नीरव मोदी (गीताजंली) प्लाईवुड में सज्जन भजनका (किटप्लाई), सौंदर्य प्रसाधन एवं आयुर्वेदिक औषधि निर्माण में राधेश्याम गोयन्का एवं राधेश्याम अग्रवाल (इमामी-झण्डू),शिक्षा के क्षेत्र में पुरूषोतम अग्रवाल, शेयर उद्योग में राकेश झुंझनूवाला, होटल उद्योग में शिव लोहिया (हिन्द होटल्स), रंगरोगन (पेण्ट) निर्माण में अश्विनी डानी (एशियन पेण्टस), सुभाष गोयल (आकाशगंगा) आदि का नामोल्लेख ही पर्याप्त होगा।

प्रमुख औद्योगिक घराने

अग्रवाल समाज का देश के आर्थिक एवं औद्योगिक विकास में योगदान कितना है, इस बात का अनुमान देश के औद्योगिक घरानों और प्रमुख उद्योगपतियों की संख्या से लगाया जा सकता है।

आज देश के औद्यौगिक घरानों की सूची बनाई जाए तो उसमें इस समाज के घरानों की संख्या सर्वाधिक मिलेगी। इसके लिए इस समाज के मित्तल, जिंदल, बिड़ला, सोमानी, मोहता, बागड़, रूइया, गोयन्का, मोदी,

सिंघानिया, श्रीराम, जैपुरिया, जालान, मुरारका, डालमिया, मुरारका, कनोई, सुरेका, कानोड़िया, सांघी, चोखानी, रावलवासिया, डानी आदि का उल्लेख किया जा सकता है। । शायद ही भारत में ऐसा अन्य कोई समाज हो, जिसमे इतने अधिक औद्योगिक घराने हों । ये सभी घराने ऐसे हैं, जिनकी किसी न किसी उद्योग के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका है।

देश की अग्रणी कम्पनियां के सूत्रधार

अनेक नये उद्योगों की स्थापना कर तथा नई-नई कम्पनियों का अधिग्रहण कर भारत को आर्थिक एवं औद्योगिक दृष्टि से समृद्ध बनाने में इस समाज की कितनी महत्वपूर्ण भूमिका है, इस बात का अनुमान इसी से भी लगाया जा सकता है कि भारत की 60 प्रतिशत से अधिक अग्रणी कम्पनियों के सूत्रधार अग्रवाल-वैश्य हैं। यहां सांकेतिक रूप में इसी प्रकार की कुछ कम्पनियों के नामों का उल्लेख किया जा रहा है -

आर्सेलर मित्तल, भारती एयरटेल, एस्सार वोडाफोन, एस्सेल समूह, जी.टी.वी, फ्लिपकार्ट, वीडियोकॉन, हिण्डालको, हिन्दुस्तान एअर क्रॉफ्ट, जयश्री ग्रासिम, सेंचूरी, हिन्दुस्तान मोटर्स, सन फार्मास्युटिकल, इनोक्स, वेदान्ता रिसोर्सज, स्टर लाइट, सीएट, बजाज ऑटो, मोदीपान, फिलिप्स गोडफ्रे, डी.सी.एम., जेट ऐयरवेज, जे.एस. डब्ल्यू, जे.के. इण्डस्ट्रीज, निकोलस पीरामल, पीरामल हैल्थकेयर, ल्यूपिन, रेनबेक्सी, इमामी, मरकेटर टाइन्स, झंडू फार्मास्युटिकल्स, स्पाइस कम्युनिकेशन, फोनिक्स, वी.आई.पी., एशियन पेण्टस, जे.के. लक्ष्मी सीमेंट, अम्बुजा सीमेंट, रायमंड, जुबिलेंट आर्गेनाइसेंस, एवरेड़ी इण्डस्ट्रीज, जिलेट, मेक्लॉड एस्सेल, के.ई.आई, एस.आर. एफ, कास्मोफिल्म्स, इण्डोरामा सिंथेटिक्स, एशियन होटल्स, के.ई.सी. इन्टरनेशनल, विप्रो, एक्शन शूज, महेन्द्रा एण्ड महेन्द्रा, रेयर ऐन्टरप्राइजेज, इण्टरनेशनल ट्रेक्टर, लुसिड, ग्रीन प्लाई इण्डस्ट्रीज, बेनेट कोलमेन कं., ट्रांसपोर्ट कार्पोरेशन आफ इण्डिया, एस्सार एनर्जी, वेलस्पून, भास्कर, डी.एल.एफ., ओमेक्स, ओसीएल, पेनिनसुला,वूलवर्थ, ब्लेज फ्लेज कूरियर, आकाश गंगा कूरियर, टेक्नोक्राफ्ट, यूनिटेक, सियाराम सिंथेटिक्स, हल्दीराम इन्टरनेशनल, जी इन्टरनेशनल, भारत फोर्ज, खेतान पंखे, असम आयल, के. एस. आयल इन्डस्ट्रीज, एल एम एल , वरूण ब्रेवरीज, सूर्या रोशनी, पी.जे. ज्युवैर्ल्स, देवयानी इण्टरनेशनल, निप्पो बेट्रीज, भूषण स्टील, बजाज हिन्दुस्तान, विशाल रिटेलर, प्रकाश इण्डस्ट्रीज, पोरालिस सॉफ्टवेयर ,हैवल्स , आदि। इनके अलावा भी सैंकड़ों कम्पनियां ऐसी हैं, जिनकी विशेष साख है।

विदेशों में भी उद्योगों की स्थापना

उद्यमी व्यक्तियों के लिए देश-विदेश कोई भी पराया नहीं होता, इसलिये अग्र/वैश्य उद्योगपतियों ने देश की सीमाएं लांघ तथा विश्व के विभिन्न देशों में औद्योगिक इकाईयों की स्थापना कर भारत के गौरव को बढ़ाया तथा उसके आर्थिक विकास को गति दी है। इस समाज के लक्ष्मी मित्तल, अनिल अग्रवाल, सुनील भारती मित्तल, रवि-शशि रूईया, बी.एम. मोदी, अशोक लोहिया, हर्ष गोयन्का, विनोद गुप्ता, सुभाषचन्द्र जैसे अनेक उद्योगपति हैं, जिन्होंने अमेरिका, ब्रिटेन, थाईलेण्ड, लंका, ब्रह्मा, नेपाल, सिंगापुर खाड़ी देशों, यूगांड़ा आदि में बड़ी-बड़ी इकाईयां स्थापित की हैं। इसके अलावा इन अग्र /वैश्य उद्योगपतियों द्वारा विदेशों में बड़ी-बड़ी कम्पनियों का अधिग्रहण कर अथवा वैश्विक कम्पनियों की सहभागिता में विभिन्न उद्योगों का सफलतापूर्वक संचालन किया जा रहा है और इनमें से कई कम्पनियां लंदन तथा न्यूयार्क के स्टाक एक्सचेंज में सूचीबद्ध हैं।

इनमें से कई उद्योगपतियों को विदेशों में चलने वाली घाटे की इकाईयों को मुनाफे वाली इकाइयों में बदलने तथा कम लागत में श्रेष्ठ इकाईयों की स्थापना का गौरव प्राप्त है।

विदेशी मुद्रा के अक्षय कोष

इसके अलावा अग्र/वैश्य/मारवाड़ी समाज के असंख्य युवा, सॉफ्टवेयर इंजीनियर, तकनीशियन, डाक्टर, प्रबंधन विशेषज्ञ (C.E.O.), वैज्ञानिक आदि विश्व के विभिन्न देशों में उच्च पदों पर कार्यरत हैं, जो भारत के विदेशी मुद्रा के सबसे बड़े स्रोत हैं।

भारत-भूमि से जुड़े होने के कारण ये अप्रवासी भारतीय अपनी अर्जित आय को प्राय: भारत में ही भिजवाते रहते हैं तथा यहां उद्योग-धंधों के संचालन में भी सहयोग करते हैं, जिससे भारत के विदेशी मुद्रा भण्डार की काफी सीमा तक पूर्ति होती है। इससे भारत को विदेशों से ऋण नहीं लेना पड़ता तथा देश की सुरक्षा में भी मदद मिलती है और उनके स्वागत में रेड कारपेट बिछती है।

राष्ट्र-विकास में महत्वपूर्ण योगदान

अग्रवाल/वैश्य समाज का विभिन्न प्रकार के प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष करों तथा देशी व विदेशी मुद्रा से भरने तथा उसकी जनकल्याणकारी योजनाओं के क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण योगदान है। आज भारत सरकार द्वारा राष्ट्र के सर्वांगीण विकास हेतु मेक इन इण्डिया, डिजीटल इण्डिया, स्वच्छता अभियान, कौशल विकास, कम्प्यूटर, इंटरनेट, मोबाईल, साईबर , सूचना तकनीक, अभियांत्रिकी, प्रौद्योगिकी आदि में आधुनिक तकनीक, ई. बिजनेस, इ लर्निंग, इ. बैंकिंग, इ. कॉमर्स, इ. बिजनेस, पेपरलैस इण्डिया, अंतरिक्ष अनुसंधान, उपग्रह प्रक्षेपण, जी.एस.टी. आदि जितनी भी योजनाएं चल रही है, उन सब में इस समाज की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका है और उसके कारण भारत प्रगति के नित-नूतन क्षितिज छू रहा है। एक मोटे अनुमान के अनुसार देश को प्राप्त होने वाले राजस्व में 50 प्रतिशत से अधिक भागीदारी अकेले अग्र/वैश्य समाज की होती है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि इस समाज के युवा उद्योगपति राष्ट्र निर्माण तथा विकास में कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं?

भारत को सम्पन्न राष्ट्रों की पंक्ति में प्रतिष्ठापित करने में अग्रणी भूमिका

सम्पन्नता किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सबसे बड़ा पैमाना होती है और उससे देश को सम्मान में वृद्धि होती है। आज दुनिया में अमेरिका,चीन, जापान, ब्रिटेन, फ्रांस आदि देश इसलिए अग्रणी माने जाते हैं क्योंकि वे आर्थिक दृष्टि से उन्नत हैं।

एक समय था भारत की गणना विश्व के सर्वाधिक अल्पविकसित देशों में होती थी।

किंतु सौभाग्य की बात है कि आज भारत की गणना विश्व की तीन सबसे बड़ी आर्थिक व्यवस्थाओं में होने लगी है। अमेरिका, रूस, ब्रिटेन जैसी महाशक्तियां भारत से आर्थिक सम्बन्ध बढ़ाने के लिए आतुर है तथा भारत की बढ़ती हुई इस शक्ति को देख कर विश्व के अर्थशास्त्रियों द्वारा आशा व्यक्त की जा रही है कि 2022 तक भारत का नाम विश्व की सबसे तेजी से विकास करने वाली अर्थव्यवस्थाओं की सूची में प्रथम स्थान पर होगा और वह पुन: सोने की चिड़िया बन विश्व में अपनी यशोपताका फहरायेगा। क्योंकि अब भारत विदेशों से ऋण लेता ही नहीं, देता भी है। भारत की आर्थिक साख भी तेजी से विश्व में बढ़ती जा रही है। भारत में अरबपतियों (Billionairs) की संख्या भी तेजी से बढ़ती जा रही है और उसमे अग्रवालों का सर्वाधिक योगदान है।

इसी समाज के लक्ष्मी मित्तल ने पूरी दुनिया के धनाढ़यों की सूची में अग्रणी बिल गेट्स और बारेन बाफेट जैसे दिग्गजों की श्रृंखला मे तीसरा स्थान बना कर तथा एशिया और यूरोप के सर्वाधिक धनाढ़यों (अरबपतियो) में निरन्तर सात वर्ष तक प्रथम बने रह कर दुनिया भर में भारत के वैभव का परचम फहराया है।

इस समाज की महिला उद्योगपतियों ने भी विश्व की धनाढ्य महिलओं में विशेष स्थान बनाया है।

यदि हम भारत के अरबपतियों (Billionairs) की सूची लें तो उसमें 30 से 40 प्रतिशत नाम अकेले अग्रवाल / वैश्यों के मिल जायेंगे।

नि:संदेह भारत के वैभव को बढ़ाने में अग्रवालों / वैश्यों का योगदान विशेष है।

राष्ट्र गौरव के प्रतीक

भारत के अग्र उद्योगपति राष्ट्र के गौरव हैं। उन्हें पद्मविभूषण, पद्मभूषण, पद्मश्री जैसे उच्च राष्ट्रीय अलंकरण प्राप्त करने का गौरव प्राप्त है। इसी प्रकार अनेक अग्र/ वैश्यों उद्योगपति ऐसे हैं, जिन पर डाक टिकट का प्रकाशन कर भारतीय सरकार ने उन्हें विशेष मान्यता प्रदान की है। इस समाज के लक्ष्मी मित्तल, सुनील भारती मित्तल, डॉ. स्वराजपॉल, राहुल बजाज, हरिशंकर सिंघानिया, शेखर गुप्ता, शोभना भरतिया, इंदू जैन, हर्षवर्धन नेवटिया, सुरेश कुमार नेवटिया, रायबहादुर गूजरमल मोदी, साहू श्रेयांसप्रसाद जैन, प्रभुदयाल भोड़ूका, देवीसहाय जिंदल, घनश्याम दास गोयल, मंगतुराम जैपुरिया, डा. भरतराम , बद्रीनारायण बारवाले, सेठ किशनदास, मामराज अग्रवाल, केशवप्रसाद गोयन्का, डा. स्वाति पीरामल, सत्यनारायण गुप्ता, कमलापत सिंघानिया, पद्मावत सिंघानिया, लक्ष्मीपत सिंघानिया आदि ऐसे ही उद्योग क्षेत्र के कुछ विशिष्ट व्यक्तित्व हैं, जिन्हें भारत सरकार द्वारा अपनी उत्कृष्ट राष्ट्र सेवाओं के लिए विविध अलंकरणों एवं डाक टिकट से सम्मानित होने का गौरव प्राप्त हुआ है।

किसी भी अकेले समाज के इतने उद्योगपतियों का राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान और वह भी आज के युग में, कम गौरव की बात नहीं है।

इसके अलावा इस समाज के अनेक उद्योगपति ऐसे हैं, जिन्हें राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न उच्च पदों पर आसीन होकर राष्ट्र का गौरव बढ़ाने का श्रेय प्राप्त है।

इसी समाज के विमल जालान हैं, जिन्होंने रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया के गवर्नर एवं विश्व बैंक में अधिशाषी निदेशक बनने का गौरव प्राप्त हुआ है। इसी प्रकार इस समाज के नारायण बंसल, बैंक आफ वेल्थ के प्रमुख, धीरज बजाज, इण्डियन मर्चेण्टस चेम्बर तथा सज्जन जिंदल, एस्सोचेम के अध्यक्ष, स्वाति पीरामल भारतीय उद्योग एवं वाणिज्य परिसंघ की अध्यक्षा, विनय मित्तल, रेल्वे बोर्ड के चेयरमेन, वी.पी. अग्रवाल, एयरपोर्ट अथोरिटी ऑफ इण्डिया के चेयरमेन , के.सी. मित्तल, स्टील अथारिटी ऑफ इण्डिया के चेयरमेन, हरिशंकर सिंघानिया उद्योग एवं वाणिज्य विश्व संगठन के अध्यक्ष, आर.पी. गोयन्का, अन्तरराष्ट्रीय प्रबन्धन संस्थान के अध्यक्ष, साहू शान्तिप्रसाद जैन आदि पदों को सुशोभित कर चुके हैं, जो उनकी विशिष्ट प्रतिभा का द्योतक है।

इसके अलावा देश के अनेक नगरों, उपनगरों, उद्यानों, पार्कों, सार्वजनिक स्थानों का नामकरण उनके नाम पर हुआ है जैसे मोदीनगर, मोदीपुरम्, डालमियानगर (जसीडीह विहार)अग्रवाल नगर, लाजपतनगर, अग्रसेन नगर आदि, जो उनकी विशिष्टता का परिचायक है।

भारत की आर्थिक प्रगति के सच्चे सूत्रधार

अत: नि:संदेह कहा जा सकता है कि भारत की आर्थिक प्रगति, विकास तथा उसकी समृद्धि में अग्र/वैश्य समाज की भूमिका अग्रणी है और वे भारत की प्रगति के सच्चे पहरूआ और सूत्रधार हैं। लोकोपकारिता के क्षेत्र में भी उनके सानी नहीं।

उद्योग जगत की विशिष्ट अग्र/ वैश्य विभूतियां

(विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्य अलंकरणों से सम्मानित)

सेठ घनश्याम दास बिड़ला

भारतीय उद्योग जगत की महान विभूति, परम राष्ट्रभक्त, दानवीर तथा गांधी जी के परम सहयोगी

सुप्रसिद्ध बिड़ला औद्योगिक साम्राज्य के संस्थापक वस्त्र, जूट, सीमेंट, शिपिंग, मोटर, फिलामेंट तथा केशोराम कॉटन मिल्स, दी न्यू स्वदेशी मिल्स, भारत शुगर मिल्स, ओरयंट पेपर मिल, ग्रासिम, सेंचुरी, हिंडालको, हिन्दुस्तान मोटर्स, जयश्री बिड़ला काटन स्पिनिंग आदि अनेक मिलों की स्थापना।

गांधी जी के परम सहयोगी तथा स्वतंत्रता आंदोलन में भाग। हरिजनोद्धार आदि में प्रचुर सहयोग। गांधी जी जब दिल्ली आते थे, तो वे प्राय: बिड़ला हाउस में ही ठहरते थे। बिड़ला मन्दिर में ही अन्तिम सांस ली।

सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैकि, वैज्ञानिक, कला सभी क्षेत्रों में प्रचुर सहयोग।

देश विदेश में बिड़ला इन्स्टीटयूट ऑफ टेक्नोलॉजी एण्ड सांइस, सेंट्रल इंजीनियरिंग रिसर्च इन्स्टीट्यूट, बिड़ला प्रौद्योगिकी एवं शोध संस्थान, बिड़ला इन्स्टीटयूट ऑफ टेक्नोलॉजी, रांची आदि अनेकानेक संस्थानों की स्थापना, वेंकटेश्वर कला स्थापत्य केन्द्र की स्थापना में भी सहयोग। नालंदा एवं तक्षशिला की तरह पिलानी भारत का प्रमुख शिक्षा केन्द्र। 1952 में युनाइटेड कमर्शियल बैंक की स्थापना।

महान दानवीर, धर्मपरायण एवं सेवाभावी।

दिल्ली, जयपुर, भोपाल, रायपुर, मथुरा, काशी तथा देश विदेश आदि में अनेक विशाल राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त लक्ष्मीनारायण मन्दिरों, धर्मशालाओं, बौद्ध स्तूपों आदि का निर्माण। काशी विश्वनाथ मंदिर, सोमनाथ मंदिर के निर्माण एवं जीर्णोद्धार में सहायता।

राष्ट्रीय कार्यो में मुक्तहस्त से सहयोग। मारवाड़ी समाज के अग्रणी व्यक्तित्व तथा समाज सुधारक। इन दी शेड़ो ऑफ गांधी आदि विख्यात पुस्तकों के लेखक।

अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर भारत के सर्वाधिक लोकप्रिय लक्ष्मीपुत्रों में गणना। बसन्तकुमार बिड़ला, आदित्य विक्रम बिड़ला, के.के. बिड़ला, कुमार मंगलम बिड़ला, सरला बिड़ला, राजश्री बिड़ला जैसे सुसम्पन्न परिवार के गौरव।

भारत सरकार द्वारा आपकी स्मृति में 1984 में डाक टिकट जारी तथा पद्मविभूषण सम्मान से सम्मानित, भारत के गौरव के प्रतीक। लंदन में 1983 में निधन।

बालचंद हीराचंद

भारत के सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं औद्योगीकरण के सूत्रधार। भारत में एअरक्राफ्ट, जलयानों (शिपयार्ड) तथा अनेक उद्योगों के जनक। हिन्दुस्तान एअरक्राफ्ट, प्रिमियर ऑटोमोबाईल, कूपर आदि अनेक कम्पनियों की स्थापना। विभिन्न बांधों का निर्माण। 1939 में भारतीय मोटर उद्योग तथा 1945 में प्रीमियर आटोमोबाइल की स्थापना। विशाखापट्नम में जलपोत निर्माण उद्योग प्रारम्भ। भारत सरकार द्वारा पद्मविभूषण से सम्मानित।

रामगोपाल मोहता

सुप्रसिद्ध उद्योगपति, समाजसेवी एवं दानवीर। माहेश्वरी समाज के अग्रणी व्यक्तित्व।

गजाधर सोमानी

सुप्रसिद्ध उद्योगपति, देशभक्त, समाजसेवी। विधायक एवं सांसद भी रहे। विश्व हिन्दू परिषद् के कार्यवाहक अध्यक्ष। धार्मिक जगत की महान विभूति एवं अनेक शैक्षणिक, धार्मिक एवं औद्योगिक संस्थानों की स्थापना।

सेठ सरूपचंद हुक्मचंद जैन

सुप्रसिद्ध सेठ तथा उद्योगपति सर सेठ स्वरूपचंद हुक्मचंद के नाम से रूई का व्यवसाय। इन्दौर में मालवा मिल, हुक्मचंद मिल, कोलकाता में विशाल जूट मिल तथा स्टील फैक्टरी आदि की स्थापना। हुक्मचंद जूट मिल भारत की पहली मिल तथा सेठ हुक्मचंद भारत के पहले उद्योगपति थे, जिन्होंने इस क्षेत्र में प्रवेश कर अंग्रेजों के एकाधिकार को समाप्त किया। विश्व की जूट मिलों में इसका प्रमुख स्थान था।

सेठ हुक्मचंद इंश्योरेंस क. के नाम से बीमा उद्योग की स्थापना।

औद्योगिक जगत में सफलता के साथ सार्वजनिक क्षेत्र एवं लोकोपकारिता के क्षेत्र में भी विशेष प्रतिमान। इंदौर में दिगम्बर जैन मंदिर एवं अनेकानेक संस्थाओं का निर्माण।

सेठ रामनारायण रूइया

भारत के सुप्रसिद्ध उद्योगपति। रूई के व्यापार में राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त। मुम्बई के चेम्बर ऑफ कामर्स, बैंक ऑफ इण्डिया, न्यू इण्डिया इंश्योरेंस कं. आदि अनेकानेक प्रतिष्ठानों की स्थापना। रामगढ़ तथा अन्य क्षेत्रों में लाखों की लागत से शिक्षण संस्थानों एवं अन्य सामाजिक स्थानों की स्थापना।

सेठ सूरजमल जालान

मारवाड़ी समाज के सुप्रसिद्ध उद्योगपित।

सूरजमल नागरमल के नाम से जूट का व्यवसाय तथा हनुमान जूट मिल की स्थापना। अमेरिका, बेल्जियम, आस्ट्रेलिया जैसे देशों में जूट पायोनियर के नाम से ख्यात। बाद में चीनी एवं अन्य उद्योगों का संचालन।

महान दानवीर तथा कोलकाता, रतनगढ़ एवं अन्य स्थानों में प्रचुर मात्रा में विद्यालयों , महाविद्यालयों, मंदिरों, हस्पताल, पार्क, पुस्तकालयों, सेनीटोरियम तथा वाराणसी में धर्मशाला, हरिद्वार में पुल आदि का निर्माण।

सेठ गोविन्दराम सेक्सरिया

भारत के व्यावसायिक एवं औद्योगिक क्षेत्र के महान व्यक्तित्व , रूई व वस्त्र, चीनी, तेल, फिल्म, वनस्पति आदि अनेक उद्योगों में सिद्धहस्त।

श्री गोविन्दराम सेक्सरिया तकनीकी संस्थान ,योग केन्द्र वैदिक शोध संस्थान, आयुर्वेदिक चिकित्सालयों आदि अनेक संस्थाओं का निर्माण तथा हेम स्थित अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय में महात्मा गांधी की भव्य प्रतिमा की स्थापना।

डॉ. सर पद्मावत सिंघानिया

सुप्रसिद्ध उद्योगपति कमलापत सिंघानिया के सुपुत्र एवं जे.के. घराने के अग्रणी व्यक्तित्व। भारत में जूट, नाईलोन, सीमेंट, कागज, टायर, स्टील, पावर आदि उद्योगों की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका। रायमण्ड वूलन मिल के प्रबन्धक एवं निर्देशक। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय उद्योगों को नई दिशा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका। उद्योगपति होने के साथ-साथ महान देशभक्त भी। साधारण दूरदर्शी, शिक्षाप्रेमी एवं दानवीर। 1937-38 में विधानसभा और बाद में भारत की संविधान सभा के सदस्य। 1943 में "सर" की उपाधि से सम्मानित। सार्वजनिक क्षेत्र में अनेक बड़े-बड़े शिक्षण संस्थानों, हस्पतालों, मन्दिरों तथा जे.के. इन्स्टीट्यूट ऑफ रेडियोलोजी, केंसर रिसर्च, कमलापति सिंघानिया हॉस्पिटल आदि की स्थापना। आप द्वारा निर्मित श्री राधा-कृष्ण एवं द्वारिकाधीश मन्दिर उत्कृष्ट स्थापत्यकला के प्रतीक। आपकी स्मृति में सर पद्मावत सिंघानिया विश्वविद्यालय की स्थापना, जो ज्ञान-विज्ञान का अन्तरराष्ट्रीय स्तर का शिक्षण केन्द्र है। आपकी स्मृति में डाकतार विभाग द्वारा 15 नवम्बर 2010 को पाँच रूपयें का डाक टिकट जारी किया गया।

कमलापत सिंघानिया

सुप्रसिद्ध औद्योगिक जे. के. उद्योग समूह के भीष्म पितामह। सर पद्मावत सिंहानिया के पिताश्री। अनेक उद्योगों के जनक। कल्याणकारी उद्योगों की स्थापना में विशेष रूचि तथा व्यावसायिक उत्कृष्टता की विरासत, सामाजिक, शैक्षणिक एवं खेलकूद गतिविधियों के प्रोत्साहन क्षेत्र में भी अग्रणी। आपके नाम पर कानपुर में कमलापति सिंघानिया मेमोरियल हॉस्पिटल, कमलापत सिंघानिया इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिसन आदि अनेक संस्थाओं की स्थापना। आपकी 125वीं जयन्ती पर राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल द्वारा पाँच रूपये के डाक टिकट का विमोचन।

लक्ष्मीपत सिंघानिया

भारत के सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं जे.के. समूह के संस्थापकों में एक। भारत में सर्वप्रथम अनेक नवीन उद्योगों एवं उत्पादनों की श्रृखंला प्रारम्भ करने का श्रेय। 1950 में भारतीय उद्योग जगत को नवीन ऊँचाइयां प्रदान। अनेक व्यावसायिक, औद्योगिक, शैक्षणिक, शोध एवं तकनीकी संस्थानों की स्थापना तथा उनसे सम्बद्ध। समाजोत्थान की दिशा में भी उल्लेखनीय कार्य। भारतीय डाकतार विभाग द्वारा 15 नवम्बर 2010 को आपकी स्मृति में पाँच रूपये का डाक टिकट जारी तथा जे.के. समूह द्वारा लक्ष्मीपत सिंघानिया हृदय रोग संस्थान की स्थापना।

पद्मभूषण गौरहरि सिंघानिया

जे.के. आर्गेनाइजेशन, जे.के. सीमेंट लि. आदि अनेक सुप्रसिद्ध औद्योगिक संस्थानों के अध्यक्ष। औद्योगिक एवं खेलकूद गतिविधियों को विशेष प्रोत्साहन। 2003 में पद्मभूषण अलंकरण से सम्मानित।

पद्मभूषण सेठ गूजरमल मोदी

महान उद्योगपति एवं दान सेवा के आदर्श

भारत के सुप्रसिद्ध "मोदी समूह" के संस्थापक, मानव सेवा की प्रतिमूर्ति। आप जब मात्र सात दिन के थे,

आपकी माता का निधन हो गया तथा आपका पालन-पोषण एक गूजरीधाय से होने के कारण आपका नाम गूजरमल पड़ा। आपके पिता मुलतानीमल सेना को राशन पहुंचाने (मोदी खाने) का काम करते थे, इसलिये आपका बंक मोदी प्रसिद्ध हुआ।

आप बचपन से ही प्रतिभाशाली। बचपन में ही आपने साबुन, वस्त्र, पेंट, गैस, केमिकल, रेयन, सिल्क, हौजरी आदि अनेक उद्योगों की स्थापना की। मोदीनगर, मोदीपुरम आदि की स्थापना में भी आपका योगदान रहा। आपकी विशिष्ट योग्यता को देखते हुए आपको फेडरेशन ऑफ इण्डियन चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इण्डस्ट्री का अध्यक्ष चुना गया तथा 1942 में आपको रायबहादुर की उपाधि से सम्मानित किया गया।

आप महान दानवीर, शिक्षाप्रेमी एंव राष्ट्रभक्त थे। उन्होंने अपने जन्मस्थान महेन्द्रगढ़, मोदीनगर, मेरठ आदि में अनेक शिक्षण संस्थाओं, मंदिरों, प्रशिक्षण केन्द्रों चिकित्सालयों, विद्यालयों, महाविद्यालयों, धर्मशालाओं आदि की स्थापना की। मोदीनगर में भव्य लक्ष्मीनारायण मंदिर बनाया। काशी में हिन्दू विश्वविद्यालय तथा अन्य शिक्षण संस्थानों को प्रचुर मात्रा में सहयोग दिया। आपका वैज्ञानिक शोध एवं विकास में भी पर्याप्त रूचि रही। इस हेतु आपने लाखों रूपयों की राशि से मोदीनगर में मोदी साईस फाउण्डेशन की स्थापना की। इसके अलावा अंधतानिवारण एवं नेत्र रोगों की रोकथाम के लिए आपने आई हॉस्पिटल एवं आफ्थामेटिक शोध संस्थान की स्थापना की।

आपके पुत्र के. के. मोदी, भूपेन्द्र कुमार मोदी आदि हैं, जो भारतीय उद्योगजगत की नामी हस्तियां हैं और मोदीपान, गॉडफ्रे फिलिप्स आदि बड़े-बड़े उद्योगसमूहों का संचालन कर रहे हैं। आपकी पत्नी दयावती मोदी का भी समाज सेवा के कार्यो में विशेष योगदान रहा।

उद्योगजगत में विशिष्ट सेवाओं को देखते हुए भारत सरकार ने 1967 में आपको **"पद्मभूषण"** से सम्मानित किया। 22 जनवरी 1976 को औद्योगिक जगत् की इस महान हस्ती का निधन हो गया।

"पद्मभूषण" केशवप्रसाद गोयन्का

इम्पीरियल बैंक के प्रथम भारतीय अध्यक्ष।

आपसे ब्रिटिश सरकार ने प्रसन्न होकर "सर" की उपाधि प्रदान की। आप इम्पीरियल बैंक (वर्तमान स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया) में नियुक्त होने वाले प्रथम भारतीय अध्यक्ष भी थे।

आपकी गणना भारत के महान उद्योगपतियों में होती थी।

आर.जी. ग्रुप के चेयरमेन रामप्रसाद गोयन्का आपके ही पुत्र थे, जो फिलिप्स कार्बन, सीएट टायर, हरिसन मलयालम आदि विभिन्न कम्पनियों का संचालन करती है।

केशवप्रसाद गोयन्का के उद्योग-व्यवसाय में विशिष्ट योगदान को देखते हुए भारत सरकार ने उन्हें 1969 में "पद्मभूषण" से सम्मानित किया।

"पद्मभूषण" श्रेयांसप्रसाद जैन

जैन धर्म के सशक्त स्तंभ एवं स्वतन्त्रता सेनानी।

भारत के महान उद्योगपति। फेडरेशन ऑफ इण्डियन चेम्बर्स ऑफ कामॅर्स एंड इण्डस्ट्री, भारतीय दिगम्बर जैन परिषद्, भारतीय ज्ञानपीठ, भारत जैन महामण्डल आदि अनेक संगठनों के पूर्व अध्यक्ष तथा ट्रस्टों के संस्थापक।

भारतीय ज्ञानपीठ के अनेक उच्चकोटि के ग्रन्थों का प्रकाशन।

1952 से 1958 तक राज्यसभा के सांसद, महाराष्ट्र के जस्टिस ऑफ पीस।

जैन समाज के प्रति उत्कृष्ट सेवाओं लिए श्रावकशिरोमणि उपाधि से सम्मानित।

वर्ष 1988 में "पद्मभूषण" अलंकरण।

पद्मश्री देवीसहाय जिंदल

भारत के सुप्रसिद्ध उद्योगपति ओ. पी. जिंदल के अग्रज एवं जिंदल लोह उद्योग समूह के संस्थापक। उद्योगपति होने के साथ-साथ महान दानवीर, उदारमना और समाजसेवी। सामाजिक, चिकित्सा एवं शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवा। एन. सी. जिंदल चेरिटेबल एवं अन्य ट्रस्टों के माध्यम से हिसार में करोड़ों रूपयों की लागत से जिंदल विद्यालय, जिंदल आई हास्पिटल, डिस्पेंसरी तथा पंजाबी बाग, दिल्ली में आधुनिक विद्यालय की स्थापना। हरियाणा के औद्योगिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका। आधुनिक हरियाणा के गौरव। 1971 में "पद्मश्री" से सम्मानित।

पद्मश्री प्रभुदयाल डावड़ीवाला (अग्रवाल)

भारत में परिवहन (ट्रासंपोर्ट) व्यवसाय के अग्रणी समूह ट्रांसपोर्ट कॉरपोरेशन ऑफ इण्डिया (टी. सी. आई.) के संस्थापक तथा ए. बी. सी. इण्डिया, भोरूका एल्युमिनियम, भोरूका टेक्सटाइल आदि अनेकानेक कम्पनियों के संचालक। परिवहन उद्योग को नई दिशा तथा ग्रामीण विकास एवं जनकल्याण के क्षेत्र में विशेष योगदान।

पद्मश्री घनश्यामदास गोयल

सुप्रसिद्ध ट्रांसपोर्टर एवं दानवीर।

ट्रांसपोर्ट व्यवसाय के अग्रणी उद्योगपति, महान दानवीर एवं समाज सेवी। एयर ट्रांसपोर्ट कॉरपोरेशन, साउथ इस्टर्न रोडवेज, रोडवेज ट्रांसपोर्ट कॉरपोरेशन आदि के संस्थापक।

अग्रोहा के महाराजा अग्रसेन मेडिकल कॉलेज एवं हास्पिटल के निर्माण में विशिष्ट भूमिका। 1970 में "पद्मश्री" अलंकरण।

डा. आर.एम. अलगप्प चेट्टियार

प्रमुख उद्योगपति, पायलट का प्रशिक्षण प्राप्त, ब्रिटिश सरकार द्वारा 37 वर्ष की अवस्था में नाईट की उपाधि से सम्मानित। भारत की स्वतंत्रता के बाद उपाधिका त्याग। निजी एयरलांइन , अलगप्प प्रौद्योगिकी कॉलेज एवं अनेक उद्योगों की स्थापना। 26 जनवरी 1956 को भारत सरकार द्वारा पद्मभूषण अलंकरण से सम्मानित।

स्मृति में डाक टिकट प्रकाशित।

ए.एम.एम. मुरूगप्पा चेट्टियार

देश के अग्रणी उद्योगपति एवं समाज सेवी। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात राष्ट्र के आर्थिक एवं आग्द्योगिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान। हल्के मंझले उद्योगों की स्थापना हेतु ट्यूट इन्वेस्टमेंट इण्डिया की स्थापना। दक्षिण भारतीय चेम्बर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष। समाजसेवा के लिए अनेक संस्थाओं की स्थापना।

भारत सरकार द्वार डाक टिकट प्रकाशित।

डा. सर मुतैया चेट्टियार

नाटुकोटे नारात समुदाय के प्रमुख सदस्य। सुप्रसिद्ध उद्योगपति, राजनीतिक एवं शिक्षाविद। दक्षिण भारतीय उद्योगमण्डल का 50 वर्षों तक प्रतिनिधित्व तथा 1941 में अध्यक्ष। 1943 में भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग मण्डल महासंघ (फिक्की) के अध्यक्ष।

इम्पीरियल बैंक ऑफ इण्डिया (स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया) और इण्डियन बैंक से सम्बद्ध।

जस्टिस पार्टी के मुख्य सचेतक एवं विधानसभा अध्यक्ष। 1936 में मंत्री। 1939 में विपक्ष के नेता तथा 1946 में संविधान सभा के सदस्य।

मद्रास विश्वविद्यालय के प्रो.चांसलर। चेट्टियार में अन्नतमल पॉलीटेक्निक की स्थापना।

नाईट की उपाधि से सम्मानित।

भारत सरकार द्वारा स्मृति में डाक टिकट का प्रकाशन।

पद्मश्री हनुमानबक्स कनोई

आधुनिक असम की कामधेनु। असम में चाय उद्योग के सबसे बड़े उद्योगपति तथा टी किंग।

शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु भारत सरकार द्वारा "पद्मश्री" से 1965 में सम्मानित।

कृषि उद्योग क्षेत्र में क्रांति के ध्वजवाहक

"पद्मभूषण" बद्रीनारायण बारवाले (अग्रवाल)

महाराष्ट्र ही नहीं, भारतीय कृषि क्षेत्र के विशिष्ट व्यक्तित्व। संकरित बीज प्रक्रिया को उन्नत एवं विकसित करके नये-नये बीजों के उत्पादन के लिए अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित तथा विश्व में भारत का नाम गौरवान्वित। 1959 से नये-नये बीजों का उत्पादन। भारत में बीज उद्योग के जनक।

कृषि क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए 1998 में अमेरिका के अढ़ाई लाख डॉलर के सर्वाधिक प्रतिष्ठित पुरस्कार "द वर्ल्ड फूड प्राइज" से सम्मानित। कृषि क्षेत्र में दिया जाने बाला सर्वोच्च सम्मान।

भारत सरकार द्वारा कृषि क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए 2001 में "पद्मभूषण" सम्मान। कृषि उद्योगरत्न एवं अन्य पुरस्कारों से भी सम्मानित।

पद्मश्री मामराज अग्रवाल

सुप्रसिद्ध उद्योगपति, समाजसेवी एंव दानवीर। सन् 2001 में मामराज अग्रवाल ट्रस्ट की स्थापना तथा स्वास्थ्य, चिकित्सा, शिक्षा आदि के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य।

सामाजिक सेवाओं के लिए राष्ट्रीय ज्ञानोदय, राष्ट्र सेवारत्न आदि सम्मान। भारत सरकार द्वारा 2011 में पद्मश्री सम्मान।

स्वतंत्र भारत की आर्थिक प्रगति के सूत्रधार

भारत के दूरसंचार क्रांति के जनक, मोबाइलमेन

पद्मभूषण - सुनील भारती मित्तल

भारत में दूरसंचार (टेलीकॉम) क्रांति के जनक तथा उसे देश के कोने कोने में पंहुचाने वाले सुनील भारती मित्तल आज पूरे विश्व में मोबाइलमेन के नाम से जाने जाते हैं। आप सुप्रसिद्ध सांसद सतपाल मित्तल के पुत्र हैं। 18 वर्ष की आयु में आपने अपने पिता से 20,000 रु. ऋण लेकर 1976 में साइकिल व्यवसाय प्रारम्भ किया तथा इस उद्योग से अपनी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति न होते देख 1981 में मुंबई प्रस्थान किया तथा भारत के सर्वप्रथम पुश बटन वाले टेलीफोन, फेक्स मशीनों, कोडलेस फोनों आदि का निर्माण प्रारम्भ किया।

इस उद्योग में मिली सफलता से प्रोत्साहित हो आपने भारती एयरटेल की स्थापना की और 1995 में सर्वप्रथम दिल्ली में मोबाइल सेवाओं का प्रारम्भ कर दूरसंचार क्षेत्र में नई क्रांति का सूत्रपात किया। शीघ्र ही आपकी कम्पनी मोबाइल सेवा प्रदान करने वाली भारत की सबसे बड़ी कम्पनी बन गई और उसके ग्राहकों की संख्या लाखों से बढ़कर करोड़ों में पंहुच गई। वर्तमान मे यह कम्पनी पूरे विश्व में कई मिलियन उपभोक्ताओं को अपनी सेवाएं प्रदान कर रही है। इसका विशाल आर्थिक साम्राज्य करोड़ों डालर में फैला है तथा आपकी गणना भारत के प्रमुख खरबपतियों मे होती है एवं विश्व के धनाढ़यों की सूची में भी आपका नाम है।

विशेषकर भारत के ग्रामीण क्षेत्र में सस्ते मूल्य पर टेलीकॉम सेवाएं प्रदान करने में आपकी विशेष भूमिका रही है और भारत के आर्थिक विकास को उससे गति मिली।

इसके बाद कम्पनी ने भारत से आगे बढ़कर बंगलादेश, दक्षिणी अफ्रीका सहित विश्व के विभिन्न देशों में भी अपनी सेवाओं का विस्तार किया और आपकी कम्पनी जी.एस.एम. आधारित फिक्सड लाइन, ब्रॉंड रिटेल इंटरनेट तथा डिश टी.वी. सेवा प्रदान करने वाले विश्व की अग्रणी कम्पनी बन गई।

बी.बी.सी. ने आपको उदारीकरण के दौर में सबसे सफल उद्योगपति की संज्ञा दी। आप विश्व के सर्वाधिक सफल अधिशाषी अधिकारियों (CEO) में एक ।

टेलीकॉम के अलावा आपका व्यवसाय रिटेल मार्केटिंग, जैविक कृषि, बीमा प्रबंधन, म्यूच्युल फण्ड, फ्रेश फूड, संगीत आदि विविध क्षेत्रों में फैला है। आपने सुप्रसिद्ध एक्सा कम्पनी की सहभागिता में भारती एक्सा लाइफ की स्थापना की, जो बीमा एवं म्यूच्युल फण्ड क्षेत्र की अग्रणी कम्पनी है।

आप उद्योग के साथ जैविक खेती, पशु संरक्षण, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं खेलकूद के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं। पर्यावरण की रक्षा तथा वृक्षारोपण में भी आपका विशेष योगदान।

आपकी महान सेवाओं और प्रतिभा को देखते हुए आपको आई.टी. मेन ऑफ द इयर, स्टार्स आफ एशिया, एशिया बिजनेसमेन ऑफ द इयर, भारत का उदीयमान युवा जैसे सम्बोधनों से सम्मानित किया गया है ।

सुप्रसिद्ध पत्रिका फोर्ब्स ने आपको स्वनिर्मित एशियाइयो की सूची में तीसरा स्थान प्रदान किया। भारत सरकार ने उद्योग जगत में आपकी महान सेवाओं को देखते हुए 2007 में राष्ट्र के सम्मानित अलंकरण '**पद्मभूषण**' से सम्मानित किया।

उद्योग एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आधुनिक भारत के निर्माता होने का गौरव प्राप्त ।

ऑटो क्षेत्र में अग्रणी व्यक्तित्व

पद्मभूषण - राहुल बजाज

ऑटो क्षेत्र की अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कम्पनी बजाज ऑटो के चेयरमेन एवं सुप्रसिद्ध गांधीवादी नेता जमनालाल बजाज के सुपौत्र। आपका दुपहिया , तिपहिया वाहनों , मोटरसाईकिलों, स्पोर्टस बाइक, कारों आदि के निर्माण के साथ ऑटोमोबाईल, शुगर, फाईबर, निवेश, घरेलु विद्युत उपकरणों, लौह-स्टील, बीमा, पर्यटन, वित्त आदि अनेक क्षेत्रों में व्यवसाय। आपकी बजाज हिन्दुस्तान शुगर का उत्पादन करने वाली एशिया की नं. 1 तथा विश्व की चौथी सबसे बड़ी कम्पनी है।

आपकी इकाईयां अकरड़ी, (पूने) बालूजा (ओरंगाबाद), पंतनगर (उत्तराखण्ड) आदि विभिन्न क्षेत्रों में इकाईयां फैली तथा आपको अल्ट्रा लो कॉस्ट कार निर्माण का श्रेय भी प्राप्त।

आपकी गणना भारत के अग्रणी धनकुबेरों तथा उद्योगपतियों में होती है ।

जमनालाल बजाज के परिवार से सम्बद्ध होने के कारण आपका समूह उच्च स्तरीय विश्वसनीयता, प्रामाणिकता एवं नैतिकता के लिए ख्यात। आपके पिता कमलनयन बजाज का यह कथन इस सम्बन्ध में दृष्टव्य है कि **'हमें चाहे कितनी भी हानि उठानी पड़े, हम ऐसा कोई कार्य नहीं करेंगे, जिससे राष्ट्रहित को ठेस पहुंचती हो।'** इसी परिवार के रामकृष्ण बजाज भी अपनी व्यावसायिक प्रामाणिकता के लिए प्रसिद्ध रहे हैं।

आप 2006 में राज्यसभा के सांसद भी चुने गये।

आपके परिवार के सदस्य शिशिर बजाज, शेखर बजाज, मधुर, नीरज, राजीव, सजीव, कुशाग्र बजाज आदि भी विविध उद्योगों का संचालन कर रहे हैं।

राहुल बजाज को 2001 में राष्ट्र के प्रतिष्ठित अलंकरण **पद्मभूषण** से सम्मानित होने का गौरव भी प्राप्त है।

विश्व में मेटल उद्योग के अग्रणी दिग्गज

अनिल अग्रवाल

मेन ऑफ मेटल, मेटल मैग्नेट जैसे अलंकरणों से सुशोभित, खनिज उत्पादन मे विश्व के अग्रणी और वेदान्ता रिसोर्सेज कॉर्पोरेशन के संस्थापक, चेयरमेन अनिल अग्रवाल ने पटना शहर में लोहे के कबाड़ जैसे सामान्य व्यवसाय से अपने व्यावसायिक जीवन की शुरूआत की। यद्यपि आपकी न तो आर्थिक स्थिति अच्छी थी और न ही आपकी शिक्षा विशेष थी (मेट्रिकुलेशन) फिर भी आपने अपने अध्यवसाय, प्रतिभा कौशल से धातु उत्पादन एवं खनन के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर अपने को प्रतिष्ठापित करने में सफल हुए, यह कम गौरव का विषय नहीं है।

आप लंदन स्थित अप्रवासी भारतीय हैं। आपने 1976 में उस समय स्टेरलाइट इण्डस्ट्रीज की स्थापना की, और अपनी उद्यमिता एवं साहसिकता के बल पर न केवल उसे आगे बढ़ाया अपितु 1986 में सुप्रसिद्ध वेदान्ता रिसोर्सेज की स्थापना कर उसे वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठा भी प्रदान की।

विश्व के चार सबसे बड़े धातु उत्पादकों में आपकी गणना होती है तथा टाइम मेग्जीन नें आपकी कम्पनी को पावर सप्लाई करने वाली विश्व की अग्रणी कम्पनियों में स्थान दिया है। ताम्बा, अल्युमिनियम, जस्ता, सीसा, सोना, चांदी आदि धातुओं के उत्पादन, खनन में आपका विशेष स्थान है। आर्मेनिया में आपकी सोने की खाने हैं। पावर (ऊर्जा) उत्पादन तथा टेलीकाम केवल निर्माण के क्षेत्र में आपका प्रवेश है।

वेदान्ता रिसोर्सेज के साथ आपकी स्टरलाइट इण्डस्ट्री, स्टरलाइट टेक्नोलॉजी, स्टरलाइट पेपर आदि 100

से अधिक कम्पनियां लंदन तथा न्यूयार्क एक्सचेंजों में सूचीबद्ध हैं। भारत में भारत एल्युमिनियम(BALCO), हिन्दुस्तान जिंक जैसे सुप्रतिष्ठित संस्थानों के संचालन में आपकी भागीदारी है तथा आप उनके कार्यकारी चेयरमेन भी हैं।

आपका नाम भारत के धनकुबेरों तथा सर्वाधिक सफल अधिशाषी अधिकारी (CEO) की सूची में आता है तथा आपको भारत के सबसे बड़े प्रत्यक्ष करदाता होने का श्रेय प्राप्त है।

एक उद्योगपति होने के साथ आप लोकोपकारिता तथा व्यावसायिक सामाजिक दायित्व (Corporate social responsibility)में विश्वास रखते हैं तथा उड़ीसा में विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ भारत के सैंकड़ों ग्रामों में शिक्षा तथा स्वच्छता के प्रचार-प्रसार तथा जीवन के सुधार के लिए कार्य कर रहे हैं। आपने छत्तीसगढ़ मे कैंसर हॉस्पिटल की स्थापना भी की है। आप पूर्णत: शाकाहारी है तथा लंदन के हरे कृष्ण मंदिर में जाते हैं।

श्री मोदी के स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत ग्रामों में शौचालयों के निर्माण हेतु 100 करोड़ प्रदान। 2014 में अपनी आय का पिचहतर प्रतिशत एक मुश्त प्रदान करने की घोषणा। भारत के दानदाताओं में विशेष स्थान।

सुप्रसिद्ध वोडाफोन एस्सार सेलफोन के चेयरमेन

- शशि एवं रवि रुइया -

दूरसंचार क्षेत्र की भारत की तीसरी बड़ी कम्पनी वोडाफोन एस्सार तथा एस्सार समूह के प्रवर्त्तक, चेयरमेन एवं प्रबन्ध निदेशक, जिन्होंने अल्पकाल में ही भारत के अग्रणी उद्योगपतियों एवं धन कुबेरों की सूची में स्थान बनाने में सफलता प्राप्त की।

आपने 1969 में एस्सार समूह की स्थापना कर पोर्ट निर्माण , शिपिंग का कार्य अपने हाथ में लिया। उसके बाद तो आप देश-विदेश में उद्योग -व्यवसाय के नये -नये क्षेत्रों में निरन्तर प्रवेश करते गए और आपने कभी मुड़ कर पीछे नहीं देखा।

आपके समूह की इकाईयां विश्व के अमेरिका, ब्रिटेन, यूरोप, अफ्रीका, मध्यपूर्व ,सिंगापुर,केनेड़ा, वियतनाम, टोबेगो, मारीशस, साइप्रस जैसे 14 देशों, भारत के विभिन्न प्रदेशों में फैली हुई हैं और जहाजरानी, खनन, पेट्रोलियम ऊर्जा उत्पादन (पावर), गैस, सूचना प्रौद्योगिकी, दूरसंचार (टेलीकम्यूनिकेशन), रिटेल मार्केटिंग, निर्माण (इन्फ्रास्ट्रक्चर) तेलशोधन (रिफायनरी), इंजीनियरिंग, फेब्रीकेशन आदि विभिन्न क्षेत्रों में अपनी पताका फहरा रही हैं। आपने अमेरिका तथा केनेडा जैसे देशों में विशाल स्टील इकाइयों का अधिग्रहण कर स्टील उत्पादन के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठा अर्जित की है।

एक विशिष्ट उपलब्धि भारत के दूरसंचार (टेलीकम्युनिकेशन) क्षेत्र की तीसरी सबसे बड़ी कम्पनी वोडाफोन एस्सार सेल्युलर का सफल संचालन। आपने वोडाफोन की सहभागिता में इस कम्पनी की स्थापना कर भारत के दूरसंचार क्षेत्र में क्रांति उत्पन्न की। 20 मिलियन से अधिक उपभोक्ताओं वाली यह जीएसएम आधारित दूरसंचार की अग्रणी कम्पनी है।

आपको भारत तथा विश्व के धनकुबेरों की फोर्ब्स सूची में प्रमुख स्थान प्राप्त है । तेल, गैस, रिफायनरी, पावर (ऊर्जा उत्पादन) निर्माण आदि क्षेत्रों में भी आपकी गहरी पैठ है। नए-नए उद्योगों की स्थापना कर भारत की अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करने , देश विदेश में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने में भी आपकी विशिष्ट भूमिका एस्सार इंटरनेशनल के चेयरमेन।

आपके पुत्र अंशुमान , रेवन्त तथा प्रशान्त रुइया भी अमेकिा, केनेडा, आस्ट्रेलिया आदि देशों में नई-नई इकाईयां और उद्योग स्थापित कर आपकी विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं।

ओ.पी. जिन्दल (जिन्दल समूह संस्थापक)

जिंदल समूह के प्रवर्तक तथा संस्थापक होने का आपको श्रेय प्राप्त है। शून्य से शिखर तक पँहुचने को प्रेरक गाथा।

3 अगस्त 1930 को हरियाणा के एक छोटे से गांव नलवा (हिसार) में श्री नेतराम के घर में जन्मे ओ.पी. जिन्दल पांच भाइयों - देवी सहाय जिन्दल भाविचन्द, सीताराम, जिन्दल, मदनलाल और ओमप्रकाश में सबसे छोटे थे और किसी विश्वविद्यालय से प्रबंन्धन की शिक्षा तो दूर, मैट्रिक की शिक्षा भी प्राप्त नहीं कर सके थे किन्तु अपनी व्यावसायिक सूझबूझ एवं लग्न से एक दिन भारत के चार बड़े स्टील उत्पादकों में से एक विशाल जिन्दल समूह के मालिक बन गए तथा प्रतिष्ठा अर्जित की।

आप 16 वर्ष की अवस्था में अपने भाइयों के व्यवसाय में हाथ बंटाने कोलकाता चले गये और एक दिन कार्यालय से लौटते समय पैर की ठोकर लगने पर लोहे की एक पाईप पर मेड इन इग्लेण्ड लिखा देखा तो आपके मन में तुरन्त विचार आया कि मेड इन इण्डिया क्यों नहीं? बस उसी समय से ही आपको भारत में स्टील पाईप बनाने का धुन लग गई और इसी संदर्भ में आपने 1957 में हिसार में लोहे की पाईप तथा बाल्टियां बनाने के लिए जिन्दल इण्डिया के नाम से कारखाना खोला तथा जिन्दल समूह की नींव रखी। बस उसके बाद आपने पीछे कभी झांक कर नही देखा और अपने बुलन्द हौंसलों एवं साहस के बल पर जिन्दल स्टील एवं पावर लि0, जिन्दल स्ट्रिप्स, जिंदल आयरन, जिन्दल स्टेनलेसस्टील, विजयनगर स्टील लि0, जिन्दल एनपी, जिन्दल पावर, जी एस. डब्ल्यू, जिन्दल फेरो, जिन्दल सा पाईप, जिन्दल फिल्म्स लि0, जिंदल फोटो लि0, जिन्दल इण्डिया थर्मल पावर लि0 आदि 20 से अधिक फैक्ट्रियां महाराष्ट्र, छतीसगढ़, उड़ीसा, हरियाणा,दिल्ली, झारखण्ड, विशाखापट्टनम, विजयनगर, रायगढ़, तारानगर, नासिक से लेकर इण्डोनेशिया, आस्ट्रेलिया,केनेडा, मोजाम्बिक, अमेरिका जैसे देशों में स्थापित कीं तथा लोह अयस्क ,स्टील, कोयला खनन, फोटोफिल्म, बीओपीपी फिल्म,फोटो ग्राफिक सामान, खनन, उर्जा उत्पादन आदि विभिन्न क्षेत्रों में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया। यह विशेष उल्लेखनीय है कि आपकी फैक्ट्री भारत की निजी क्षेत्र की सर्वप्रथम कम्पनी है, जिसे छोटे तथा पांच रू0 के सिक्के ढालने की अनुमति सरकार द्वारा दी गई। उसके साथ ही आपने फॉर्ब्स सूची के अनुसार भारत के धनाढ्यों में 13 वां स्थान प्राप्त करने का गौरव प्राप्त किया।

बाद में आपने उद्योग के साथ राजनीति क्षेत्र में प्रवेश किया तथा 1991 में आप हरियाणा के हिसार क्षेत्र से विधायक, 1996 में कुरूक्षेत्र से सांसद, सन् 2000 तथा 2005 में पुन: हरियाणा के विधायक बने तथा अपनी लोकप्रियता का परिचय दिया । आपने हरियाणा के प्रथम अग्र उद्योगपति थे, जो सांसद के रूप मे निर्वाचित हुए। आपकी कामना थी कि अग्रवाल समाज राजनीतिक दृष्टि से सक्षम बने तथा हिसार का विश्व के आदर्श शहर के रूप मे विकास हो किन्तु इसी बीच 31 मार्च 2005 को आपका एक हेलीकॉप्टर दुर्घटना में निधन हो गया। आप हरियाणा में मंत्रिमण्डल में विद्युतमंत्री भी रहे । उद्योग के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए आप लाईफ एचीवमेंट अवार्ड से भी सम्मानित किये गये।

आपके पुत्र सज्जन जिंदल भारत के व्यवसाय एवं उद्योग जगत के सबसे बड़े एवं अग्रणी एस्सोचेम (Associate chamber of commerce & industries) तथा अन्तराष्ट्रीय चेम्बर ऑफ कामर्स के अध्यक्ष रह चुके हैं। आपने हिमाचल में भी हाइड्रोपावर प्रोजेक्टस पावर ट्रेनिंग कॉर्पोरेशन को स्थापना की है।

आपके सबसे छोटे पुत्र नवीन जिन्दल एक प्रसिद्ध उद्योगपति एवं जन जन को राष्ट्रीय ध्वज फहराने का

अधिकार दिलाने में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वे वर्ष 2004 एवं 2009 में सांसद भी रहे हैं।

अग्रोहा के महाराजा अग्रसेन मेडिकल कॉलेज के विकास में इस परिवार की महत्वपूर्ण रही है। इसके अलावा आपने वैश्विक स्तर पर उच्च विधि (कानून) शिक्षा प्रदान करने के लिए ओ.पी. जिन्दल ग्लोबल यूनिवर्सिटी तथा जिन्दल स्कूल की स्थापना की है।

बालिका शिक्षा की दृष्टि से इस समूह द्वारा स्थापित विद्यादेवी पब्लिक स्कूल विशेष देन है, जो 70 एकड़ भूमि में फैला तथा अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त है। पंजाबी बाग, दिल्ली स्थित जिंदल विद्यालय भी सुप्रसिद्ध शिक्षण केन्द्र है।

मनोरंजन एवं मीडिया जगत के बादशाह

सुभाषचन्द्रा

जी.टी.वी. एवं एस्सेल समूह के चेयरमेन सुभाषचन्द्रा आज मनोरंजन एवं मीडिया जगत के बेताज बादशाह के नाम से जाने जाते हैं।

आप सुप्रसिद्ध एस्सेल समूह के प्रवर्तक हैं। आपने सर्वप्रथम 1992 में सेटेलाइट आधारित जी.टी.वी. चैनल की निजी क्षेत्र में स्थापना कर भारत के मनोरंजन एवं प्रसारण क्षेत्र में नई क्रांति की सूत्रपात किया। इससे पूर्व भारत में केवल भारतीय दूरदर्शन पर ही सीमित समय के लिए कार्यक्रम प्रसारित होते थे किंतु आपने इस चैनल की स्थापना कर उसे न केवल 24 घंटे सुलभ कराया, अपितु नये नये चैनलों की स्थापना कर उसकी संभावना के क्षेत्रों का भी विस्तार किया। आपके इस साहसिक प्रयास का ही परिणाम है कि आज भारत में सैंकड़ों नये नये चैनल विविध प्रकार के कार्यक्रमों का प्रसारण कर रहे हैं।

वर्तमान मे आपके बीसीयों चैनल विश्व के 171 देशों में करोड़ों दर्शकों द्वारा देखे जा रहे हैं और आपकी कम्पनी एक लाख घंटों का कार्यक्रम प्रसारित करने वाली विश्व की अग्रणी कम्पनी है। आपके कार्यक्रम न केवल भारत अपितु अमेरिका, यूरोप, एशिया, ब्रिटेन, मध्यपूर्व दक्षिणी अफ्रीका, सिंगापुर, मारीशस, केनेडा आदि विश्व के विभिन्न देशों में प्रसारित होते हैं।

आपके टी.वी. कार्यक्रमों का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है। आपके जी न्यूज, जी क्लासिक, जी बिजनेस, जी बंगला, जी मरूधरा, जी पंजाबी, जी एक्शन, जी जागरण, जी मराठी, जी टयूमर, जी स्माईल, जी कैफे, जी तेलगू, जी स्पोर्टस, जी अरेबिया, जी प्रीमियम, जी म्युजिक , जी ट्रेण्ड आदि अनेक चैनल हैं, जो दिन -रात, विभिन्न भाषाओं में विविधोन्मुखी विषयों पर कार्यक्रमों का प्रसारण करते हैं। राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय सभी विषयों पर आपके चैनलों द्वारा कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। आपको सर्वाधिक भाषाओं में सर्वाधिक चैनल स्थापित करने का गौरव प्राप्त है।

टी.वी. प्रसारण के साथ आपके द्वारा प्रकाशन के क्षेत्र में भी दैनिक भास्कर समूह के सहयोग से मुंबई में अंग्रेजी दैनिक डी.एन.ए. (डेली न्यूज एनेलेसिस) का भी प्रकाशन किया जाता है,जो अपने क्षेत्र का सर्वाधिक लोकप्रिय पत्र है। इनके अलावा आपके द्वारा मनोरंजन के क्षेत्र में मुंबई में एस्सेल वर्ल्ड पार्क तथा देश के विभिन्न भागों में मनोरंजन केन्द्रों (फन सिनेमाज), मल्टीप्लेक्स सिनेमा केन्द्रों एवं इ.सी.टी. बायोस्कोप सिनेमा तथा मनोरंजन पार्कों की स्थापना की गई है। एस्सेल वर्ल्ड पार्क, एशिया का सबसे बड़ा मनोरंजन पार्क है। इस प्रकार मनोरंजन के क्षेत्र में आपकी बहुमुखी देन है। आपको भारत के सबसे बड़े सेटेलाइट 'अग्रणी' की स्थापना का भी

श्रेय प्राप्त है। आपने शिक्षा हेतु जी. हिमगिरी विश्वविद्यालय और किड्जी स्कूलों की भी स्थापना की है।

आपको इन सब उपलब्धियों के लिए अनेक उच्च पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है। आप अमेरिका के सुप्रसिद्ध अन्तरराष्ट्रीय ए जी डायक्टोरेट पुरस्कार से सम्मानित होने वाले प्रथम गैर अमेरिकन व्यक्ति हैं, जिन्हें टेलीविजन कार्यक्रमों में सतत उत्कृष्टता के लिए सम्मानित किया गया है।

2016 में राज्यसभा में सांसद निर्वाचित। अनेक गावों को गोद लेकर आदर्श ग्राम के रूप में विकसित करने का संकल्प। अग्रोहा में जी फाउण्डेशन की स्थापना। भारत के प्रमुख धनकुबेरों में गणना।

प्रधानमंत्री मोदी के स्वच्छता अभियान में भी 5000 करोड़ डी.एस.सी. फाउण्डेशन को प्रद्त्त तथा अपनी सम्पति का एक भाग WION को प्रदान करने की घोषणा।

दिलीप सिंघवी

विश्व प्रसिद्ध औषधि निर्माण कम्पनी सन फार्मा के सी.ई.ओ.। कोलकाता में अपने पिता के साथ जैनरिक दवाईयों का व्यवसाय प्रारम्भ। 1982 ने सूरज फार्मास्युटिकल की स्थापना। बाद में अमेरिका, इजराइल आदि की कम्पनियों एवं 2014 में सन, रेनबैक्सी आदि का अधिग्रहण तथा भारतीय औषधि निर्माण क्षेत्र में अग्रणी स्थान।

भारत के धनाढ्यों की सूची में प्रमुख स्थान।

जयहरि एवं यदुहरि डालमिया

सुप्रसिद्ध सीमेंट कम्पनी -डालमिया भारत के अध्यक्ष, जयदयाल डालमिया के पुत्र। धनकुबेरों में गणना।

देवेन्द्र जैन

इनोक्स ग्रुप के चेयरमेन। इनोक्स विंड द्वारा ऊर्जा,न्यूजप्रिट, औद्योगिक गैस एवं रसायनों का निर्माण । 109 सिनेमाघरों की श्रृंखला। विभिन्न क्षेत्रों में अग्रणी।

भारत के धनाढ्यों की सूची में स्थान।

आदित्य विक्रम बिड़ला

महान भारतीय उद्योगपति, बिड़ला परिवार से सम्बद्ध। मेट्रो के विकास, वस्त्र, दूरसंचार आदि विभिन्न क्षेत्रों में उद्योगों की स्थापना। दक्षिण पूर्व एशिया, फिलीपिंस, मिश्र आदि में उद्योगों की संचालन।

कुमार मंगलम बिड़ला

भारत के सुप्रसिद्ध उद्योगपति परिवार आदित्य बिड़ला समूह के अध्यक्ष तथा ग्रासिम, अल्ट्राटेक सीमेंट, आदित्य बिड़ला नुवो, आईडिया सेल्युलर, आदित्य बिड़ला रिटेल, आदित्य बिड़ला मिनिक्स आदि का संचालन तथा भारत के अग्रणी धनकुबेरों में गणना।

विभिन्न नियामक एवं व्यावसायिक बोर्डो में महत्वपूर्ण पदों पर कार्य तथा अध्यक्ष पद सुशोभित।

बिड़ला इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एवं सांइस (बिट्स) के कुलाधिपति।

वेणुगोपाल धूत

सुप्रसिद्ध उद्योगपति, विश्वविख्यात विद्युतीय उपकरणों, टी.वी., उपभोक्ता वस्तुओं, संचार यंत्रों रेफ्रीजरेटरों आदि की निर्माता कम्पनी वीडियोंकोन के मुख्य कार्यकारी अधिकारी।

धनकुबेरों में गणना।

किशोर बियाणी

फ्यूचर ग्रुप के माध्यम से देशभर के उपभोक्ताओं को एक छत के नीचे उपभोक्ता वस्तुएँ उपलब्ध करा देने वाले मॉल संस्कृति के अग्रणी उद्योगपति तथा बिग बाजार के संचालक। उद्योग क्षेत्र में नये नये आयाम स्थापित। पेण्टलून जैसा विख्यात ब्राण्ड के जनक तथा संचालक।

ग्रामीण क्षेत्रों में भी आधार मालों का संचालन।

सचिन एवं बिन्नी बंसल

भारतीय साफ्टवेयर इंजीनियर एवं इंटरनेट उद्यमी। भारत के ई कामर्स एवं ऑनलाइन व्यवसाय के अग्रणी फ्लिपकार्ट के सह संस्थापक एवं मुख्यकार्यकारी अधिकारी। सिंगापुर एवं बेंगलुरू में विशाल आफिस।

भारत के धनकुबेरों में गणना।

संजीव गोयन्का

भारत की सबसे अग्रणी विद्युत आपूर्ति करने वाली कम्पनी आर.पी. संजीव गोयन्का के अध्यक्ष।

भारत के धनकुबेरों में गणना।

मन्नालाल अग्रवाल

सुविख्यात औषधि निर्माण कम्पनी अजन्ता फार्मास्युटिकल्स के संस्थापक एवं निर्देशक।

भारत के धनकुबेरों में गणना।

सलिल सिंघल

पौधारोपण एवं संरक्षण में अग्रणी पी.आई. इण्डस्ट्रीज के संस्थापक एंव मुख्य कार्यकारी अधिकारी।

राजेन्द्र अग्रवाल

मेकलॉड फार्मास्युटिकल्स के संचालक, टी.बी. मेडिकल औषधियों का निर्माण। धनकुबेरों में गणना। विश्व के अग्रणी औषधि निर्माताओं में एक।

मंगलप्रभात लोढ़ा

प्रोपर्टी मेग्नेट, राजनीतिज्ञ, मुम्बई में 60 मंजिल फस्ट ट्रम्प टॉवर का निर्माण, 75 मंजिल लग्जरी स्काई स्क्रेपर। धनकुबेर।

अशोक एवं भवंरलाल जैन

महाराष्ट्र के जलगांव स्थित जैन इरिगेशन समूह के संस्थापक संचालक, सिंचाई तथा कृषि क्षेत्र में उपयोगी उत्पादों, पी.वी.सी. पाईप, प्लास्टिक शीट्स, सोलर बल्ब आदि के निर्माण में अग्रणी कम्पनी।

नरेन्द्र पाटनी

कम्प्यूटर उद्योग में नये आयाम।

राजश्री बिड़ला

आदित्य बिड़ला उद्योग समूह की निर्देशिका, संगीत कला केन्द्र की अध्यक्ष।

रसिकलाल धारीवाल

गुटका किंग, माणिकलाल समूह के संचालक एवं विभिन्न उपकरणों के निर्यात। समाज सेवी तथा अनेक शिक्षण संस्थाओं, चिकित्सालयों एवं सेवा प्रकल्पों का संचालन।

विनोदराय एवं अनिलराय गुप्ता

विद्युतीय एवं प्रकाश उपकरणों के निर्माता, धनाढ्यों में अग्रणी, हेवल्स के संस्थापक।

बी.आर.शेट्टी

विश्व में आँखों के सबसे हास्पिटलों की सबसे बड़ी श्रृंखला, एन.एम.सी. हेल्थेकेयर का संचालन।

श्याम एण्ड हरि भरतिया

जुबिलेंट लाईफ सांईसेंज, जुबिलेंट फूड वर्क्स, फार्मा, फ्लेयारिक आदिके निर्देशक, डालमिया पिज्जा का निर्माण।

वेणुगोपाल बांगड़

सुप्रसिद्ध उद्योगपति, धनकुबेर, श्री सीमेंट के संस्थापक।

रिखबचन्द जैन

हौजरी उद्योग में गोल्डमेन के रूप में ख्यात। दी टी ग्रुप के संस्थापक। सामाजिक सेवा कार्यों में अग्रणी। श्री हौजरी का निर्माण।

मोतीलाल ओसवाल

शेयर्स तथा विभिन्न कम्पनियों को फण्ड जुटाने के क्षेत्र में अग्रणी मोतीलाल ओसवाल फर्म के संचालक तथा ओसवाल फाइनेन्सियल सर्विसेज लि. की स्थापना सेबी के पदाधिकारी।

भारतीय उद्योग जगत के अग्रणी व्यक्तित्व

हर्ष गोयन्का एवं संजीव गोयन्का (R.P.G. Group)

आप भारत के अग्रणी रामप्रसाद गोयन्का उद्योग समूह से सम्बन्धित हैं। आपके पिता रामप्रसाद गोयन्का भारत के महान उद्योगपतियों में से एक तथा रिजर्व बैंक के गवर्नर केशवप्रसाद गोयन्का के पुत्र तथा इम्पीरियल बैंक (वर्तमान स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया) के प्रथम भारतीय चेयरमेन बद्रीदास गोयन्का के पौत्र थे।

आपने अपने व्यावसायिक जीवन का प्रारम्भ चाय तथा जूट की सुप्रसिद्ध ब्रिटिश डंकन ब्रादर्स कं. के सहायक के रूप में किया किन्तु आप अपने अध्यवसाय से एक दिन 1960 में उसका अधिग्रहण करने में सफल हुए तथा चाय एवं जूट जगत के अग्रणी उद्योगपतियों में अपना स्थान बनाया। उसके बाद आप ने टेक्सटाइल, तम्बाकू,विद्युत उत्पादन वितरण, टायर, रिटेलिंग, मनोरंजन, सूचना तकनीकी अधारभूत संरचना, पौधारोपण,फार्मा स्युटिकल आदि विभिन्न क्षेत्रों में प्रवेश करते हुए अनेकों बड़ी-बड़ी कम्पनियों जैसे फिलिप्स कार्बनब्लैक, एशियन जूट,मर्फी इण्डिया, डनलप, स्पेंसर एंड क0 आदि कम्पनियों का अधिग्रहण कर औद्योगिक एवं व्यावसायिक जगत में अपना स्थान बनाते गए। आप एक कुशल अधिग्रहण कर्ता उद्योगपति के रूप में ख्याति प्राप्त थे तथा आप तथा

आपके पुत्रों ने अपनी व्यावसायिक दूरदर्शिता एंव कुशल प्रबंधन से अपने उद्योग व्यवसाय को खूब बढ़ाया । बाद में अपने सीएट टायर्स का भी अधिग्रहण कर लिया, जो टायर जगत की सबसे बड़ी कम्पनी है। सीएट टायरों का अमेरिका, पश्चिमी एशिया, आदि विभिन्न देशों में भारी मात्रा में निर्यात किया जाता है।

आप कोलकाता की सुप्रसिद्ध विद्युत आपूर्ति कम्पनी सी.ई.एस.सी., भारत में संगीत क्षेत्र में रिकार्डिंग की सबसे पुरानी तथा प्रथम 110 वर्षीय कम्पनी सारेगामा एच.एम.वी.(H.M.V.), बैटरी निर्माण में अग्रणी फिलिप्स कार्बन एंड ब्लेक प्रोड्यूसर्स तथा रिटेल स्टोरों में अग्रणी स्पेंसर एंड कम्पनी के संचालक भी थे।

आपने उद्योग व्यवसाय जगत में भी अनेक उच्च पदों को सुशोभित किया । सुप्रसिद्ध औद्योगिक संगठन फिक्की तथा प्रशान्त वाणिज्य एवं उद्योग परिसंघ के अध्यक्ष एवं अन्तरराष्ट्रीय प्रबंधन संस्थान दिल्ली तथा इण्डियन इन्स्टीच्यूट् ऑफ टेक्नोलोजी, खड़गपुर के गवर्नर रहे ।

बाद में आप राज्य सभा से सांसद भी चुने गये। आपने अपने मूल निवास स्थान डूंडलोद के विकास हेतु भी काफी कार्य किए। अनेक अस्पतालों का निर्माण कराया, पेयजल आपूर्ति की व्यवस्था की।

आपको अपने विशिष्ट योगदान के लिए जापान सम्राट द्वारा दो बार द आर्डर ऑफ द सेक्रेड ट्रेजर गोल्ड एवं सिल्वर स्टार तथा लाईफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड द्वारा सम्मानित किया गया। अप्रेल 2013 में आपका निधन हो गया।

आपके निधन के बाद आपके व्यवसाय का आपके दोनों पुत्रों -शिवलिंग हर्ष गोयन्का एवं संजीव गोयन्का में विभाजन हो गया, जो स्वतंत्र रूप से अपने अपने उद्योग समूहों का संचालन करते हैं।

हर्ष गोयन्का सीएट, के.ई.सी. इण्टरनेशनल, आर.पी.जी. केबल्स, जिनसार टेक्नोलाजी, सारेगामा (एच. एम. वी.)आर.पी.जी., लाइफ साईसेंस, फिलिप्स कार्बन आदि अनेक ख्याति प्राप्त कम्पनियों का संचालन करते हैं ।

हर्ष गोयन्का की गणना भारत के सर्वाधिक धनाढ्य अरबपतियों में होती है तथा सैंकड़ों मिलियन डालर की सम्पति के साथ आप फोर्ब्स सूची में प्रमुख स्थान रखते हैं।

प्रबन्धन के क्षेत्र में आप इण्डियन मर्चेण्टस चेम्बर एवं फिक्की में उच्च पदों को सुशोभित कर चुके हैं ।

संजीव गोयन्का, रामप्रसाद गोयन्का के दूसरे पुत्र हैं तथा आर.पी. संजीव गोयन्का समूह के चेयरमेन है। भारत की 115 वर्ष सबसे पुरानी और बड़ी विद्युत आपूर्ति करने वाली कोलकाता इलेक्ट्रिक सप्लाई कम्पनी (सी. ई.एस.सी) तथा 150 वर्ष पुराने देश भर में फैले स्पेंसर सुपर मार्केट स्टोरों के संचालन का श्रेय आपको प्राप्त है।

"पद्मभूषण" हरिशंकर सिंघानिया

अन्तरराष्ट्रीय चेम्बर ऑफ कॉमर्स के प्रथम भारतीय अध्यक्ष।

भारत के एक शताब्दी से पुराने एवं देश के अग्रणी जे.के. औद्योगिक समूह के चेयरमेन, सुप्रसिद्ध उद्योगपति विजयपत सिंघानिया के सुपुत्र, रायमण्ड के प्रबन्ध निर्देशक। टायर, फेब्रिक्स, निर्मित वस्त्र, पेपर, सीमेंट, सौन्दर्य प्रसाधन, कामसूत्र गर्भनिरोधक, स्टील, विद्युत परिचालक, खाद्य आदि विविध उत्पादों का निर्यात, 30000 से अधिक कर्मचारी, कई विलियन डॉलर का साम्राज्य। इसके अलावा आप भारत में प्रबंधन संस्थान लखनऊ, विश्व व्यापार संगठन, औद्योगिक विकास बैंक, लक्ष्मीपत सिंघानिया मेडिकल फाउण्डेशन, बोर्ड ऑफ

कॉमनवेल्थ डेवलमेंट कॉर्पोरेशन, लंदन आदि दर्जनों राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संगठनों के चेयरमेन, अध्यक्ष तथा राजकीय समितियों के निर्देशक रहे। अन्तरराष्ट्रीय चेम्बर ऑफ कॉमर्स, पेरिस के अध्यक्ष पद को सुशोभित करने वाले आप दूसरे भारतीय थे।

उत्कृष्ट समाजसेवी, शिक्षाप्रेमी, दानवीर। लक्ष्मीपत सिंघानिया शिक्षा फाउण्डेशन के अध्यक्ष तथा जे.के. लक्ष्मीपति विश्वविद्यालय के कुलाधिपति (चांसलर)। अनेकानेक शिक्षण संस्थानों, शोधकेन्द्रों, हस्पतालों आदि की स्थापना।

व्यवसाय एवं आर्थिक क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए 2003 में "पद्मभूषण"।

जेट ऐयरवेज के चेयरमेन

नरेश गोयल

बुलन्द इरादों से आकाश की ऊंचाइयों को छू लेने वाले तथा भारत को प्रख्यात निजी वायु सेवाओं में प्रमुख स्थान दिलाने वाले नरेश गोयल सुप्रसिद्ध विमानन कम्पनी जेट ऐयरवेज के संस्थापक चेयरमेन हैं।

आपकी कम्पनी न केवल भारत में अल्प मूल्य तथा केरियर (ट्रान्सपोर्ट) सेवाएं प्रदान करने वाली अपितु एशिया पेसिफिक रीजन, मुम्बई से न्यूयार्क, दक्षिणी पूर्व एशिया, लंदन (हीथ्रो) तथा ब्रुसेल्स तक अन्तरराष्ट्रीय सेवाएं प्रदान करने वाली निजी क्षेत्र की बड़ी सफल कम्पनी भी है।

बिजनेस स्टेडर्ड पत्रिका ने भारत के प्रतिष्ठित धनकुबेरों में आपको स्थान दिया है तो सुप्रसिद्ध पत्रिका फोर्ब्स की भारतीय धनाढ़यों की सूची में आप उच्च स्थान प्राप्त कर चुके हैं।

इसके अलावा विभिन्न राष्ट्रीय अन्तरराष्ट्रीय सम्मान उल्लेखनीय वायु तथा ट्रांसपोर्ट सेवायें प्रदान करने के लिए प्राप्त कर चुके हैं।

आवासीय गृह निर्माण योजनाओं के प्रवर्तक

पद्मश्री हर्षवर्द्धन नेवटिया

भारत में उत्कृष्ट एवं आधुनिक सामाजिक आवासीय योजनाओं के जनक। पश्चिमी बंगाल सरकार के साथ सांझेदारी में संचालित संयुक्त उपक्रम अम्बूजा रियल्टी समूह के संस्थापक।

सामाजिक आवासीय परियोजनाओं में उत्कृष्ट पहल के लिए 1999 में पद्मश्री से सम्मानित। पश्चिमी बंगाल में इजरायल के मानद राजदूत।

"पद्मभूषण" सुरेशकुमार नेवटिया

सीमेन्ट उद्योग के अग्रणी व्यक्तित्व।

सुप्रसिद्ध उद्योगपति। अम्बुजा सीमेंट लि. के अध्यक्ष। गुजरात अम्बुजा लि. की स्थापना एवं तीन वर्ष की अल्प अवधि में विश्व की सबसे कम लागत में सीमेंट का उत्पादन करने वाली इकाई के रूप में परिवर्तित।

निर्माण, खनन् एवं व्यावसायिक उत्कृष्टता के लिए अनेकानेक पुरस्कारों से सम्मानित।

2008 में भारत सरकार द्वारा "पद्मभूषण" से सम्मानित।

के.के. मोदी

भारत के सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं मोदी समूह के प्रवर्तक गुजरमल मोदी के सुपत्र तथा स्पाइस मोवीलिटी , मोदी एन्टरप्राइजेज, गोडफ्रे फिलिप्स, मोदी केअर, इण्डोफिल इण्डस्ट्रीज लि0 आदि के चेयरमेन। भारतीय तम्बाकू जगत के शहंशाह तथा भारत की सबसे बड़ी सिगरेट निर्माता कम्पनी गोडफ्रे फिलिप्स का सफलतापूर्वक संचालन।

देश के सर्वाधिक धनाढ्यों की सूची मे स्थान प्राप्त करने का गौरव।

आपके भाई भूपेन्द्रकुमार मोदी भी सिंगापुर स्थित स्पाईस ग्लोबल समूह के चेयरमेन तथा अग्रणी उद्योगपति हैं। सिंगापुर तथा भारत के सर्वाधिक धनाढ्यों की सूची में आपका नाम सम्मिलित है।

गौतम हरि सिंघानिया

राष्ट्रीय अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त रायमण्ड ग्रुप के चेयरमेन तथा गिन्नीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में नाम दर्ज, पद्मभूषण विजयपाल सिंघानिया के सुपुत्र। 1986 मे पैतृक जे..के आर्गेनाइजेशन में प्रवेश तथा 2000 में रायमण्ड समूह के चेयरमेन। वर्तमान समय में फेब्रिक्स, रेडीमेड वस्त्र, कामसूत्र (कन्डोम) तथा मानव सौन्दर्य प्रसाधनों का राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र में विपणन तथा निर्यात। इटली, बेल्जियम आदि देशों के साथ संयुक्त उपक्रम ।

भारत में प्रथम एवर सुपर कार क्लब की स्थापना। भारत के धनकुबेरों की सूची में प्रमुख स्थान पर रहने का गौरव प्राप्त ।

फार्मास्युटिकल उद्योग में अग्रणी

अजय पीरामल, नंदिनी पीरामल

अपनी जड़ों से जुड़ कर आसमा को छू लेने वाले अजय पीरामल भारत के फार्मा उद्योग की सबसे चार अग्रणी कम्पनियों में से एक निकोलस पीरामल के चेयरमेन एवं प्रबंधनिदेशक। आपके पूर्वज चतुर्भुज पीरामल मूलत: शेखावटी निवासी थे तथा मुम्बई में मोरारजी बीविंग एण्ड स्पीनिंग मिल के रूप में उनका बड़ा व्यवसाय था। यह मिल भारत की 125 वर्ष पुरानी टेक्सटाइल मिलों में एक है।

1988 में आस्ट्रेलिया की सुप्रसिद्ध कम्पनी निकोलस लेबोरेटरी (बाद में निकोलस पीरामल) तथा बाद में रोश(तवबीम) रोहने पोलेविक होचेस्ट रिसर्च वेहिगर जैसी अनेकानेक सुप्रसिद्ध कम्पनियों का अधिग्रहण कर निकोलस को भारत की अग्रणी फार्मास्युटिकल कम्पनी के रूप में प्रतिष्ठापित किया।

फार्मा उद्योग के साथ रिटेलिंग, रीयल इस्टेट, टेक्सटाइल, ग्लास आदि विभिन्न क्षेत्रों में प्रवेश तथा पीरामल हेल्थकेयर, पीरामल लाईफ साईसेस,पीरामल सनटेक, पीरामल एन्टरप्राइजेज आदि विभिन्न उपक्रमों का संचालन । विश्व के सबसे बड़े टोकोपकरियों में गणना।

भारतीय धनाढ़यों की सूची में नाम प्रतिष्ठित। मुम्बई में विशाल शॉपिंग कॉम्पलेक्स।

आपका समूह टी.बी., मधुमेह, रक्तचाप आदि जटिल रोगों की औषधियां सस्ते मूल्य पर उपलब्ध कराने वाला विश्व का अग्रणी संस्थान है।

आपकी धर्मपत्नी स्वाति पीरामल स्वास्थ्य, चिकित्सा एवं औषधि क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए भारत

सरकार द्वारा राष्ट्र के प्रतिष्ठित पद्मश्री अंलकरण से सम्मानित हैं । इसी समूह की नंदिनी पीरामल एण्टरप्राइजेज की अध्यक्षा हैं। वे विश्व की सुप्रसिद्ध व्यावसायिक कम्पनी मिकिस्के में उच्च पदों पर कार्य कर चुकी हैं । उनकी गणना भी भारत के सुप्रसिद्ध धनाढ्यों की सूची में होती है।

औषधि अनुसंधान एवं निर्माण क्षेत्र में अग्रणी

श्याम एव हरि भरतिया

भारत की फार्मा (औषधि निर्माण) क्षेत्र की अग्रणी कम्पनी जुबिलेंट समूह के प्रवर्तक तथा जुबिलेंट आर्गेनिसयस, जुबिलेंट लाईफ साईसेंस, जुबिलेंट फूडस, जुबिलेंट एनर्जी, जुबिलेंट फूड वर्क्स जुबिलेंट भारतीय ग्रुप आदि विभिन्न कम्पनियों के सह अध्यक्ष, प्रबंध निदेशक, भारत में औषधि अनुसंधान शोध एवं मानवोपयोगी नई-नई औषधियों के निर्माण क्षेत्र में विशेष ख्याति प्राप्त ।

श्री श्याम भरतिया की धर्म पत्नी शोभना भरतिया भारत के सबसे बड़े मीडिया समूहों में अग्रणी हिन्दुस्तान समूह की चेयरपर्सन एवं विश्व की धनाढ्य महिलाओं में से एक। सुप्रसिद्ध उद्योगपति घनश्याम दास बिड़ला की पौत्री तथा के.के. बिड़ला की पुत्री ।

भारत के श्रेष्ठ आस्ति प्रबंधनकर्ता एवं बॉरन बॉफेट

राकेश झूंझनूवाला

भारत के आस्ति प्रबंधन के क्षेत्र में सुप्रसिद्ध नाम तथा भारतीय शेयर बाजार में बॉरेन बॉफेट अमेरिका के नाम से विख्यात राकेश झूंझनूवाला पेशे से चार्टेड एकाउन्टेट किन्तु भारत में पोर्टफोलियो क्षेत्र के सबसे बड़े विशेषज्ञों में से एक है। उनकी गणना भारत के सबसे कुशल निवेशक विशेषज्ञों में की जाती है।

अन्तरराष्ट्रीय जगत की सुप्रसिद्ध पत्रिका ने आपको भारतीय स्टॉक एक्सचेंज के नेतृत्वकर्ता की संज्ञा दी तथा उनकी कम्पनी को ए टू जेड प्रतिष्ठित स्थान मिला। वे लम्बी अवधि के श्रेष्ठ निवेशक माने जाते हैं तथा उन्हें भारत के रोकी के नाम से भी पुकारा जाता है।

फोर्ब्स द्वारा देश के सबसे बड़े धनाढ्यो की सूची में आपको स्थान दिया है।

फार्मास्युटिकल जगत के अग्रणी व्यक्तित्व

देशबंधु गुप्ता

फार्मास्युटिकल जगत की अग्रणी कम्पनी ल्यूपिन फार्मास्युटिकल के चेयरमेन। औषधि निर्माण, शोध एवं विकास के क्षेत्र में राष्ट्रीय ही नहीं, अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र तक में विशेष पहचान। 1986 में ल्यूपिन फार्मा की स्थापना तथा अपने अनुभव प्रतिभा कौशल एवं दृढ अध्यवसाय से उसे फार्मास्युटिकल क्षेत्र की अग्रणी कम्पनी के रूप प्रतिष्ठापित।

भारत तथा विश्व के धनाढ्यों तथा लोकोपकारियों की सूची में विशेष स्थान अर्जित।

अश्विनी डानी

भारत में रंग रोगन निर्माण की सबसे बड़ी कम्पनियों मे अग्रणी एशियन पेण्टस के प्रबंध निदेशक एवं चेयरमेन। 1968 में एशियन पेण्टस में वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी के रूप में सम्मिलित तथा उसे राष्ट्रीय, अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त उद्योग समूह में परिवर्तित ।

भारतीय चाय उद्योग के शहनशाह

बी.एम. खेतान

भारत ही नहीं, विश्व की सबसे बड़ी चाय उत्पादक कम्पनी मेक्लाड रस्सेल, बैटरी निर्माता एवरेडी इण्ड0 एवं विलियम मैगोर समूह के चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक। दशकों से चाय उद्योग के अग्रणी व्यक्तित्व । 2005 में विलियमसन टी आसाम का अधिग्रहण एवं विश्व की सबसे बड़ी चाय उत्पादक कम्पनियों में प्रतिष्ठापित।

इसके अलावा सेल फ्लेश लाईट (टार्च) तथा बैटरियों का निर्माण अग्रणी एवरेडी इण्डस्ट्रीज का सफल संचालन तथा पावरोन के नाम से मच्छररोधी उत्पादन का निर्माण। भारतीय अरबपतियों की सूची में नाम सुशोभित।

राधेश्याम गोयन्का एवं राधेश्याम अग्रवाल

भारतीय उद्योग जगत के महान उद्योगपति एवं कुशल विपणनकर्ता। इमामी समूह के अन्तर्गत हर्बल सौंदर्य एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में उत्पादों तथा विशेष कर पुरुषों के लिए क्रीमों का निर्माण तथा लगभग सैंकड़ो मिलीयन डालर का वार्षिक टर्नओवर एवं दोनों का भारत के धनकुबेरों (Billionairs) की सूची में स्थान।

सीताराम जिन्दल

प्रबंध निदेशक, जिन्दल एल्युमिनियम। भारत के अग्रणी उद्योगपति एवं दानवीर।

बाल कृष्ण गोयन्का

तेल एवं गैस की पाइपों का निर्माण करने वाली विश्व की तीन अग्रणी कम्पनियों में एक वेलस्पून गुजरात के प्रबंध निदेशक। कांदला (गुजरात) में विशाल स्टील प्लाण्ट तथा कोआइल प्लेटस, लिटस रोक, बक्सों आदि का प्रचुर मात्रा में निर्माण तथा विदेशों में निर्यात। गैस के विशालकाय उपकरणों एवं पाइपों के परिवहन के क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त।

टी-किंग

के.के. जाजोदिया

भारत में टी किंग के नाम से सम्बोधित देश की 170 वर्ष पुरानी चाय कम्पनी असम टी कम्पनी एवं डंकन मेकेनिल समूह के चेयरमेन। आप चाय उद्योग के ख्याति प्राप्त व्यक्तित्व है। एस्सोचेम के नेशनल कौंसिल के चेयरमेन पद को सुशोभित।

देश के सर्वाधिक धनाढ्यों (Billionairs) में एक।

रिटेल जार-अतुल रूइया

देश की सबसे पुरानी फिनोक्स मिल के चेयरमेन, रिटेल व्यवसाय के जार। शॉपिंग (मार्केटिंग)। कम्प्लेक्स एवं माल के निर्माण के क्षेत्र में भारत के अग्रणी व्यक्तित्व।

बांद्रा-कुर्ला मुंबई, बैंगलोर, चेन्नई आदि में देश के सबसे बड़े शापिंग मार्केटिंग कॅम्प्लेक्सों का निर्माण तथा करोड़ों का व्यवसाय करने वाले रिटेल माल स्टोरों की स्थापना।

रवि जैपुरिया

सुप्रसिद्ध जैपुरिया परिवार से सम्बद्ध। राजस्थान बैंक के पूर्व सह संस्थापक एवं उद्योगपति चुन्नीलाल जैपुरिया के पुत्र। वरुण ब्रेवरीज के चेयरमेन।

भारत के धनकुबेरों (Billionairs)में स्थान और प्रभावशाली व्यक्तियों में भी गणना।

शिशिर बजाज

सुप्रसिद्ध बजाज समूह के चेयरमेन राहुल बजाज के छोटे भ्राता। बजाज हिन्दुस्तान शुगर के प्रबंध निदेशक। उपभोक्ता वस्तुओं के निर्माता एवं विशाल आर्थिक साम्राज्य के स्वामी। भारत के धनकुबेरों (Billionairs)में स्थान।

संजय सिंघल

भारत के सुप्रसिद्ध उद्योगपति भूषण स्टील के बृजभूषण सिंघल के सुपुत्र एवं भारत के सर्वाधिक धनाढ़यों में स्थान। 100 मिलियन डालर का आर्थिक साम्राज्य। भूषण पावर एण्ड स्टील कम्पनी के चेयरमेन ।

नीरव मोदी

भारत में डायमंड आभूषणों के क्षेत्र में सर्वाधिक अग्रणी नाम। भारत के अलावा रूस, आर्मेनिया तथा दक्षिणी अफ्रीका में इकाईयां। दिल्ली में रिटेल स्टोर की स्थापना।

भारत के सुप्रसिद्ध धनकुबेरों (Billionairs) में स्थान।

बी.डी. अग्रवाल

भारत में ग्वारगम की सबसे बड़ी निर्यातक इकाई विकास डब्ल्यू एस.पी. लि. के चेयरमेन। निर्यात संवर्धन के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए भारत सरकार द्वारा सम्मानित।

प्रशान्त रुइया

सुप्रतिष्ठित एस्सार टेलीकॉम कम्पनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी तथा प्रबंध निदेशक।

दिलीप पीरामल

सुप्रसिद्ध डी.जी.पी एण्टरप्राइजेज समूह के मुखिया। मोरारजी गोकुलदास स्पिनिंग बीविंग मिल से अपने केरियर की शुरूआत तथा ब्लोप्लास्ट, वी.आई.पी लगेज, माडर्न सीटिंग सिस्टम, लियोट टायॅज आदि अनेक कम्पनियों की स्थापना अथवा अधिग्रहण तथा भारतीय औद्योगिक जगत में विशेष स्थान प्राप्त ।

आदित्य मित्तल

विश्व की सबसे बड़ी स्टील उत्पादक इकाई मिक्स स्टील एवं आर्सेलर मित्तल के न्यासी बोर्ड के सदस्य, प्रबंध निदेशक तथा विश्व के जाने माने उद्योगपति लक्ष्मी मित्तल के सुपुत्र।

पी.आर.अग्रवाल

'यह अन्दर का मामला है ' के लिए प्रसिद्ध- रूपा बनियान एवं आंतरिक परिधान की सुप्रसिद्ध रूपा एण्ड कम्पनी के चेयरमेन।

राजीव बंसल

एयर इंडिया के चेयरमेन एवं प्रबंध निदेशक।

आयल किंग-रमेशचंद्र गर्ग

मुरेना स्थित सुप्रसिद्ध के. एस. आयल मिल के चेयरमेन एवं प्रबंध निदेशक। खाद्य एवं सरसों के तेल का उत्पादन करने वाली अग्रणी कम्पनी।

पुरूषोत्तम अग्रवाल

सुप्रसिद्ध अग्रवाल समूह के संस्थापक एवं चेयरमेन। 2000 करोड़ से अधिक का व्यावसायिक साम्राज्य। निर्माण, परिवहन, मनोरंजन,गैर पारम्परिक ऊर्जा उत्पादन, प्रोसेसिंग, वित्त, अचल सम्पति (रियल इस्टेट) आदि विभिन्न क्षेत्रों में औद्योगिक साम्राज्य का विस्तार।

कठोर नैतिकता एवं उच्च व्यावसायिक मूल्यों के पक्षधर ।

जय प्रकाश अग्रवाल (सूर्या रोशनी)

बल्ब निर्माण एवं लाइटनिंग उद्योग में फिलिप्स के बाद भारत का दूसरा सबसे बड़ा संस्थान। 1973 में बहादुरगढ़ में एशिया के सबसे बड़े स्टील पाईप प्लाण्ट की स्थापना । 180000 मीटर लम्बी पाईप का उत्पादन।

1984 में सूर्या रोशनी के नाम से लाइटनिंग उद्योग में प्रवेश तथा बल्बों, ट्यूब लाइटस एवं अन्य उपकरणों का निर्माण एवं उच्चकोटि के गुणवतापूर्ण उत्पादों के लिए अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त।

ऊर्जा प्रबंधन के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु उद्योग रत्न एवं विविध पुरस्कारों से सम्मानित।

संजीव अग्रवाल

रेडीमेड आभूषणों के व्यवसाय में देश विदेश में लब्ध प्रतिष्ठ, गीतांजलि एक्सपोर्ट लि0 के मुख्य अधिकारी तथा उसे विश्व स्तर पर लोकप्रिय बनाने में अग्रणी भूमिका।

अजय अग्रवाल

मोबाइल जगत में सुप्रसिद्ध नाम। मैक्स मोबाइल के नाम से मोबाइल के निर्माण को नई गति।

ए.के. मित्तल

भारतीय रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष

भारतीय सभ्यता-संस्कृति व धर्म

अग्रवाल/वैश्य समाज धर्मपरायण समाज है। भारतीय सभ्यता -संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्द्धन में इसका अमूल्य योगदान रहा है।

यदि इसे भारतीय संस्कृति का मूल आधार कहा जाय तो भी अतिश्योक्ति नहीं होगी।

धार्मिक क्षेत्र में अग्रवाल/वैश्य समाज की विशेषताएँ

सर्वधर्मसमभाव

अग्रवाल/वैश्य समाज वैसे तो सनातन धर्मावलम्बी है किंतु सभी धर्मो के प्रति समान भावना के कारण उसे सर्वधर्मसमभाव एवं पंथ निरपेक्षता का आदर्श प्रतीक कहा जा सकता है। उसमें जैन, सिक्ख, आर्य समाज,राधास्वामी, सच्चा डेरा, बौद्ध, शैव, शाक्त आदि सभी धर्मो-पंथो के अनुयायी देखे जा सकते हैं। वह कभी धर्म -सम्प्रदाय को लेकर झगड़े नहीं करता।

उसमें घनश्यामदास बिड़ला, हनुमानप्रसाद पोद्दार, जयदयाल गोयन्दका, अशोक सिंघल जैसे सनातन धर्मावलम्बी हैं, तो लाला लाजपतराय जैसे आर्य समाजी, साहू शान्तिप्रसाद, श्रेयांसप्रसाद जैसे जैन धर्मावलम्बी, पीयूष बाबी जिंदल जैसे कैथोलिक इसाई धर्म के अनुयायी और लक्ष्मी मित्तल जैसे उदार धर्मावलम्बी भी हैं, जिन्होंने रोमानिया में चर्च का निर्माण कर अपनी विराट धर्मभावना का परिचय दिया है। सत्यनारायण गोयन्का का बौद्ध धर्म के विपश्यना पद्धति के प्रति लगाव तो जगप्रसिद्ध है।

यदि सिक्ख धर्म को लें तो इस समाज के अग्रहरि मुख्य रूप से सिक्ख धर्म के ही अनुयायी हैं। वे सिर पर केश (पगड़ी) धारण करते हैं तथा गुरूद्वारों मे जाकर गुरूग्रंथ साहब का पाठ करते हैं।

सिक्खों के कड़ियाल बिरादरी में भी अग्रवाल समाज के लोग हैं। ये वे अग्रवाल थे, जिन्होंने गुरू तेग बहादुर के साथ कूच किया था और जिनके शहीद हो जाने पर उन तथा उनकी वीरांगनाओं की स्मृति में कड़ियाल में मढ़ी बना दी गई थी। ये सब सिक्ख धर्म के अनुयायी हैं और गर्ग गोत्री अग्रवाल हैं।

अग्रवाल /वैश्य समाज में दादू पंथ के अनुयायी भी हैं।

हिन्दू धर्म के प्रतीकों की रक्षा
(गंगा-गीता-गाय)

गंगा, गीता, गाय-हिन्दू धर्म के मानबिंदू रहे हैं तथा उनके संरक्षण मे अग्रवाल/वैश्य समाज की सर्वाधिक भूमिका रही है।

गंगा को अग्रवाल/वैश्य अपनी माता से भी प्रिय मानते हैं। मुक्ति -दायिनी मानने के कारण उसमें स्नान करते हैं, सभी धार्मिक पर्वो पर उसकी यात्रा करना तथा मरने पर उसमें अस्थियां प्रवाहित करना अपना दायित्व मानते हैं।

गंगातट पर स्थापित हरिद्वार, काशी, उज्जयिनी आदि सभी तीर्थ स्थानों के विकास एवं वहां मंदिरों, धर्मशालाओं, अन्नक्षेत्रों आदि के निर्माण में उनकी विशेष भूमिका रही है। गंगा के तट पर ऋषिकेश, स्वर्गाश्रम में गीताभवन की स्थापना कर उसे भारतीय संस्कृति एवं अध्यात्म का केन्द्र बनाने में इस समाज के जयदयाल

गोयन्दका की प्रमुख भूमिका रही है।

वर्तमान समय में जब गंगा के उद्गमस्थल पर विद्युत बांध परियोजनाओं के निर्माण तथा बढ़ते प्रदूषण के कारण गंगा के अस्तित्व को खतरा उत्पन्न होने तथा उसके अविरल जल प्रवाह में बाधा पड़ने लगी तो इस समाज के प्रो. जी.डी. अग्रवाल उर्फ स्वामी ज्ञान स्वरूप जी महाराज ही थे, जिन्होंने 60-60 दिन तक के लम्बे अनशन कर न केवल उन बांधों के निर्माण को रूकवाया अपितु गंगा को प्रदूषण मुक्त करने के लिए गंगा प्राधिकरण आयोग का गठन करा उसे पवित्र राष्ट्रीय नदी का दर्जा दिलवाया। वर्तमान केन्द्रीय सरकार द्वारा गंगा को संरक्षण इसी का परिणाम है।

गीता के प्रचारार्थ तो जयदयाल गोयन्दका एवं हनुमानप्रसाद पोद्दार ने अपना सम्पूर्ण जीवन ही अर्पित कर दिया था। इस सबंध में गीताप्रेस द्वारा किया गया योगदान अभूतपूर्व एवं अद्वितीय है।

गौमाता की रक्षा, संरक्षण, संवर्द्धन के लिए भी यह समाज सदैव समर्पित रहा है। आज देश के कोने कोने, नगर-नगर, गांव-गांव में जो गौशालाएं हैं, उनके बनाने तथा संचालन में इस समाज का 70 प्रतिशत से अधिक योगदान है। अकाल के समय भी गोसेवा के प्रकल्प इस समाज द्वारा व्यापक रूप से चलाये जाते हैं। वर्तमान समय में जबकि गौमाता का अस्तित्व संकट में है इस समाज के लोगों द्वारा जैविक कृषि को प्रोत्साहन देने तथा गौ-उत्पादों द्वारा गायों को आर्थिक दृष्टि से उपयोगी बनाने के प्रयत्न भी इस समाज के गौप्रेमियों द्वारा व्यापक स्तर पर किये जा रहे हैं।कानपुर, नागपुर तथा अन्य गौशालाओं द्वारा गौमूत्र को पेटेंट कराने तथा वहां तरह-तरह के गौ उत्पाद तैयार करने में इस समाज की विशिष्ट भूमिका रही है।

इस समाज में सेठ जमनालाल बजाज, लाला हरदेवसहाय, रामकृष्ण डालमिया, हनुमानप्रसाद पोद्दार, राधाकृष्ण बजाज,सीताराम खेमका, प्रो. रामसिंह जैसी अनेकानेक विभूतियां हुई हैं, जिनका गौरक्षा एवं गौहत्या बंदी में अत्यधिक योगदान रहा है। ओमप्रकाश जिंदल ने भी अपनी कई एकड़ जमीन गौशाला निर्माण के लिए दान कर दी थी।

लाला हरदेवसहाय भी महान गौभक्त थे। उन्होंने प्रतिज्ञा की थी कि जब तक वे भारत भू से गौहत्या के कलंक को दूर नहीं करा लेंगे, धरती पर सोयेंगें, वनस्पति घी का प्रयोग नहीं करेंगे और वे आजीवन उसके लिए संघर्ष करते रहे। उन्होंने गौहत्या बंदी के लिए कानून बनाने हेतु जबरदस्त आंदोलन किया। पंजाब, बिहार, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश आदि में गौहत्या निवारण सम्बंधी कानून बनाने तथा देश के महानगरों में स्थापित होने वाले चार बूचड़खानों को रूकवाने में उनकी विशेष भूमिका रही।

सीताराम खेमका तो इतने गौभक्त थे कि उन्होंने गौहत्या बंदी के लिए प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के खिलाफ फूलपुर संसदीय क्षेत्र से चुनाव लड़ा।

सर्वदलीय गौरक्षा महाभियान समिति मे भी इस समाज का विशेष योगदान रहा।

गौसेवा के प्रति समर्पित व्यक्तित्व

गौतम पोद्दार

गौ सेवा-संवर्द्धन के क्षेत्र में गौतम पोद्दार का नाम विशेष उल्लेखनीय है। आपने गौपालन के क्षेत्र में अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की है।

भारत सरकार के कृषि मंत्रालय ने गौ दुग्ध उत्पादन एवं श्वेत क्रान्ति के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए 1986 में आपको गोपाल रत्न की उपाधि से सम्मानित किया।

गौ उत्पादों के विश्व पेटेंट द्वारा गौ क्रान्ति के सूत्रधार

सुशील मानसिंहका (अग्रवाल)

आप नागपुर स्थित गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र (जी.वी.ए.के.)के मुख्य समन्वयक एवं संचालक। आपका इस संस्थान की स्थापना 1996 में गौपालन को बढ़ावा देने तथा गौ-उत्पादों पर अनुसंधान कर गाय के महत्व को राष्ट्रीय -अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठापित करने की दिशा में की गई ।

इनके अलावा असंख्य ऐसे गौसेवी व्यक्तित्व हैं, जिनका समर्पण भाव से गौ सेवा के क्षेत्र में योगदान रहा है।

तीर्थस्थलों का विकास

भगवती भागीरथी, गंगा ,यमुना, गोदावरी आदि के तटों पर स्थित हरिद्वार, वाराणसी, इलाहाबाद तथा उज्जैन, काशी, कांची, रामेश्वरपुरम्, खाटूश्याम, सालासर चितंपूर्णी आदि सभी तीर्थस्थलों के विकास में इस समाज का योगदान रहा है तथा वहां इस समाज द्वारा निर्मित मंदिर, धर्मशालायें, घाट, अतिथि भवन, अन्नक्षेत्र आदि देखे जा सकते हैं।

गंगोत्री से लेकर यमुनोत्री, कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी, बद्री, केदारनाथ , वैष्णो देवी तक इस समाज की धर्मभावना का प्रसार है और सभी तीर्थ स्थल इस समाज के उदार दान से फल फूल रहे हैं।

बद्रीनाथ जाने वाले यात्रियों की असुविधा को देखते हुए इस समाज के रायबहादुर शिवप्रसाद झुंझनूवाला ने गंगानदी पर लक्ष्मणझूले का निर्माण कर असीम दानवीरता का परिचय दिया। उन्होंने तीर्थ यात्रियों की सुविधा के लिए सभी तीर्थ स्थानों में सैंकड़ों की संख्या में धर्मशालाएं भी बनवाई। इसी प्रकार राजा पटनीमल ने कर्मनासा नदी पर पर पुल का निर्माण कराया। हरिद्वार आने वाले यात्रियों को श्राद्ध आदि कर्म कराने में सुविधा रहे, इसलिए सेठ सूरजमल जालान ने हर की पौड़ी पर श्राद्ध घाट का निर्माण कराया। हाल ही में वहां अग्रसेन घाटों का भी निर्माण कराया गया है।

साहू जैन, बिडला,सोमाणी एवं जैन परिवारों द्वारा विभिन्न तीर्थस्थलों के विकास के लिए महत्वूपर्ण कार्य किए गए हैं।

इसके अलावा अग्रसमाज द्वारा तीर्थ स्थलों के विकास एवं उनमें सुधार के प्रयास भी किये जा रहे हैं।

इस प्रकार से तीर्थस्थलों के विकास में भी यह समाज सक्रिय भूमिका निभा रहा है।

मन्दिरों का निर्माण

भारतीय संस्कृति में मंदिरों का अत्यंत महत्व है, जहां से भक्ति, ज्ञान तथा अध्यात्म की गंगा प्रवाहित होती है । इन मंदिरों के निर्माण में भी अग्रवाल समाज की प्रमुख भूमिका रही है और इस समाज के धर्मपरायण व्यक्तित्वों द्वारा देश-विदेश में एक से बढ़कर एक भव्य कलात्मक मंदिरों का निर्माण कराया गया है। शायद ही देश का ऐसा कोई स्थान हो, जहां इस समाज द्वारा निर्मित मंदिर न हों।

इस समाज द्वारा निर्मित काशी का भारत माता मंदिर, वृंदावन का शाह विहारीजी का मंदिर, पुष्कर का रंगनाथ मन्दिर, सुजानगढ़ का तिरूपति बालाजी मंदिर, कानपुर का राधाकृष्ण मन्दिर आदि अपने विशिष्ट कला वैभव के कारण पूरे देश में जाने जाते हैं। भारत माता का मंदिर अपने ढ़ंग का पूरे देश में अकेला मन्दिर है, जिसका निर्माण सुप्रसिद्ध राष्ट्रभक्त शिवप्रसाद गुप्त ने कराया तथा जिसका उद्घाटन स्वयं राष्ट्रपिता गांधी ने अपने हाथों से किया।

वृंदावन का शाह बिहारीजी का मंदिर अपनी कलात्मकता एंव स्थापत्य कला के लिए मंदिरों में अनूठा स्थान रखता है। टेढ़े-मेढ़े खम्बों वाले मंदिर के नाम से ख्यात इस मंदिर का निर्माण लखनऊ के शाह कुंदनलाल -फुंदनलाल द्वारा कराया गया था।

पुष्कर का रंगनाथ वेणुगोपाल मन्दिर दक्षिणी भारतीय शैली का भगवान् राजानुजाचार्य सम्प्रदाय का सुप्रसिद्ध मन्दिर है, जिसे 1008 अनन्ताचार्य महाराज कांचीपुरम की प्रेरणा से सेठ पूर्णमल गनेड़ीवाला ने सम्वत् 1844 में बड़े ही मनोयोग से बनवाया।

इस समाज द्वारा निर्मित मंदिरों की श्रृंखला विशाल है-भिवानी का गौरीशंकर मंदिर, दिल्ली का लाल मंदिर, श्रीगंगानगर का गीताभवन, अग्रोहा का शक्ति शीला मन्दिर, बाबा गंगाराम का पंचदेव मंदिर आदि। इसी प्रकार झुंझनू में केड़िया तथा अन्य परिवारों द्वारा निर्मित राणी सती तथा अन्य मंदिर पूरे देश में विख्यात हैं। मुम्बई में सत्यनारायण गोयन्का के निर्देशन में निर्मित पैगोड़ा विश्व का सबसे बड़ा पैगोडा है। इसी प्रकार सिद्ध पीठ बालाजी, बाबा खाटूश्याम, ऋद्धि-सिद्धि गणेश जी, मां वैष्णों देवी, संकट मोचन हनुमान आदि के मंदिर पूरे देश में बने हैं।

यही नहीं, अमेरिका, ब्रिटेन, लंका, नेपाल आदि देशों में भी इस समाज द्वारा निर्मित मंदिर मिल जायेंगे। प्रभुपाद स्वामी द्वारा निर्मित न्यूयार्क के हरे कृष्ण मंदिर मे भी इस समाज का योगदान रहा है।

बिड़ला परिवार द्वारा दिल्ली, जयपुर, भोपाल, रायपुर, कोलकाता, हैदराबाद, पटना आदि में भव्य लक्ष्मीनारायण मन्दिरों, ग्वालियर में सूर्य मंदिर, काशी में विश्वनाथ मंदिर , मथुरा में गीता मंदिर, पिलानी में सरस्वती मन्दिर, तुलसी मानस मन्दिर, सारनाथ मन्दिर आदि अनेकानेक भव्य मन्दिरोंका निर्माण तथा उनका जीर्णोद्धार देश विदेश में कराया गया है, जो कला शिल्प की दृष्टि से अत्यंत भव्य है। दिल्ली का लक्ष्मी नारायण मन्दिर देश के पांच भव्य मन्दिरों में से एक है, जिसका उद्घाटन स्वयं राष्ट्रपिता महात्मागांधी ने किया था। सर्वप्रथम सोमनी मन्दिर के जीर्णोद्धार मे भी बिड़ला परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

इसी प्रकार सेठ लक्ष्मीचन्द द्वारा निर्मित रंगनाथ मंदिर, आबू देलवाड़ा एवं देश के विभिन्न भागों में बने जैन मंदिर, सोमानी परिवार द्वारा निर्मित वेंकटेश्वर देवस्थान, मुम्बई, दक्षिण भारत में निर्मित वसिती कन्यका परमेश्वरी मदिर अत्यंत प्रसिद्ध है।

मुंबई का ओशो ध्यान केन्द्र भी उनके अनुयायियों के लिए ध्यान एवं योग का सबसे कड़ा केन्द्र है।

विभिन्न धार्मिक क्षेत्रों में योगदान

इसके अलावा देश में जितने भी यज्ञ, तप, जागरण, श्रीमद्भागवत, रामकथाएं आदि होती हैं, उनमें 80 प्रतिशत से अधिक कथाओं एवं कार्यक्रमों के आयोजक अग्रवाल/वैश्य ही होते हैं, अब तो विदेशों तक में कथाओं का आयोजन इस समाज के धर्मपरायण लोगों द्वारा कराया जा रहा है, जिनका लाभ विदेशों में बसने वाले प्रवासी भारतीयों को मिल रहा है।

बाबा रामदेव के योग, प्राकृतिक चिकित्सा एवं आयुर्वेद सम्बधी अधिकांश कार्यक्रमों के देश-विदेश में आयोजन का श्रेय भी इस समाज को प्राप्त है।

कहने का अभिप्राय यह है कि इस समाज ने हिन्दू एवं विभिन्न धर्मों के उत्थान में सहयोग देकर धर्म की रक्षार्थ महान कार्य किया है।

दान-सेवा - लोकोपकारिता

अग्रवाल/वैश्य समाज धार्मिक क्षेत्र के साथ-साथ दान, सेवा, लोकोपकारिता के क्षेत्र में भी विशेष स्थान रखता है। यह आदि काल से ही सर्वेभवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया, वसुधैव कुटुम्बकम् जैसी भावनाओं से ओत प्रोत रहा है तथा सृष्टि के समस्त प्राणियों में एक ही ब्रह्म की अनुभूति करते हुए उनकी सेवा के लिए तत्पर रहता है। गांधीजी की ट्रस्टीशिप भावना का उसमें सच्चा निदर्शन है तथा सौ हाथों से कमाओ, हजार हाथों से दान करो-यह उसका मूल मंत्र है।

यही कारण है कि इस समाज की गणना सबसे दानी, सेवाभावी एवं लोकोपकारी समाज के रूप में होती है और इस समाज के द्वारा बनवाए गए मंदिरों, धर्मशालाओं, शिक्षण संस्थानों, चिकित्सालयों आदि का जाल सम्पूर्ण देश-विदेश में फैला मिलता है।

विशेष बात यह है कि इस समाज के दान-सेवा कार्यो का विस्तार युग और समय की आवश्यकता के अनुसार परिवर्तित होता रहता है। एक समय था, जबकि इस समाज के लोगों द्वारा धर्मशालाओं, मंदिरों, कुओं, प्याऊओं, बावड़ियों, संस्कृत पाठशालाओं आदि के निर्माण पर विशेष जोर दिया जाता था किंतु अब उनका स्थान चिकित्सा, स्वास्थ्य, शिक्षा, लोगों के जीवन स्तर में सुधार, ग्राम विकास, महिलाओं एवं युवाओं के उत्थान,अंधता, मधुमेह, कैंसर, पोलियो, हृदय आदि रोगों के निवारण, नेत्रदान, रक्तदान, देहदान, विभिन्न प्रकार के चिकित्सा शिविरों के आयेाजन, समाज के विकलांगों, अपंगों, लूले -लंगड़े , अपाहिज आदि लोगों को सहायतार्थ लंगर लगाने, उन्हें बैसाखियां, ट्राइसाईकिलें, कृत्रिम अंग/ उपकरण बांटने , अंग प्रत्यारोपण में सहायता देने, उन्हें दूध,फल, दवाएं आदि निःशुल्क उपलब्ध कराने, आधुनिक उपकरणों से युक्त नए-नए हॉस्पिटलों को खोलने, हस्पतालों आदि में विभिन्न वार्डो को गोद लेकर उनमें चिकित्सा सुविधाओं का विस्तार करने, अच्छे स्वास्थ्य के लिए योग -प्राकृतिक चिकित्सा एवं अनुसंधान केन्द्रों की स्थापना करने , रोगियों एवं मृत व्यक्तियों को लाने -ले जाने के लिए रोगी वाहिनियों (एम्बुलैंस)एवं शववाहिनियों की व्यवस्था करने, ग्रामों के विकास के लिए चिकित्सा, शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल जैसी मूलभूत सुविधाएं जुटाने, सामुदायिक एवं परिवार कल्याण केन्द्र खोलने, चल चिकित्सा इकाइयों की व्यवस्था करने आदि ने ले लिया है।

यही नहीं, समाज के जरूरतमंद प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को छात्रवृतियां प्रदान करने , उन्हें पाठ्यपुस्तकें

तथा अन्य शिक्षा सुविधाएं उपलब्ध कराने , आधुनिक ज्ञान विज्ञान , उन्हें रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के लिए कम्प्यूटर तथा औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र आदि स्थापित करने में भी उनकी अग्रणी भूमिका रहती है।

इस समाज के दानधर्म और लोकोपकारिता की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे बिना किसी जाति-धर्म, सम्प्रदाय के भेदभाव के सम्पूर्ण मानवता के लिए होते हैं और चाहे धर्मशालाएं हों या हस्पताल, उनके द्वार समान रूप से सबके लिए खुले रहते हैं।

यहां तक कि जिन बीहड़, दुर्गम्य, वीरान, पहाड़ी प्रदेशों में कोई जा नहीं सकता, वहां भी इस देश के लाखों-करोड़ों पिछड़े वनवासी, आदिवासी लोगों के कल्याणार्थ शिक्षा, धर्म, चिकित्सा आदि के कार्यक्रम इस समान द्वारा व्यापकता से चलाये जा रहे हैं।

सबसे विशेष बात यह है कि अग्रवाल/वैश्य समाज के नयी पीढ़ी के युवाओं, महिलाओं में भी दान-धर्म-सेवा-परोपकारिता की यह भावना बढ़ी है। वे जहां रोटेरी क्लब, लायन्स क्लब, मारवाड़ी युवा मंच तथा अन्य सामाजिक संगठनो के माध्यम से मानवीय सेवा के कार्यो मे भाग लेते तथा चिकित्सा, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि कार्यक्रमों में हाथ बंटाते है, वहां धार्मिक कार्यो में भी उनकी श्रद्धा और निष्ठा भावना देखने ही योग्य हैं।

विदेशों में हिन्दू धर्म-सभ्यता-संस्कृति का प्रचार

विदेशों में हिंदू धर्म, सभ्यता, संस्कृति के प्रचार-प्रसार में तो इस समाज की विशेष भूमिका रही ही है। इस समाज के सुभाषचन्द्रा द्वारा ग्लोबल फाउण्डेशन फार सिविलाइजेशन हारमोनी की स्थापना की गई है, जो विश्व के विभिन्न धर्मों के बीच सौहार्द भाव की स्थापना की दिशा मे उल्लेखनीय कार्य कर रहा है।

घनश्यामदास बिड़ला एवं उनके परिवार द्वारा विदेशों में हिन्दु संस्कृति एवं बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु व्यापक रूप से कार्य किए गए है। विभिन्न देशों में हिन्दू एवं अन्य मंदिरों का निर्माण करवाया गया है।

धार्मिक सौहार्द की इसी भावना को देखते हुए अमेरिका की एटार्नी जनरल प्रीता बंसल को वहां के धर्म स्वातन्त्रय आयोग का सदस्य नियुक्त किया गया है।

काशी पीठाधीश्वर रामशरणाचार्य महाराज ने ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, स्वीटजरलेण्ड आदि देशों में जाकर हिंदु धर्म प्रचारार्थ जो कार्य किए, वे अशोक महान की याद दिलाते हैं।

इस्कान (हरे कृष्ण आंदोलन) के प्रवर्तक स्वामी प्रभुपाद को अमेरिका में पहली बार अपने घर ठहरने तथा उनके वहां प्रथम प्रवचन के आयोजन का श्रेय भी गोपाल अग्रवाल को है।

न्यूयार्क में प्रथम हिन्दू मंन्दिर का निर्माण भी जगदीश अग्रवाल ने कराया था। उनका शाकाहार के प्रचलन में भी विशेष सहयोग रहा।

लंदन तथा वृंदावन में हरेकृष्ण मंदिर बनवाने तथा राधाबिहारी एवं गोविंद के विग्रह स्थापित करने में भी उनकी विशेष भूमिका रही।

संत, धर्माचार्य, भक्त, कवि एवं धार्मिक जगत् के गौरव

अग्रवाल/वैश्य समाज को अनेक ऐसे संत,धर्माचार्य, भक्त, कवि एवं विभूतियां देने का श्रेय प्राप्त है, जिनका धार्मिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में विपुल योगदान रहा है और जो अपनी महान देन के कारण विशेष पहचान रखते हैं।

आध्यात्मिक जगत की महान विभूति

हनुमानप्रसाद पोद्दार

वैसे तो 19 वीं -20वीं शदी में भारत में अनेकानेक आध्यात्मिक विभूतियों का आविर्भाव हुआ किन्तु हिन्दू धर्म, सभ्यता, संस्कृति के प्रचार प्रसार में गीताप्रेस के हनुमानप्रसाद पोद्दार की जो भूमिका रही, वह अनुपमेय है तथा उसका अन्य उदाहरण मिलना दुर्लभ है।

इस महान विभूति का जन्म राजगढ़ (राज.) के एक मारवाड़ी अग्रवाल परिवार में भीमराज जी के यहां शिलांग में हुआ। युवावस्था में ही गीता के प्रति अनन्य निष्ठा के कारण उन्होंने क्रांतिकारियों को प्रेरणा देने के लिए एक ऐसी गीता का प्रकाशन कराया, जिसके मुख पृष्ठ पर भारतमाता अपने हाथ में खड्ग धारण किये हुए शत्रुओं का संहार कर रही थी। इस गीता से क्रांतिकारियों को बड़ी प्रेरणा मिली किंतु अंग्रेज सरकार ने उसे शासन विरोधी समझ जब्त कर लिया।

शायद अधिकांश लोगों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि हनुमानप्रसाद पोद्दार जैसा धर्मपरायण व्यक्तित्व कभी क्रांतिकारी भी रहा होगा और शस्त्र डकैती काण्ड जैसे राजद्रोह के अपराध में 21 माह जेल की सजा भी काटी होगी किंतु हनुमानप्रसाद पोद्दार क्रांतिकारी नेताओं के प्रभाव से क्रांतिकारी आंदोलन में भाग लेने लगे थे तथा 26 अगस्त 1914 को एक सशस्त्र डकैती काण्ड, जो बाद मे रोड़ा शस्त्र डकैती काण्ड के नाम से विख्यात हुआ, में अन्य क्रांतिकारियों के साथ भाग लिया था तथा इस काण्ड में उन्होंने विदेशों से आए 10 अस्त्र शस्त्रों की पेटियों को उड़ा चन्द्रशेखर आजाद जैसे क्रांतिकारियो को बांट दिया था।

किंतु ईश्वर ने उनके भाग्य में राष्ट्र सेवा के साथ धर्मसाधना का कार्य भी लिखा था। इसलिये जेल से छूटने के बाद उनका सम्पर्क मुम्बई में अपने मोसेरे भाई जयदयाल गोयन्दका से हुआ और आपने उनके साथ मिल कर मानव मात्र के कल्याण के लिए 'कल्याण' पत्र के प्रकाशन की योजना बनाई। अगस्त 1925 में उसका प्रकाशन प्रारम्भ कर दिया गया। कल्याण के अंकों की सामग्री इतनी उच्चकोटि की और प्रेरणाप्रद थी कि उन्होंने धार्मिक जगत में तहलका सा मचा दिया। तीन हजार प्रतियों से प्रारम्भ यह पत्रिका लाखों की संख्या में छपने लगी तथा भारत की कोटि-कोटि धर्मपरायण जनता के गले का हार बन गयी। लाखों अहिंदी भाषियों ने उसे पढ़ने के लिए हिंदी सीखी तथा देश विदेश में सर्वत्र उसकी मांग बढ़ने लगी। उसके विशेषांक तो अपने विषय के प्रामाणिक विश्वकोष बन गए।

कल्याण के सम्पादन में हनुमानप्रसाद पोद्दार ने जैसे अपने जीवन को ही समर्पित कर दिया था। वे आजीवन उसके सम्पादक रहे। उनके सम्पादकत्व में 44 विशेषांक प्रकाशित हुए, जो विषय, सामग्री, प्रामाणिकता- सभी दृष्टियों से उच्च कोटि के थे। इस पत्र ने भारतीय धर्म, सभ्यता, संस्कृति तथा नैतिकता के प्रसार में अत्यधिक योगदान दिया।

कल्याण के प्रकाशन के बाद पोद्दार जी एवं जयदयाल जी गोयन्का ने गीता, रामायण, महाभारत, उपनिषद्, पुराण आदि धार्मिक साहित्य को हिन्दी में अल्पमूल्य पर उपलब्ध कराने का निर्णय लिया तथा देश, विदेश में धार्मिक साहित्य को प्रकाशित करने वाला गीताप्रेस सबसे बड़ा संस्थान बन गया। रामचरितमानस की प्रकाशन संख्या तो लाखों-करोड़ों में पहुंच गई तथा अन्य पुस्तकों के भी कई-कई संस्करण निकले।

इसके साथ ही आपने बंगला, मलयालम, कन्नड़, तेलगू, नेपाली, अंग्रेजी, पंजाबी आदि में धार्मिक साहित्य को छपवाकर अहिन्दी भाषियों में लोकप्रिय बनाया।

आपने विदेशों में गीता, रामायण आदि के प्रचार के लिए भी उन्हें अमेरिका, ब्रिटेन, थाईलैण्ड, लंका, नेपाल आदि देशों में भिजवाया तथा हरे कृष्ण आंदोलन के प्रवर्तक स्वामी प्रभुपाद को भी गीता की प्रतियां निःशुल्क उपलब्ध कराई।

आप सर्वधर्म समभाव के प्रतीक थे। उन्होंने कल्याण या किसी धर्मग्रंथ में कभी किसी धर्म की आलोचना को नहीं छापा। वेदों के प्रचारार्थ भारतीय चातुर्वेद भवन प्रन्यास की स्थापना में भी आपका विशेष योगदान रहा।

वे पद-प्रतिष्ठा से सर्वदा दूर रहे। यहां तक कि गृहमंत्री गोविंदवल्लभ पंत ने जब उनके समक्ष राष्ट्र के सर्वोच्च अलंकरण 'भारतरत्न' से सम्मानित करने का प्रस्ताव रखा तो उसे भी उन्होंने विनम्रतापूर्वक अस्वीकार कर दिया।

आपने कल्याण जैसे पत्र का सम्पादन कर तथा विभिन्न ग्रन्थों के भाष्य लिखकर उच्च कोटि की प्रतिभा का परिचय दिया। आपने स्वयं 100 के लगभग छोटी-बड़ी पुस्तकें लिखी, जिनमें पद्य रत्नाकर, ब्रजमाधुरी, राधामाधव चिंतन, भजन-संग्रह पांच भाग आदि को पर्याप्त लोकप्रिय मिली।

22 मार्च 1971 को धर्मजगत् की यह महान विभूति सदैव के लिए नित्यलीन हो गई। भारत सरकार ने उनकी जन्म शताब्दी पर 23 सितम्बर 1992 को उनकी पावन स्मृति में डाक टिकट का प्रकाशन किया। उनकी स्मृति में गीतावाटिका गोरखपुर में एक केंसर चिकित्सा एवं अनुसंधान केन्द्र की भी स्थापना की गई।

भारतीय धर्मसाधना एवं संस्कृति के अखण्ड प्रहरी-

गीतामूर्ति सेठ जयदयाल गोयन्दका

हिन्दू सनातन धर्म की महान विभूति एवं गीताप्रेस के संस्थापक जयदयाल गोयन्का भारतीय संस्कृति और धर्मसाधना की अखण्ड परम्परा के साक्षात प्रतीक थे, जिनका एक -एक श्वास गीतामृत से सुवासित एवं अनुप्राणित रहा। चुरू (राजस्थान) के एक वैष्णव अग्रवाल परिवार में जन्में जयदयाल गोयन्दका ने गीता को जैसे अपने जीवन में ढ़ाल लिया था। पूरे जीवन गीता में ही जीए। जब गीता की शुद्ध और प्रामाणिक प्रति उपलब्ध नहीं हुई, तब उन्होंने उसे प्रकाशित करने की दृष्टि से 1923 में गोरखपुर गीताप्रेस की स्थापना की। एक छोटी सी प्रेस एवं ट्रेडल मशीन से प्रारम्भ हुआ, यह गीताप्रेस ही एक दिन उनके अखण्ड प्रयत्नों से विश्व में गीता तथा धार्मिक साहित्य के प्रकाशन का सर्वश्रेष्ठ केन्द्र बन गया। वहां न केवल गीता की विभिन्न संस्करणों में करोड़ों प्रतियां छपी, अपितु रामायण, उपनिषद्, पुराण, महाभारत जैसे धार्मिक साहित्य को अल्प मूल्य पर घर घर पहुंचाने का महान कार्य किया।

आपकी प्रेरणा से ही गीताप्रेस से कल्याण का प्रकाशन हुआ।

गीता तथा धर्म प्रचार के लिए उन्होंने स्वर्गाश्रम (ऋषिकेश) ने गंगा के किनारे विशाल गीताभवन की स्थापना की।

आपने गीता तत्व विवेचनी, तत्व चिंतामणि भाग 7, परमार्थ पत्रावली, आत्मोद्धार के साधन, परमार्थ साधन आदि ग्रंथ लिखे, जिनका अनुशीलन कर आज भी धर्मपरायण जनता उनसे प्रेरणा प्राप्त कर रही है।

17 अप्रेल 1965 को गंगा के पावन तट पर ऋषिकेश में आपका ब्रह्मलोक में वास हो गया।भारतीय धर्मजगत में आपका नाम सदैव अमर रहेगा।

हिन्दुत्व के पर्याय

अशोक सिंघल

विश्व हिन्दू परिषद् तथा हिन्दू समाज के अग्रणी नेताओं में मुख्य स्थान ।

1942 में ही आप राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सम्पर्क में आ गए थे तथा उससे प्रभावित हो राष्ट्रीय गतिविधियों में भाग लेने लग गए थे। इसलिये गांधी जी की हत्या का दोषारोपण जब राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ पर किया गया तो आपने उसका घोर प्रतिवाद किया तथा 1949 में जेलयात्रा की।

इसके बाद आपका झुकाव निरन्तर हिन्दुत्व, हिन्दू संस्कृति एवं धर्म की रक्षार्थ बढ़ता गया। आप सर्वसम्मति से विश्व हिन्दू परिषद् के अन्तरराष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष बने तथा हिंदू धर्म के प्रचार-प्रसार, गौहत्या बंदी, हिन्दू समाज के संगठन तथा उसकी रक्षा के लिए अविरत प्रयास किया। राम जन्मभूमि को मुक्त कराने, वहां भगवान राम का भव्य मंदिर बनाने , काशी तथा मथुरा के मन्दिरों के उद्धार तथा उनके पुनरुद्धार की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किये। 2015 में निधन।

भगवान् श्रीकृष्ण की लीलाओं के अमर गायक-

भक्त ललितकिशोरी एवं ललितमाधुरी

न जाने कितने लोगों ने वृंदावन के शाहविहारी जी के मंदिर के दर्शन कर अपने को कृतकृत्य अनुभव किया होगा किंतु बहुत कम लोग जानते होंगे कि इसका निर्माता कृष्ण भक्त शिरोमणि ललित किशोरी एवं ललित माधुरी अग्रवाल थे, जिनकी वाणी आज भी ब्रज के कण-कण में निनादित होती है।

आपने वृंदावन में करोड़ों रुपयों की लागत से शाहबिहारी जी के मंदिर का निर्माण कराया, जो टेढ़े खम्भों वाले मंदिर के रूप में प्रसिद्ध है। इस मंदिर में वास्तुकला, चित्रकला, मूर्तिकला का अद्भुत समन्वय है।मंदिर में झाड़- फानूसों का भी अद्भुत संग्रह है, जिन्हें जन्माष्टमी तथा श्रावण में प्रदर्शित किया जाता है। निष्कर्ष रूप से यह मंदिर स्थापत्यकला का उत्कृष्ट रूप प्रस्तुत करता है।

धन्य है भक्त ललित किशोरी एवं ललित माधुरी तथा उनका अद्भुत भगवत् प्रेम।

विपश्यना पद्धति के आचार्य

पद्मभूषण सत्यनारायण गोयन्का

विपश्यना ध्यान पद्धति के अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आचार्यों में आपकी गणना होती है। आपका जन्म चुरू जिले के एक मारवाड़ी परिवार मे हुआ ,जो व्यापार करने ब्रह्मा चला गया था। वहीं आपका जन्म हुआ।

आपने सयाजी उपासिन से विपश्यना पद्धति सीखी। यह वह पद्धति है, जो चिंता, तनाव, कुण्ठा, मनोरोग

जन्य रोगों से छुटकारा दिला के मनुष्य को सुखी-शांत जीवन जीने की कला सिखाती है। इस पद्धति की नींव 2500 वर्ष पूर्व गौतम बुद्ध ने रखी थी।

आपने इस पद्धति को विश्व के 80 देशों के 175 से अधिक केन्द्रों में 1200 से अधिक प्रशिक्षकों द्वारा पूरे विश्व में फैलाया तथा विश्व में विपश्यना पद्धति के सबसे बड़े आचार्य बन गए।

आपके द्वारा मुम्बई में ग्लोबल विपश्यना पैगोड़ा का निर्माण विश्व के विभिन्न समुदायों के बीच सौहार्द एवं शान्ति स्थापित करने गौराई क्षेत्र में नवम्बर 2008 में करवाया। जी.टी.वी के चेयरमेन सुभाषचन्द्रा के संयोजन में निर्मित यह विश्व का सबसे बड़ा पैगोडा है। इस पैगोड़ा के निर्माण में 11 वर्ष लगे व यह 11 एकड़ भूमि में फैला है। 325 फुट ऊंचे इस पैगोड़ा पर लगभग 105 करोड़ रुपये लागत आई है तथा इसमें 12000 लोग एक साथ अध्ययन कर सकते हैं। इसका शिल्प अद्‌भुत है। इस पैगोड़ा में गौतम बुद्ध के संरक्षित अवशेष रखे जाने के कारण इसका युगों युगों तक महत्व बना रहेगा।

अध्यात्म क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए आपको अनेकानेक संस्थानों द्वारा सम्मानित किया गया। भारत सरकार द्वारा भी आपको पद्मभूषण से सम्मानित किया। वर्तमान में दिवंगत।

स्वामी आनन्द बोध

(लाला रामगोपाल शालवाले)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व अध्यक्ष, आर्य समाजी विद्वान।

रामचरण जी महाराज

रामस्नेही सम्प्रदाय के आचार्य विजयवर्गीय समाज के प्रमुख संत। शाहपुरा (भीलवाड़ा) में प्रमुख गद्दी। 36397 श्लोकों की रचना। अद्वैत ब्रह्म के उपासक। 1100 पन्नों में गंगा की रचना।

संत सुंदरदास

महानसंत, कवि, भक्त संत दादूदयाल के परम शिष्य। वेद-व्याकरण आदि के आचार्य। काव्य रसिक आदि अनेक भजनों की रचना। 'ज्ञान समुद्र' प्रसिद्ध रचना।

आचार्य हेमचंद्र सूरि

जैन धर्म के महान आचार्य एवं संत।

रजनीश ओशो

वैश्य कुलोत्पन्न। विश्वभर में लाखों की संख्या वाले अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त केन्द्र के धर्मगुरू, आचार्य। मुम्बई में ओशो ध्यान केन्द्र की स्थापना।

रामचंद देहलवी

प्रख्यात आर्य समाजी विद्वान, वैदिक धर्म के प्रचारक।

संत तुकाराम

महान वैष्णव संत, मोढ़ वैश्य।

संत पलटूदास

वैरागी संत, मध्यदेशीय वैश्य

तुलाधार वैश्य

सत्यप एवं ईमानदारी पूर्ण व्यवहार के लिए प्रसिद्ध। जांजालि ऋषि के धर्म के वास्तविक रहस्य का ज्ञान, काशी निवास।

श्री वासवी कन्यका परमेश्वरी

आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडू, केरल, पाण्डुचेरी, महाराष्ट्र आदि में रहने वाले आर्य वैश्यों (प्रमुख दक्षिण भारतीय) की प्रमुख कुलदेवी। त्याग और बलिदान की प्रतिमूर्ति। क्षिण भारत के अधिकांश आर्य वैश्यों द्वारा देवी की उपासना और सैंकड़ों की संख्या में मन्दिरों का निर्माण।

आचार्य तुलसी

तेरापंथी जैन समुदाय के विश्वविश्रुत आचार्य, अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक। जैन सिद्धान्त दीपिका, आत्मानुशासन आदि 50 से अधिक पुस्तकों का लेखन। 1971 में लाडनू में जैन विश्वभारती (विश्वविद्यालय) की स्थापना। तेरापंथ जैन धर्म का प्रचार। एक लाख किलोमीटर से अधिक धर्म प्रचार यात्रा।

भारत सरकार द्वारा डाक टिकट का प्रकाशन, 23 जून 1997 को निधन।

आचार्य महाप्रज्ञ

आचार्य तुलसी के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी। जैन समाज के धार्मिक आचार्य। स्थितप्रज्ञ विद्वान। तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य।

भारत सरकारके द्वारा डाक टिकट प्रकाशित।

आचार्य आनन्द ऋषि

जैन धर्म के विद्वान, ऋषि, श्रमण संघ के आचार्य, अनेकानेक धार्मिक संस्थाओं की स्थापना। 1965 में आचार्य की आचार्य।

भारत सरकार द्वारा डाक टिकट जारी।

माँ गंगा के सच्चे पुरोधा

प्रो. जी.डी. अग्रवाल

(उर्फ डा. स्वामी ज्ञानस्वरूप आनंद जी महाराज)

गंगा में बढ़ते प्रदूषण एवं गंगोत्री पर विद्युत परियोजनाओं के निर्माण से गंगा के जल प्रवाह में पैदा होने वाले अवरोध को देखते हुए उन पर पाबंदी लगाने तथा गंगा को राष्ट्रीय नदी घोषित कर गंगा नदी प्राधिकरण गठित करने के लिए प्रथम बार 45 दिन, दूसरी बार 40 दिन तथा तीसरी बार 69 दिन का अनशन करने वाले महान गंगा भक्त। गंगा की रक्षा हेतु इंजीनियर का पद त्याग प्रो. जी.डी. अग्रवाल से स्वामी ज्ञानस्वरूप बन पूरा जीवन गंगा की रक्षार्थ अर्पित।

हिन्दुत्व के पर्याय

प्रो. रामसिंह

प्रो. रामसिंह हिन्दुत्व के पर्याय थे। वे आजीवन हिन्दू समाज के हितों के लिए संघर्षरत रहे।

भाई परमानंद के सम्पर्क में आकर वे हिन्दू महासभा के सम्पर्क में आये, हिन्दू साप्ताहिक पत्र का सम्पादन किया तथा सरकार की मुस्लिम तुष्टिकरण नीति का विरोध किया। शेख अब्दुल्ला द्वारा जम्मू कश्मीर को भारत से अलग करने की मांग पर भी उन्होंने जबरदस्त आंदोलन किया। जेल गये। गोवा मुक्ति आंदोलन में भी आपकी भूमिका रही। आप दिल्ली विधानसभा के भी सदस्य रहे।

बाद में आप हिन्दू महासभा के अध्यक्ष बने तथा वीर सावरकर के साथ मिलकर पूरे देश के हिन्दुओं में जाग्रति उत्पन्न की।

महामंडलेश्वर स्वामी शुकदेवानंद जी सरस्वती महाराज

स्वामी शुकदेवानंद जी सरस्वती धार्मिक जगत की विशिष्ट विभूति थे। आपका सत्संग, भगवद्नाम, धर्म और संस्कृति के प्रचार में विशेष योगदान रहा और आपके हजारों लाखों शिष्य धर्मसाधना के साथ-साथ देश विदेश में मानवीय सेवा तथा लोकोपकारिता के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान दे रहे हैं।

महामण्डलेश्वर स्वामी भजनानंद जी सरस्वती

आपका बचपन का नाम लड़ेतेलाल अग्रवाल था। महामण्डलेश्वर स्वामी भजनानंद जी सरस्वती के रूप में धर्म और अध्यात्म के प्रचार प्रसार में विशिष्ट योगदान दिया।

भजन गायक- विनोद अग्रवाल

भगवान् राधाकृष्ण तथा हरिनाम संकीर्तन के देश विदेश में ख्याति प्राप्त व्यक्तित्व। पंजाब के गुरू मुकंदजी महाराज से 1979 में दीक्षा तथा मुख्य रूप से भगवान् श्रीकृष्ण तथा राधा की लीलाओं का सुमधर स्वरों में विभिन्न राग-रागिनियों में गायन तथा श्रोताओं को भावविभोर। आपकी भजन संध्याओं का निरन्तर दूरदर्शन एवं विविध चैनलों पर प्रसारण होता रहता है तथा आप एक भजन संध्या कान्हा के नाम के लिए अत्यन्त लोकप्रिय हैं।

महामंडलेश्वर स्वामी असंगानंद जी सरस्वती महाराज

आप गंगातट पर स्थित ऋषिकेश (स्वर्गाश्रम) में परमार्थ निकेतन के अधिष्ठाताओं में प्रमुख। बाद में आपने महामंडलेश्वर की उपाधि धारण की। परमार्थ निकेतन में मन्दिर, सत्संग भवन तथा अन्य लोकोपकारी कार्यों के संचालन में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा। विविध स्थानों में परमार्थ निकेतनों की श्रृंखला स्थापित कर हिन्दू धर्म तथा संस्कृति के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया।

जैन संत मुनि सुदर्शनलाल जी महाराज

आप सुप्रसिद्ध जैन संतों में से एक हैं। आपका सम्पूर्ण जीवन धर्म प्रचार एवं मानव सेवार्थ समर्पित रहा। आपने अपने उपदेशों से लाखों लोगों को मांस, मदिरा, नशा सेवन तथा अन्य दुर्व्यवसनों से मुक्ति दिलाकर उनके कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया।

रामस्नेही स्वामी मुरलीधर जी महाराज

आप रामस्नेही सम्प्रदाय के आचार्य थे। आपने 1826 में स्वामी रामचरणदास जी महाराज से दीक्षा ली और रामभक्ति की अलख घर-घर जगाई। आपने 24000 अनुष्टुप छंदों (श्लोकों) की रचना कर रामस्नेही सम्प्रदाय के साहित्य की वृद्धि में योगदान दिया ।

अवतारी बाबा गंगाराम जी

आपका जन्म झुंझनू में एक अग्रवंशी परिवार में वि.स. 1952 मे हुआ। युवास्था में ही बाराबंकी जिले में कल्याणी नदी के तट पर आप आश्रम बनाकर धर्म साधना करने लगे और वहीं 42 वर्ष की अवस्था में आप ब्रह्मलीन हो गए।

आपकी प्रेरणा से सीकर-लोहारू मार्ग पर भव्य पंचदेव मन्दिर का निर्माण कराया गया। इससे शिव, हनुमान, दुर्गा, महालक्ष्मी आदि के पांच विग्रह होने के कारण इस मन्दिर की प्रतिष्ठा पंचदेव मंदिर के नाम से हुई। इस मन्दिर के मुख्य गर्भगृह में बाबा गंगाराम का विग्रह स्थापित है। यहां गंगाराम जी की पुण्य तिथि श्रावण शुक्ल दशमी, गंगा दशहरा पर विशाल मेला जुटता है और दूर दूर से हजारों की संख्या में उनके भक्त यहां आते हैं तथा सत्संग एवं अन्य धार्मिक कार्यक्रम होते हैं। इस मंदिर की शेखावाटी क्षेत्र मे पर्याप्त मान्यता है और गंगाराम की अवतारी बाबा के रूप में प्रतिष्ठा है।

केदारनाथ गुप्ता

श्री राधामाधव संकीर्तन मण्डल तथा सनातन धर्म सभा के माध्यम से प्रभुपाद वेदान्ता स्वामी के हरेकृष्ण आंदोलन को विश्व में फैलाने का श्रेय प्राप्त। वृंदावन में वेदान्त स्वामी के आश्रम तथा रासबिहारी मन्दिर की स्थापना में सहयोग।

जननी जणै तो दोय जन, कै दाता कै सूर

सेठ रामेश्वरदास नाथानी

सेठ रामेश्वरदास नाथानी दूधवा वाले अपने समय के कोलकाता के प्रसिद्ध सेठों और दानवीरों में थे। आप इतने खुले दिल के थे कि जब आपके मन में मौज आती तो आप हजारों का नहीं, लाखों का दान भी एक क्षण में दे डालते थे। आपने अपने जीवन में उस जमाने में भी लाखों-करोड़ों रुपये दान में दिए।

इनके अलावा भी अग्रवाल समाज में अनेक धर्म प्रचारक-प्रसारक हुए हैं, जो धार्मिक जगत की विशिष्ट विभूति हैं।

सामाजिक पुनर्निर्माण तथा अग्रवाल/वैश्य समाज

समाज सुधार एवं सेवा के क्षेत्र में भी अग्रवाल/वैश्य समाज अग्रणी रहा है और उसने प्रगतिशीलता का परिचय देते हुए युग के साथ कदम बढ़ाए हैं।

एक समय था, जबकि समाज में बाल विवाह, वृद्ध विवाह, अनमेल विवाह, पर्दा, आभूषण प्रथा, कन्या विक्रय, मृतक भोज, विधवा विवाह का निषेध, महिला अशिक्षा, समुद्री यात्रा का निषेध, दहेज प्रथा, विवाहों में फिजूलखर्ची, आडम्बर, दिखावा, अंधविश्वासों का बोलबाला ,छूआछूत आदि अनेकानेक कुरीतियों का बोलबाला था। यह वह समय था, जबकि लड़के-लड़कियों के विवाह 8-9 वर्ष की अवस्था में ही कर दिए जाते थे।

महिलाओं की शिक्षा की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। उनके लिए घर की चार दीवारी ही सीमा थी और शिक्षा के द्वार प्रायः बंद थे। उनकी शिक्षा अधिक से अधिक अक्षर ज्ञान अपना रामायण,गीता पढ़ लेने तक सीमित थी।

लड़कियों के लिए सहशिक्षा या अंग्रेजी शिक्षा की तो कल्पना ही नहीं की जा सकती थी।

इस प्रकार की परिस्थितियों में समाज में सुधार के लिए समय-समय पर उनके व्यक्तित्व सामने आये, जिनमें महात्मा गांधी, सीताराम सेक्सरिया, बसन्तलाल मुरारका, ईश्वरदास जालान, प्रभुलाल हिम्मतसिंहका, रामदेव चोखानी, जमनालाल बजाज, लाला लाजपतराय, कालीप्रसाद खेतान, भागीरथ कानेड़िया, सर गंगाराम, लाला हरदेवसहाय, देशबंधु गुप्ता, देशराज चौधरी, वीरेश चौधरी, लालमन आर्य , हरविलास शारद, भंवरलाल सिंघी, कृष्णदास धूत, घनश्याम दास बिड़ला आदि का नामोल्लेख किया जा सकता है, जिन्होंने समाज सुधार की शुरूआत कर समाज की प्रगति के द्वार खोले।

जमनालाल बजाज समाज के पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने अपने घर से पर्दा तथा आभूषण प्रथा के त्याग की शुरूआत की। इसके साथ ही उन्होंने अपनी लड़की कमला के जन्म पर खूब खुशियां मनाकर लड़के-लडकियों में अंतर को समाप्त करना प्रारम्भ किया।

इसी प्रकार सीताराम सेक्सरिया, भागीरथ कानोड़िया, बंसतलाल मुरारका, ईश्वरदास जालान आदि महिला शिक्षा के लिए आगे आये। सीताराम सेक्सरिया ने 1921 में सावित्री कन्या पाठशाला प्रारम्भ की, जो बाद में शिक्षा यतन के नाम से महिलाओं की शिक्षा का सबसे बड़ा केन्द्र बनी इसी प्रकार भागीरथ कानोड़िया ने वनस्थली विद्यापीठ की तर्ज पर कानोड़िया महिला महाविद्यालय का प्रारम्भ किया। महिलाओं को शिक्षा और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिये लाला हरदेव सहाय, देशबंधु गुप्ता, लाला लाजपतराय, लाला देशराज आदि ने भी अथक प्रयास किये तथा समय के साथ-साथ मोदी, सिंघानिया, पोद्दार, जिंदल, गोयन्का आदि अनेक परिवारों ने महिला शिक्षण संस्थान स्थापित किये तथा उनके लिए उच्च शिक्षा के द्वार खोले। श्रीमती कृष्णा अग्रवाल ने भी महिला साक्षरता की दिशा में कदम बढ़ाये।

इसी प्रकार समाज सुधार की दिशा में अनेक अग्रवाल/मारवाड़ी संगठन सामने आये। इन संगठनों में सबसे पहले 1892 में लाला दुर्गाप्रसाद अग्रवाल फरूखावाद में अखिल भारतीय वैश्य महासभा की मेरठ में स्थापना करके 19वीं शताब्दी में सुधारों की शुरूआत कर दी थी।

इसके बाद 1892 में मारवाड़ी ऐसोसिएशन, 1918 में जमनालाल बजाज द्वारा अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा, 1938 मे अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने महिला सम्मेलन, 1975 में रामेश्वरदास गुप्त के प्रयत्नों

से अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन 1976 में अग्रोहा विकास ट्रस्ट, अखिल भारतीय युवा संगठन, 1981 में अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन तथा बाद में अन्तरराष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन की भी स्थापना की गई।

इनके अलावा भी अग्रवाल / वैश्य मारवाड़ी समाज के सैंकडों प्रादेशिक, जिला एवं नगर स्तरीय अन्तरराष्ट्रीय संगठन तथा महिला - युवा समितियां हैं, जो कोलकाता, मुंम्बई, दिल्ली, उड़ीसा, बिहार, महाराष्ट्र, पं. बंगाल, असम, पूर्वांचल, पंजाब, हरियाणा आदि से लेकर सम्पूर्ण भारत तथा विदेशों मे भी समाज सुधार तथा सामाजिक जागरण की दिशा से महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। इन संगठनों ने समय-समय पर विभिन्न अधिवेशनों का आयोजन कर सामाजिक कुरीतियों के विरूद्ध आवाज उठाई है तथा समाज को प्रगति की नई राहें दी हैं।

अ.भा. वैश्य महासभा, अग्रवाल महासभा, मारवाड़ी सम्मेलन ने, वैश्य महासम्मेलन ने सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने विभिन्न वैश्य समुदायों, वर्गो-उपवर्गो में भेद समाप्त कर उनमें परस्पर रोटी-बेटी का सम्बंध तथा एकता स्थापित करने, कन्या भ्रूण हत्या बंद करने, समाज के जरूरतमंद लोगों की सहायता करने, महिलाओं के सशक्तिकरण द्वारा उन्हें राष्ट्र की मुख्य धारा से जोड़ने, वैश्य समाज की राजनीति में सहभागिता बढ़ाने, निर्धन परिवारों की कन्याओं के विवाह में सहायता करने आदि के प्रयत्न किए।

इसी प्रकार समाज मे व्याप्त वैवाहिक कुरीतियों, दान, दहेज, दिखावा, आडम्बर रोकने, दिन में सादगीपूर्ण वातावरण में विवाह करने आदि को प्रोत्साहित करने के लिए पूरे देश में परिचय सम्मेलनों, सामूहिक विवाह सम्मेलनों, विकलांग विवाह सम्मेलन, अन्तरराष्ट्रीय युवक-युवती परिचय सम्मेलन, उच्च शिक्षित युवा-युवती परिचय सम्मेलनों आदि का आयोजन किया जा रहा है।

कहने का अभिप्राय यह है कि इस समाज में सुधार की प्रक्रिया प्रारम्भ से जारी है।

इन सब प्रयासों के फलस्वरूप समाज में जागृति के स्वर हैं। बाल विवाह, बहु विवाह, अनमेल विवाह, कन्या विक्रय, पर्दा प्रथा, मृतक भोज व अन्य अनेक कुरीतियां अतीत के विषय बन चुके हैं। अब विधवा विवाह को लेकर किसी प्रकार का विरोध नहीं होता। लड़के-लड़कियों के विवाह जहां 10-12 वर्ष की अवस्था में हो जाते थे, वे अब 25-30 की अवस्था में होने लगे हैं। महिलाएं पहले जो पहले पुरुषों पर पूर्णतया आश्रित होती थी, वे आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर होती जा रही हैं। इसके साथ ही जहां उनके लिए शिक्षा के द्वार बंद थे और घर की चारदीवारी ही उनकी सीमा थी, ने आज देश-विदेश में इंजीनियरिंग, मेडिकल, डिप्लोमा, शिक्षा, सी.ए., सॉफ्टवेयर प्रबन्धन, डिजायनिंग आदि विभिन्न पाठयक्रमों में अध्ययन तथा शासन-प्रशासन आदि सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

समाज में वर्ग-उपवर्ग आदि के भेद कम हो अन्तर वर्गीय एवं अन्तरजातीय विवाह भी होने लगे हैं। अब अग्रवाल -महेश्वरी , जैन, ओसवाल, खण्डेलवाल, राजवंशी आदि परिवारों में भी एक जुटता बढ़ने लगी है और राजनैतिक स्तर पर सम्पूर्ण वैश्य समाज को एक मंच पर लाने के प्रयास तेजी से हो रहे हैं।

किंतु सतोष का विषय है कि इन सब कुरीतियों के विरूद्ध भी आवाज उठने लगी है और सामाजिक संगठन इन्हें दूर करने के लिए प्रयासरत हैं।

अतंत: यही कहा जा सकता है कि अग्रवाल/वैश्य समाज सदैव कुरीतियों के विरूद्ध एवं समाज सुधार के प्रति सजग रहा है ।

अग्रवाल/वैश्य समाज की कतिपय सामाजिक विभूतियां

पद्मभूषण सीताराम सेक्सरिया

अग्रवाल समाज के सुप्रसिद्ध समाजसेवी, सुधारक तथा गांधीवादी नेता।

वर्तमान से 75-80 वर्ष पूर्व जबकि समाज में बाल विवाह, वृद्ध विवाह, अनमेल विवाह, मृतकभोज, विधवा विवाह का निषेध, पर्दा प्रथा, दहेज प्रथा, महिला शिक्षा आदि को लेकर जितने भी आंदोलन हुए, उन सबमें आपकी महत्वपूर्ण भूमिका रही और आप मारवाड़ी समाज की अग्रणी विभूतियों में माने जाते हैं।

सामाजिक क्षेत्र में आपकी विशिष्ट सेवाओं को देखते हुए भारत सरकार ने आपको पद्मभूषण अलंकरण से सम्मानित किया।

ईश्वरदास जालान

पश्चिमी बंगाल के लब्ध प्रतिष्ठित विधिवेता एवं समाज सेवी। आप बड़ा बाजार के प्रमुख प्रवक्ता एवं मारवाड़ी समाज के अग्रणी व्यक्तित्व थे। अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना एवं संचालन में आपकी विशेष भूमिका रही। महिला शिक्षा के आप कट्टर समर्थक थे। मारवाड़ी समाज के गणमान्य व्यक्तित्व।

भागीरथ कानोडिया

महान समाज सेवी, सामाजिक क्रांति के अग्रदूत, प्रेरणा के स्रोत एवं निष्काम कर्मयोगी। महिला शिक्षा, चिकित्सा, हरिजनोद्धार, जन कल्याण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य।

जयपुर में महिला शिक्षा के लिए कानोड़िया महिला महाविद्यालय की स्थापना।

बसन्तलाल मुरारका

कोलकाता अग्रसमाज के अग्रणी व्यक्तित्व, समाजसुधारक एवं विधवा विवाह के कट्टर समर्थक। स्त्री शिक्षा के प्रबल पक्षधर।

दीवान बहादुर हरविलास सारदा

महान समाज सुधारक, बाल विवाह के विरोधी, सुप्रसिद्ध बाल विवाह विरोधी शारदा एक्ट के प्रवर्तक। आर्यसमाजी समाजसेवक।

कृष्ण दास जाजू

सुप्रसिद्ध समाजसेवी तथा माहेश्वरी समाज के मूर्धन्य नेता। 1908 में माहेश्वरी समाज की स्थापना। परम देशभक्त तथा गांधी जी के रचनात्मक कार्यों को बढ़ाने में विशेष योगदान।

आपके नाम पर कृष्णदास जाजू ट्रस्ट की माहेश्वरी सम्मेलन द्वारा स्थापना।

रामकृष्ण धूत

महान स्वतंत्रता सेनानी एवं समाजसेवी। मारवाड़ी समाज के उत्थान हेतु कार्य। निजाम सरकार में उत्तरदायी सरकार की सीपना हेतु सत्याग्रह एवं जेलयात्रा।

भवंरलाल सिंघी

अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष, मारवाड़ी समाज के अग्रणी नेता तथा महान समाज सुधारक। स्वतंत्रता आंदोलन में भाग तथा जेल यात्रा।

रजनी रंजन साहू

अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन के अध्यक्ष, सम्पूर्ण भारत में वैश्य एकता के लिए सिंहनाद तथा प्रयास। प्रखर सांसद तथा बिहार के लोकप्रिय नेता।

अग्रोहाधाम की नींव के पत्थर

विजय कुमार चौधरी, जालना

महाराष्ट्र अग्रवाल सम्मेलन के वरिष्ठ अध्यक्ष, समाजसेवी, अग्रोहा विकास ट्रस्ट, सम्मेलन आदि अनेक संस्थाओं से सम्बद्ध एवं वैश्य समाज में जागृति हेतु निरन्तर प्रयासरत।

अग्रोहा धाम के पुनर्निर्माण में योगदान

इसके अलावा अनेक ऐसी विभूतियां है जिन्होंने अग्रोहा निर्माण में महान सेवा भावना का परिचय दिया है। अग्रोहा 1975 से पूर्व लगभग एक वीरान स्थल था, जहां चारों ओर रेतीली भूमि और विशाल थेह के दर्शन होते थे। न आवास की व्यवस्था थी, न पीने के पानी की किंतु इन सब विभूतियों के प्रयत्नों एवं प्रयासों से आज अग्रोहा न केवल अग्रवाल-वैश्यों के पांचवें सर्वधाम का रूप धारण कर चुका है। अपितु सामाजिक जागरण का केन्द्र भी बन रहा है।

मास्टर लक्ष्मीनारायण अग्रवाल

मास्टर लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, दिल्ली, आधुनिक अग्रोहा निर्माण की नींव के स्तंभ थे। आपने सर्वप्रथम अग्रोहा निर्माण की अलख जगाई।

अग्रोहा को पुन: बसाने तथा उसकी गौरव गरिमा स्थापित करने हेतु आपने लगभग 300 बीघा जमीन अग्रोहा के थेहों के समीप खरीदी और वहाँ महाराजा अग्रसेन इजीनियरिंग कॉलेज स्थापित करने एवं मण्डी बनाने की योजना बनाई, किंतु किन्हीं करणों से यह योजना सिरे न चढ़ सकी। आप अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के भी महामंत्री रहे और उन्होनें 1950 में इस महासभा का अधिवेशन अग्रोहा में आयोजित कर अग्रबंधुओं को अपनी जन्मभूमि का विकास करने की प्रेरणा दी।

50 वर्ष तक लगातार समाजसेवा करते हुए आपका 3 दिसम्बर 1983 को स्वर्गवास हो गया। समाज के प्रति आपकी महान सेवाओं को देखते हुए अग्रोहा विकास ट्रस्ट ने आपको जन्म शताब्दी के अवसर पर सेठ द्वारिकाप्रसाद सर्राफ राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया।

रामेश्वरदास गुप्त

अग्रोहा निर्माण के प्रमुख सूत्रधारों में से एक । आपके प्रयासों से ही दिल्ली में 5-6 अप्रेल 1975 को अखिल भारतीय अग्रवाल प्रतिनिधि सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमें वर्तमान अग्रोहा को अग्रवालों के पंचम धाम के रूप में विकसित करने का निर्णय लिया गया और अग्रवाल जाति के 5000 वर्षों के इतिहास में प्रथम बार उस दिशा में ठोस कदम उठाये गये।

आप अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन एवं अग्रोहा विकास ट्रस्ट के संस्थापक महामंत्री रहे और आपने पूरे देश में अग्रवाल समाज में नई चेतना का संचार किया। आप अग्रवाल समाज के उन पांच व्यक्तियों में प्रमुख थे, जिन्हे अग्रोहा में नवनिर्माण के शिलान्यास का गौरव प्राप्त है ।

आप अनेक सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक संगठनों से जुड़े। आपने दिल्ली एवं गढमुक्तेश्वर में विशाल धर्म भवनों की स्थापना की, जो धार्मिक एवं अन्य सामाजिक गतिविधियों के केन्द्र हैं। आपको हिन्दू धर्म के चारों जगदगुरू शंकराचार्यो को एक स्थान पर मिलाने का श्रेय भी प्राप्त है।

महाराजा अग्रसेन पर डाक टिकट प्रकाशित कराने और अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन की स्थापना में भी आपकी विशेष भूमिका रही। आपका 20 फरवरी 2015 को देवलोकगमन हो गया।

नि:संदेह आपकी गौरवपूर्ण समाज सेवाएं अग्रवाल इतिहास के गौरवपूर्ण पृष्ठों में सदैव अंकित रहेंगी।

इसके अलावा भी समाज की ऐसी सैंकड़ों विभूतियां हैं, जिनका नामोल्लेख स्थान की सीमा के कारण नहीं किया जा सका है। लेखक इसके लिए क्षमा प्रार्थी है।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अनुसंधान, परमाणु शक्ति के विकास आदि विभिन्न क्षेत्रों में भी अग्रवाल समाज की महत्वपूर्ण भूमिका रही है और इस समाज ने विज्ञान, इंजीनियरिंग एवं प्रौद्योगिकी आदि में ऐसी-ऐसी महान विभूतियां पैदा की हैं, जिनका देश की वैज्ञानिक प्रगति, प्रौद्योगिकी के विकास, अंतरिक्ष अनुसंधान, सुरक्षा प्रणाली में नई-नई तकनीकों के समावेश, विभिन्न ग्रहों-उपग्रहों की खोज, पर्यावरण संरक्षण, कृषि सुधार, सौर ऊर्जा उत्पादन, देश में परमाणु शक्ति के विकास,सेटेलाइट क्रांति आदि के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान रहा है, जिनके अथक, अतुलनीय प्रयासों के कारण भारत की गणना आज विश्व के अमेरिका, चीन, सोवियत रूस, इजराइल जैसे परमाणु शक्ति सम्पन्न , उन्नत- विकसित राष्ट्रों में होने लगी है ।

इसी समाज के डा. रामनारायण अग्रवाल हैं, जिन्होंने अग्निप्रक्षेपणास्त्र जैसे लम्बी दूरी तक मार कर सकने वाली मिसाइलों का निर्माण कर भारत को परमाणु आयुध क्षमता सम्पन्न विश्व के छः अग्रणी राष्ट्रों की पंक्ति में प्रतिष्ठापित किया है। इसी समाज के विक्रम साराभाई है, जिन्होंने परमाणु ऊर्जा एवं अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में भारत को अग्रणी बनाने में भूमिका निभाई।

इसी प्रकार सेटेलाइट, अंतरिक्ष अनुसंधान एवं उपग्रह प्रक्षेपण में डा. पी.एस. गोयल, परमाणु ऊर्जा के विकास में भाभा एटोमिक रिसर्च सेंटर के डा. जयपाल मित्तल, आप्टिकल प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में डा. आत्माराम, पर्यावरण संरक्षण में डा. अनिल अग्रवाल, हरित क्रांति के क्षेत्र में सर गंगाराम, भूकम्प यांत्रिकी में डा. जयकृष्ण, सूचना प्रौद्योगिकी में विनोद गुप्ता, सैन्य कम्प्यूटर प्रणाली की सुरक्षा में प्रो. मणीन्द्र अग्रवाल, भौतिकी अनुसंधान में डा. गिरीश अग्रवाल, खगोल विज्ञान में मेघनाथ साहा, पौध प्रजनन में डा. पंचानन माहेश्वरी, विद्युत परियोजनाओं के निर्माण में डा. कंवरसेन, टेली सॉफ्टवेयर क्षेत्र में भरत गोयन्का, टेलीकम्युनिकेशन में प्रो. अशोक झुंझनूवाला, कृषि-सुधार में डा. अनिल कुमार गुप्ता, बूंद-बूंद सिंचाई पद्धति में डा. मेघराज गोयल, डिजीटल प्रौद्योगिकी में सोम मित्तल, वन उत्पाद तथा वृक्षारोपण में पंकज अग्रवाल, कम्प्यूटर विज्ञान में प्रकाश अग्रवाल, ऑन लाइन शिक्षा में डा. अनन्त अग्रवाल आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इनके अलावा भी सैंकड़ों-हजारों की संख्या में इस समाज के युवा वैज्ञानिक हैं, जो विज्ञान-प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का परचम देश-विदेश में फहराए हुए हैं तथा अमेरिका, यूरोप जैसे देशों के नासा एवं वैज्ञानिक संस्थानों में उनकी भारी मांग है। यहां तक की संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी उन्हें अपनी विविध परियोजनाओं में महत्वपूर्ण स्थान दिया है।

आगे की पंक्तियों में हम वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी के क्षत्र में इसी प्रकार की राष्ट्रीय -अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त अग्रविभूतियों का परिचय देगें-

अग्नि प्रक्षेपणास्त्र के जनक

पद्मभूषण डॉ. रामनारायण अग्रवाल

डा. सी.वी. रमन, जहांगीर भाभा जैसी उत्कृष्ट वैज्ञानिक परम्परा में जन्म लेने वाले महान वैज्ञानिक। भारत में अग्नि प्रक्षेपणास्त्र प्रणाली का विकास कर भारत की सुरक्षा प्रणाली को आत्मनिर्भर बनाने वाले उच्च कोटि के वैज्ञानिक।

प्रतिरक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) के वरिष्ठ वैज्ञानिक तथा पृथ्वी से आकाश एवं हवा से हवा मारकर सकने वाली लम्बी दूरी की मिसाइलों का निर्माण कर भारत को विश्व के छः सर्वोच्च परमाणु सम्पन्न राष्ट्रों की पंक्ति में खड़ा करने में अनुपम योगदान तथा आपने ऐसा करके दिखा दिया कि भारत

अन्तरमहाद्वीपीय प्रक्षेपणास्त्रों का निर्माण बिना किसी विदेशी तकनीक की सहायता के भी कर सकता है। वास्तव में आपका यह योगदान भारतीय विज्ञान के क्षेत्र में श्रेष्ठतम उपलब्धि है।

आपकी इस महान उपलब्धि को देखते हुए आपको 1989 में विज्ञान मणि पुरस्कार, 1993 में सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक पुरस्कार, 1998 में मेन आफ द इयर, तथा भारत सरकार ने आपको पद्मभूषण सम्मान आदि से सम्मानित किया।

भारत में सेटेलाइट क्रांति के अग्रणी सूत्रधार

पद्मश्री डॉ. प्रेमशंकर गोयल

भारत में सेटेलाइट (उपग्रह प्रक्षेपण) प्रणाली तथा समुद्री विज्ञान के सूत्रधार डॉ. प्रेमशंकर गोयल, उन महानतम वैज्ञानिकों में हैं, जिन्होंने सुप्रसिद्ध आर्यभट्ट उपग्रह की परम्परा में भास्कर प्रथम, द्वितीय, रोहिणी श्रृंखला-3, इन्सेट द्वितीय आदि उपग्रहों का सफल प्रक्षेपण कर तथा 2000 से अधिक किलोमीटर दूरी पर स्थित शत्रु की मिसाइलों का पता लगाकर उन्हें हवा में ही रोकने या नष्ट करने की सुरक्षा प्रणाली का विकास कर भारत को विश्व के सर्वाधिक उन्नत राष्ट्रों की पंक्ति में ला खड़ा किया है। 10 फरवरी 2013 को इनके सफल परीक्षण के बाद भारत अमेरिका, फ्रांस, चीन, सोवियत रूस और इजरायल जैसे देशों के साथ इस तकनीक में खड़ा हो गया है। अब भारत के नौसेना तट से शत्रु की मिसाइलों का पता लगा कर उन पर प्रहार करना अथवा आकाश या वायुमार्ग से होने वाले प्रहारों से महत्वपूर्ण स्थलों की सुरक्षा करना संभव होगा।

डी. आर. डी. ए. के प्रमुख अधिकारी तथा समुद्री विकास विभाग को आधारभूत सरंचना को बदल उसे अन्तरराष्ट्रीय मानक प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका।

आप अपनी महत्वपूर्ण उपलब्धियों के लिए विक्रम साराभाई रिसर्च अवार्ड, स्पेस एरोस्पेस टेक्नोलॉजी, रामानुजन अवार्ड, कल्पना चावला स्मारक पुरस्कार, आउटस्टेण्डिग एचीवमेंट अवार्ड आफ इसरो आदि अनेक पुरस्कारों से सम्मानित हो चुके हैं।

भारत सरकार ने भी विज्ञान के क्षेत्र में आपके विशिष्ट योगदान हेतु आपको 2005 में पद्मश्री सम्मान से अलंकृत किया।

पद्मश्री प्रो. जयपाल मित्तल

अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त भाभा परमाणु अनुसंधान केंन्द्र में प्रतिष्ठित एम.एन. साहा चेयर के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष। यूनिवर्सिटी ऑफ नोटरे, अमेरिका के फैलो।

पूर्व में भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र ट्राम्बे, मुंबई में रसायन विज्ञान एवं आईसोटाप विभाग के निदेशक पद पर लगभग दस वर्षों तक कार्य । परमाणु विकीरण पर मूलभूत अनुसंधान तथा वैज्ञानिक शोधकार्यक्रमों का सफल निर्देशन। तीनों विज्ञान अकादमियों मे परमाणु विकीरण विभाग में शोध एवं विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य। भारत सरकार द्वारा विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए 2003 में पद्मश्री से सम्मानित।

भारत के दूसरे भागीरथ और जल विद्युत परियोजना के जनक

पद्मभूषण डॉ. कंवरसेन

इतिहास एवं पुराणों में राजा भागीरथ की कथा आती है, जिन्होंने अपने अथक प्रयासों से जीवनदायिनी गंगा को भू पर अवतरित कर यहां की भूमि को शस्य-श्यामला बनाया। शताब्दियां व्यतीत हो जाने भी वैसा भागीरथ पुनः इस धरा पर अवतरित न हुआ किंतु अग्रवाल समाज को श्रेय प्राप्त है कि उसने डॉ. कंवरसेन जैसे महान वैज्ञानिक